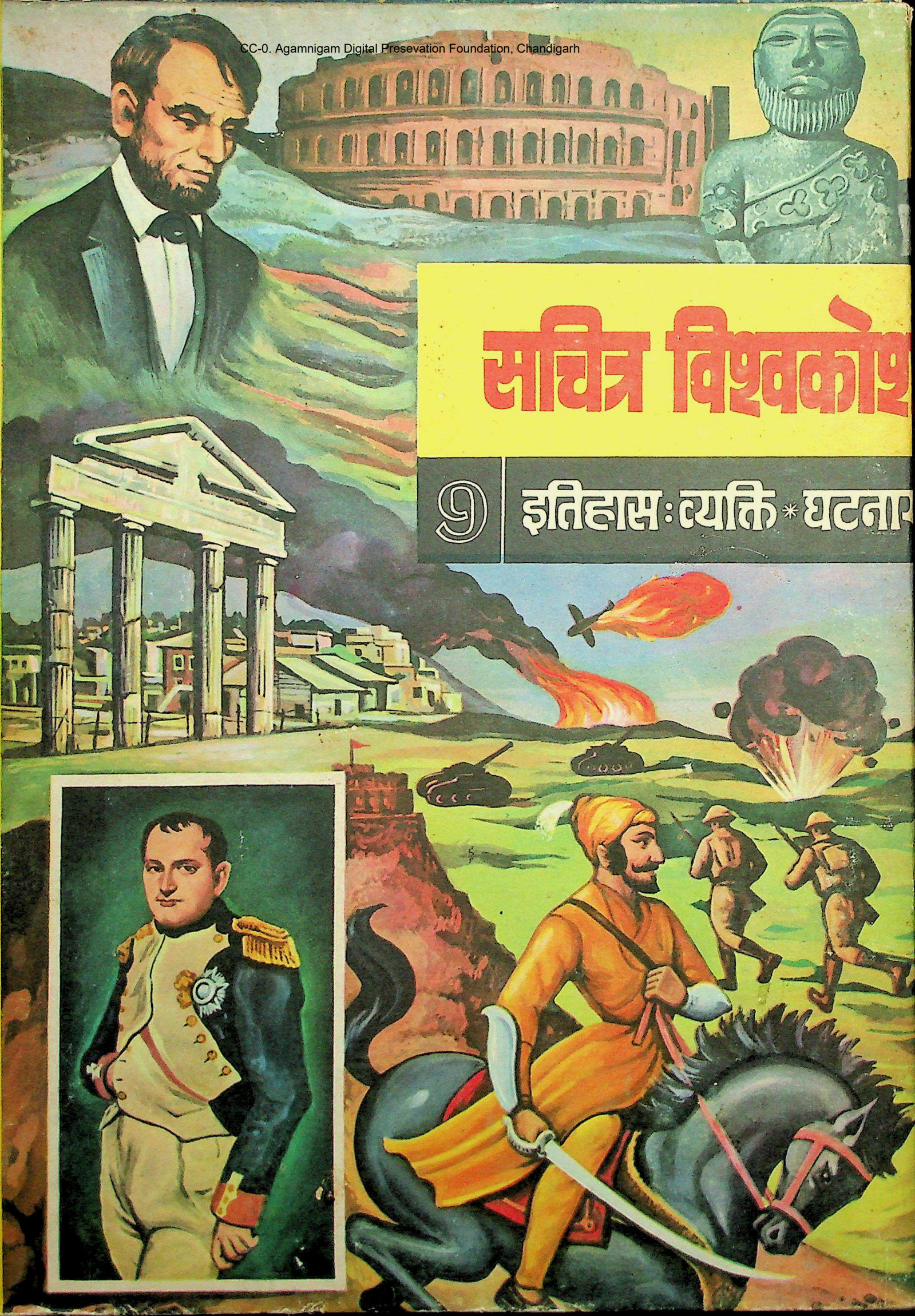
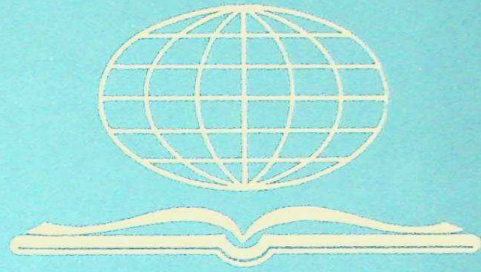




सचित्र विश्वकोश

९

इतिहास: व्यक्ति * घटना



साचित्र विश्वकोश

ज्ञान-विज्ञान की प्रामाणिक, तथ्यपूर्ण और नवीनतम जानकारी तथा दो हजार से अधिक रंगीन और दुर्लभ चित्रों से भरपूर दस सजिल्द और अपने-आपमें सम्पूर्ण खण्डों का अपने ढंग का अनूठा विश्वकोश

विशेषज्ञों द्वारा रचित तथा विश्व की अनेक भाषाओं में अनूदित 'गोल्डन बुक इन्साइक्लोपीडिया' का हिन्दी संस्करण

इतिहास : व्यक्ति * घटनाएं



राजपाल एण्ड सन्स

कश्मीरी गेट, दिल्ली-6

भूमिका

विश्वकोश की उपयोगिता से सभी परिचित हैं। विश्वकोश के द्वारा आप किसी भी विषय के सम्बन्ध में प्रामाणिक और नवीनतम जानकारी आसानी से पा सकते हैं। आज के युग में विश्वकोश एक महत्वपूर्ण और बहुत उपयोगी संदर्भ पुस्तक (रेफरेन्स बुक) है जो विद्यार्थियों, विद्वानों और जनसाधारण सभी के लिए मूल्यवान है।

मुझे प्रसन्नता है कि 'गोल्डन बुक एनसाइक्लोपीडिया' पर आधारित यह 'सचित्र विश्वकोश' दस भागों में प्रकाशित हो रहा है। प्रत्येक खण्ड विषयानुसार है और अपने में पूर्ण है। 'गोल्डन बुक एनसाइक्लोपीडिया' अपनी प्रामाणिकता के लिए संसार-भर में प्रसिद्ध है और अनेक देशों में इसके अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। हिन्दी में इस उपयोगी विश्वकोश का प्रकाशन बहुत ही सुन्दर रूप में हुआ है जिसके लिए प्रकाशक बधाई के पात्र हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर चार-रंगे अनेक चित्र हैं और सबसे अच्छी बात यह है कि मात्र अनुवाद न होकर इसमें आवश्यकतानुसार भारतीयकरण भी किया गया है। मेरी सम्मति में ऐसा करने से इसकी उपयोगिता हिन्दी के पाठकों के लिए और भी बढ़ गई है। यह महत्वपूर्ण प्रकाशन, एक तरह से, शिक्षा के क्षेत्र में दो मित्र देशों के सहयोग का प्रतीक है।

एक अन्य विशेषता यह भी है कि इसमें भारत सरकार द्वारा निर्धारित टैक्नीकल शब्दावली का उपयोग किया गया है। मुझे आशा है, हिन्दी के विद्यार्थी और पाठक इससे पूरा लाभ उठाएंगे।

नई दिल्ली
अप्रैल, 1967

प्रेम किरपाल
शिक्षा-सचिव, भारत सरकार

प्रकाशकीय

'सचित्र विश्वकोश' की तैयारी में हमें अनेक भारतीय विद्वानों और वैज्ञानिकों का सहयोग मिला है। हम उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हैं, विशेषतः श्री श्रीकान्त व्यास के प्रति, जिनकी देख-रेख में यह हिन्दी संस्करण संपादित हुआ है। आवरण-चित्र श्री आर० के० बोस ने बनाए हैं।

—प्रकाशक

मूल्य : सात रुपये

THE GOLDEN BOOK ENCYCLOPAEDIA
by Bertha Morris Parker

Published by arrangement with Golden Press, Inc. New York.
© Copyright 1959 by Golden Press, Inc.

प्रथम संस्करण © 1967, राजपाल एण्ड सन्ज

शुचि प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली में मुद्रित



साचित्र विश्वकोश

खण्ड 9

विश्व इतिहास: व्यक्ति और घटनाएं

अंधयुग, यूरोपीय (DARK AGES) : यूरोपीय इतिहास का मध्ययुग लगभग एक हजार साल लम्बा माना जाता है। मध्ययुग के आरंभ के कुछ सौ वर्ष अंधयुग कहलाते हैं।

अंधयुग का आरंभ पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन (सन् 476) के साथ साथ हुआ। कुछ समय से रोमन साम्राज्य कमजोर होता जा रहा था। पश्चिमी यूरोप में स्थित रोमन सैनिकों को रोम की रक्षा के लिए बुला लिया गया था। बर्बर जातियों ने उत्तर और पूर्व से साम्राज्य पर आक्रमण शुरू कर दिया और कुछ ही समय में पश्चिमी यूरोप पर कब्जा कर लिया।

बर्बर जाति के लोग युद्धप्रिय और क्रूर प्रकृति के थे। उन्होंने खूब लूटमार मचाई। वे पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे। संस्कृति और सभ्यता से उन्हें कोई मोह नहीं था। प्राचीन मिस्र, बेबीलोनिया और यूनान में जिस सभ्यता और संस्कृति का विकास हुआ था, उसका उनके लिए कोई मूल्य नहीं था। इसलिए उनके जमाने के यूरोप का बहुत कम इतिहास मिलता है। इसीलिए उस युग को



हर परिवार अपना भोजन-कपड़ा स्वयं जुटाता था।

इतिहास में अंधयुग माना जाता है।

धीरे-धीरे बर्बरों ने सभ्य व्यक्तियों की तरह रहना सीखा। उनमें से बहुत-से खेती करने लगे। उस समय यूरोप का अधिकांश जंगलों से भरा था। नगर बहुत छोटे और दूर-दूर बसे हुए थे। आने-जाने के रास्ते अच्छे नहीं थे।



संन्यासियों ने विद्या और कला को जीवित रखा।

लेकिन अंधयुग में भी ईसाई धर्म का विकास होता रहा। मठ और गिरजों में विद्या और कला का विकास होता रहा। ईसाई धर्म के अभाव में अंधयुग और भी अधिक अंधकारपूर्ण हो सकता था।

जब यूरोप में अंधयुग था तब संसार के अन्य भागों में सभ्यता का तेजी से विकास हो रहा था। भारत, अरब और चीन के लोग यूरोप वालों से काफी आगे बढ़े हुए थे।

अकबर (AKBAR 1542-1605) : अकबर की गणना न केवल भारत के, बल्कि विश्व के महान सम्राटों में की जाती है।

बाबर ने यद्यपि भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना कर दी थी, परंतु उसकी विजय कोरी सैनिक विजय थी। मुगल साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक अकबर ही था।

अकबर का पूरा नाम जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर था। उसका पिता—हुमायूँ शेरशाह से परास्त होकर जब फिर से सैन्य-शक्ति एकत्रित करने के लिए इधर-उधर भटक रहा था, तभी अमरकोट में उसकी बेगम ने अकबर को जन्म दिया। 13 वर्ष की अल्पायु में ही अकबर को पंजाब का सूबेदार बनाया गया, और कुछ महीने बाद जब हुमायूँ की अचानक मृत्यु हो गई तो उसे सिंहासन पर बैठा दिया गया। बैरम खां उसका संरक्षक बना।

अकबर के सामने शुरू में बड़ी कठिनाइयाँ आईं। परंतु बैरम खां ने अपनी वीरता, व्यवहार-कुशलता और कूटनीतिज्ञता से चार वर्ष में ही न केवल उसकी स्थिति मजबूत कर दी, बल्कि मुगल साम्राज्य को भी काफी फैला दिया। 1560 ई० में अकबर ने बैरम खां को हज को भेजकर राज्य की बागडोर पूरी तरह अपने हाथ में ले ली।

अकबर ने अपनी सेना को सुसज्जित तथा संगठित करके संपूर्ण उत्तरी भारत तथा दक्षिणी भारत के बहुत बड़े भाग पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर दिया। 1576 ई० में अकबर के साम्राज्य के बराबर दुनिया में कोई और राज्य नहीं था। अकबर ने एक सुगठित शासन-व्यवस्था स्थापित की। उसने राजनीति में उदारता, धार्मिक स्वतंत्रता और न्याय की नीति अपनाई।

अकबर ने यह अच्छी तरह समझ लिया था कि हिन्दुओं का विश्वास और सहयोग प्राप्त किए बिना साम्राज्य की नींव मजबूत नहीं की जा सकती। इसलिए उसने राजपूत राजाओं को अपनी अधीनता में लाने के बाद उनसे मैत्री की और विवाह-संबंध स्थापित किए। हिन्दुओं पर से जजिया और तीर्थयात्रा-कर हटा लिए गए। गोवध बंद कर दिया गया। सेना और दरबार में राजपूतों को बड़े-बड़े पदों पर नियुक्त किया गया। इस प्रकार उसे अपनी राज्य-सत्ता को सुदृढ़ करने में राजपूत राजाओं से बड़ी सहायता मिली। केवल मेवाड़ के महाराणा प्रताप ही ऐसे थे जिन्होंने जीते-जी अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की और जो मरते दम तक उसके विरुद्ध संघर्ष करते रहे।

अपनी प्रजा की भलाई के लिए अकबर ने कई तरह के प्रशासकीय सुधार किए। साम्राज्य के सूबों में उसने जमीन का ठीक ढंग से बंदोबस्त करवाया। माप के लिए लम्बाई और क्षेत्रफल की इकाइयों—गज और बीघा—के ठीक मान निश्चित किए गए। टोडरमल इस कार्य में उसका मुख्य सहायक बना।

अकबर बड़ा ही विचारशील और जिज्ञासु था। फतहपुर सीकरी में उसने एक इबादतखाना (प्रार्थनागृह) बनवाया था जिसमें सभी धर्मों के विद्वान एकत्रित होते थे और

पूरी स्वतंत्रता के साथ अपने धार्मिक विचार व्यक्त किया करते थे। उसने 'दीन इलाही' नामक एक नया धर्म चलाने का भी प्रयत्न किया, जिसमें सभी धर्मों की अच्छी-अच्छी बातें सम्मिलित थीं।

अकबर यद्यपि पढ़ा-लिखा न था, पर वह बहुत ही बुद्धिमान था और साहित्य तथा कला से उसे बड़ा प्रेम था। उसका दरबार विद्वानों, साहित्यकारों और कलाकारों से सुशोभित था। अब्दुरहीम खानखाना, अबुलफजल, फ़ैज़ी, तानसेन, मानसिंह, टोडरमल, बीरबल, मुल्ला और हकीम हुमायूँ उसकी सभा के नौ रत्न थे। उसने संस्कृत ग्रंथों के फ़ारसी में और फ़ारसी ग्रंथों के संस्कृत में अनुवाद को प्रोत्साहन दिया। उसने ऐसी इमारतों का निर्माण करवाया जिनमें हिन्दुओं और मुसलमानों की मिश्रित शैली की स्पष्ट छाप है।

अकबर ने कई ऐसे सामाजिक सुधार भी किए जिनका उसकी प्रजा के जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा। 1582 ई० में उसने एक घोषणा जारी कर गुलामी बंद करवा दी और यह आदेश दे दिया कि युद्ध के कैदी गुलाम न बनाए जाएं। कोई दस वर्ष बाद उसने यह आदेश भी निकाला कि कोई भी विधवा स्त्री अपनी इच्छा के विरुद्ध सती न कराई जाए; और 16 वर्ष की आयु से पहले किसी लड़के का तथा 14 वर्ष की आयु से पहले किसी लड़की का विवाह न किया जाए। उसने शराब की बिक्री और उत्पादन पर भी कई तरह के प्रतिबंध लगाए।

अकबर ने एक ऐसे शासन की स्थापना की जिसमें सभी जातियों और धर्मों के लोगों को उन्नति करने का समान अवसर प्राप्त था। उसके विशाल साम्राज्य में सर्वत्र एक-सी शासन-व्यवस्था और एक-सी न्याय-व्यवस्था थी। अकबर को एक बहुत बड़ा राष्ट्र-निर्माता माना जाता है। (देखें : प्रताप, महाराणा)

अज्तेक (AZTECS) : अमरीकी आदिवासियों की एक शाखा का नाम अज्तेक है। कोलम्बस की अमरीका-यात्रा से लगभग तीन सौ वर्ष पहले अज्तेक लोग उत्तर से दक्षिण की ओर आकर उस प्रदेश में बस गए जिसे अब मेक्सिको कहते हैं। अज्तेकों ने स्थानीय आदिवासियों को बड़ी आसानी से हरा दिया और दो सदियों के भीतर लगभग पूरा मेक्सिको उनके अधिकार में आ गया। उन्होंने वहाँ एक भील के एक द्वीप पर अपनी राजधानी बसाई, जिसका नाम तेनोच्तीत्लान था।

यह एक बड़ा आलीशान शहर था, जिसकी ज्यादातर इमारतें एक हलके रंग के पत्थर की बनी थीं। धूप में वे कांच की तरह चमकती थीं। शहर में कितने ही भव्य मंदिर और सुंदर मकान थे। एक चिड़ियाघर भी था। शहर के चारों ओर भील में तैरते हुए बाग थे। नहरों से सड़कों का काम लिया जाता था।

अज़तेक लोग सोने-चांदी के ज़ेवर बनाते थे। बड़ा बढ़िया कपड़ा बुनते थे। बर्तन बनाने की कला में भी वे बड़े कुशल थे। वे लोग रंग-बिरंगे कपड़े पहनते थे और भांति-भांति के गोदनों से अपने शरीर को सजाया करते थे। सिर पर वे पंखों की बनी टोपी पहनते थे। पुजारियों का उनके यहां बड़ा सम्मान था और पुजारियों की निराली ही सजधज हुआ करती थी।

अज़तेक लोग एक प्रकार की चित्रलिपि भी जानते थे। उनके पुजारियों को आकाश के तारों का काफी ज्ञान था और उन्होंने एक पंचांग भी बना लिया था, जिससे वे तिथियां बता सकते थे। पत्थर पर बना उनका एक पंचांग मिला है जिसका वज़न 20 टन से भी अधिक है।

अज़तेक प्रकृति की शक्तियों की देवी-देवताओं के रूप में पूजा करते थे। सूर्य को वे सबसे बड़ा देवता मानते थे। देवताओं को प्रसन्न करने के लिए वे भांति-भांति के नाच-गान करते थे और नर-बलि भी देते थे। नर-बलि देने के लिए ही वे लड़ाई में दुश्मन को मारने की बजाय ज़िंदा पकड़ने की कोशिश किया करते थे।

अज़तेकों का मेक्सिको में बड़ा दबदबा था। दूसरी जातियां उन्हें खिराज़ देती थीं और उनकी अधीनता स्वीकार करती थीं।

कोलम्बस द्वारा अमरीका की खोज से अज़तेकों के विनाश की घड़ी भी निकट आ गई। अमरीका की खोज के बाद स्पेनवासी बड़ी संख्या में वहां आने लगे और

इस मंदिर की सीढ़ियों पर हजारों बंदियों की बलि दी गई थी।



अमरीका के राष्ट्रपति



उन्होंने इस महादेश को जीतना शुरू कर दिया। हरनेदो कोतज नामक स्पेनी ने एक बड़ी फौज के साथ अज़तेकों

पर हमला कर दिया। अज़तेक लोग बड़ी वीरता से लड़े, पर तोपों और बंदूकों के आगे उनके तीर-कमान और भाले कुछ काम न आए। स्पेनियों ने बड़ी निर्दयता के साथ उनका संहार किया, भयंकर लूटमार की और उनकी राजधानी को मिट्टी में मिला दिया। मेक्सिको की राजधानी, मेक्सिको नगर उसीके खंडहरों पर बसा है।

मेक्सिको के कई मूलवासी अज़तेकों के ही वंशज हैं।

अमरीका के राष्ट्रपति (PRESIDENTS OF THE U.S.A.) : अमरीका में राष्ट्रपति का चुनाव हर चौथे वर्ष होता है। नवम्बर के पहले सोमवार के बाद जो मंगलवार पड़ता है, उस दिन अमरीकी राष्ट्रपति का चुनाव होता है। इसके बाद 20 जनवरी को दोपहर से नये राष्ट्रपति का कार्यकाल आरंभ होता है।

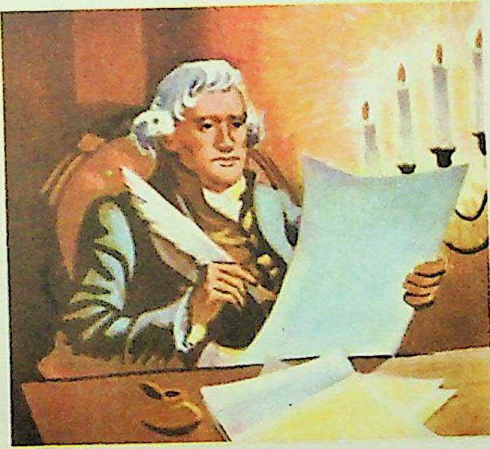
राष्ट्रपति के मरने के बाद उपराष्ट्रपति राष्ट्रपति बन जाता है। नवम्बर, 1963 में राष्ट्रपति केनेडी की हत्या के बाद तत्कालीन उपराष्ट्रपति लिण्डन जॉनसन नये राष्ट्रपति बने थे। बाद में आम चुनाव होने पर वे राष्ट्रपति चुन लिए गए। रूज़वेल्ट के पहले अमरीका में ऐसा कोई कानून नहीं था जिससे यह तय होता कि राष्ट्रपति का चुनाव कितनी बार हो सकता है। रूज़वेल्ट चार बार राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। बाद में 1951 में यह कानून बना कि कोई दो बार से ज्यादा अमरीका का राष्ट्रपति नहीं चुना जा सकता।

अमरीका के राष्ट्रपति

नाम	दल	काल	नाम	दल	काल
जॉर्ज वाशिंगटन	फ़ेडरलिस्ट	1732-1799	रदरफ़ोर्ड बी० हायस	रिपब्लिकन	1822-1893
जॉन एडम्स	फ़ेडरलिस्ट	1735-1826	जेम्स ए० गारफ़ील्ड	रिपब्लिकन	1831-1881
टॉमस जेफ़र्सन	डेमोक्रेट-रिपब्लिकन	1743-1826	चेस्टर ए० आर्थर	रिपब्लिकन	1830-1886
जेम्स मैडिसन	डेमोक्रेट-रिपब्लिकन	1751-1836	ग़ोवर क्लीवलैंड	डेमोक्रेट	1837-1908
जेम्स मनरो	डेमोक्रेट-रिपब्लिकन	1758-1831	बेंजामिन हेरिसन	रिपब्लिकन	1833-1901
जॉन क्विन्सी एडम्स	डेमोक्रेट-रिपब्लिकन	1767-1848	विलियम मैककिनले	रिपब्लिकन	1843-1901
एण्ड्र्यू जेक्सन	डेमोक्रेट	1767-1845	थियोडोर रूज़वेल्ट	रिपब्लिकन	1858-1919
मार्टिन वान बुरेन	डेमोक्रेट	1782-1862	विलियम हॉवर्ड टाफ्ट	रिपब्लिकन	1857-1930
विलियम हेनरी हेरिसन	ह्विग	1773-1841	वुडरो विल्सन	डेमोक्रेट	1856-1924
जॉन टाइलर	ह्विग	1790-1862	वारेन जी० हार्डिंग	रिपब्लिकन	1865-1923
जेम्स के० पोलक	डेमोक्रेट	1795-1849	काल्विन कूलिज	रिपब्लिकन	1872-1933
जकाररी टेलर	ह्विग	1784-1850	हर्बर्ट हूवर	रिपब्लिकन	1874-
मिलार्ड फ़िल्मोर	ह्विग	1800-1874	फ्रैंकलिन डी० रूज़वेल्ट	डेमोक्रेट	1882-1945
फ्रैंकलिन पीयर्स	डेमोक्रेट	1804-1869	हैरी एस० ट्रूमैन	डेमोक्रेट	1884-
जेम्स बकनान	डेमोक्रेट	1791-1868	ड्वाइट डी० आइज़नहाउवर	रिपब्लिकन	1890-
अब्राहम लिंकन	रिपब्लिकन	1809-1865	जॉन एफ़० कैनेडी	डेमोक्रेट	1917-1963
एण्ड्र्यू जॉनसन	डेमोक्रेट	1808-1875	लिण्डन बी० जॉनसन	डेमोक्रेट	1908-
युलिसिस एस० ग्रांट	रिपब्लिकन	1822-1885			

अमरीकी स्वतंत्रता की घोषणा (DECLARATION OF INDEPENDENCE) : संयुक्त राज्य अमरीका की स्थापना वास्तव में 4 जुलाई, 1776 को हुई थी। उसी दिन अमरीकी स्वतंत्रता की घोषणा स्वीकार की गई थी।

उत्तरी अमरीका में बसे 13 उपनिवेशों के बहुत-से निवासी एक लम्बे समय से इंग्लैंड के आधिपत्य से स्वतंत्र होना चाहते थे। परन्तु कोई भी उपनिवेश इतना शक्तिशाली नहीं था कि वह अकेला ही स्वतंत्रता की घोषणा कर पाता। अंत में 1775 में सभी उपनिवेशों के नेताओं ने एक महाद्वीपीय कांग्रेस का आयोजन किया। अगले साल



टॉमस जेफ़र्सन स्वतंत्रता की घोषणा लिखते हुए।

उन्होंने मिलकर काम करने और अपनी स्वतंत्रता की घोषणा करने का निश्चय किया। इस घोषणापत्र के लेखन का अधिकांश कार्य टॉमस जेफ़र्सन ने किया था।

(देखें : इतिहास, अमरीका का)

अशोक (ASHOKA 292?-236 ई० पू०) : सम्राट अशोक की गिनती संसार के सबसे महान राजाओं में की जाती है। वे चन्द्रगुप्त मौर्य के पोते और बिन्दुसार के पुत्र थे। अशोक जब राजकुमार थे तो उन्हें विद्रोह को दबाने के लिए तक्षशिला भेजा गया। वहां का शासन उन्होंने बड़ी कुशलता से किया। वे शीघ्र ही बहुत लोकप्रिय हो गए। तब बिन्दुसार ने उन्हें उज्जैन का शासक बना दिया।

बिन्दुसार की मृत्यु पर वे मगध के सिंहासन पर बैठे। राज्य संभालते ही उन्होंने सारे देश में शांति स्थापित की। वे बड़े प्रतापी राजा थे। उनका राज्य अफगानिस्तान से मैसूर तक और ब्रह्मपुत्र नदी से सौराष्ट्र तक फैला था।

सिंहासन पर बैठने के आठ वर्ष बाद उन्होंने कलिंग (वर्तमान उड़ीसा) पर चढ़ाई की। युद्ध में दोनों ओर के लाखों सैनिक मारे गए और लाखों ही घायल हुए। इस युद्ध का अशोक के हृदय पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे भविष्य में किसी भी देश

पर आक्रमण नहीं करेंगे। तब से उनका जीवन ही बदल गया।

उन्होंने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। यज्ञों में पशु-बलि बंद करवा दी। उपयोगी व दूध देनेवाले पशुओं का वध बंद कर दिया गया। राज्य में जगह-जगह उन्होंने शिलालेख, स्तम्भलेख और गुहालेख लिखवाए। उनमें मनुष्य के चरित्र को ऊंचा उठानेवाली, धर्म और संसार के कल्याण की बातें लिखी गईं। बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए एशिया के कोने-कोने में भिक्षु भेजे गए। बौद्ध धर्म के प्रसार का सबसे अधिक श्रेय उन्हींको है। वे दूसरे धर्मों का भी आदर करते थे।

अशोक ने प्रजा को सुख पहुंचाने के लिए भी बड़े-बड़े काम किए। राज्य में जगह-जगह और पड़ोसी देशों तक में मनुष्यों और पशुओं के लिए चिकित्सालय खुलवाए। सड़कों पर छायादार पेड़ लगवाए। आठ-आठ कोस पर यात्रियों के लिए धर्मशालाएं बनवाईं। अनगिनत कुएं और तालाब खुदवाए, बाग-बगीचे लगवाए। गमियों के लिए सड़कों पर और नगरों व ग्रामों में प्याउओं की व्यवस्था की। अशोक बहुत ही योग्य शासक थे। उनके राज्य में सर्वत्र सुख और शांति थी।

आज़ाद, चन्द्रशेखर (CHANDRASHEKHAR AZAD 1905-1931) : भारत के क्रांतिकारी शहीदों में चन्द्रशेखर आज़ाद का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है।

उनका जन्म अलीराजपुर स्टेट में एक बहुत ही गरीब परिवार में हुआ था। चन्द्रशेखर जब कुछ बड़े हुए तो पढ़ने के लिए काशी चले गए। वे काशी में ही थे कि 1921 का असहयोग आन्दोलन छिड़ गया। चन्द्रशेखर भी उसमें पकड़ लिए गए। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी, फिर भी उन्हें थाने में रात को ओढ़ने के लिए कोई कपड़ा नहीं दिया गया। आधी रात को पुलिस इंस्पेक्टर उनकी कोठरी में गया। उसने सोचा कि लड़का सर्दी से अकड़ गया होगा। पर वह यह देखकर दंग रह गया कि चन्द्रशेखर डंड पेल रहे हैं और उनके शरीर से पसीना चूर रहा है।

अगले दिन उन्हें अदालत में पेश किया गया। मजिस्ट्रेट ने पूछा, 'तुम्हारा नाम?' जवाब मिला, 'आज़ाद'। 'बाप का नाम?' 'स्वतंत्र'। 'घर कहां है?' 'जेलखाना'। मजिस्ट्रेट ने उन्हें पंद्रह बेंत लगाने का हुक्म दिया। बेंत के पड़ते ही चन्द्रशेखर ने नारा लगाया, 'भारतमाता की जय!' बेंतों से उनके शरीर की चमड़ी उधड़ गई, खून बहने लगा, घाव हो गए। पर वे हर बेंत के बाद भारत-माता की जय बोलते रहे।

कुछ दिनों बाद आज़ाद क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आ गए। अस्त्र-शस्त्र खरीदने के लिए उन्हें रुपयों की जरूरत होती थी, इसलिए क्रांतिकारियों को कभी-कभी डाके भी डालने पड़ते थे। एक दिन आज़ाद और उनके

साथी एक घर में डाका डालने गए। वहां उनका एक साथी घर की किसी स्त्री से छेड़छाड़ करने लगा। आज़ाद ने उसे वहीं अपनी गोली से ठंडा कर दिया। उस स्त्री से क्षमा मांगी और वे खाली हाथ वापस आ गए।

क्रांतिकारियों ने अब सरकारी खज़ाना लूटने की योजना बनाई। रेलवे की आमदनी डाकगाड़ी से लखनऊ भेजी जाती थी। 9 अगस्त, 1925 को काकोरी के निकट दस क्रांतिकारी वीरों ने जंजीर खींचकर गाड़ी रोक ली और वे खज़ाना लूटकर ले गए। इस काण्ड से सारे देश में खलबली मच गई। पुलिस ने जगह-जगह छापे मारे। एक-एक कर अनेक क्रांतिकारी पकड़े गए, पर आज़ाद हाथ नहीं आए।

बाद में आज़ाद की भेंट भगतसिंह से हुई। दोनों ने क्रांतिकारी दल का नये सिरे से संगठन किया। आज़ाद दल के नेता चुने गए। उन्हीं दिनों देश में साइमन कमीशन का बायकाट हुआ। लाहौर में उसके विरुद्ध जो प्रदर्शन हुआ उसमें पुलिस अफसर सांडर्स ने लाला लाजपत-राय के सिर पर लाठी मारी। कुछ दिनों बाद उसी चोट से उनका देहांत हो गया। उनकी मौत का बदला लेने के लिए आज़ाद, भगतसिंह और राजगुरु ने एक दिन सांडर्स को अपनी गोलियों से सदा के लिए सुला दिया।

असेम्बली में बम फेंकने पर जब भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी हो गई, तो पुलिस हाथ धोकर आज़ाद के पीछे पड़ गई। पर आज़ाद की प्रतिज्ञा थी कि वे जीते-जी पुलिस के हाथ नहीं आएंगे।

27 फरवरी, 1931 को वे इलाहाबाद के ऐल्फ्रेड पार्क में बैठे थे कि पुलिस ने पार्क को चारों ओर से घेर लिया। आज़ाद एक पेड़ की आड़ ले गोलियां चलाने लगे। उनका निशाना अचूक था। पुलिस के सिपाहियों की संख्या हजार से ऊपर थी, फिर भी उनकी हिम्मत आगे बढ़ने की नहीं हुई। आज़ाद के पास जब एक ही गोली रह गई तो वह उन्होंने अपने ही सीने में मार ली। उस दिन इलाहाबाद के घर-घर में मातम मनाया गया।

आज़ाद सचमुच आज़ाद थे। वे जब तक जिए, आज़ाद रहे।

आर्थर, राजा (KING ARTHUR): इंग्लैंड के इस राजा के बारे में उसी तरह अनेक कहानियां प्रचलित हैं, जैसे हमारे यहां राजा भोज या विक्रमादित्य के बारे में। विक्रमादित्य के नवरत्नों की ही तरह राजा आर्थर के दरबार में भी 'गोल मेज़ पर बैठनेवाले सरदार' (Knights of the Round Table) थे।

आर्थर के राजा बनने के बारे में यह कहानी कही जाती है कि जब इंग्लैंड का राजा मर गया, तो नया राजा चुनने का सवाल उठा। राजपंडित मेलीनि ने अपनी जादुई तलवार को लोहे की एक निहाई में घुसा दिया और कहा



आर्थर ने निहाई से तलवार खींच ली।

कि जो आदमी इसे निहाई से निकालेगा वही राजा बनेगा। जोर कई ने आजमाया, पर सफल आर्थर ही हुआ और उसे गद्दी पर बैठा दिया गया। आर्थर ने न्यायपूर्वक शासन करने की कसम खाई।

आर्थर के राज के बारे में कोई बात पक्की तरह मालूम नहीं है। ऐसा ख्याल किया जाता है कि लगभग 1400 वर्ष पहले इस नाम के एक वीर, बुद्धिमान और न्यायी राजा का इंग्लैंड के कुछ भाग पर राज्य था और वह देश के बड़े भाग को एक झंडे के नीचे लाया था।



आर्थर ने न्यायपूर्वक शासन करने की कसम खाई।

आर्य (ARYANS): भारतीय संस्कृति और जनता जिन जातियों के मेल से बनी हैं, उनमें आर्य और द्रविड़ प्रमुख हैं। आर्य अत्यंत प्राचीन काल में भारत में आए। उस समय यहां द्रविड़ों की प्रधानता थी। आर्यों ने उन्हें हराकर दक्षिण की ओर भगा दिया और स्वयं उत्तर भारत के शासक हो गए।

आर्य कहां से भारत में आए, इस संबंध में बड़ा मत-भेद है। कुछ लोग उन्हें मध्य एशिया से भारत आया मानते हैं, कुछ यूरोप से, कुछ आर्कटिक प्रदेश से। कुछ

लोग उन्हें भारत में ही जन्मा मानते हैं। जो हो, यह निश्चित है कि आर्य सर्वप्रथम पंजाब और सिंध के प्रदेशों में प्रकट हुए। उस समय यहां द्रविड़ बड़े-बड़े नगर (मोहेन-जोदड़ो, हड़प्पा आदि) बनाकर रहते थे। आर्यों का उनसे संघर्ष हुआ। पंजाब में भली-भांति जम जाने के बाद वे पूर्व तथा दक्षिण में फैले। उन्होंने जिस संस्कृति को जन्म दिया, वह आर्य संस्कृति कहलाई और वही भारत की संस्कृति भी हुई। उसमें द्रविड़ संस्कृति की भी बहुत-सी विशेषताएं मिल गई।

पंजाब उस समय सप्तसिंधु कहलाता था। यहां सात नदियां बहती थीं—वर्तमान पांच नदियां और सरस्वती तथा दृशद्वती। आर्यों ने इसमें छोटे-छोटे गांव बसाए। यज्ञ करना उनकी प्रमुख विशेषता थी। 'यज्ञ' का अर्थ है, अग्नि के चारों ओर एकत्र होकर स्तुति पढ़ना और घी की आहुतियां डालना। यह उनका मुख्य धर्मकृत्य था। और इसके चारों ओर उनका समाज एकत्र होता था।

यज्ञ के समय जो स्तुतियां पढ़ी जाती थीं उन्हें विशेष प्रतिभाशाली लोग रचते थे। उनमें देवताओं से विभिन्न वस्तुएं देने की प्रार्थना की जाती थी। समाज की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन होता था। स्तुतियां रचनेवाले 'ऋषि' कहलाते थे। ऋषियों के परिवारों में सभी स्तुतियां मुंजबानी याद करके पीढ़ियों तक सुरक्षित रखी जाती थीं। कालान्तर में वेदव्यास ने इन सब स्तुतियों का संकलन करके उनके चार भाग कर दिए। ये ही 'वेद' कहलाए।

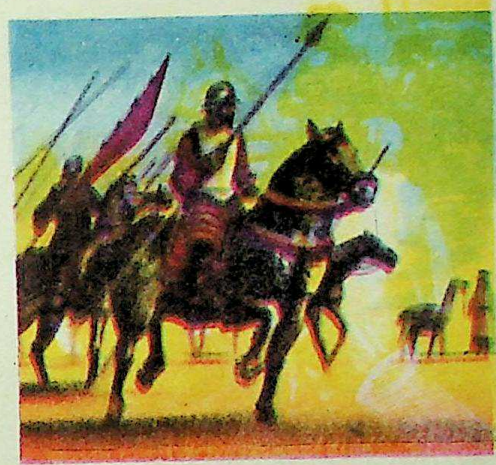
इन्द्र आर्यों के नेता थे। उनके गुरु का नाम बृहस्पति था। ये दोनों ही बड़े योद्धा थे। इनके नेतृत्व में आर्यों ने अनेक लड़ाइयां लड़ीं। वेदों में इन लड़ाइयों का मनोरंजक वर्णन मिलता है।

आर्य सोम-पान के बड़े प्रेमी थे। सोम एक विशेष प्रकार की लता से निकाला हुआ रस था, जिसमें दूध, दही तथा अन्य वस्तुएं मिलाकर पिया जाता था। इसे पीने से बड़ा उत्साह उत्पन्न होता था। लोग सोम पीते थे और फिर लड़ने जाते थे।

आरंभिक आर्य संभवतः चार वर्णों में विभाजित नहीं थे, परंतु समय बीतने के साथ ये वर्ण बनते गए। आर्य स्वयं गोरे, लंबे और सुरुप थे, जबकि द्रविड़ काले और नाटे थे। आर्य उन्हें 'दास' कहते थे। युद्ध में इनको हराने के पश्चात् उन्होंने इन्हें अपनी समाज-व्यवस्था में निचला दर्जा देकर सम्मिलित कर लिया।

आर्यों की समाज-व्यवस्था का आधार 'कुटुंब' था। कई कुटुंबों को मिलाकर 'ग्राम' बनता था और कई ग्रामों को मिलाकर 'विस' बनता था। विस का प्रधान 'विसपति' कहलाता था। विसों के ऊपर 'जन' थे, जिनका अधिकारी 'राजा' होता था। परंतु शासन-व्यवस्था लोकतांत्रिक थी। राजा को परामर्श देने के लिए सभा तथा समिति बनाई जाती थी, जिसमें जनता के प्रतिनिधि होते थे।

आर्यों का कौटुंबिक जीवन सुखी था। स्त्रियों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। वे सुन्दर वस्त्र तथा आभूषण पहनते थे। खाने में चावल, जौ, दूध, घी, मांस आदि का प्रयोग होता था। आर्य नाच, गाना, शिकार तथा जुए के शौकीन थे। उनके मकान छोटे तथा मिट्टी और लकड़ी के बने होते थे। कृषि उनका प्रधान उद्यम था। वे लेखन कला से संभवतः परिचित नहीं थे, परंतु उत्कृष्ट काव्य की रचना कर मुंजबानी सुनाते थे।



पिञ्जारो एक निर्दय आक्रान्ता था।

इंका जाति (INCAS) : अमरीका की एक आदिवासी जाति इंका थी। इंका साम्राज्य वर्तमान इक्वेडोर राज्य से लेकर दक्षिणी अमरीका के पश्चिमी तट के साथ पेरू, बोलिविया और चिली तक फैला था। इसकी राजधानी, कुस्को समुद्र-सतह से दो मील ऊंची थी। इंका जाति के अन्य कई नगर भी थे।

इंका जाति के लोग बहुत अच्छे भवन-निर्माता थे। अपनी इमारतों में वे ग्रेनाइट के शिलाखंडों का प्रयोग करते थे, जिनमें कुछ सौ टन से भी अधिक वजन के थे और मीलों दूर से लाए गए थे। मात्र पत्थर के औजारों से ही वे कैसे इतनी बड़ी शिलाओं को काटते थे और घोंड़ों, बैलों या मशीनों के बिना ही उन्हें कैसे ढोकर लाते थे, यह एक रहस्य है। वे गारे का प्रयोग नहीं करते थे। परन्तु जुड़ाई इतनी कुशलता से की जाती थी कि दो जोड़ों के बीच चाकू की धार भी नहीं घुस सकती थी। उनके महलों, मन्दिरों और दुर्गों के आश्चर्यजनक कौशल को देखकर स्पेनियों ने उनके राज्य को विश्व का आठवां आश्चर्य कहा था। पहाड़ों के किनारों पर वे लोग सड़कें भी बनाते थे, जिनमें एक सड़क 1,500 मील लम्बी थी। गहरी खाइयों के ऊपर उन्होंने पुल बनाए थे। सड़कों पर हरकारे समाचार लेकर दौड़ते थे।

इंका निर्माताओं ने पहाड़ों की ढलानों पर सीढ़ियां काटकर बाग लगाए थे। उन्होंने जलाशय और सिंचाई

की नहरें भी तैयार की थीं। वे लामा, बैल और सूअर पालते थे और अनाज भी उगाते थे।

वे लिखना नहीं जानते थे, पर बुनाई करने और बर्तन बनाने में कुशल थे। बांसुरी, तुरही और दूसरे बाजे भी वे बजाते थे।

वे सूर्य के उपासक थे और उनके पुजारियों को सूर्य, तारों और ग्रहों के बारे में पर्याप्त ज्ञान था। वे सोने को सूर्य का आंसू कहते थे। कुज़को का सूर्य मन्दिर सोने से मड़ा था। इंका जाति का शासक भी इंका ही कहलाता था। प्रजा उसे देवता समझती थी। उसका स्वर्ण-भंडार अकूत था। कहा जाता है कि राजा वर्ष में एक बार स्वर्ण-धूलि अपने शरीर पर पोतकर टिटिकाका भील में स्नान करने जाता था। एक दूसरी किंवदन्ती है कि कुज़को नगर के मध्य में बने एक सार्वजनिक स्थान की चहारबंदी सोने की भारी जंजीरों से बनी थी। जब स्पेनी विजेता पहुंचे तो उन्हें भील में फेंक दिया गया, उसके बाद वे जंजीरें फिर नहीं मिलीं।

इंका जाति को जीतनेवाला पिज़ारो एक निर्दय स्पेनी योद्धा था जिसने इंका जाति की स्वर्णराशि को प्राप्त करने के लिए 500 साल पुरानी इस सभ्यता का सर्वनाश कर डाला। उसने कुज़को पहुंचकर राजा इंका को बंदी बना लिया। बंदीगृह में इंका ने वादा किया कि वह जहां तक उसका हाथ पहुंचता है वहां तक कमरे में सोना भरकर देगा। पिज़ारो ने सोना ले लिया और राजा की भी हत्या कर दी।

इतिहास (HISTORY) : आज से पहले जो कुछ होता रहा है, उसीकी कहानी है इतिहास। इतिहास विभिन्न इंका ने हाथ जितना ऊंचा सोने का ढेर देने का वायदा किया।



युगों के विचारों की भी कहानी है।

मानव की कहानी आज से लाखों वर्ष पूर्व शुरू हुई। शायद आदमी आज से कोई दस लाख वर्ष पहले पृथ्वी पर जन्मा। हमें इस कहानी के शुरू के हिस्से के बारे में अधिक पता नहीं है। लाखों वर्ष तक हमारे पूर्वज आगे बढ़ने का प्रयत्न करते रहे। लेकिन इस संघर्ष का कोई लेखा-जोखा उन्होंने नहीं रखा। रख भी नहीं सकते थे। वे लिखना-पढ़ना नहीं जानते थे।

सच तो यह है कि लिखित इतिहास की तुलना में अलिखित इतिहास कहीं अधिक बड़ा और महत्वपूर्ण है। लोगों को लिखना-पढ़ना सीखे अभी मुश्किल से पांच हजार वर्ष गुजरे हैं। मानव के सदियों के इतिहास का उन चीजों से पता चलता है जो उसने बनाई और अपने पीछे छोड़ गया।

लिखित इतिहास को तीन भागों में बांटा गया है : प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक। प्राचीन इतिहास में ईसा के जन्म से तीन हजार वर्ष पूर्व तक की घटनाओं से लेकर ईसवी सन् 500 तक की घटनाएं शामिल की जाती हैं। मध्यकाल में सन् 1500 तक की घटनाएं और आधुनिक काल के इतिहास में आज तक की घटनाएं शामिल की जाती हैं।

विभिन्न देशों का इतिहास विभिन्न ढंग का है। पूर्व के देशों के निवासियों ने यूरोप के लोगों से बहुत पहले

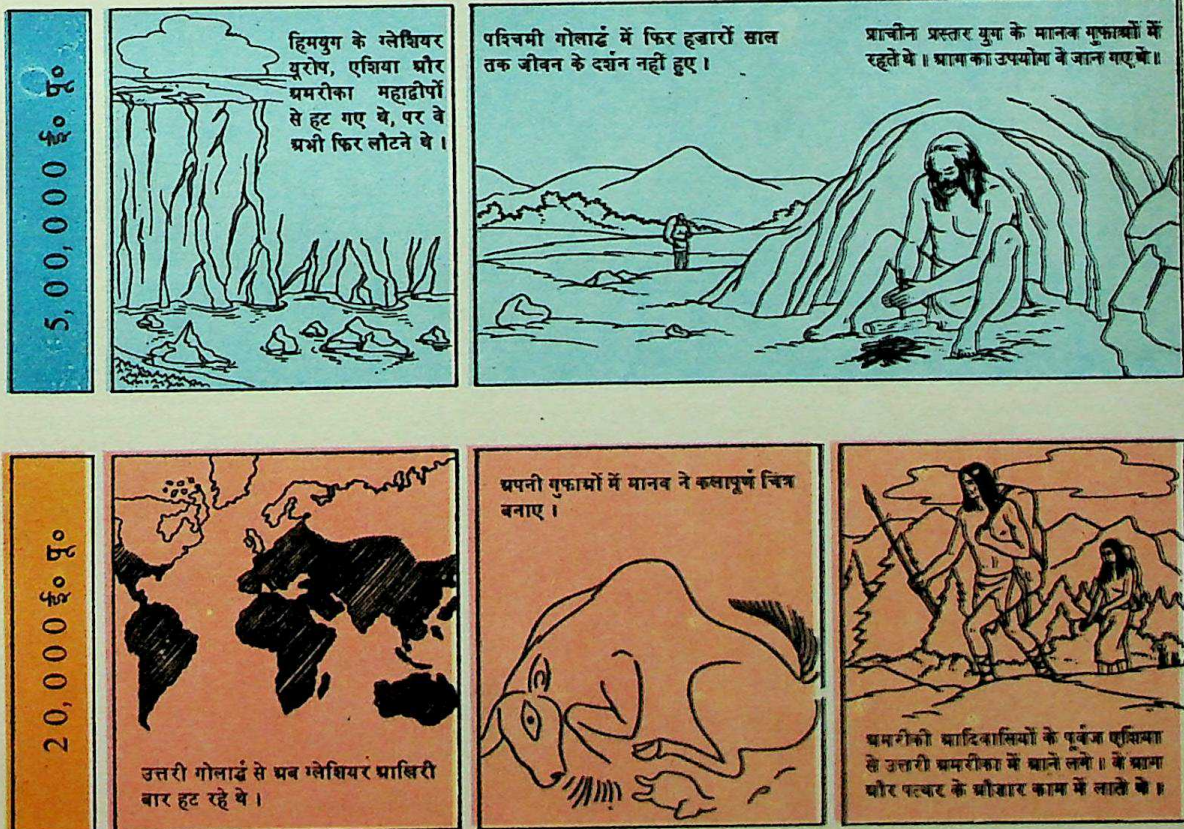
लिखना-पढ़ना सीख लिया था। जब एशिया और यूरोप में लोग बड़े-बड़े मन्दिर और गिरजाघर बना रहे थे तो अफ्रीका के लोग घास-फूस की भोंपड़ी से बड़ी कोई चीज बनाने की स्थिति में नहीं थे।

भारत का इतिहास वैदिक संस्कृति से आरंभ होता है। लेकिन मोहेनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाइयों से और भी पुराने इतिहास का पता चला है। वैदिक काल के बाद भगवान महावीर और भगवान बुद्ध का काल आता है। फिर मौर्यों का साम्राज्य स्थापित हुआ। उसके पतन के बाद हिन्दू-काल का स्वर्णयुग आरंभ हुआ।

महमूद गजनवी तथा अन्य मुसलमान आक्रामकों के हमलों के बाद बाबर ने मध्यकाल में मुगल साम्राज्य की नींव डाली। इस साम्राज्य की नींव को हुमायूँ, अकबर, जहांगीर और शाहजहां ने और शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न किया। लेकिन औरंगजेब ने अपनी गलतियों से इसकी जड़ें खोद दीं।

मराठों के बाद आधुनिक काल के शुरू में अंग्रेज आए। वे सन् 1947 में भारत के स्वाधीन होने के बाद चले गए। सन् 1950 में भारत में नया संविधान लागू हुआ।

मानव के इतिहास में कुछ घटनाएं बड़े महत्व की हैं। अगले कुछ पृष्ठों में कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का चित्र-मय विवरण है।



इतिहास

6000 ई० पू०

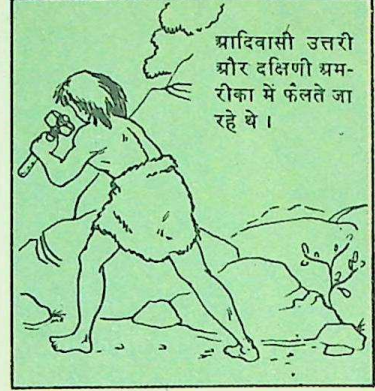
पश्चिमी एशिया की उपजाऊ घाटियों में मानव ने खेती और पशु-पालन सीखा।



यूरोप में मानव भोजन के लिए अभी भी इधर-उधर भटकता था, पर वह कुत्ता पालने लगा था।



आदिवासी उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका में फैलते जा रहे थे।



3100 ई० पू०

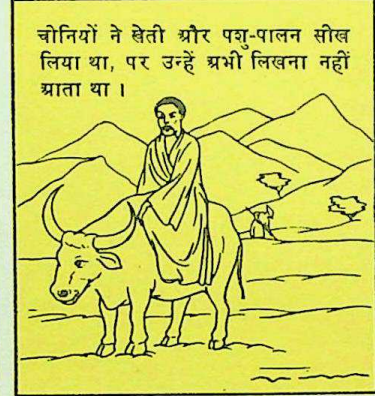
मिस्र एक संयुक्त राज्य बन गया जिसकी राजधानी मेम्फिस थी।



मेसोपोटामिया के लोग लिखना जानते थे। उनके पास पहियेदार गाड़ियां और तांबे के हथियार थे।

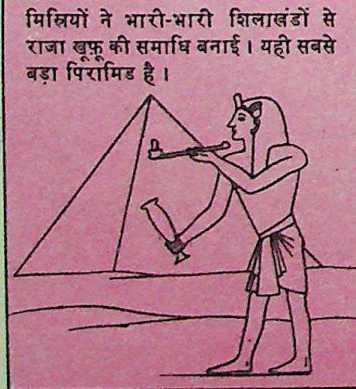


चीनियों ने खेती और पशु-पालन सीख लिया था, पर उन्हें अभी लिखना नहीं आता था।



2600 ई० पू०

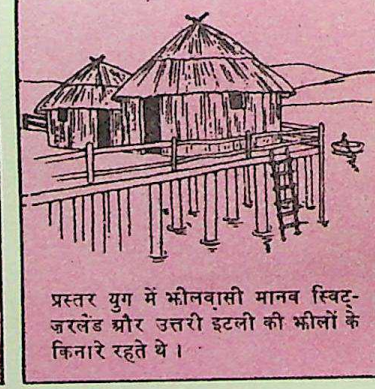
मिस्रियों ने भारी-भारी शिलाखंडों से राजा खूफू की समाधि बनाई। यही सबसे बड़ा पिरामिड है।



मेसोपोटामिया के लोगों ने ईंटों से अपने विशाल मंदिर बनाए।



प्रस्तर युग में भीलवासी मानव स्विट्जरलैंड और उत्तरी इटली की भीलों के किनारे रहते थे।

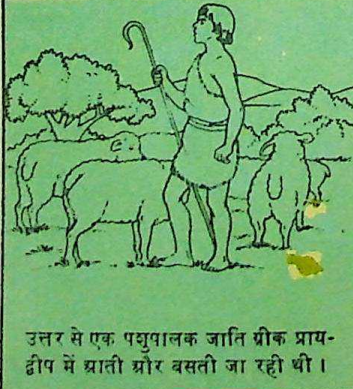
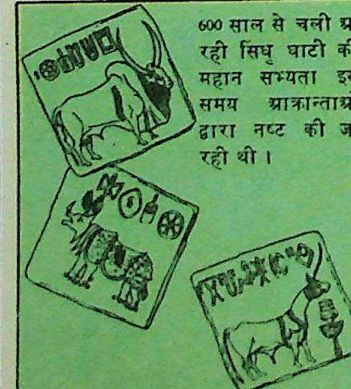


1750 ई० पू०

बेबीलोनिया के सुप्रसिद्ध शासक हम्मूराबी ने न्यायमंहिता तैयार करवाई।

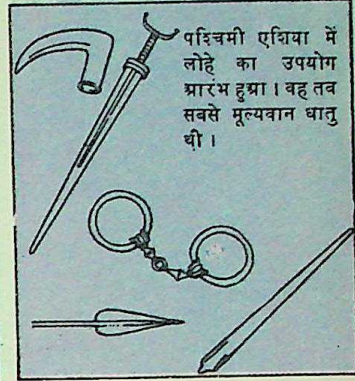
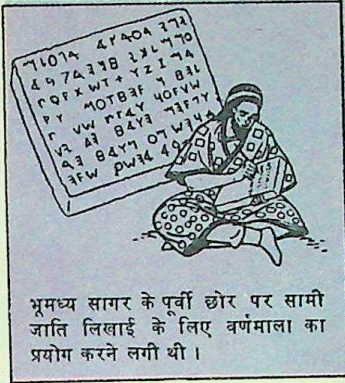


600 साल से चली आ रही सिंधु घाटी की महान सभ्यता इस समय आक्रान्ताओं द्वारा नष्ट की जा रही थी।

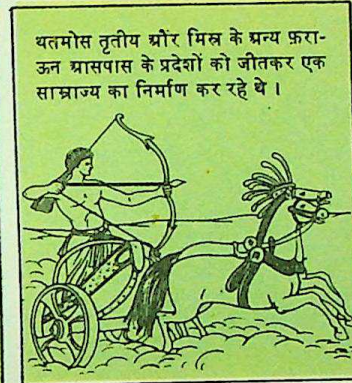
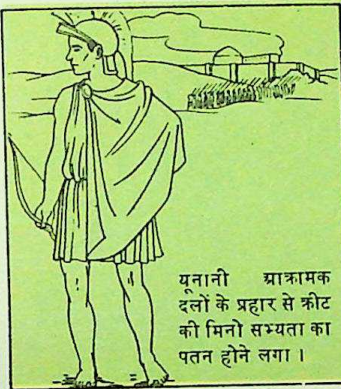


उत्तर से एक पशुपालक जाति ग्रीक प्राय-द्वीप में आती और बसती जा रही थी।

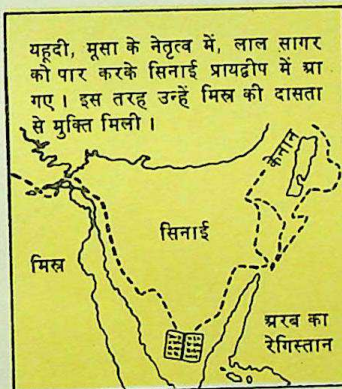
1500 ई० पू०



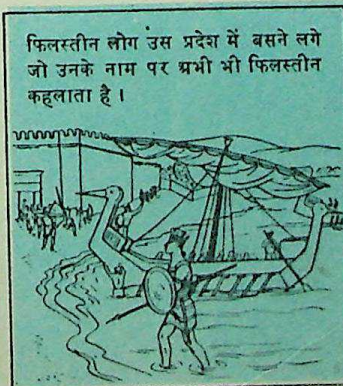
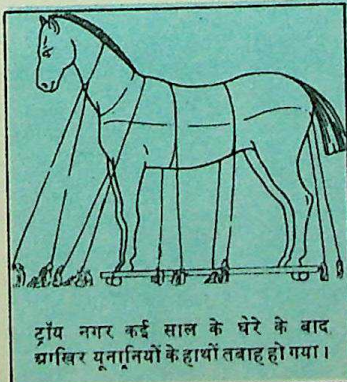
1400 ई० पू०



1275 ई० पू०

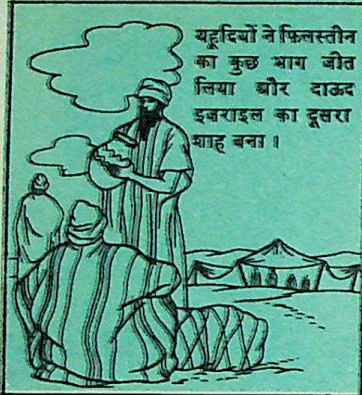


1200 ई० पू०

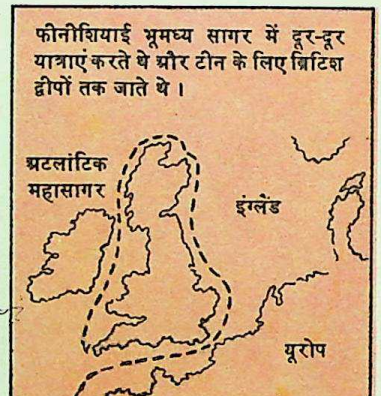
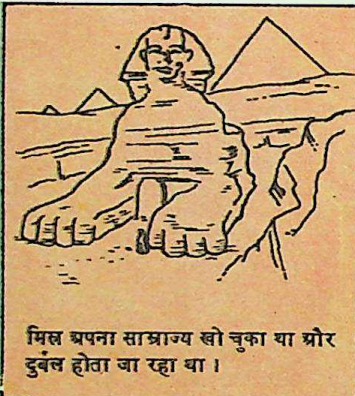
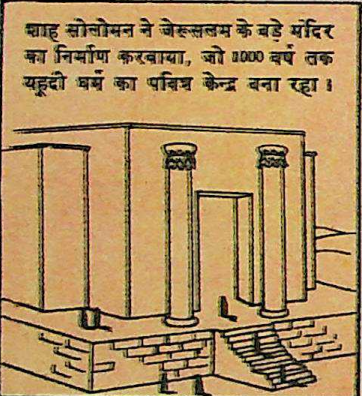


इतिहास

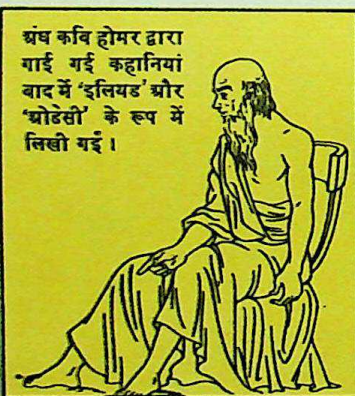
1002 ई० पू०



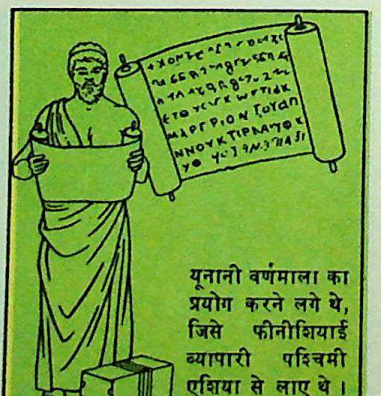
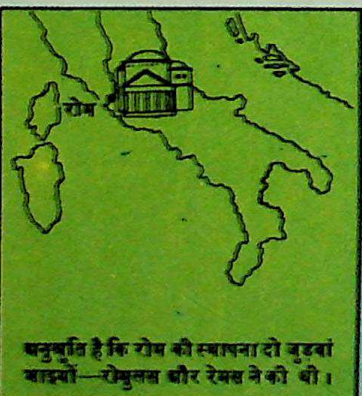
959 ई० पू०



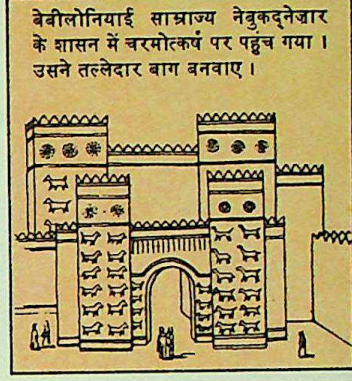
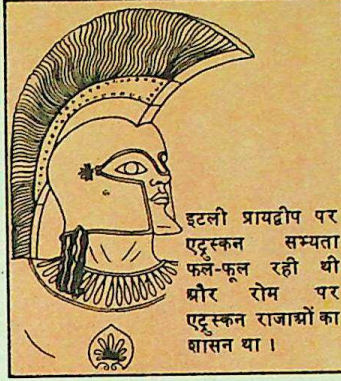
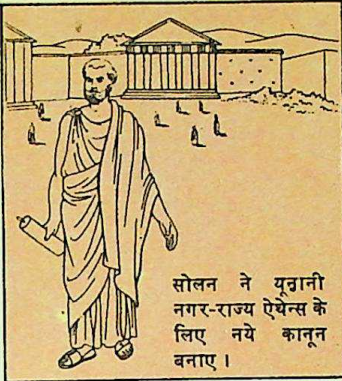
846 ई० पू०



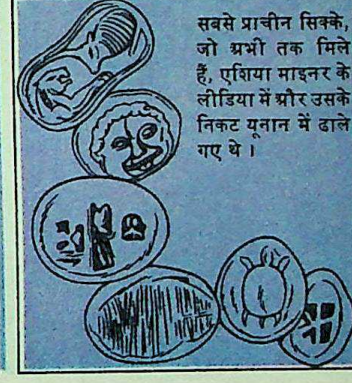
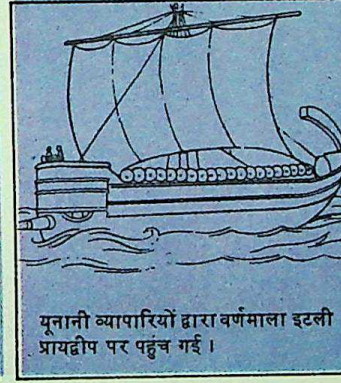
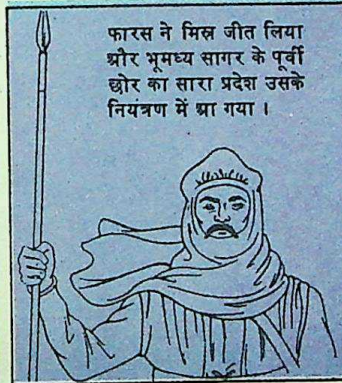
753 ई० पू०



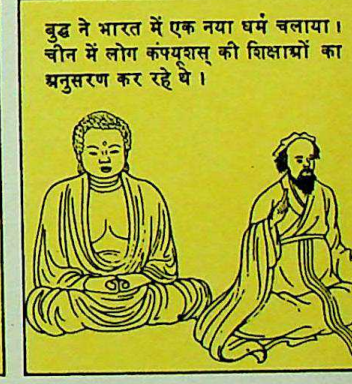
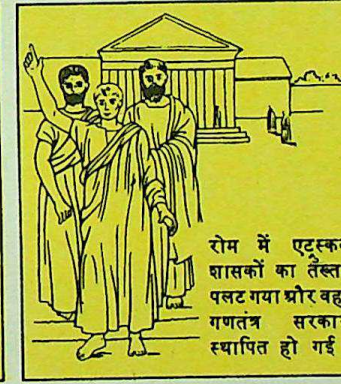
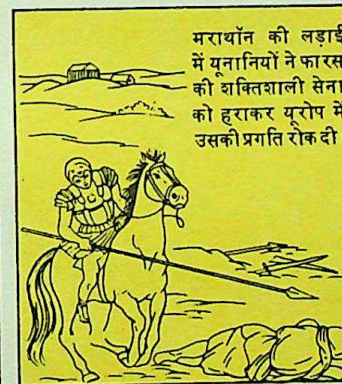
594 ई० पू०



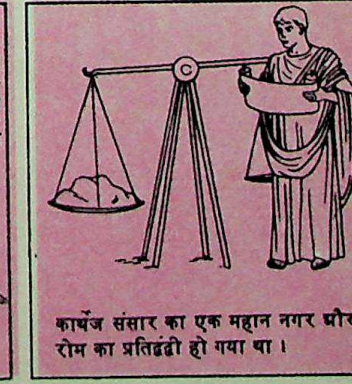
525 ई० पू०



490 ई० पू०



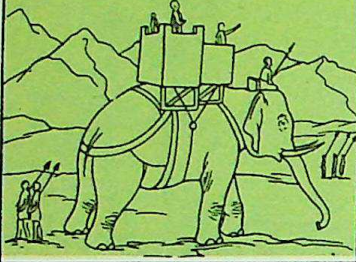
323 ई० पू०



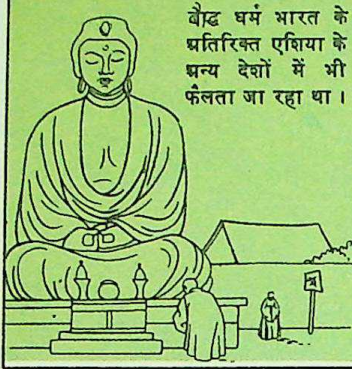
इतिहास

202 ई० पू०

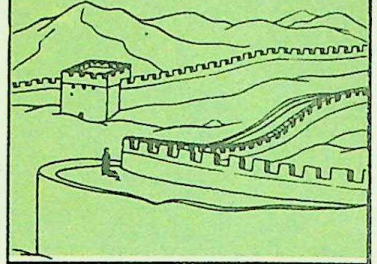
कार्थेज के महान सेनापति हनीबाल ने भारी सेना लेकर रोम पर चढ़ाई की। पर वह हार गया।



बौद्ध धर्म भारत के अतिरिक्त एशिया के अन्य देशों में भी फैलता जा रहा था।



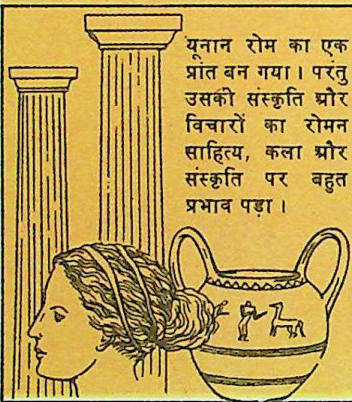
उत्तर के मंगोल आक्रान्ताओं को रोकने के लिए चीन में एक बड़ी दीवार बनाई गई।



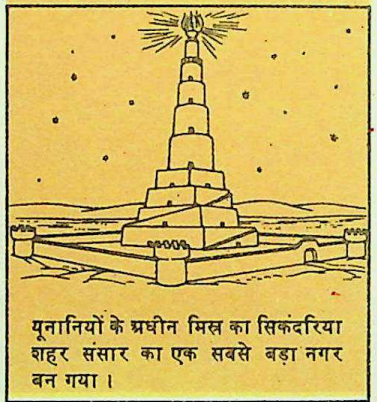
146 ई० पू०



रोमन सेनाओं ने कार्थेज को नष्ट कर दिया और रोम का पश्चिम में कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं रहा।



यूनान रोम का एक प्रांत बन गया। परंतु उसकी संस्कृति और विचारों का रोमन साहित्य, कला और संस्कृति पर बहुत प्रभाव पड़ा।

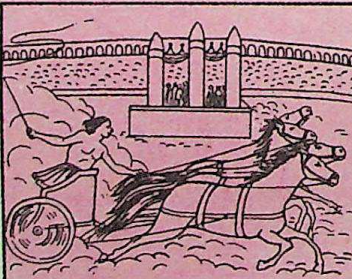


यूनानियों के अधीन मिस्र का सिकंदरिया शहर संसार का एक सबसे बड़ा नगर बन गया।

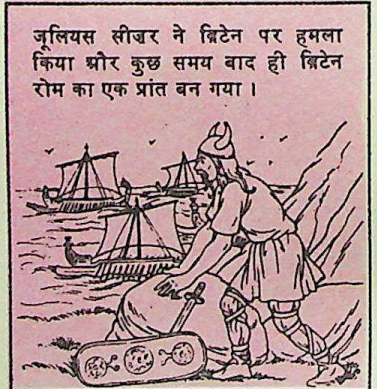
4 ई० पू०



बेथलेहम में, जो उस समय रोमन प्रांत जूडिया का एक छोटा नगर था, ईसा मसीह का जन्म हुआ।



ऑगस्टस का शासनकाल रोमन-साम्राज्य का स्वर्णयुग था। भूमध्य सागर के आसपास के सारे क्षेत्र पर रोम का शासन था।

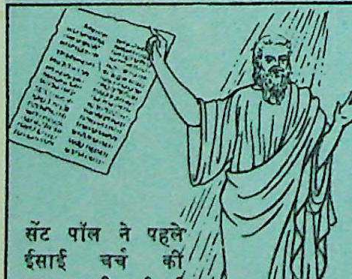


जुलियस सीज़र ने ब्रिटेन पर हमला किया और कुछ समय बाद ही ब्रिटेन रोम का एक प्रांत बन गया।

सन् 105



चीन में कागज बनाने की कला का आविष्कार हुआ।

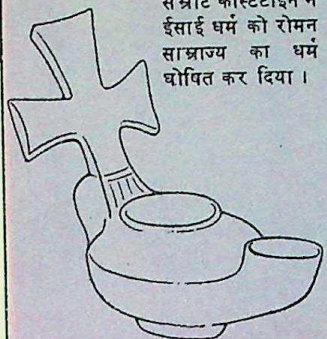


सेंट पॉल ने पहले ईसाई चर्च की स्थापना की। ईसाई धर्म अब रोमन साम्राज्य में फैलता जा रहा था।



79 ई० में विसूवियस ज्वालामुखी के फूटने पर रोमन नगर पोम्पेई और हर्क्युलेनियम लावे की राख में दब गए।

313



सम्राट कांस्टेंटाइन ने ईसाई धर्म को रोमन साम्राज्य का धर्म घोषित कर दिया।

भारत में बौद्ध धर्म का हास और हिन्दू धर्म का अभ्युदय हो रहा था। हिन्दू संस्कृति अपने स्वर्णयुग में प्रवेश करने वाली थी।



जापान में एक उन्नत सभ्यता फल-फूल रही थी। चीन से उसने लिखने की कला सीख ली थी।



410



उत्तर के जर्मन कबीले — विसीगॉथ ने, ऐलेरिक के नेतृत्व में, रोम में खूब लूट-मार की।

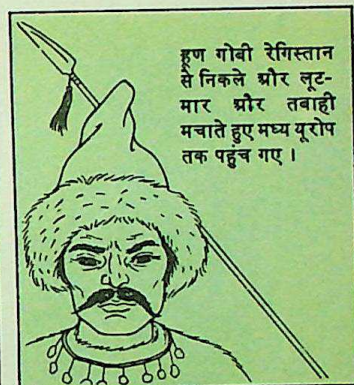


कुस्तुनिया

एशिया
माइनर

भूमध्य सागर

330 ई० में रोमन साम्राज्य की राजधानी रोम की जगह कुस्तुनिया कर दी गई।



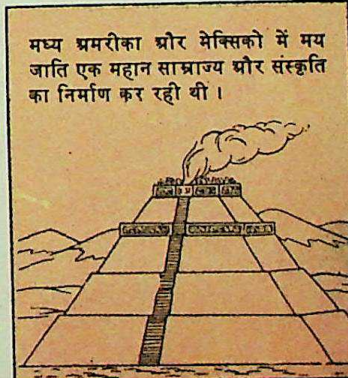
हुण गोबी रेगिस्तान से निकले और लूट-मार और तबाही मचाते हुए मध्य यूरोप तक पहुंच गए।

476

उत्तर के जर्मन कबीलों ने रोम को नष्ट कर दिया और यूरोप में मध्ययुग शुरू हो गया।



इंडोचायना में स्वेर आसपास के प्रदेशों को जीतकर एक साम्राज्य खड़ा कर रहे थे। अंग्कोर उनकी राजधानी थी।

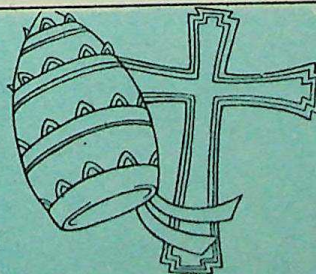


मध्य अमरीका और मेक्सिको में मय जाति एक महान साम्राज्य और संस्कृति का निर्माण कर रही थी।

622



अरब में एक नये धर्म, इस्लाम, की स्थापना हुई, जो शीघ्र ही सारे पश्चिम एशिया में फैल गया।



रोम ईसाई जगत् का शासन-केन्द्र बन गया। रोम के बिशप, जो पोप कहलाते थे, ईसाइयों के प्रधान धर्माध्यक्ष हो गए।

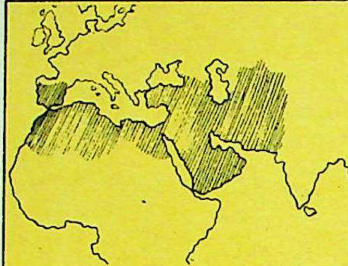
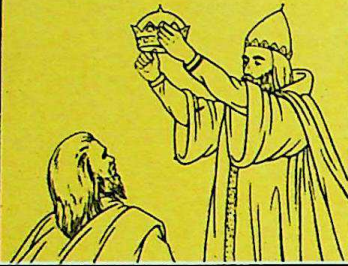


जर्मन कबीलों—एंगल, सैक्सन और जूट ने ब्रिटेन पर हमले किए और शीघ्र ही वे उसपर छा गए।

इतिहास

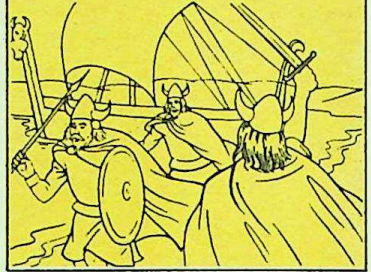
800

पोप ने क्रिसमस के दिन रोम में सम्राट शार्लमैन को राजमुकुट पहनाया।



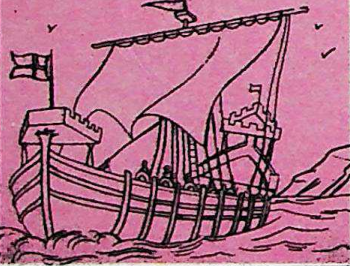
स्पेन, उत्तरी अफ्रीका और अधिकांश पश्चिमी एशिया पर मुसलमानों का अधिकार हो गया।

उत्तर के वाइकिंग यूरोप के उत्तरी तट के नगरों को लूटने और आतंकित करने लगे।

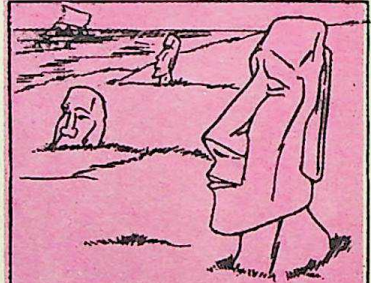
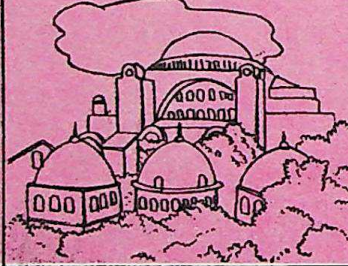


899

इंग्लैंड के ऐल्फ्रेड द ग्रेट ने यद्यपि डेन आक्रान्ताओं को परास्त कर दिया, पर फिर भी ब्रिटेन के कुछ भाग पर उनका अधिकार बना रहा।



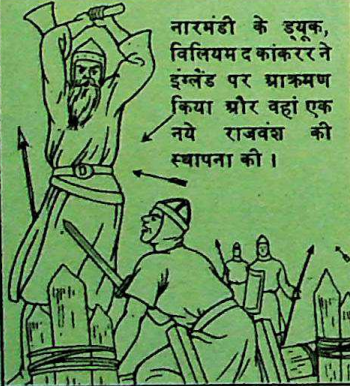
तुर्की का कुस्तुनिया शहर यूरोप का सांस्कृतिक केन्द्र और संसार का सबसे शक्तिशाली नगर बन गया।



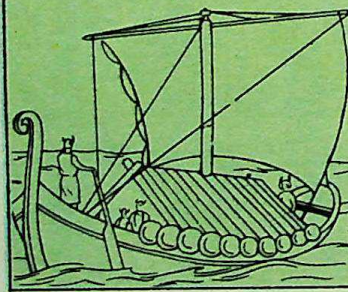
पोलीनेशियाई प्रशांत सागर में बढ़ते हुए उसके द्वीपों पर बसते जा रहे थे। उनमें से कुछ ईस्टर द्वीप तक पहुंच गए।

1066

नारमंडी के ह्यूक, विलियम द कांकरर ने इंग्लैंड पर आक्रमण किया और वहां एक नये राजवंश की स्थापना की।

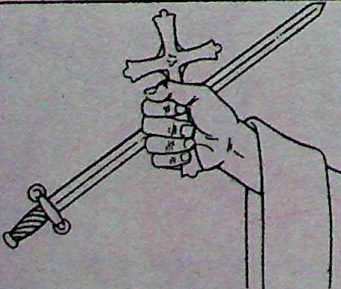


दुःसाहसी नॉर्समेन खुली नौकाओं में ही यात्रा करते हुए आइसलैंड, ग्रीनलैंड और उत्तरी अमेरिका पहुंच गए।



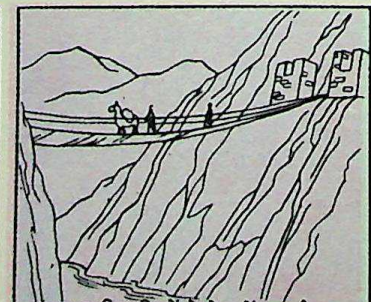
चीनियों ने मुद्रण कला का आविष्कार कर लिया था। उसके लिए वे मिट्टी के ठप्पे इस्तेमाल करते थे।

1189



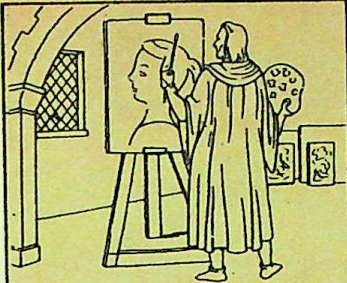
जेरुसलम को मुसलमानों से वापस लेने के लिए शेरदिल रिचार्ड ने तीसरे धर्म-युद्ध में भाग लिया।

इटली और फ्रांस के नगरों में पहले आधुनिक विश्वविद्यालय विकसित हुए।



इका आदिवासियों ने पेरू में एक वैभवशाली साम्राज्य की स्थापना की। दक्षिणी अमेरिका का उत्तर-पश्चिमी भाग अधिकतर उसके अंतर्गत था।

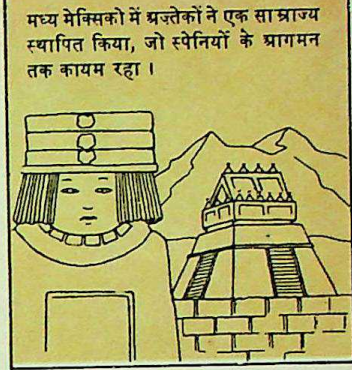
1337



इटली के महान चित्रकार जिओत्तो की मृत्यु हो गई। पुनर्जागरण शीघ्र ही सारे यूरोप में फैलनेवाला था।

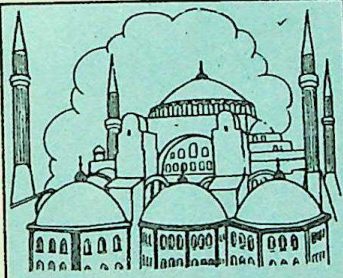


रूस में एशिया के तातार आक्रान्ताओं ने अपने नये साम्राज्य की स्थापना की।

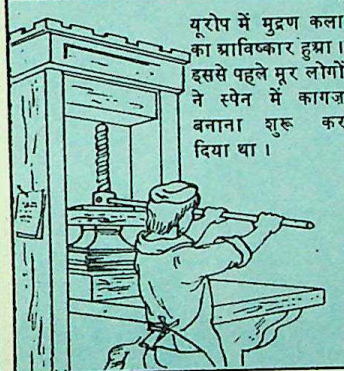


मध्य मेक्सिको में अज़तेकों ने एक साम्राज्य स्थापित किया, जो स्पेनियों के आगमन तक कायम रहा।

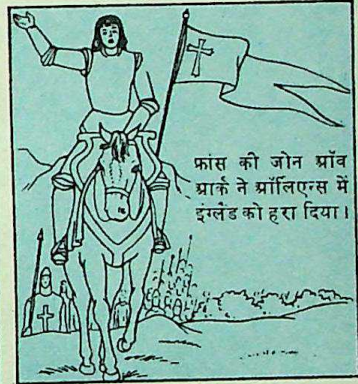
1453



कुस्तुनिया पर तुर्कों की विजय से 1000 साल से चले आते बाइजेंटाइन साम्राज्य का अंत हो गया।



यूरोप में मुद्रण कला का आविष्कार हुआ। इससे पहले मूर लोगों ने स्पेन में कागज बनाना शुरू कर दिया था।



फ्रांस की जोन ब्राँव ब्राँके ने ब्रॉलिंग्स में इंग्लैंड को हरा दिया।

1492



कोलम्बस जब अमरीका पहुँचा तब अमरीकी आदिवासी प्रस्तर युग की स्थिति में ही रह रहे थे।



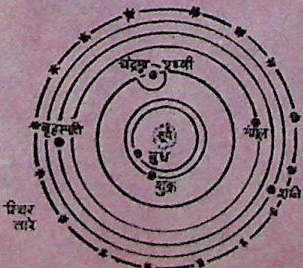
राफ़ेल, माइकेलेंजेलो और लियोनार्दो दा विंची की कलाकृतियों में पुनर्जागरण काल की कला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई।



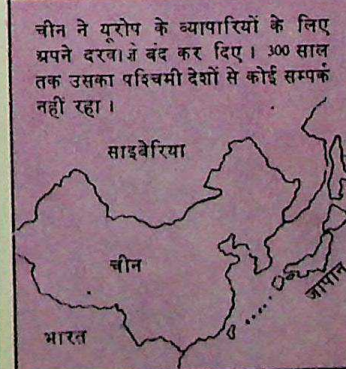
फर्डिनेंड और इसाबेला की सेनाओं ने मूर लोगों को स्पेन से निकाल दिया। स्पेन अब यूरोप की राजनीति में प्रमुख भाग लेने लगा।

1543

कोपेनिकस ने अपनी पुस्तक में बताया कि पृथ्वी और अन्य ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं।



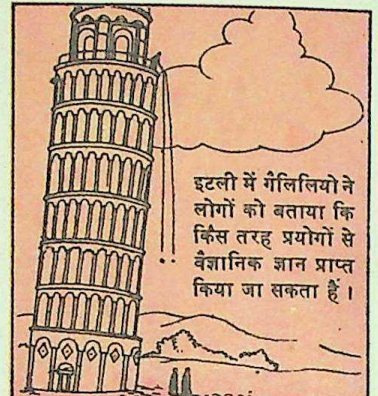
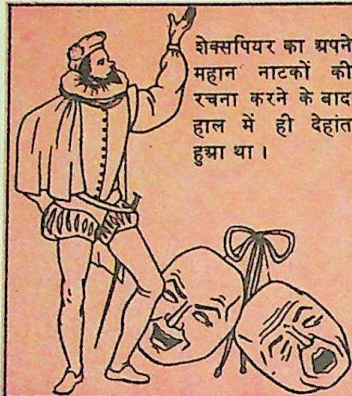
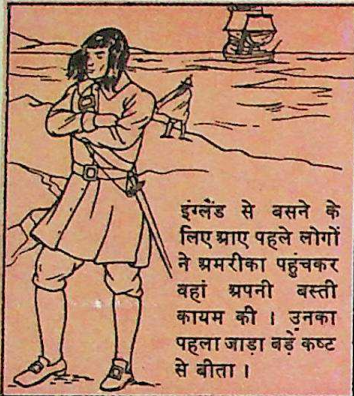
स्पेनियों ने अज़तेक और इका साम्राज्यों को जीत लिया। अमरीका महाद्वीपों के अधिकांश पर उनका अधिकार हो गया।



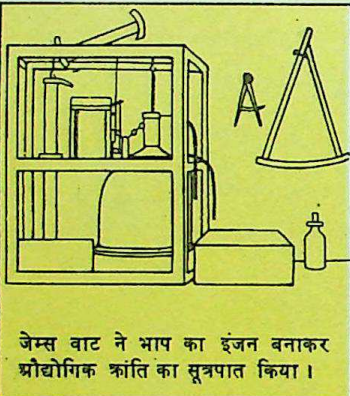
चीन ने यूरोप के व्यापारियों के लिए अपने दरवाज़े बंद कर दिए। 300 साल तक उसका पश्चिमी देशों से कोई सम्पर्क नहीं रहा।

इतिहास

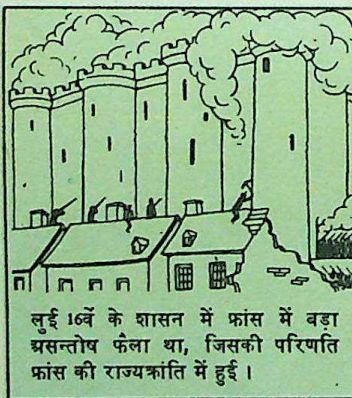
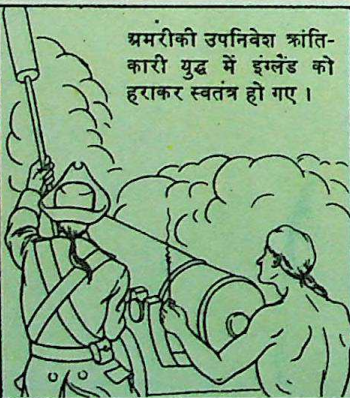
1620



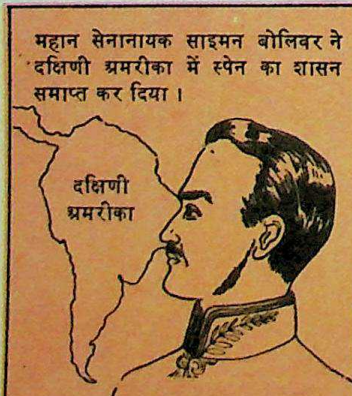
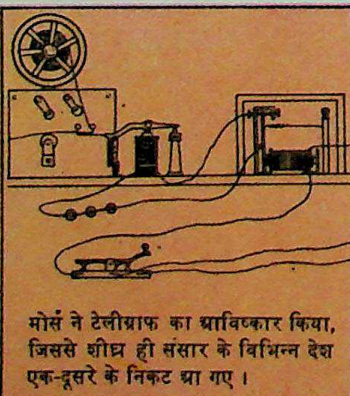
1769



1781

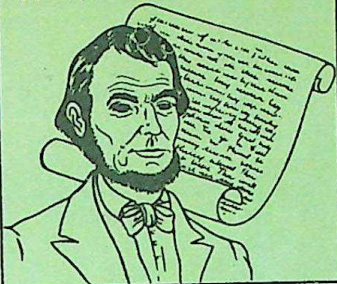


1837

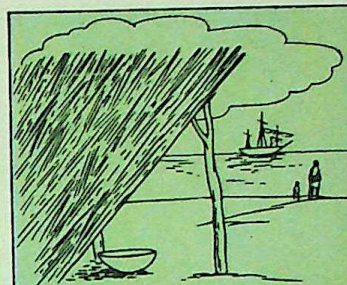


1863

अब्राहम लिंकन की मुक्ति-घोषणा से अमरीका में गुलामों को दासता से मुक्ति मिल गई।

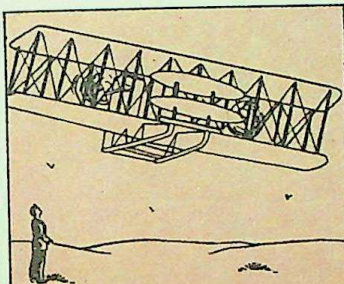


अफ्रीका में खनिज सम्पदा का पता चला, जिससे कुछ समय बाद ही वहां उपनिवेशों के लिए संघर्ष शुरू हो गया।



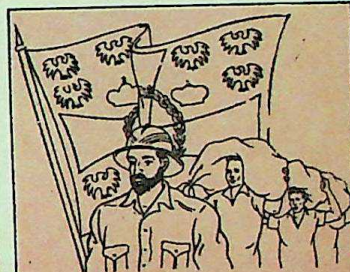
दक्षिणी अफ्रीका में सोना मिलने की खबर फैलते ही यूरोप और अमरीका से बहुत-से लोग वहां पहुंचने लगे।

1903



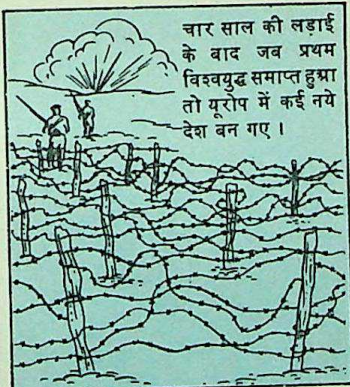
राइट बंधुओं ने अमरीका में अपना हवाई जहाज उड़ाया। यह आकाश में मानव की पहली सफल उड़ान थी।

महारानी विक्टोरिया का हाल में ही देहांत हुआ था। उनके शासन में ब्रिटिश साम्राज्य बहुत ही शक्तिशाली हो गया।



अफ्रीका और प्रशांत महासागर के नये-नये प्रदेशों पर अधिकार करके जर्मन साम्राज्य तेजी से बढ़ता जा रहा था।

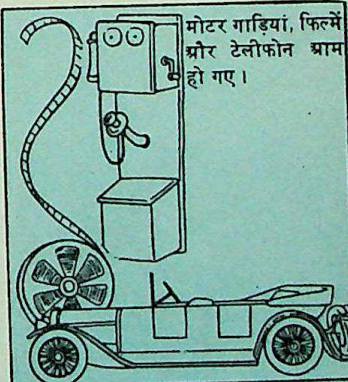
1918



चार साल की लड़ाई के बाद जब प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त हुआ तो यूरोप में कई नये देश बन गए।



रूसियों ने जार का तख्ता उलट दिया और वहां कम्युनिस्ट शासन आरंभ हुआ।



मोटर गाड़ियां, फिल्में और टेलीफोन आम हो गए।

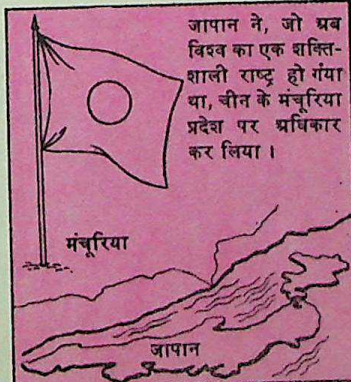
1933

हिटलर ने जर्मनी का तानाशाह बनते ही नये प्रदेश जीतने शुरू कर दिए, जिसका परिणाम आगे चलकर द्वितीय विश्वयुद्ध के रूप में सामने आया।



इटली

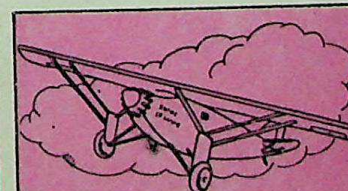
हंगरी



जापान ने, जो अब विश्व का एक शक्तिशाली राष्ट्र हो गया था, चीन के मंचूरिया प्रदेश पर अधिकार कर लिया।

मंचूरिया

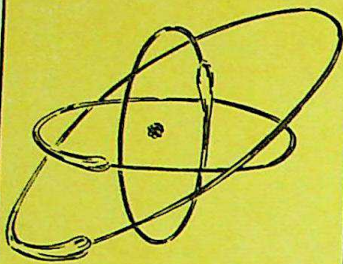
जापान



चार्ल्स लिंडबर्ग ने बिना रुके हवाई जहाज से अटलांटिक महासागर पार किया और वह न्यूयार्क से पेरिस पहुंचा।

इतिहास

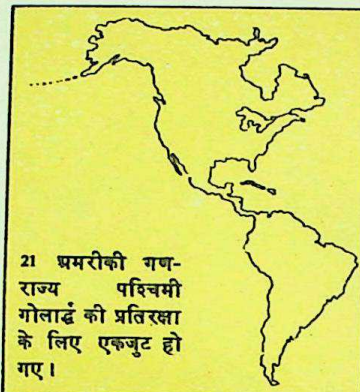
1942



वैज्ञानिकों को परमाणु विस्फोट में सफलता मिलते ही विश्व में परमाणु युग शुरू हो गया।

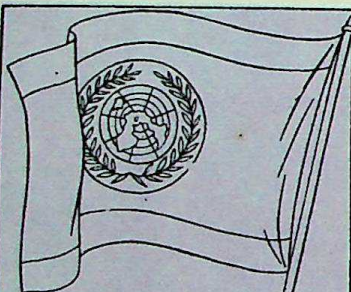


द्वितीय विश्वयुद्ध ने संसार के प्रायः सभी देशों को अपनी लपेट में ले लिया।

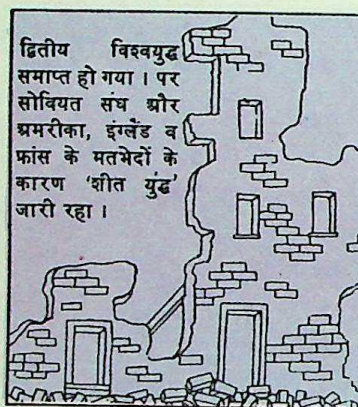


21 अमरीकी गण-राज्य पश्चिमी गोलादंड की प्रतिरक्षा के लिए एकजुट हो गए।

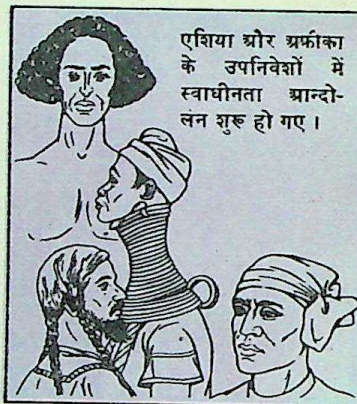
1945



विश्वशांति और सभी देशों के लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई।



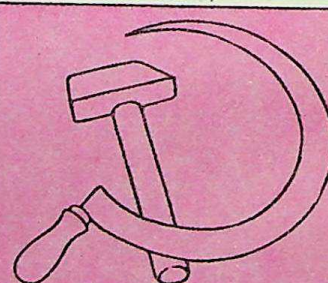
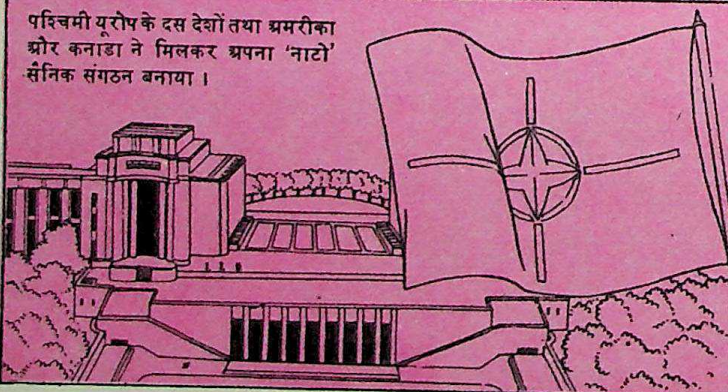
द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हो गया। पर सोवियत संघ और अमरीका, इंग्लैंड व फ्रांस के मतभेदों के कारण 'शीत युद्ध' जारी रहा।



एशिया और अफ्रीका के उपनिवेशों में स्वाधीनता आन्दोलन शुरू हो गए।

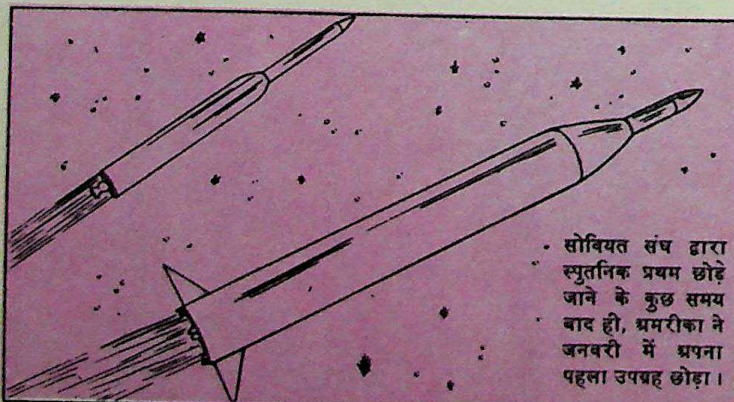
1949

पश्चिमी यूरोप के दस देशों तथा अमरीका और कनाडा ने मिलकर अपना 'नाटो' सैनिक संगठन बनाया।

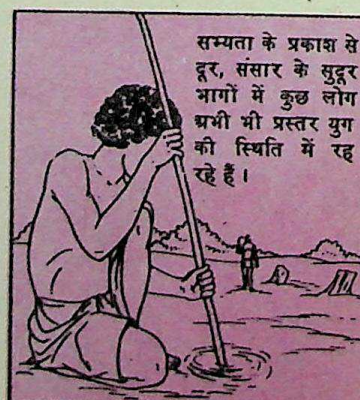


दक्षिण-पूर्वी यूरोप, चीन और उत्तरी कोरिया में साम्यवादी शासन स्थापित हो गया।

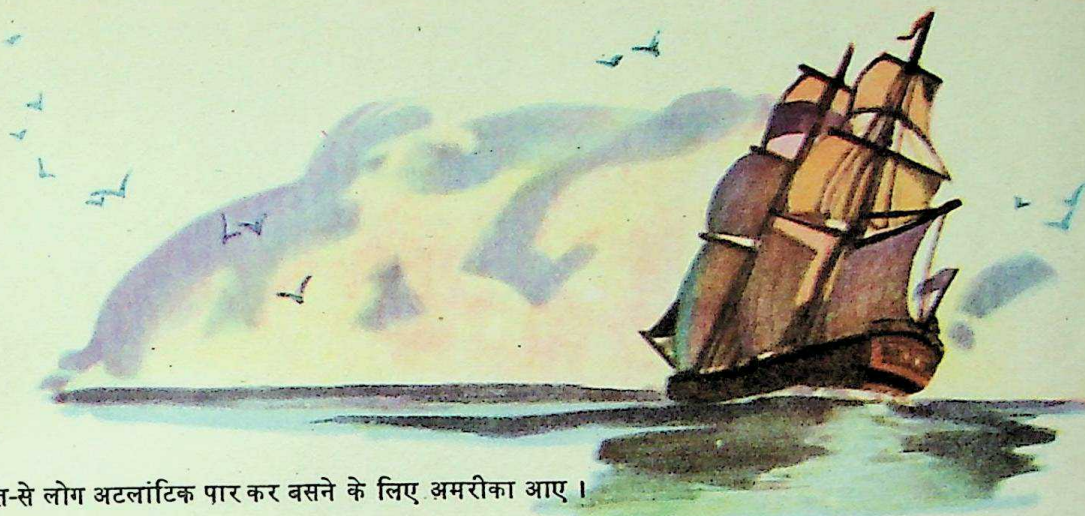
1958



सोवियत संघ द्वारा स्पुतनिक प्रथम छोड़े जाने के कुछ समय बाद ही, अमरीका ने जनवरी में अपना पहला उपग्रह छोड़ा।



सम्यता के प्रकाश से दूर, संसार के सुदूर भागों में कुछ लोग अभी भी प्रस्तर युग की स्थिति में रह रहे हैं।



यूरोप से बहुत-से लोग अटलांटिक पार कर बसने के लिए अमरीका आए ।

इतिहास, अमरीका का (HISTORY OF THE U.S.A.): कोलम्बस द्वारा अमरीका की खोज के बाद दो शताब्दियों तक लोग यूरोप से नई दुनिया (अमरीका) जाते रहे । स्पेन, फ्रांस, इंग्लैंड, हॉलैंड, स्वीडन और रूस ने नई दुनिया के विभिन्न भू-भागों पर अधिकार कर लिया । इंग्लैंड के हिस्से में उत्तरी अमरीका का सबसे बड़ा प्रदेश आया । अंग्रेजों के तेरह उपनिवेशों ने ही बाद में संयुक्त राज्य अमरीका का रूप ले लिया ।

अंग्रेज लोग रहने-बसने के इरादे से वहां गए थे, स्पेन और फ्रांस के अधिकांश प्रवासियों की तरह सोने की खोज में या व्यापार के लिए नहीं गए थे । अंग्रेज विस्थापित अमरीका को अपने और अपने बच्चों के रहने के काबिल बनाना चाहते थे । उन्होंने यह स्वीकार किया कि हर आदमी को इस बात की स्वतंत्रता है कि वह ईश्वर के चाहे जिस रूप की, और चाहे जैसे, उपासना करे । इस स्वतंत्रता ने और बिना दाम मिलनेवाली ज़मीन ने बाद में अनेक यूरोपीय देशों—जर्मनी, स्कॉटलैंड, आयरलैंड, फ्रांस और इटली के लोगों को अमरीका के इन उपनिवेशों की ओर आकृष्ट किया ।

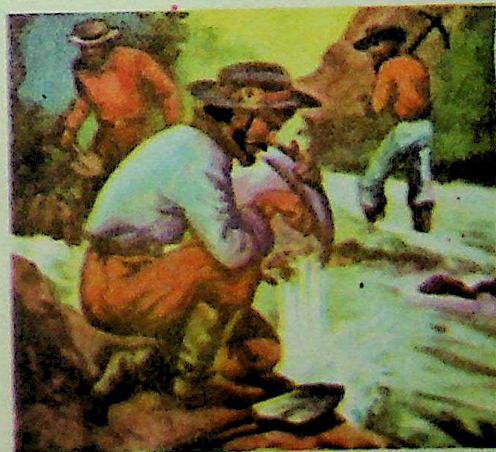
प्रारंभ में इन उपनिवेशों के इंग्लैंड से बड़े अच्छे संबंध रहे । लेकिन जब इंग्लैंड ने अमरीका और दूसरे देशों के बीच व्यापार पर रोक लगा दी तो उपनिवेशों के लोग असंतुष्ट हो उठे । उन्हें इंग्लैंड को कर देना भी खलता था । अंत में ये तेरह उपनिवेश इंग्लैंड से अलग हो गए ।

सन् 1774 में इन उपनिवेशों के प्रतिनिधियों की एक सभा फिलाडेल्फिया में हुई । प्रतिनिधियों ने एक सेना सुसज्जित करने का फैसला किया । उन्होंने जॉर्ज वाशिंगटन को प्रधान सेनापति नियुक्त किया । 4 जुलाई, 1776 को स्वतंत्रता की घोषणा कर दी गई, यद्यपि अमरीका को यह स्वतंत्रता छः वर्ष बाद मिली ।

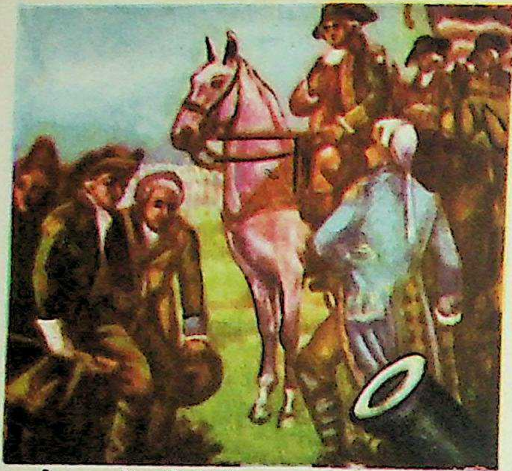
स्वतंत्रता की घोषणा के कुछ ही दिनों बाद तेरह उपनिवेशों ने तेरह राज्यों का रूप ले लिया । युद्ध के बाद

इन राज्यों के प्रतिनिधियों की सभा फिलाडेल्फिया में हुई और उसमें एक संविधान की रचना की गई । इस संविधान द्वारा एक सशक्त राष्ट्रीय सरकार बनाने का निश्चय किया गया और नागरिकों को वे सभी अधिकार दिए गए जो उन्हें प्रिय थे । पहले राष्ट्रीय चुनाव में वाशिंगटन को राष्ट्रपति चुना गया । न्यूयार्क को देश की राजधानी बनाया गया ।

सन् 1812 में ब्रिटेन ने अपने शत्रु-राष्ट्रों को जानेवाले अमरीको जहाजों पर रोक लगा दी । इसपर अमरीका और ब्रिटेन में लड़ाई ठन गई । अंत में अमरीका की विजय हुई । इस लड़ाई के बाद अमरीका के लोगों ने पश्चिम की ओर बढ़ना आरंभ किया और वहां खेती, बागबानी और पशुपालन का काम शुरू किया । पश्चिमी प्रदेशों के लोगों को संविधान में इस बात का अधिकार दिया गया था कि वे नये राज्यों की स्थापना करें और संघ में शामिल हो जाएं । धीरे-धीरे कई राज्यों की स्थापना हुई और संयुक्त राज्य अमरीका के भंडे में राज्यों के प्रतीक सफेद सितारों की संख्या बढ़ती गई ।



सोने का पता लगने पर अनेक लोग कैलिफोर्निया पहुंचे ।

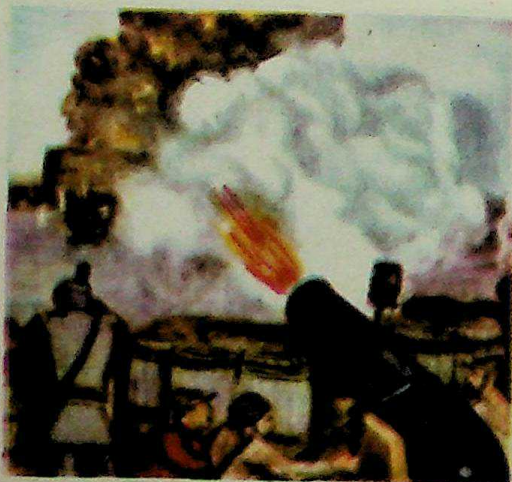


यार्कटाउन में अंग्रेजों ने आत्मसमर्पण कर दिया।

कुछ समय बाद दास-प्रथा को लेकर दक्षिणी और उत्तरी राज्यों में गंभीर मतभेद पैदा हो गया। दक्षिणी राज्यों के लोग दास-प्रथा के पक्ष में थे और उत्तरी राज्यों के लोग उसके विरुद्ध। सन् 1860 में जब अब्राहम लिंकन को राष्ट्रपति चुना गया, तो दक्षिण के राज्य संघ से अलग हो गए। इसपर गृहयुद्ध छिड़ गया। उत्तर के लोग देश को अखंड रखने के लिए लड़ रहे थे। अंत में उनकी विजय हुई और दास-प्रथा का अंत हुआ। सभी दास आजाद हो गए।

अमरीका की कहानी बहुत कुछ अनेक उपयोगी आविष्कारों की कहानी है। इनमें से कई आविष्कार—फसल काटने की मशीन, इस्पात के हल, ट्रैक्टर आदि—खेती के लिए बड़े उपयोगी सिद्ध हुए। अन्य क्षेत्रों में भी अनेक महत्वपूर्ण आविष्कार किए गए—टेलीफोन, बिजली, कार, कपड़े धोने की मशीन, रेडियो और टेलीविजन आदि इसी प्रकार के कुछ आविष्कार हैं।

अमरीका में नगरों का विकास बड़ी तेजी से हुआ है। यह विकास बहुत कुछ भाप, पेट्रोल और बिजली के इंजनों के आविष्कार हो जाने के कारण हुआ। अमरीका में कोयले

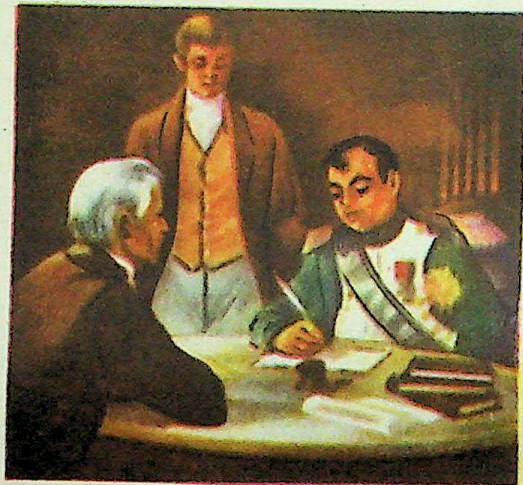


अमरीकी गृहयुद्ध फोर्ट सम्टर में शुरू हुआ।

लोहे और तेल के विशाल भंडार थे। इसलिए वहां उद्योग-धंधों को पनपने में देर नहीं लगी। यातायात के साधनों की तीव्र प्रगति ने इसमें और मदद की।

प्रारंभ में निःशुल्क शिक्षा को एक स्वप्न माना जाता था। लेकिन टॉमस जेफर्सन, बेंजामिन फ्रैंकलिन और होरेस मान जैसे नेताओं ने इस स्वप्न को सच करके दिखा दिया। सभी राज्यों में धीरे-धीरे सार्वजनिक स्कूल खुल गए।

अमरीका में मताधिकार शुरू में संपत्ति और धर्म के आधार पर कुछ खास लोगों को ही था। बाद में 21 वर्ष की अवस्था के सभी पुरुषों (दासों को छोड़कर) को यह अधिकार दे दिया गया। गृहयुद्ध के बाद नीग्रो लोगों को भी मताधिकार मिल गया। अंत में सूसन ऐन्थोनी जैसी वीरांगनाओं ने जी-जान एक करके स्त्रियों को भी मताधिकार दिलाने में सफलता प्राप्त की।



अमरीका ने लुइज़ियाना प्रांत फ्रांस से खरीदा।

सौ वर्ष में ही संयुक्त राज्य अमरीका एक विशाल तथा सबल राष्ट्र बन गया। इन सौ वर्षों में उसने प्रायः सदैव वाशिंगटन की शिक्षा मानकर यूरोप के भगड़ों से अपने को दूर रखा।

सन् 1898 में अमरीकी मदद से क्यूबा ने स्पेन से लड़कर स्वतंत्रता प्राप्त की। सन् 1867 में अमरीका ने रूस से अलास्का खरीद लिया। इससे पहले सन् 1803 में वह फ्रांस से लुइज़ियाना प्रदेश खरीद चुका था।

सन् 1917 में अमरीका प्रथम विश्वयुद्ध में शामिल हुआ, और सन् 1941 में दूसरे विश्वयुद्ध में। दूसरे विश्वयुद्ध में मित्र-राष्ट्रों की विजय में अमरीका का प्रमुख हाथ था। युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना करनेवाले राष्ट्रों में अमरीका भी शामिल था।

इतिहास, इंग्लैंड का (HISTORY OF ENGLAND) :
आज से लगभग 2,000 साल पहले रोम के सम्राट जूलियस सीज़र ने बहुत कठिनाई से ब्रिटेन को जीता था। लेकिन



स्पेनी आक्रमण

डेन जाति
के हमले

विलियम द कांकरर

अपनी विजय के बाद सीज़र वहां ठहरा नहीं। इसके लगभग सौ वर्ष बाद रोम के राजा क्लाडियस ने ब्रिटेन को जीतकर रोम साम्राज्य में मिला लिया। रोम का राज्य ब्रिटेन पर 400 वर्ष तक रहा। इस बीच रोमनों ने वहां पर बड़े-बड़े नगर और किले बनवाए तथा लम्बी-लम्बी सड़कें निकालीं। इनमें से एक सड़क रोम तक जाती थी।

बाद में रोम पर स्वयं खतरा आ पड़ा। रोम की रक्षा के लिए रोमन सेना वापस लौट गई और फिर ब्रिटेन को वापस नहीं आ सकी। जब तक रोमन ब्रिटेन में रहे तब तक उन्होंने इसको उत्तर की लड़ाकू जातियों—पिक्टों और स्कॉटों से बचाए रखा। रोमनों ने जर्मनी की बर्बर जातियों को यूरोप से ब्रिटेन में ले जाकर बसाया था और वे उन्हें अपनी सहायक सैनिक टुकड़ी के रूप में काम में लाते थे।

रोमनों के चले जाने के बाद, जर्मन अधिक से अधिक संख्या में ब्रिटेन में इस उद्देश्य से बुलाए जाने लगे ताकि वे पिक्टों, स्कॉटों और आयरिशों के हमले से इंग्लैंड को बचाए रख सकें। वे जर्मन बाद में ऐंग्ल, सैक्सन और जूट कहे जाने लगे।

उन बर्बर लोगों को, जिन्हें ब्रिटेन की सहायता के लिए बुलाया गया था, इंग्लैंड अपनी मातृभूमि से भी अधिक पसन्द आया। वे उस भूमि को ही हथियाने लगे जिसे

बचाने को आए थे। उनके कबीलों के और भी लोग आ-आकर उनमें मिलते गए और वहां के मूल निवासी, ब्रिटेन लोगों को धीरे-धीरे ब्रिटेन के पश्चिमी भाग की ओर खिसकना पड़ा। इस तरह देश के अधिकतर भाग पर ऐंग्ल, सैक्सन और जूट लोगों का अधिकार हो गया। जूट लोगों ने दक्षिण-पूर्वी भाग पर कब्जा किया। सैक्सन लोगों ने शेष दक्षिणी भाग पर हाथ साफ किया। ऐंग्ल लोगों ने उत्तरी और मध्य भाग पर अधिकार जमाया। इसी भाग को आज इंग्लैंड कहते हैं। इंग्लैंड का अर्थ है ऐंग्ल लोगों का देश।

यद्यपि इंग्लैंड का नाम ऐंग्ल जाति के नाम पर पड़ा, किंतु सैक्सन जाति अधिक शक्तिशाली हो गई थी। इंग्लैंड के सबसे प्रसिद्ध राजाओं में पहला राजा, ऐल्फ्रेड द ग्रेट सैक्सन ही था।

इसके बाद इंग्लैंड पर स्कैंडिनेविया से डेन जाति ने हमला करना शुरू किया। स्कैंडिनेविया को आजकल हम नार्वे और डेनमार्क के नाम से जानते हैं। डेन लोगों को कभी-कभी नॉर्समन या वाइकिंग भी कहते हैं। ये इंग्लैंड पर छापा मारने लगे। ऐल्फ्रेड द ग्रेट के युग में, सन् 878 में, डेन लोगों को मात खानी पड़ी। पर ऐल्फ्रेड के मरने के बाद फिर से इनकी शक्ति बढ़ गई। 1016 तक इंग्लैंड की गद्दी एक डेन राजा के हाथ में आ गई।

आगे चलकर इंग्लैंड पर एक और संकट आया। फ्रांस स्थित नार्मंडी के ड्यूक, विलियम द कांकरर ने इंग्लैंड की गद्दी पर अपना दावा प्रकट किया। 1066 में विलियम ने इंग्लैंड पर हमला किया और हेस्टिंग्स की लड़ाई में इंग्लैंड को हरा दिया। इंग्लैंड का राजा हेरल्ड मार डाला गया। विलियम इंग्लैंड का राजा बना। कुछ समय तक इंग्लैंड और नार्मंडी एक में मिल गए। इंग्लैंड में फ्रांसीसी सरदारों को जागीरें दी गईं और वे वहां जाकर बस गए। बाद में वे इंग्लैंड को ही अपना घर मान बैठे। नार्मंडी को

इंग्लैंड का एक प्रदेश माना जाने लगा। लेकिन 1204 में फ्रांस के राजा ने नार्मंडी को अपने अधिकार में कर लिया।

सन् 1215 में इंग्लैंड में एक महान घटना घटी। इंग्लैंड के सरदारों के एक दल ने तत्कालीन राजा जॉन को एक समझौते या घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करने को विवश किया। इसे 'मैग्ना कार्टा' कहते हैं। मैग्ना कार्टा इंग्लैंड में स्वतंत्र सरकार का शिलान्यास था।

धीरे-धीरे इंग्लैंड के व्यापार ने बहुत उन्नति की। पिछले साढ़े तीन सौ वर्ष की सबसे प्रमुख घटनाएं प्रायः किसी न किसी शासक के साथ जुड़ी हुई हैं। उनमें से कुछ प्रसिद्ध शासकों का शासनकाल तथा उनके समय की प्रसिद्ध घटनाओं का विवरण नीचे दिया गया है :

हेनरी अष्टम (1509-1547) : यह अपनी छः रानियों में से पहली से संबंध-विच्छेद करना चाहता था। इसके लिए इसने रोम के पोप से आज्ञा मांगी। आज्ञा नहीं मिली, तो इसने रोमन कैथलिक चर्च से अंग्रेजी चर्च को अलग कर लिया। यही युग था जब यूरोप के दूसरे देशों में भी रोमन कैथलिक चर्च के विरुद्ध विद्रोह हो रहे थे।

एलिज़ाबेथ प्रथम (1558-1603) : यह हेनरी अष्टम की पुत्री थी। इसके शासनकाल में अंग्रेजी नौसेना ने स्पेनी आर्मदा को पराजित किया। अंग्रेजी व्यापारियों ने अनेक देशों से व्यापार शुरू किया। इसी युग में इंग्लैंड के कुछ महान लेखक हुए, जिनमें से शेक्सपियर एक थे।

चार्ल्स प्रथम (1625-1649) : 1642 में एक गृहयुद्ध हुआ। इसका कारण यह था कि चार्ल्स शासन में पार्लमेंट से सलाह नहीं लेना चाहता था। पार्लमेंट में प्यूरिटन सम्प्रदाय का जोर था। 1649 में चार्ल्स को मौत के घाट उतार दिया गया और इस दल के नेता क्रॉमवेल ने शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली। 1658 में क्रॉमवेल मर गया और उसका पुत्र उसका उत्तराधिकारी बना। 1660 में उसके शासन से ऊबकर चार्ल्स द्वितीय को राजा बनाया गया। चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल को पुनरुत्थान काल (रेस्टोरेशन पीरियड) कहते हैं।

जॉर्ज तृतीय (1760-1820) : इसके शासनकाल में अमरीकी उपनिवेशों ने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की। दूसरी ओर आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका तथा भारत में अंग्रेजी साम्राज्य का प्रसार होने लगा। 1793 में फ्रांस से युद्ध छिड़ा, जो बीच-बीच में बन्द होने के बावजूद 1815 तक चलता रहा। 1815 में नेपोलियन को वाटरलू के मैदान में हराकर इंग्लैंड ने विजय पाई। 1769 में भाप के इंजन का आविष्कार हुआ। इससे इंग्लैंड की काया-पलट हो गई और औद्योगिक क्रांति प्रारंभ हुई।

विक्टोरिया (1837-1901) : इसके शासनकाल में न्यूजीलैंड, गोल्डकोस्ट, नाइजीरिया, साइप्रस, हांगकांग आदि ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाए गए। 1899 में इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका में बसनेवाले डचों के बीच बोअर युद्ध शुरू

हुआ। इसमें इंग्लैंड की जीत हुई और दक्षिण अफ्रीका भी ब्रिटिश साम्राज्य में आ गया।

एलिज़ाबेथ द्वितीय (1952-) : इसके समय तक इंग्लैंड दो महायुद्ध लड़ चुका था। अंग्रेजी उपनिवेशों में से अनेक स्वतंत्र हो चुके थे, जिनमें भारत भी एक था। आज इंग्लैंड की समृद्धि मात्र उसके व्यापार पर ही निर्भर है।

इतिहास, भारत का (HISTORY OF INDIA) : भारत एक बहुत प्राचीन देश है। इसलिए इसका इतिहास भी बहुत पुराना है। हमारे देश में मानव समाज के जो सबसे प्राचीन अवशेष मिले हैं वे सिंधु सभ्यता के हैं। वे लोग शायद यहां के पुराने निवासी द्रविड़ थे। फिर आर्य आए। आर्यों की पहले तो द्रविड़ों से लड़ाइयां हुईं, लेकिन फिर धीरे-धीरे वे मिल-जुलकर एक होते गए। आर्यों ने द्रविड़ों के अनेक विश्वास और तरीके अपना लिए।

आर्य बढ़ते हुए वर्तमान उत्तर प्रदेश और बिहार तक फैल गए। उन्होंने छोटे-बड़े अनेक राज्य कायम किए। उनमें कुछ पंचायती राज्य थे, जो गण या संघ कहलाते थे। उनकी सभाओं में जनता के चुने हुए प्रतिनिधि बैठते थे। इसी प्रकार के लिच्छवी संघ में जैन धर्म के प्रवर्तक वर्धमान महावीर का जन्म हुआ था। बुद्ध भी शाक्य नाम के एक संघ में उत्पन्न हुए थे। बाकी राज्यों में राजाओं का राज था। मगध, कोसल, वत्स और अवन्ती ऐसे ही राज्य थे। ये राज्य आपस में लड़ते रहते थे, और एक-दूसरे को या नये प्रदेशों को जीतकर अपना विस्तार करते रहते थे।

उन्हीं दिनों पंजाब पर सिकन्दर का आक्रमण हुआ। वह व्यास नदी तक बढ़ आया। लेकिन वहां से मजबूर हो उसे लौट जाना पड़ा। तब चंद्रगुप्त ने, चाणक्य की सहायता से, सारा पंजाब जीत लिया। चंद्रगुप्त पहले मगध का सेनापति रह चुका था। उसने बाद में मगध का सिंहासन भी छीन लिया। चंद्रगुप्त की विजयों और चाणक्य की शासन-चातुरी से भारत में मगध का पहला बड़ा साम्राज्य स्थापित हुआ। वह उत्तर में अफगानिस्तान तक और पूर्व-पश्चिम में समुद्र से समुद्र तक फैला था।

चंद्रगुप्त का वंश मौर्य वंश कहलाया। चंद्रगुप्त का पौत्र अशोक संसार के सबसे महान सम्राटों में माना जाता है। उसके काल में साम्राज्य का बहुत विस्तार हुआ। किन्तु कलिंग-विजय के बाद वह बौद्ध हो गया। उसने प्रजा की भलाई के लिए बहुत काम किया। बौद्ध धर्म को उसने देश में ही नहीं, विदेशों में भी फैलाया।

मौर्य वंश का राज्य बाद में पुष्यमित्र शुंग के हाथ में चला गया। इस तरह उत्तर में ब्राह्मण साम्राज्य की नींव पड़ी। दक्षिण में सातवाहनों ने पहले ही एक बड़ा ब्राह्मण साम्राज्य कायम कर लिया था। पुष्यमित्र के बाद देश

भारतीय इतिहास की प्रमुख तिथियां

ईसा पूर्व

3500-1500	सिंधु सभ्यता ।
2500	आर्यों का भारत में आगमन आरंभ ।
1500-1000	ऋग्वेद की रचना ।
1000 ?	महाभारत युद्ध ।
599-527	वर्धमान महावीर का जन्म और निर्वाण ।
563-483	गौतम बुद्ध का जन्म और निर्वाण ।
327-325	भारत पर सिकंदर का आक्रमण ।
322-298	चंद्रगुप्त मौर्य का शासन ।
273-232	अशोक का शासन ।
110 ?	सिंध पर शकों का शासन

ईस्वी सन्

78-123	कनिष्क का शासन ।
320-475	गुप्तवंश का शासन । भारतीय साहित्य और कला का स्वर्णयुग ।
335-375	समुद्रगुप्त का शासन ।
376-413	चंद्रगुप्त विक्रमादित्य का शासन ।
405-411	फ़ाहियान की भारत-यात्रा ।
454	हूणों का पहला आक्रमण ।
606-647	हर्षवर्धन का शासन ।
711	सिंध पर मुहम्मद बिन कासिम का अधिकार ।
1000-1026	भारत पर महमूद गज़नवी के आक्रमण ।
1191	पृथ्वीराज चौहान की मुहम्मद गोरी से पहली लड़ाई । मुहम्मद गोरी की पराजय ।
1192	पृथ्वीराज चौहान की मुहम्मद गोरी से दूसरी लड़ाई । पृथ्वीराज की पराजय और मृत्यु ।
1206	उत्तर भारत में मुस्लिम शासन आरंभ ।
1221	भारत पर चंगेजख़ां का आक्रमण ।
1230	विजयनगर राज्य की स्थापना ।
1320	दिल्ली में तुग़लक़ वंश का शासन आरंभ ।
1347	दकन में बहमनी राज्य की स्थापना ।
1398	भारत पर तैमूर लंग का आक्रमण ।
1451	लोदी वंश का शासन आरंभ ।
1494	सिकंदर लोदी ने आगरे की नींव रखी ।
1498	वास्को द गामा ने भारत के समुद्री मार्ग का पता लगाया ।
1510	गोआ पर पुर्तगालियों का अधिकार ।
1526	पानीपत की पहली लड़ाई और बाबर द्वारा मुग़ल साम्राज्य की स्थापना ।
1556	पानीपत की दूसरी लड़ाई में अकबर की विजय ।
1556-1605	अकबर का शासन ।

ईस्वी सन्

1576	हल्दीघाटी की लड़ाई ।
1597	महाराणा प्रताप की मृत्यु ।
1600	भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना ।
1605	अकबर की मृत्यु ।
1605-1627	जहांगीर का शासन ।
1612	सूरत में अंग्रेजों की पहली कोठी स्थापित हुई ।
1628-1658	शाहजहां का शासन ।
1634	अंग्रेजों को बंगाल में व्यापार करने का फ़रमान मिला ।
1658-1707	औरंगज़ेब का शासन ।
1668	सूरत में फ्रांसीसियों की पहली कोठी स्थापित ।
1675	औरंगज़ेब ने गुरु तेगबहादुर का वध करवाया ।
1680	छत्रपति शिवाजी की मृत्यु ।
1686-1687	बीजापुर और गोलकुंडा के राज्यों का पतन ।
1690	कलकत्ते में ईस्ट इंडिया कंपनी का व्यापारिक केन्द्रालय स्थापित ।
1698	अंग्रेजों को कलकत्ते की ज़मींदारी मिली ।
1707	औरंगज़ेब की मृत्यु ।
1739	भारत पर नादिरशाह का आक्रमण ।
1748-1761	भारत पर अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण ।
1757	प्लासी की लड़ाई और भारत में ब्रिटिश शासन का आरंभ ।
1761	पानीपत की तीसरी लड़ाई में मराठों की पराजय ।
1764	बक्सर की लड़ाई ।
1765	ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी मिली ।
1770	बंगाल में भयंकर अकाल ।
1780	महाराजा रणजीतसिंह द्वारा सिख राज्य की स्थापना ।
1790	तीसरा मैसूर युद्ध ।
1793	बंगाल, बिहार और उड़ीसा का स्थायी बंदोबस्त ।
1799	टीपू सुलतान की मृत्यु ।
1835	अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम बनी ।
1839	महाराजा रणजीतसिंह की मृत्यु ।
1853	रेल और तार की पहली लाइनें चालू हुईं ।
1857	भारत में पहला स्वतंत्रता-संग्राम ।
1858	ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त । ब्रिटिश सरकार का सीधा शासन आरंभ ।
1874	बंगाल में भयंकर अकाल
1885	बंबई में इंडियन नेशनल कांग्रेस का पहला सम्मेलन ।

1905	बंगाल का विभाजन ।	1942	क्रिप्स मिशन का आगमन । 'भारत छोड़ो' आन्दोलन चला ।
1906	सर सैयद अहमद खां द्वारा मुस्लिम लीग की स्थापना ।	1943	सुभाषचंद्र बोस द्वारा सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज की स्थापना । बंगाल में अकाल ।
1909	मॉर्ले-मिटो सुधारों की घोषणा । मुसलमानों को पृथक् मतदान का अधिकार मिला ।	1946	केन्द्र में कांग्रेस और मुस्लिम लीग की अस्थायी सरकार बनी । सांप्रदायिक दंगे शुरू हुए ।
1911	बंगाल का विभाजन रद्द हुआ । दिल्ली भारत की राजधानी बनी ।	1947	भारत स्वाधीन हुआ । देश का विभाजन और पाकिस्तान की स्थापना । कश्मीर पर पाकिस्तान का आक्रमण ।
1916	होमरूल लीग की स्थापना ।	1948	महात्मा गांधी की हत्या ।
1919	मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों की घोषणा । जलियां-वाला बाग का हत्याकांड ।	1950	भारत नये संविधान के अनुसार गणराज्य बन गया । सरदार पटेल की मृत्यु ।
1920	लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की मृत्यु ।	1952	भारत में पहले आम चुनाव ।
1921	महात्मा गांधी ने असहयोग आन्दोलन आरंभ किया ।	1954	भारत की फ्रांसीसी बस्तियां का भारत में विलय ।
1927-1928	साइमन कमीशन का बहिष्कार । लाला लाजपत-राय की मृत्यु ।	1956	भाषा के आधार पर भारतीय राज्यों का पुनर्गठन ।
1929	कांग्रेस ने लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य अपना लक्ष्य घोषित किया ।	1961	गोआ पर भारत का अधिकार ।
1930	कांग्रेस ने असहयोग आन्दोलन शुरू किया ।	1962	भारत पर चीन का आक्रमण ।
1931	गांधी-इर्विन समझौता ।	1964	प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु । लाल-बहादुर शास्त्री प्रधान मंत्री बने ।
1935	'गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट' पास हुआ ।	1965	भारत-पाक युद्ध ।
1937	प्रांतों में स्वायत्त शासन आरंभ । अधिकतर प्रांतों में कांग्रेसी सरकारें बनीं । बर्मा को भारत से अलग किया गया ।	1966	ताशकंद में प्रधान मंत्री लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु । श्रीमती इंदिरा गांधी प्रधान मंत्री बनीं ।
		1967	आम चुनाव, कई राज्यों में गैर-कांग्रेसी सरकारें ।

में बड़ी उथल-पुथल मची । ग्रीक, शक और कुषाण उत्तर की ओर से आते रहे और भारत के प्रदेशों को छिन्न-भिन्न करते रहे । कुषाणों का सबसे प्रसिद्ध राजा कनिष्क था । उसने बौद्ध धर्म का दूर-दूर तक प्रचार किया ।

भारत में चौथी शताब्दी में विदेशियों के विरुद्ध बड़ा विद्रोह हुआ । लगभग 320 ई० में चंद्रगुप्त मगध के सिंहासन पर बैठा, जिससे गुप्तवंश आरंभ हुआ । उसके बेटे समुद्रगुप्त ने राज्य को उत्तर और दक्षिण की ओर खूब बढ़ाया । समुद्रगुप्त का बेटा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य बड़ा यशस्वी राजा था । गुप्त राजा वैष्णव थे । पर वे दूसरे धर्मों का भी सम्मान करते थे । गुप्तकाल भारत का स्वर्णयुग कहलाता है । इसमें कला, विज्ञान, साहित्य, सभी-की खूब उन्नति हुई ।

गुप्तों के बाद उत्तर भारत में 606 ई० में हर्ष का साम्राज्य स्थापित हुआ । दक्षिण में सातवाहनों के अलावा चोल, पांड्य और पल्लव प्रधान राज्य थे । पांड्यों की राजधानी मदुरा थी । उनके उत्तर में चोल थे । उन्होंने एक बार तो सारे दक्षिण भारत को जीत लिया । उनके राजा राजेन्द्र चोल ने मध्य भारत को रौंदते हुए बंगाल तक पर धावा बोला । चोलों ने समुद्र के अनेक द्वीप भी जीते । कांची के पल्लवों का भी एक समय बड़ा दबदबा रहा । चोलों, पांड्यों और पल्लवों ने दक्षिण में बड़े-बड़े

मंदिर बनवाए । उनके काल में कला की बड़ी उन्नति हुई ।

हर्ष के बाद उत्तर भारत में राजपूतों के अनेक राज्य कायम हुए । उनमें विशेष प्रसिद्ध थे : कन्नौज के गुर्जर-प्रतिहार और राठौर, सांभर के चौहान, वातापी के चालुक्य, मान्यखेट के राष्ट्रकूट और मालवा के परमार । परमारों के मुंज और भोज की कहानियों से तो हमारा साहित्य भरा पड़ा है । बंगाल-बिहार में तब पाल वंश का राज्य था ।

711 ई० में अरबों की एक सेना ने सिंध पर हमला किया और वहां एक छोटा-सा मुस्लिम राज्य कायम हो गया । सुप्रसिद्ध परमार राजा भोज के समय से ही महमूद गज़नवी भारत पर हमले करने लगा । उसने यहां के नगरों और मंदिरों को खूब लूटा । उसका आखिरी हमला सोमनाथ के मंदिर पर हुआ । बारहवीं शताब्दी के अंत में शहाबुद्दीन गोरी ने हमला किया । पहले तो उत्तर भारत के राजाओं ने पृथ्वीराज चौहान के भंडे के नीचे इकट्ठे होकर उसे हरा दिया, पर दूसरी बार पृथ्वीराज लड़ाई में मारा गया । इस तरह दिल्ली पर पठानों का राज्य हो गया ।

गोरी के बाद उसका सरदार कुतुबुद्दीन दिल्ली का बादशाह बना । उसका वंश गुलाम वंश कहलाया । बंगाल में उन दिनों पाल वंश के बाद सेन वंश का राज्य था ।

गोरी के ही एक सरदार मुहम्मद बिन बख्तियार ने सेन वंश के लक्ष्मण सेन को हराकर बंगाल जीत लिया। देश की उस समय विचित्र दशा थी। राजनीति केवल राजाओं की चीज थी। जनता उससे अलग रखी जाती थी, और रहती थी।

गुलाम वंश में सबसे योग्य और शक्तिशाली बादशाह बलबन हुआ। उसके समय में मंगोलों के कई हमले हुए। बलबन के बाद दिल्ली में अराजकता छा गई। तब पंजाब से जलालुद्दीन खिलजी को लाकर गद्दी पर बैठाया गया। खिलजी वंश के बाद तुगलक वंश सत्ता में आया। इसका सबसे बड़ा सुल्तान मुहम्मद तुगलक था। वह बड़ा पंडित, पर साथ ही अजीब सनकी भी था।

तुगलक वंश के बाद दिल्ली में फिर अराजकता फैल गई। तैमूरलंग ने हमला कर पंजाब और दिल्ली को उजाड़ दिया। उधर राणा कुम्भा ने मालवा और गुजरात को हराकर एक बड़ा राजपूत साम्राज्य खड़ा कर लिया। दिल्ली में पहले सैयद और फिर लोदी बादशाह हुए। इब्राहीम लोदी को हराकर बाबर ने मुगल वंश की नींव डाली। राणा सांगा को हराकर वह सारे हिन्दुस्तान का बादशाह हो गया।

बाबर से लेकर औरंगजेब तक मुगल वंश का साम्राज्य और दबदबा बराबर बढ़ता ही गया। केवल बीच में, कुछ अरसे के लिए, हुमायूँ से बिहार के पठान शेरशाह ने दिल्ली की गद्दी छीन ली थी। मुगल वंश में अकबर की कीर्ति सबसे अधिक रही। उसने हिन्दुओं से मेलजोल बढ़ाया। वह पढ़ा-लिखा न होते हुए भी बहुत बुद्धिमान था और विद्वानों का बड़ा आदर करता था। जहांगीर और शाहजहां के समय में साम्राज्य का वैभव पराकाष्ठा पर पहुंच गया। ये बादशाह कला के बड़े प्रेमी थे। औरंगजेब कट्टर मुसलमान था। उसने कितने ही हिन्दू मंदिर तुड़वाए। इसलिए राजपूत और मराठे दोनों उसके दुश्मन हो गए।

उसी समय दक्षिण में शिवाजी ने मराठों को संगठित कर एक मराठा राज्य स्थापित किया। यह राज्य शिवाजी के बाद पंजाब तक फैल गया। अठारहवीं शताब्दी में भारत में सबसे शक्तिशाली मराठे ही थे। मराठों की

शक्ति बाद में पानीपत के मैदान में अहमदशाह अब्दाली के साथ हुई लड़ाई में टूटी।

औरंगजेब के बाद भी मुगल बादशाह दिल्ली की गद्दी पर रहे, पर मराठों, जाटों और पठानों के हमलों ने उन्हें जर्जर कर दिया। मुगलों के शासनकाल में ही नादिरशाह ने दिल्ली को बुरी तरह लूटा और कत्ले-आम किया।

अंग्रेज व्यापारी जहांगीर के समय से ही भारत में आने लगे थे। पर उनकी ताकत मुगल वंश के कमजोर होने पर ही बढ़ी। क्लाइव ने प्लासी की लड़ाई जीतकर ईस्ट इंडिया कंपनी के अंग्रेजी राज्य की नींव डाली। कंपनी ने अपना माल बेचने के लिए भारत के उद्योग-धंधे नष्ट किए। जमींदारी प्रथा चालू की। डलहौजी ने अंग्रेजी राज्य को बढ़ाने के लिए एक और तरीका अपनाया। जिन राजाओं के कोई लड़का नहीं था उनकी रियासतें अंग्रेजी राज्य में मिलाई जाने लगीं। अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध पहला विद्रोह 1857 में हुआ। पेशवा, भांसी की महारानी लक्ष्मीबाई, दिल्ली का बादशाह बहादुरशाह, तात्या टोपे आदि इस विद्रोह के नेता थे। अंग्रेजी राज्य की जड़ें एक बार उखड़-सी गईं, पर कई राजाओं ने अंग्रेजों की मदद की। विद्रोह कुचल दिया गया। इस विद्रोह के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन खत्म हो गया। इंग्लैंड की महारानी वाइसराय के द्वारा भारत पर शासन करने लगी।

धीरे-धीरे भारत में राष्ट्रीयता का प्रसार हुआ। 1885 में कांग्रेस की नींव पड़ी। उसने शुरू में केवल कुछ अधिकारों की मांग की, पर तिलक के समय तक 'स्वराज्य' उसका नारा हो गया। तब महात्मा गांधी रंगमंच पर आए। उन्होंने एक और स्वराज्य आंदोलन को आम जनता तक फैलाया। दूसरी ओर, अहिंसा, असहयोग और सत्याग्रह के द्वारा उसका नैतिक स्तर बहुत उन्नत कर दिया।

इस जन-आन्दोलन के साथ ही देश में नौजवानों के आतंकवादी दल भी थे। वे जान हथेली पर रखकर अंग्रेजी शासन से टक्कर ले रहे थे। खुदीराम बोस, चन्द्रशेखर आज़ाद, भगतसिंह आदि नौजवान इस संघर्ष में शहीद हुए।

भारतीय इतिहास के प्रमुख काल



सिंधु सभ्यता



बौद्ध काल



मुगल काल



मराठा काल



ब्रिटिश काल



स्वतन्त्र भारत

1935 में अंग्रेजों ने कुछ सुधारों की घोषणा की। पर उससे आजादी की भूख नहीं मिटी। 1939 में दूसरा विश्वयुद्ध छिड़ने पर कांग्रेस ने आजादी की मांग रखी। सरकार के इन्कार करने पर गांधीजी ने 'भारत छोड़ो' का नारा दिया। कांग्रेसी नेताओं की गिरफ्तारी के बाद तो देश में जैसे 'आग-सी लग गई। लोगों ने सरकारी थाने जलाना और रेल की पटरियां उखाड़ना शुरू कर दिया।

युद्ध के दिनों में ही सुभाषचन्द्र बोस भारत से भागकर बर्मा पहुंचे। वहां उन्होंने विदेशों में बसे हिन्दुस्तानियों की आजाद हिन्द सेना संगठित की। सुभाषचन्द्र बोस की युद्ध के दिनों में ही विमान-दुर्घटना में मृत्यु हो गई।

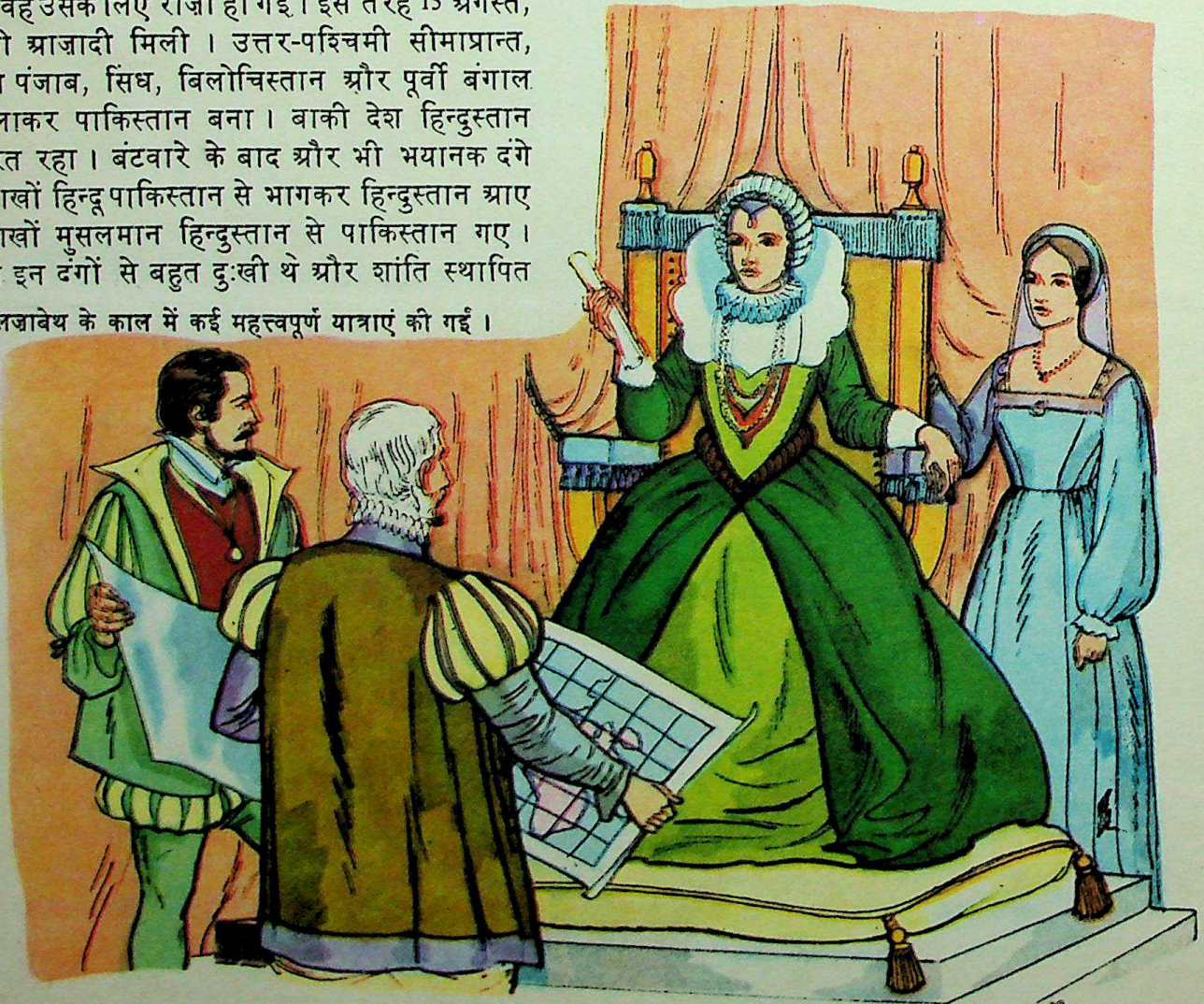
अंग्रेजी सरकार आजादी के आन्दोलन को विफल करने के लिए हिन्दुओं और मुसलमानों को एक-दूसरे के विरुद्ध भड़काती रहती थी। उसकी इस नीति का परिणाम यह हुआ कि मुस्लिम लीग मुसलमानों के एक अलग राज्य, 'पाकिस्तान' की मांग करने लगी। देश में इसी सवाल पर जगह-जगह भयंकर दंगे हुए। कांग्रेस शुरू में देश के बंटवारे के विरुद्ध थी। लेकिन अंत में इस स्थिति को देखकर वह उसके लिए राजी हो गई। इस तरह 15 अगस्त, 1947 को आजादी मिली। उत्तर-पश्चिमी सीमाप्रान्त, पश्चिमी पंजाब, सिंध, बिलोचिस्तान और पूर्वी बंगाल को मिलाकर पाकिस्तान बना। बाकी देश हिन्दुस्तान या भारत रहा। बंटवारे के बाद और भी भयानक दंगे हुए। लाखों हिन्दू पाकिस्तान से भागकर हिन्दुस्तान आए और लाखों मुसलमान हिन्दुस्तान से पाकिस्तान गए। गांधीजी इन दंगों से बहुत दुःखी थे और शांति स्थापित

एलिजाबेथ के काल में कई महत्वपूर्ण यात्राएं की गईं।

करने में लगे थे। तभी एक कट्टर धर्मांध हिन्दू ने 30 जनवरी 1948 को उनकी हत्या कर दी।

श्री जवाहरलाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रधान मंत्री बने। देश का एक नया संविधान बनाया गया और भारत को लोक गणराज्य घोषित किया गया। डा० राजेन्द्रप्रसाद भारत गणराज्य के पहले राष्ट्रपति चुने गए। पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा देश का उद्योगीकरण होने लगा। डा० राजेन्द्रप्रसाद के अवकाश ग्रहण करने पर डा० राधाकृष्णन् भारत के द्वितीय राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। 27 मई, 1964 को श्री जवाहरलाल नेहरू की अकस्मात् मृत्यु हो गई। उनके बाद श्री लालबहादुर शास्त्री भारत के नये प्रधान मंत्री चुने गए। जनवरी, 1966 में श्री लालबहादुर शास्त्री का ताशकंद (सोवियत संघ) में देहांत हो गया और श्रीमती इंदिरा गांधी भारत की प्रधान मंत्री बनीं।

एलिजाबेथ प्रथम (ELIZABETH I 1533-1603) : इंग्लैंड के शासकों में दो रानियां बहुत प्रसिद्ध हैं—एलिजाबेथ प्रथम और विक्टोरिया। एलिजाबेथ प्रथम का शासन-काल कई बातों के लिए उल्लेखनीय है।

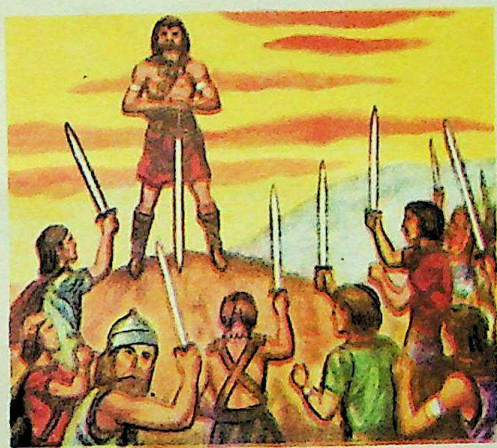


एलिजाबेथ प्रथम 25 वर्ष की अवस्था में गद्दी पर बैठी। उस समय इंग्लैंड में गरीबी फैली हुई थी। धर्म के नाम पर भगड़े-फसाद हुआ करते थे। दूसरे देशों से इंग्लैंड के संबंध अच्छे नहीं थे। फ्रांस इंग्लैंड पर हमला करने की धमकियां दे रहा था।

एलिजाबेथ बहुत सफल रानी थी। वह हर नई चीज को बढ़ावा देती थी। सर वाल्टर रैले और फ्रांसिस ड्रेक उसके युग के दो महान यात्री थे, जिन्होंने सुदूर स्थानों की यात्राएं कीं। अंग्रेजी जहाज यूरोप के हर देश तथा भारत आदि से व्यापार करने के लिए निकले।

एलिजाबेथ ने फ्रांस से अपना भगड़ा खत्म कर लिया। स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय ने 1588 में अपने एक लड़ाकू जहाजी बेड़े 'स्पेनिश आर्मदा' को भेजकर इंग्लैंड पर हमला किया। लेकिन उसको मुंह की खानी पड़ी।

महान नाटककार और कवि शेक्सपियर एलिजाबेथ प्रथम के युग में ही हुए। उनके अतिरिक्त भी उस युग में अनेक महान अंग्रेजी लेखक हुए। लगभग 400 वर्ष तक उसे रानी एलिजाबेथ कहा जाता रहा, पर अब वह एलिजाबेथ प्रथम कही जाती है। इसका कारण यह है कि 1952 से एलिजाबेथ नाम की एक दूसरी रानी इंग्लैंड की गद्दी पर बैठी है जिसे एलिजाबेथ द्वितीय कहा जाता है।



ऐंग्लो-सैक्सन बड़े वीर और लड़ाकू थे।

ऐंग्लो-सैक्सन (ANGLO-SAXONS) : लगभग 1500 वर्ष पहले की बात है, तीन जर्मन जातियां यूरोप से इंग्लैंड जा पहुंचीं। ये जातियां थीं—ऐंग्ल, सैक्सन और जूट। असल में ये जातियां इंग्लैंड आई थीं वहां के निवासी ब्रिटनों के बुलावे पर। ब्रिटन लोगों ने इन्हें उत्तर से हमला करनेवाली जातियों के खिलाफ लड़ाई में मदद देने के लिए बुलाया था।

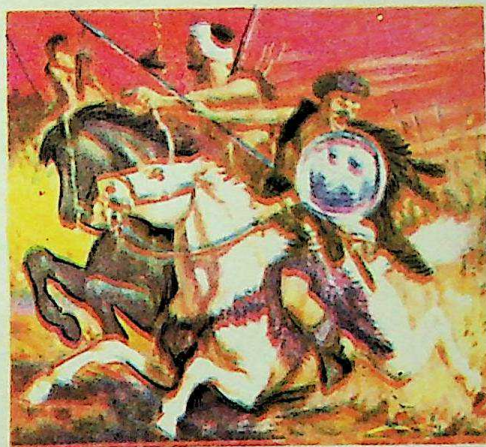
इन जर्मन जातियों ने हमलावरों को तो भगाया ही, कुछ समय बाद खुद ब्रिटन लोगों को भी भगा दिया और ये अपने छोटे-छोटे राज्य बनाकर वहीं बस गईं। तीन-चार सौ वर्ष में इन छोटे-छोटे राज्यों से एक राज

वन गया और जर्मनी से आनेवाले ये हमलावर ऐंग्लो-सैक्सन कहलाने लगे।

ऐंग्लो-सैक्सन बड़े वीर और लड़ाकू थे। सबसे मशहूर ऐंग्लो-सैक्सन राजा का नाम ऐल्फ्रेड द ग्रेट था।

(देखें : इतिहास, इंग्लैंड का)

ऐटिला (ATTILA 406-453) : सन् 433 में ऐटिला अपने भाई ब्लेडा के साथ हूणों का संयुक्त राजा बना। उस समय लगभग सारा यूरोप और एशिया हूणों के आतंक से त्रस्त था। हूण बड़े लड़ाकू और निर्दय लोग थे। वे खानाबदोशों



ऐटिला की फौजों ने यूरोप को रौंद डाला।

की तरह लगातार घूमते रहते थे और जहां जाते, वहीं तबाही मचा देते थे।

गद्दी पर बैठने के कोई ग्यारह वर्ष बाद ऐटिला अपनी विजय यात्रा पर निकल पड़ा। उसकी निर्दयता के कारण लोग उसे खुदा का कहर कहते थे। तबाही और बरबादी मचाती हूण फौजें लगातार आगे बढ़ती गईं।

लेकिन रोमन सेनापति फ्लेवियस ऐटियस ने शहलॉन के मैदान में हूणों से टक्कर ली। शहलॉन की घमासान लड़ाई में लगभग ढाई लाख आदमी मारे गए। आखिर ऐटिला को पीछे हटना पड़ा।

453 ई० में ऐटिला ने फिर आगे बढ़ने की तैयारी की ही थी कि वह अचानक मर गया। हूणों ने उसके शव को सोने के ताबूत में रखा और फिर चांदी के ताबूत में। बाद में चांदी के ताबूत को लोहे के ताबूत में बंद किया गया। जो लोग ऐटिला को दफनाने गए, उन्हें वापस आते ही मार दिया गया, क्योंकि हूण नहीं चाहते थे कि ऐटिला को दफनाने की जगह का पता किसीको चल सके।

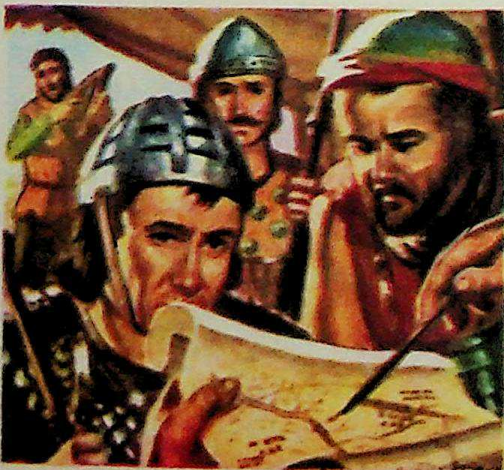
ऐलेरिक (ALARIC 370?-410) : कोई 1550 साल पहले ऐलेरिक के नेतृत्व में पश्चिमी गॉथ नामक एक जंगली जाति ने रोम पर हमला किया। ऐलेरिक का इरादा रोम पर



ऐलेरिक की फौजों ने रोम पर अधिकार कर लिया ।

कब्जा करने का नहीं था—वह तो बस यह चाहता था कि रोम का सम्राट उसके जाति-भाइयों को अपनी फौज में भरती करे और उन्हें जमीन दे । रोम के सम्राट ने वायदे तो बहुत किए, लेकिन पूरा एक भी नहीं किया । अंत में ऐलेरिक ने रोम पर अधिकार कर लिया और उसके कुछ ही दिन बाद वह मर गया ।

ऐलेरिक की मृत्यु के बाद उसके सरदारों ने रोमन कैदियों से एक पहाड़ी नदी का रुख बदलवाया । नदी की पुरानी तली में उन्होंने ऐलेरिक का शव और खजाना दफना दिया । इसके बाद उन्होंने नदी को वापस उसी रास्ते पर मोड़ दिया । वे नहीं चाहते थे कि यह भेद किसी-को मालूम हो, इसलिए उन्होंने सभी कैदियों को मार डाला । सदियों से यह भेद गुप्त ही रहा है ।



ऐल्फ्रेड ने अपना राज्य पुनः जीतने की योजना बनाई ।

ऐल्फ्रेड द ग्रेट (ALFRED THE GREAT 849-899) : यह इंग्लैंड का एक प्रसिद्ध राजा हुआ है । इसके बारे में कितनी ही कहानियां प्रचलित हैं । उनमें से एक उस जमाने की है जब दुश्मनों ने उसे उसके राज्य से निकाल दिया था और वह अपनी जान बचाने के लिए भागा-भागा फिर रहा था ।

एक रात उसने एक किसान के घर रहने को जगह मांगी । किसान की स्त्री ने उसे पहचाना नहीं । उसने उसे ठहरा लिया । इसी बीच उसे किसी काम से बाहर जाना पड़ा, इसलिए वह ऐल्फ्रेड से कह गई कि चूल्हे का ध्यान रखना । ऐल्फ्रेड का ध्यान अपनी ही बातों में इतना लगा था कि चूल्हे पर चढ़ी सारी चीजें जल गईं । किसान की स्त्री ने लौटकर उसे खूब डांटा । उस बेचारी को क्या मालूम था कि यह कौन है ।

बाद में ऐल्फ्रेड ने अपना राज्य वापस जीत लिया और उस स्त्री को भी खूब इनाम दिया । उसने इंग्लैंड-भर में एक राज्य कायम किया, लंदन नगर को फिर से बसाया और देश के कानूनों में भी सुधार किया । प्रजा उसे बहुत चाहती थी । (देखें : ऐंग्लो-सैक्सन)

औरंगजेब (AURANGZEB 1618 ?-1707) : मुगल वंश के प्रमुख सम्राटों में औरंगजेब का चरित्र बहुत ही अद्भुत है । वह जहां एक ओर उच्च कोटि का विद्वान, वीर, साहसी, कुशल और सादगीपसंद शासक था, वहां दूसरी ओर बड़ा ही संदेहशील, अविश्वासी और धर्मांध भी था । उसे न केवल हिन्दुओं से, बल्कि सूफी और शिया मुसलमानों से भी घृणा थी । उसका सारा जीवन युद्धों में बीता और मुगल साम्राज्य उसके सामने ही जर्जरित होने लगा ।

औरंगजेब जब केवल पंद्रह वर्ष का था तो एक बार एक उन्मत्त हाथी उसपर टूट पड़ा । परंतु उसने बड़ी निर्भीकता से उसपर भाले से प्रहार कर उसे अपने काबू में कर लिया । 1635 ई० में उसे बुन्देला-विद्रोह के दमन के लिए भेजा गया, जिसमें वह पूर्णतया सफल रहा । इसपर उसके पिता शाहजहां ने उसे अगले ही वर्ष दक्षिण का सूबेदार बना दिया । 1645 ई० में उसे गुजरात का, दो साल बाद बलख और बदख़्शां का, और फिर मुल्तान और सिंध का सूबेदार बनाया गया । 1652 ई० में वह दूसरी बार दक्षिण का सूबेदार बना । इस अरसे में उसने हर कहीं अपनी सैनिक और शासकीय प्रतिभा का अच्छा परिचय दिया ।

औरंगजेब अपने भाइयों में सबसे अधिक योग्य, कूटनीतिज्ञ और महत्वाकांक्षी था । 1658 ई० में शाहजहां बीमार था कि उसकी मृत्यु की अफवाह उड़ गई । तब औरंगजेब ने अपनी सैनिक शक्ति और कूटनीतिज्ञता द्वारा अपने सभी प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय प्राप्त करके और अपने बड़े बाप को बंदी बनाकर मुगल सिंहासन पर कब्जा कर लिया ।

औरंगजेब ने लगभग पचास वर्ष तक शासन किया । उसके शासन-काल के पहले पचीस वर्ष उत्तरी भारत में सीमा की सुरक्षा करने तथा विद्रोहों को कुचलने में बीते, और पिछले पचीस वर्ष दक्षिण में मुगल साम्राज्य की सत्ता को बढ़ाने में लगे । औरंगजेब कट्टर सुन्नी मुसलमान था और बड़ा ही सादा जीवन व्यतीत करता था । राजकाज में

जब उसे अवकाश मिलता तो वह या तो कुरान की आयतों की नकल किया करता, या टोपियां सिया करता। उनकी विक्री से ही वह अपना खर्च चलाता था।

औरंगजेब ने हर बड़े नगर में ऐसे अफसर नियुक्त किए जिनका काम यह देखना था कि लोग शराब न पिएं, जुआ न खेलें, या और कोई धर्मविरुद्ध आचरण न करें।

परंतु औरंगजेब ने अकबर द्वारा आरंभ की गई उदारता और धार्मिक सहिष्णुता की नीति त्यागकर गैर-मुसलमानों, विशेषकर हिन्दुओं पर तरह-तरह के अत्याचार किए। वह भारत को मुस्लिम राज्य बनाना चाहता था। उसने हिन्दू मंदिरों और मूर्तियों को तुड़वाकर उनकी जगह मस्जिदें बनवाई; हिन्दू पाठशालाओं को नष्ट किया; हिन्दुओं पर फिर से जजिया और तीर्थयात्रा-कर लगाए; हिन्दू व्यापारियों के माल पर बहुत अधिक चुंगी लगाई; हिन्दुओं के लिए सरकारी नौकरियों का द्वार बंद कर दिया। उसके शासन में हिन्दुओं को ज़बर्दस्ती और तरह-तरह के लालच देकर मुसलमान बनाया जाने लगा। इसका फल यह हुआ कि न केवल राजपूत उसके शत्रु हो गए, बल्कि सिख, सतनामी, जाट और मराठे भी उसके खिलाफ विद्रोह करने लगे।

औरंगजेब को गुरु गोविन्दसिंह, बुन्देलों के राजा छत्र-साल, राजपूत वीर दुर्गादास, मेवाड़ के राणा राजसिंह और छत्रपति शिवाजी के विद्रोहों के कारण भारी क्षति उठानी पड़ी। विशेषकर शिवाजी ने तो उसे नाकों चने चबवा दिए।

औरंगजेब 90 वर्ष की अवस्था तक जीवित रहा। उसके अंतिम दिन बड़ी निराशा के थे। शरीर के साथ-साथ उसका साम्राज्य भी जर्जरित होता जा रहा था और उसके पुत्रों में से कोई भी इस योग्य न था कि उसे संभाल सके। 1707 ई० में उसका देहांत हो गया। (देखें : शिवाजी, छत्रपति)

कनिष्क (KANISHKA) : विदेशी होते हुए भी कुषाण वंश का यह सम्राट बौद्ध धर्म स्वीकार कर भारतीय बन गया था। इसने बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए बड़ा उद्योग

किया और सुप्रसिद्ध चतुर्थ बौद्ध संगीति की आयोजना की, जिसमें सैकड़ों बौद्ध विद्वानों ने एकत्र होकर विचार-विमर्श किया। इसके शासन-काल में अश्वघोष, वसुमित्र तथा नागार्जुन जैसे महान दार्शनिक और लेखक हुए।

कुषाण भारत में विदेशी आक्रमणकारी थे, जो चीन के उत्तर-पश्चिम से आए थे। उन्होंने पेशावर में अपनी राजधानी स्थापित की। कनिष्क का काल ईसा की पहली शताब्दी है।

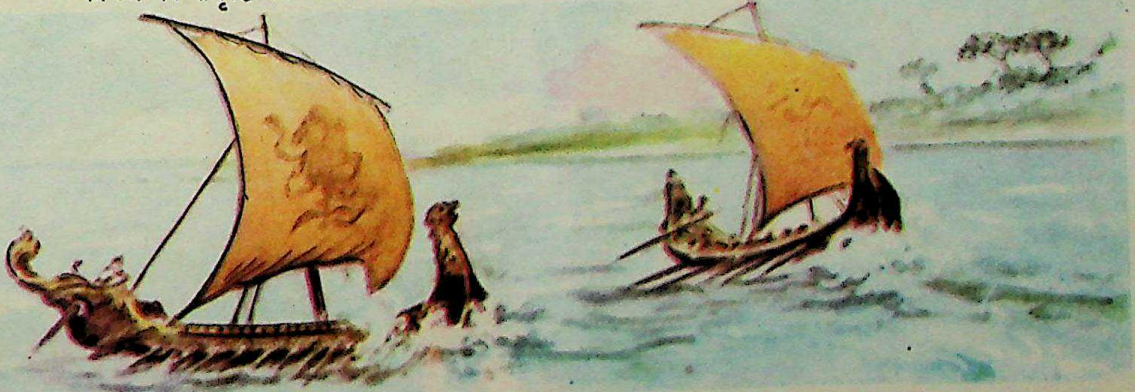
गद्दी पर बैठते ही कनिष्क ने अपने साम्राज्य का विस्तार आरंभ कर दिया। पहले उसने कश्मीर पर विजय प्राप्त की, फिर मगध को जीता। इससे उसका राज्य पूर्व में बंगाल तक फैल गया। फिर उसने काबुल और पार्थिया को जीता। चीन के राजा को भी उसने युद्ध में परास्त किया और उसके दो पुत्रों को अपनी राजधानी में बन्दी बनाकर रखा।

मगध में कनिष्क की भेंट अश्वघोष नामक बौद्ध विद्वान से हुई। वह अश्वघोष से इतना प्रभावित हुआ कि उसे पेशावर ले जाकर रखा और उससे बौद्ध धर्म की दीक्षा ली। बौद्ध बनने के बाद उसने अनेक विहारों तथा स्तूपों का निर्माण करवाया। उसके समय में बौद्ध कला की गांधार शैली का विकास हुआ। इसके साथ ही कनिष्क ब्राह्मण धर्म को भी मानता था और हवन इत्यादि करता था।

इस समय तक बौद्ध धर्म विदेशों में फैलने लगा था। अतः उसका रूप कुछ बदलने की आवश्यकता थी। यह नया रूप 'महायान' था। कनिष्क ने इन समस्याओं पर विचार करने के लिए चौथी बौद्ध संगीति (सम्मेलन) कश्मीर में बुलाई। इससे पहले की तीसरी संगीति अशोक ने पाटलिपुत्र में बुलाई थी। चौथी संगीति में बौद्ध ग्रंथों पर नये भाष्य लिखे गए और महायान को मान्यता दी गई। यह कनिष्क के शासन की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी।

कार्थेज (CARTHAGE) : पहले कार्थेज प्राचीन फीनीशिया साम्राज्य की राजधानी था। यह नगर उत्तरी अफ्रीका में भूमध्य सागर के तट पर उस स्थान पर बसा था, जहां

कार्थेज की समृद्धि का आधार फीनीशियाई व्यापारी थे, जो दूर-दूर की समुद्री यात्राएं करते थे।



आज का ट्युनिस नगर है। फीनीशियाई बहुत अच्छे नाविक थे। कुछ फीनीशियाई व्यापारी तो इंग्लैंड तक जाकर कॉर्नवाल से टीन खरीदते थे।

कार्थेजियनों और रोमनों में बहुत होड़ रहा करती थी। उनके बीच कुछ बहुत बड़े युद्ध भी हुए। इन्हें 'प्यूनिक' युद्ध कहते हैं। हनीबाल सबसे प्रसिद्ध कार्थेजियन सेनापति था।

अन्तिम प्यूनिक युद्ध में, जो ईसा से 146 वर्ष पूर्व हुआ, कार्थेज को रोमनों ने मटियामेट कर दिया। कार्थेज के निवासियों ने रोमनों का डटकर मुकाबला किया। ऐसा उल्लेख मिलता है कि वहां की महिलाओं ने युद्ध के समय आवश्यकता पड़ने पर अपने बाल काटकर युद्धास्त्रों के लिए डोरियां बनाई थीं।

कई साल बाद खुद रोमनों ने इस नगर को फिर से बसाया। इसके बाद कार्थेज बहुत दिनों तक समृद्ध रहा। सन् 698 में इसे अरब की वण्डाल जाति ने दूसरी बार ध्वस्त कर दिया। आज इसके भग्नावशेष ही देखने में आते हैं। (देखें : फीनीशियाई)

कैन्यूट, राजा (KING CANUTE 995-1035) : राजा कैन्यूट एकसाथ डेनमार्क, नार्वे और इंग्लैंड का राजा था। 1013 में अपने पिता के साथ उसने इंग्लैंड पर हमला किया और युद्ध में जीत गया। इसके बाद 1016 में वह इंग्लैंड की गद्दी पर बैठा।

कैन्यूट बहुत बुद्धिमान और न्यायी राजा था। कहा जाता है कि उसके चापलूस दरबारियों ने उसे खुश करने के लिए कहना शुरू किया कि वह सर्वशक्तिमान है और जो चाहे कर सकता है। इसपर कैन्यूट समुद्र के किनारे जाकर बैठ गया। आते हुए ज्वार को देखकर उसने कहा, "पीछे लौट जाओ।" लहरें न लौट सकती थीं, न लौटीं। फिर वह अपने दरबारियों की ओर मुड़ा और उन्हें खूब फटकारा। उसने कहा, "मुझे बेवकूफ मत समझो। मैं जानता हूं, राजा सर्वशक्तिमान नहीं होता, वह जो चाहे सो नहीं कर सकता। ऐसा करनेवाला सिर्फ ईश्वर है।"

सन् 1018 में वह डेनमार्क की गद्दी पर बैठा और दस साल बाद नार्वे का भी राजा बन गया।

क्रीट में बने तेल के कुप्पे



क्रॉमवेल, ओलिवर (OLIVER CROMWELL 1599-1658): ओलिवर क्रॉमवेल और उसका पुत्र रिचार्ड ही ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने इंग्लैंड पर राज्य किया और जिन्हें राजा की उपाधि नहीं दी गई।

क्रॉमवेल 29 वर्ष की आयु में पार्लेमेंट का सदस्य बना। वह रोमन कैथलिक चर्च का विरोधी और प्यूरिटनवादी था।

जब 1642 में चार्ल्स प्रथम ने पार्लेमेंट के अधिकारों को कुचलना चाहा, तो क्रॉमवेल उन्हें बचाने के लिए सेना में सम्मिलित हो गया। वह शीघ्र ही सेनापति के पद तक पहुंच गया। उसने सेना में सुधार किया, और 1645 में नेसबी के युद्ध में चार्ल्स के समर्थकों को हरा दिया। 1649 में उसने चार्ल्स के मृत्यु-दंड पर हस्ताक्षर कर दिए।

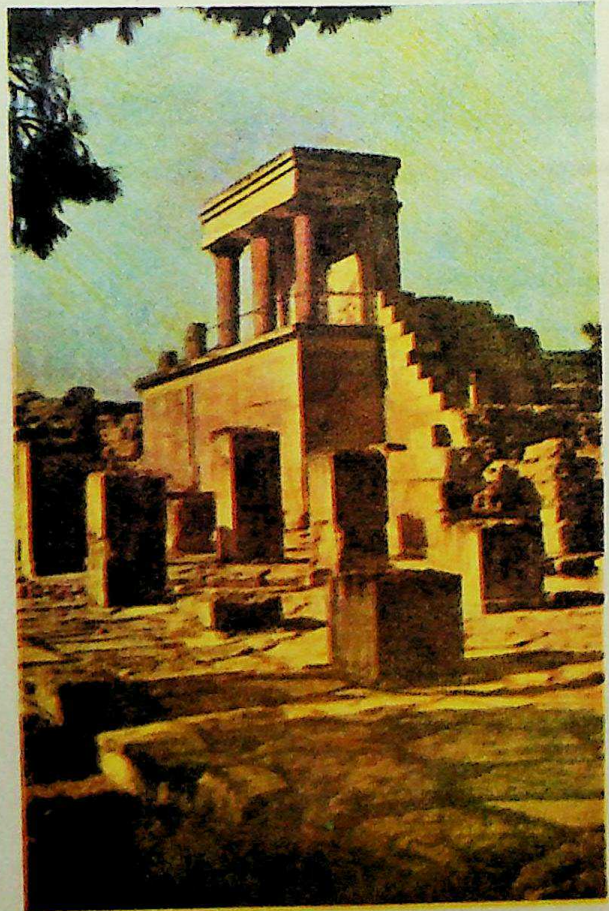
लार्ड प्रोटेक्टर की उपाधि धारण कर क्रॉमवेल ने पांच वर्ष तक इंग्लैंड का शासन चलाया।

(देखें : चार्ल्स प्रथम)

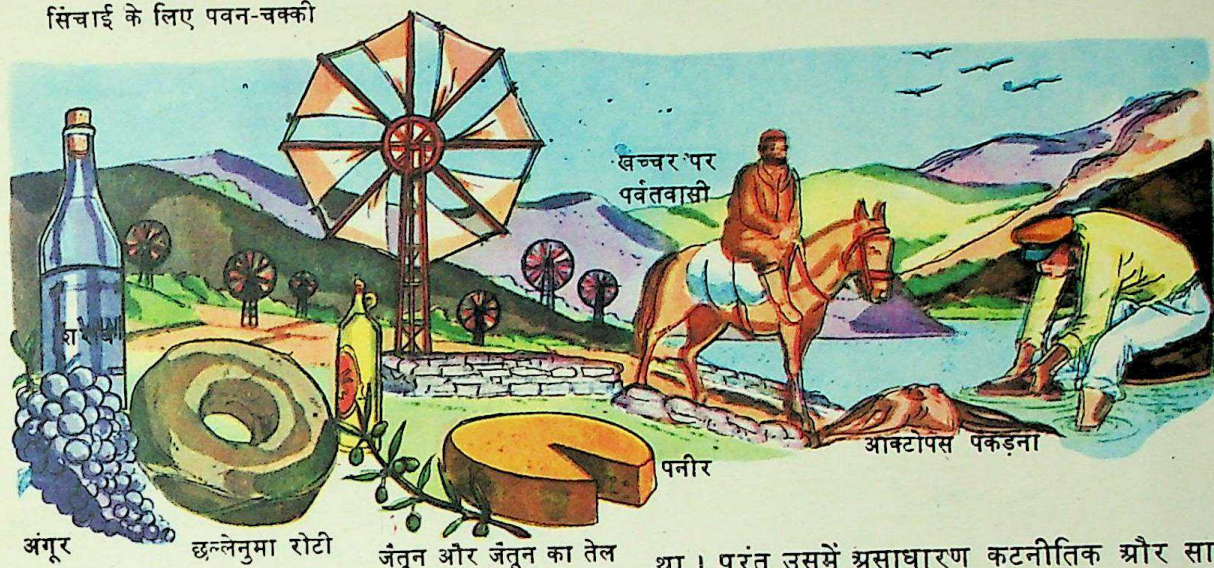
क्रीट (CRETE) : यह द्वीप भूमध्य सागर में यूनान के दक्षिण में है।

चार हजार वर्ष पूर्व, जब यूनान के लोग अनगढ़ गांवों में रहते थे, क्रीट एक व्यवसायी और धनी द्वीप था। यहां

क्रीट स्थित नोसस के महल के खंडहर



सिंचाई के लिए पवन-चक्की



अंगूर

छन्लेनुमा रोटी

जंतून और जंतून का तेल

आधुनिक क्रीट का जीवन

पुराने नगरों के अवशेष मिलते हैं। एक नगर में एक बड़े राजमहल के खंडहर हैं। यह नोसस का महल कहलाता है। इस महल का राज-सिंहासन यूरोप में सबसे प्राचीन है। सैकड़ों कमरों के इस महल को भूकम्प और आग ने नष्ट कर दिया।

क्रीट की पुरानी सभ्यता मिनोअन सभ्यता कही जाती है। इसका स्वर्णयुग लगभग 3,500 वर्ष पूर्व था। फीनीशिया के समुद्री व्यापारियों से सदियों पहले क्रीट के नाविक भूमध्य सागर में दूर-दूर की यात्रा करते थे। नाव बनाना उन्होंने मिस्त्रियों से सीखा था।

क्रीट के बने हुए मिट्टी के बर्तन भूमध्य सागर के तट के सब देशों में पाए गए हैं। क्रीट-निवासी मिस्त्रियों और बेबीलोनिया वालों की तरह मिट्टी की पट्टियों पर लिखते थे। पर उनकी लिपि अपनी थी। उनकी लिपि को बहुत दिनों तक कोई पढ़ नहीं सका। अभी हाल में वह पढ़ी गई है।

क्रीट की सभ्यता का ह्रास 3,000 वर्ष से भी पूर्व आरंभ हो गया था। इस द्वीप पर पहले यूनानियों और फिर रोमनों का अधिकार हुआ। आज क्रीट यूनान का एक भाग है। यह बगीचों और चरागाहों का देश है।

क्लाइव, रॉबर्ट (ROBERT CLIVE 1725-1774) : अंग्रेज भारत में व्यापारी के रूप में आए थे। ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना पूर्व के देशों से व्यापार के लिए की गई थी, साम्राज्य की स्थापना के लिए नहीं। परंतु वे धीरे-धीरे भारत के शासक बन गए। उनका औपनिवेशिक साम्राज्य इस देश में कोई दो सौ वर्ष तक कायम रहा। उस साम्राज्य की नींव रॉबर्ट क्लाइव ने ही रखी थी।

क्लाइव भारत में कंपनी के एक क्लर्क के रूप में आया

था। परंतु उसमें असाधारण कूटनीतिक और सामरिक प्रतिभा थी। मेजर लारेन्स ने उसकी प्रतिभा को पहचाना और वे क्लाइव से परामर्श करने तथा उसे प्रोत्साहन देने लगे। क्लाइव ने जब केवल 200 अंग्रेज और 600 भारतीय सैनिकों की सहायता से अर्काट पर अधिकार कर लिया, तो उसकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई। उसने दक्षिण भारत में फ्रांसीसियों के प्रभाव तथा साम्राज्य स्थापित करने की उनकी योजना को धूल में मिला दिया और अंग्रेजों के लिए रास्ता साफ कर दिया।

बंगाल में क्लाइव ने नवाब सिराजुद्दौला के विरुद्ध षड्यंत्र रचा और मीर जाफर को अपनी ओर मिला लिया। इस तरह कूटनीति से उसने प्लासी की लड़ाई में सिराजुद्दौला को हरा दिया। बंगाल के नये नवाब से उसने कंपनी के लिए बंगाल की निजामत, यानी सैनिक शक्ति और फौजदारी के मुकदमों का फैसला करने का अधिकार प्राप्त कर लिया। बाद में दिल्ली के बादशाह शाह आलम से बंगाल की दीवानी, यानी लगान वसूल करने और उसके व्यय का प्रबंध करने का अधिकार भी मिल गया। इस तरह ईस्ट इंडिया कंपनी बंगाल की वास्तविक शासक बन गई।

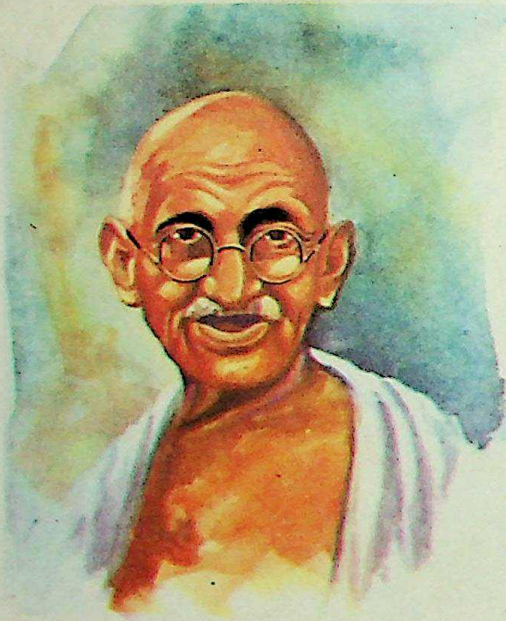
क्लाइव ने कंपनी की प्रभुत्व-शक्ति को सुदृढ़ करने तथा उसकी सुरक्षा की भी पूर्ण व्यवस्था की। 1765 ई० में जब वह दूसरी बार गवर्नर बनकर भारत आया तो उसने कंपनी की नौकरियों और सेना में अनेक सुधार किए। शाह आलम के साथ संधि तथा मैत्री करके उसने कई तरह की नई व्यापारिक सुविधाएं प्राप्त कर लीं। अवध के नवाब से मैत्री करके उसने उन प्रदेशों की सुरक्षा की व्यवस्था कर दी जो कंपनी के अधिकार में आ चुके थे। डच तथा फ्रांसीसियों की शक्ति को बंगाल में नष्ट करके उसने वहां कंपनी का अकंटक राज्य स्थापित कर दिया।

इस तरह क्लाइव ने दक्षिण तथा पूर्व भारत में अंग्रेजों की प्रभुसत्ता का बीजारोपण कर दिया। इन्हीं दिशाओं से अंग्रेज धीरे-धीरे उत्तर तथा पश्चिम की ओर बढ़े, और

भारतीय नरेशों को परास्त कर अंत में सम्पूर्ण भारत के शासक बन गए।

1767 ई० में क्लाइव इंग्लैंड वापस चला गया। वहां उसके विरोधियों ने उसपर मुकदमा चलाया। यद्यपि वह निर्दोष सिद्ध हो गया, फिर भी वह इससे इतना दुःखी हुआ कि 1774 ई० में उसने आत्महत्या कर ली।

(देखें : प्लासी की लड़ाई)



महात्मा गांधी

गांधी, महात्मा (MAHATMA GANDHI 1869-1948) : गांधीजी भारत के राष्ट्रपिता हैं। उनकी गणना विश्व के महापुरुषों में की जाती है।

गांधीजी का जन्म पोरबन्दर में हुआ। उनका पूरा नाम मोहनदास कर्मचंद गांधी था। गांधीजी बचपन से ही धर्मात्मा और सत्यनिष्ठ थे। 1888 में उन्हें बैरिस्टरी पास करने के लिए इंग्लैंड भेजा गया। मांसाहारी न होने के कारण विदेश में उन्हें काफी परेशानी उठानी पड़ी। परन्तु उनका भुकाव दिन-प्रतिदिन सादगी की ओर ही होता गया।

गांधीजी को भारत आकर बैरिस्टरी करते कुछ ही दिन हुए थे कि उन्हें एक मुकदमे के सिलसिले में दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। वहां उन्हें भारतीयों के साथ होनेवाले भेद-भाव और दुर्व्यवहार का बहुत ही कटु अनुभव हुआ। उन्होंने इस अन्याय का निर्भीकता से किन्तु अहिंसात्मक ढंग से विरोध करने का निश्चय कर लिया। भारत-विरोधी आर्डिनेंस के खिलाफ उन्होंने अहिंसात्मक प्रतिरोध शुरू कर दिया। इसीका नाम बाद में 'सत्याग्रह' पड़ा। यह संघर्ष आठ वर्ष चला। हजारों भारतीय और कितने ही अभारतीय भी जेल गए। अंत में दक्षिण अफ्रीका की सरकार

को झुकना पड़ा। गांधीजी इस सत्याग्रह से संसार-भर में प्रसिद्ध हो गए।

दक्षिण अफ्रीका में ग्यारह वर्ष बिताने के बाद वे स्वदेश लौटे। भारत में गांधीजी ने सत्याग्रह और असहयोग की अपनी प्रणाली को और सुधारा। वे कहते थे कि हमारा उद्देश्य ही नहीं, बल्कि उसे प्राप्त करने के साधन भी पवित्र होने चाहिए। अन्याय से लड़ते हुए भी हमें अन्याय करनेवाले से व्यक्तिगत द्वेष नहीं रखना चाहिए। भारत में रॉलेट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह शुरू किया गया। तभी उनका सम्पर्क कांग्रेस से हुआ, और वे कुछ ही समय में उसके कर्णधार हो गए। उनके नेतृत्व में 1921, 1930 और 1942 में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध जबर्दस्त आन्दोलन चलाए गए। लाखों युवकों ने सरकारी स्कूल और कालेज छोड़ दिए। हजारों वकील वकालत छोड़कर देश-सेवक हो गए। इतने लोग जेल गए कि जेलखानों में उनके लिए जगह नहीं रही। किसानों ने लगान देना बंद कर दिया। स्त्रियों ने भी इन आन्दोलनों में बड़ी संख्या में भाग लिया। वस्तुतः देश में जैसी जागृति गांधीजी ने पैदा की वैसी पहले कभी नहीं देखी गई थी। स्वतंत्रता के संघर्ष को उन्होंने गांव-गांव में और कोटि-कोटि जनता तक फैला दिया।

किसानों और गांवों की दशा को सुधारने के लिए गांधीजी रचनात्मक कार्य पर बहुत जोर देते थे। उसे वे स्वतंत्रता-संग्राम का आवश्यक अंग मानते थे। हरिजनों के अधिकारों के लिए और हिन्दू-मुस्लिम द्वेष को शांत करने के लिए उन्होंने कई बार लम्बे अनशन किए।

1947 में अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा और देश स्वतंत्र हो गया। किन्तु साथ ही सांप्रदायिक द्वेष की आग भी भड़क उठी। गांधीजी उसे शांत करने के लिए निकल पड़े। पहले उन्होंने नोआखाली (बंगाल) की यात्रा की। फिर वे दिल्ली आए। वहां 30 जनवरी, 1948 को एक धर्मांध युवक ने प्रार्थना-सभा में उनकी हत्या कर दी।

गांधीजी के जीवन का आदर्श सत्य और अहिंसा था। वे उसीके लिए जिए और उसीके लिए मरे भी।

गृहयुद्ध (CIVIL WARS) : जब किसी देश के निवासी विरोधी सशस्त्र दलों में बंट जाते हैं और आपस में लड़ते हैं, अथवा अपनी सरकार के विरुद्ध विद्रोह करते हैं, तो ऐसे युद्ध को गृहयुद्ध कहते हैं। गृहयुद्ध सभी देशों में हुए हैं। ब्रिटेन में गृहयुद्ध चार्ल्स प्रथम और पार्लमेंट के बीच 1642-1651 में हुआ था।

संयुक्त राज्य अमरीका के उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के बीच हुआ गृहयुद्ध दास-प्रथा के अंत और लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना के लिए हुआ था। फ्रांस की राज्य-क्रांति के समय हुआ गृहयुद्ध, रूस का गृहयुद्ध और चीन का गृहयुद्ध संसार के इतिहास के कुछ प्रसिद्ध गृहयुद्ध हैं।

गोविन्दसिंह, गुरु (GURU GOBINDSINGH 1666-1708):

गुरु गोविन्दसिंह सिखों के दसवें गुरु हुए हैं। उनका नाम पहले गोविन्दराय था। गोविन्दराय बड़े तेजस्वी थे और बचपन में ही तलवार, भाला, बछ्छा, तीर आदि चलाना सीख गए थे। वे नौ वर्ष के ही थे कि औरंगजेब ने दिल्ली में उनके पिता गुरु तेगबहादुर का सिर काट दिया। पिता के बलिदान के बाद पुत्र उनकी गद्दी पर बैठा।

उन दिनों हिन्दुओं पर बड़े अत्याचार हो रहे थे। गोविन्दराय ने अपने शिष्यों को एक सैनिक शक्ति का रूप देने का संकल्प कर लिया। उन्होंने आदेश दिया कि अब से मुझे केवल शस्त्र या युद्ध का कोई और सामान ही भेंट में दिया जाए। अपने पास अच्छे-अच्छे पंडित रखकर उन्होंने धर्मशास्त्रों का भी मनन किया। गुरुजी अच्छे कवि थे। उनकी अनेक कविताएं मिलती हैं।

सन् 1698 में चैत्र मास की पूर्णिमा को उन्होंने एक बड़ा समारोह किया। गुरु साहब नंगी तलवार हाथ में लिए सभा में आए और बोले, “धर्म की रक्षा के लिए भगवती दुर्गा बलिदान चाहती है। बोलो, कौन अपना सिर देने को तैयार है?” एक व्यक्ति उठा। गुरुजी उसे एक अलग तंबू में ले गए। तभी उस तंबू से रक्त की धार बह निकली। गुरुजी खून से सनी तलवार लिए बाहर आए और बोले, “अभी और सिर चाहिए।” एक आदमी और उठा। इसी तरह गुरुजी एक-एक कर पांच आदमियों को बलिदान के लिए ले गए। थोड़ी देर बाद वे उन पांचों के साथ तंबू से बाहर निकल आए। वे वास्तव में अपने भक्तों की परीक्षा ले रहे थे और तंबू में पहले से पांच बकरे बंधे हुए थे। ये पांचों व्यक्ति ‘पांच प्यारे’ कहलाए। अगले दिन शुद्ध जल में खांडा फेरकर उसे ‘अमृत’ बनाया गया। सभीने वह ‘अमृत’ पिया। इस तरह सिख धर्म की नींव पड़ी। गुरुजी ने आदेश दिया, आज से हर सिख सिंह कहलाएगा। धर्म की रक्षा के लिए वह हर समय युद्ध के लिए तैयार रहेगा। केश, कंधा, कच्छा, कड़ा और कृपाण सदा धारण करेगा। ये पांचों चीजें ‘पंच ककार’ कहलाईं। हजारों लोग गुरु गोविन्दसिंह से दीक्षा लेकर सिख बनने लगे। उनमें जो योग्य होते थे, वे सैनिक बना लिए जाते थे। इस तरह धर्म पर मर मिटनेवालों की एक सेना खड़ी हो गई। गुरुजी ने धीरे-धीरे चार दुर्ग बनवा लिए।

गुरु गोविन्दसिंह का सारा जीवन युद्ध करते बीता। वे अपने समय के बड़े भारी तीरंदाज थे। मुगल सेना, पंजाब के मुसलमान शासकों और उनसे मिले हुए पहाड़ी राजाओं को उन्होंने बार-बार हराया। गुरुजी को कष्ट भी बहुत भेलने पड़े। उनके दो बड़े पुत्र शत्रुओं से लड़ते

चंगेज खां ने मिकंदर से भी अधिक भू-भाग पर विजय प्राप्त की।

हुए वीरगति को प्राप्त हुए। छोटे दो लड़के पकड़े गए। उनसे मुसलमान बनने को कहा गया। जब वे नहीं माने तो उन्हें ज़िन्दा दीवार में चिनवा दिया गया।

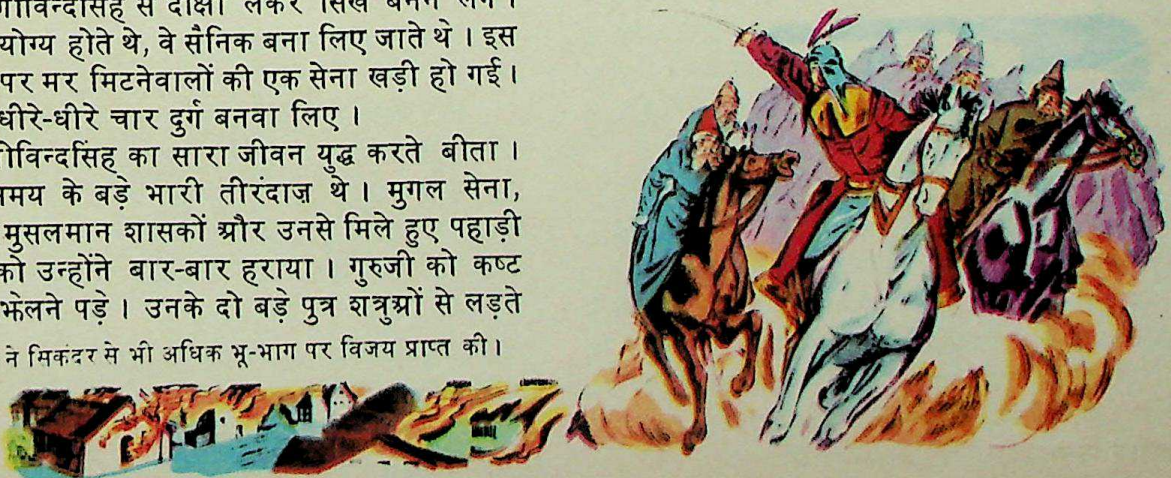
गुरुजी गोदावरी के तट पर रह रहे थे कि एक दिन एक पठान ने उनके पेट में कटार भोंक दी। उन्होंने वही कटार बाहर खींचकर उस पठान की कमर में दे मारी। वह वहीं ढेर हो गया। गुरुजी का घाव धीरे-धीरे भरने लगा। तभी एक दिन कोई एक बड़ा भारी धनुष ले आया। वह किसीसे खिचता नहीं था। गुरुजी ने उसपर बाण रखकर चला दिया। इससे उनका घाव फिर बहने लगा और उन्होंने एक दिन भगवान को याद करते-करते प्राण त्याग दिए।

चंगेज खां (GENGHIS KHAN 1162-1227): बहुत-से लोगों का कहना है कि चंगेज खां संसार का महानतम विजेता है। उसने नेपोलियन और सिकंदर महान से भी अधिक भू-भाग पर विजय प्राप्त की थी।

चंगेज खां इस महान योद्धा का असली नाम नहीं था। यह एक पदवी है जिसका अर्थ होता है, ‘खानों का खान’। ‘खान’ का अर्थ शासक होता है। चंगेज खां का असली नाम तेमूचीन था। वह मंगोलिया का रहनेवाला था।

जब चंगेज खां तेरह वर्ष का था तभी उसका पिता मर गया। वह मंगोलों के एक कबीले का खान था। खान के मरते ही कबीले के लोगों ने तेरह साल के लड़के की अधीनता में रहना अस्वीकार कर दिया। लेकिन लड़का साधारण नहीं था। वह धीरे-धीरे अपने कबीले के लोगों को इकट्ठा करता रहा। अंततः, तेमूचीन और उसके साथियों ने आसपास के सब कबीलों को जीत लिया। 45 वर्ष की आयु में वह पूरे मंगोलिया का शासक बन बैठा, और उसने चंगेज खां की उपाधि धारण की।

लेकिन वह अब भी संतुष्ट नहीं हुआ। अपनी घुड़-सवार सेना की सहायता से उसने चीन, भारत, ईरान और भूमध्य सागर के आसपास के प्रदेश जीत लिए। उसने



रूस पर भी आक्रमण कर दिया। एक बार तो ऐसा लगा जैसे पूरे यूरोप पर उसका अधिकार हो जाएगा। लेकिन इसी बीच इस पराक्रमी योद्धा की मृत्यु हो गई। उसके उत्तराधिकारी अयोग्य निकले और उसका विशाल साम्राज्य तितर-बितर हो गया।

चंद्रगुप्त मौर्य (CHANDRAGUPTA MAURYA 345-298 ई० पू०) : एक महान राज्य-संस्थापक तथा भारत में यूनानी साम्राज्य के नाशकर्ता के रूप में चंद्रगुप्त मौर्य की प्रसिद्धि है। प्रख्यात कूटनीतिज्ञ चाणक्य के साथ मिलकर उसने मगध में मौर्य साम्राज्य की स्थापना की और पंजाब में सेल्यूकस को हराया।

चंद्रगुप्त एक सामान्य कुल में उत्पन्न हुआ था और मगध के राजा धनानन्द के यहां सेनापति था। परन्तु किसी कारण राजा से उसकी अनबन हो गई और उसने मगध छोड़ दिया। उसने धनानन्द के नाश की प्रतिज्ञा की।

इसी समय उसकी भेंट चाणक्य से हो गई, जिसका धनानन्द ने अपमान किया था। दोनों ने मिलकर एक बड़ी सेना तैयार की और मगध पर आक्रमण कर दिया। धनानन्द मारा गया और चंद्रगुप्त गद्दी पर बैठा।

चंद्रगुप्त के समय से जो मौर्य वंश चला, वह ज्ञात इतिहास में भारतीय राजाओं का पहला प्रसिद्ध वंश है। इसीमें आगे चलकर सम्राट अशोक हुआ। चंद्रगुप्त ने मगध राज्य को इतना विस्तृत किया कि वह समूचे उत्तर भारत तथा दक्षिण के भी कुछ भाग पर फैल गया। देश में इतना बड़ा साम्राज्य पहले नहीं बना था। इससे राजनीतिक एकता के साथ-साथ देश की सांस्कृतिक एकता भी पुष्ट हुई। चंद्रगुप्त का शासन-प्रबंध सुव्यवस्थित था। उसके राज्य में जनता बड़ी सुखी थी।

जब चंद्रगुप्त गद्दी पर बैठा, पंजाब में यूनानियों का शासन था। सिकंदर के आक्रमण से इसकी स्थापना हुई थी। अब उसके सेनापति सेल्यूकस ने फिर से देश पर हमला किया। चंद्रगुप्त ने अपनी सेना का संगठन किया और सेल्यूकस से ज़बर्दस्त मोर्चा लिया। सेल्यूकस हार गया। उसे अफगानिस्तान और बिलोचिस्तान चंद्रगुप्त को देने पड़े और उससे अपनी पुत्री हेलेना का विवाह भी करना पड़ा। इस विजय से चंद्रगुप्त की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ी। (देखें : चाणक्य)

चंद्रगुप्त विक्रमादित्य (CHANDRAGUPTA VIKRAMADITYA) : गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग माना जाता है और चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के समय को उसका चरम शिखर। उसके शासन में भारतीय संस्कृति, साहित्य और कला की जैसी आश्चर्यजनक उन्नति हुई वैसी किसी भी शासक के काल में नहीं हुई। महाकवि कालिदास उसके ही दरबार के रत्न थे।

समुद्रगुप्त ने गुप्त साम्राज्य का विस्तार किया था। उसके बाद उसका बड़ा बेटा रामगुप्त गद्दी पर बैठा। पर वह निर्बल शासक था। शकों ने उसे बुरी तरह हराया और संधि के लिए उसकी रानी ध्रुवदेवी की मांग की। रामगुप्त ने इसे भी स्वीकार कर लिया। परन्तु चंद्रगुप्त को यह सहन न हुआ। वह स्वयं ध्रुवदेवी का वेश रखकर शक राजा के दरबार में गया और जब राजा ध्रुवदेवी का आलिंगन करने लगा, छुरे से उसकी हत्या कर दी। फिर उसके सैनिकों को भी मारकर भगा दिया।

देवर की वीरता देखकर ध्रुवदेवी चंद्रगुप्त पर आसक्त हो गई। चंद्रगुप्त ने कायर रामगुप्त का वध कर दिया और 375 ई० में वह ध्रुवदेवी से विवाह करके गद्दी पर बैठ गया।

राजा बनने के पश्चात् चंद्रगुप्त ने पिता के साम्राज्य को फिर से सुसंगठित किया। जो राज्य उपद्रव करते थे, उन्हें दबाया, कई करद राज्यों को अपने में मिलाया और गुजरात तथा सौराष्ट्र के शकों को नष्ट कर दिया। इस विजय से गुप्त साम्राज्य की सीमा पश्चिमी समुद्र-तट तक पहुंच गई और विदेशों से व्यापार और सांस्कृतिक संबंध बढ़ने लगा। उसने दक्षिण भारत के राज्यों पर भी पुनः विजय प्राप्त की। अपने इन्हीं पराक्रमों के कारण उसने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की। इसका अर्थ है 'सूर्य के समान प्रतापी'।

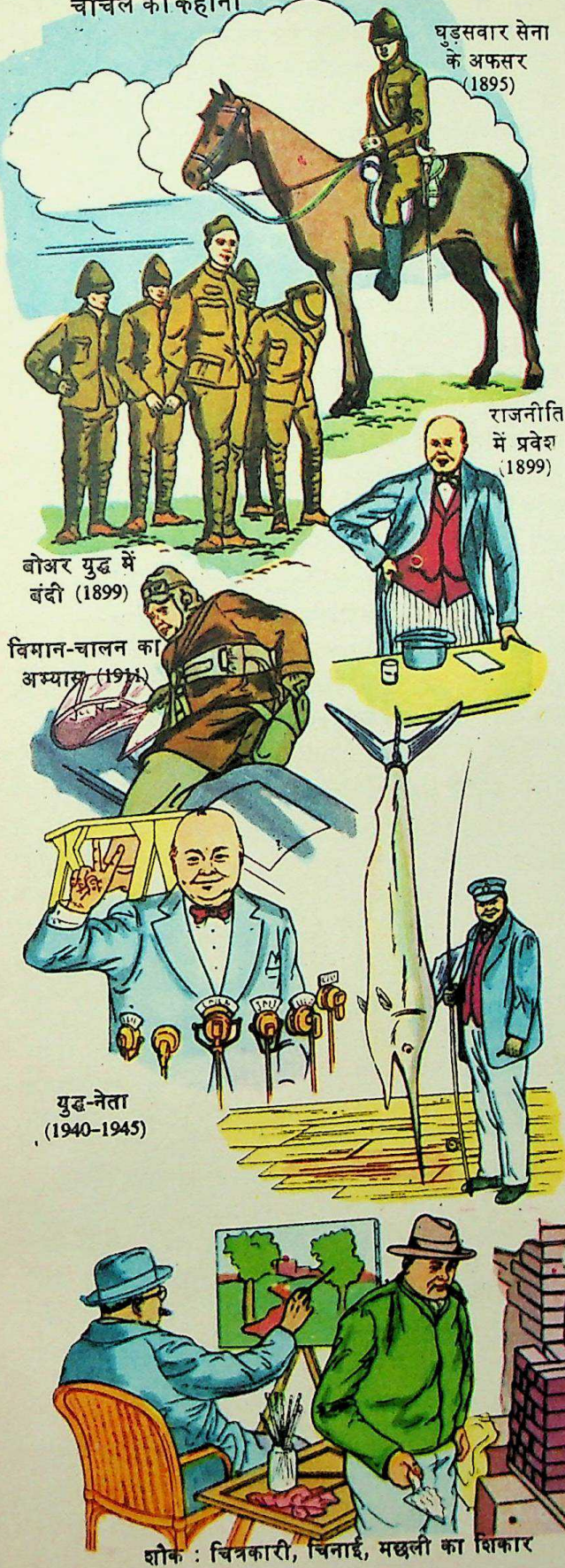
चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने लगभग 40 वर्ष तक राज्य किया। उसका शासन बड़ा सुव्यवस्थित तथा उदार था। उसके समय में व्यापार की बड़ी उन्नति हुई। बंगाल से सूती और रेशमी कपड़े, दक्षिण से कपूर, चंदन और मसाले तथा अनेक अन्य वस्तुएं पश्चिमी समुद्र-तट पर लाई जाती थीं और रोम साम्राज्य को भेजी जाती थीं, जहां से बहुत-सा सोना भारत आता था।

स्वयं वैष्णव होते हुए भी चंद्रगुप्त अन्य सम्प्रदायों के प्रति बड़ा सहिष्णु था। उसका एक सेनापति बौद्ध था। वह बड़ा दानी भी था। उसके राज्य में प्रजा बड़ी सुखी थी और उससे प्रेम करती थी। प्रसिद्ध चीनी यात्री फ़ाहियान उसीके समय में भारत आया था। उसने देश की समृद्धि का बड़ा सुन्दर चित्र खींचा है।

चंद्रगुप्त साहित्य और कला का भी बड़ा प्रेमी था। उसकी सभा में नौ महान विद्वान थे जिन्हें 'नवरत्न' कहते थे। कालिदास इनमें सर्वोपरि थे। इन दिनों संस्कृत भाषा की बड़ी उन्नति हुई और अनेक उच्च कोटि के ग्रंथ लिखे गए। 413 ई० में उसका देहांत हो गया।

चर्चिल, सर विंस्टन एल० एस० (SIR WINSTON L. S. CHURCHILL 1874-1965) : चर्चिल बीसवीं सदी के महान व्यक्तियों में माने जाते हैं। उनको जीवन के बहुत-से क्षेत्रों में अद्भुत सफलता प्राप्त हुई। उनके पिता प्रसिद्ध

चर्चिल की कहानी



ड्यूक ऑफ मार्लबोरो के वंशज थे। उनकी मां अमरीकी थीं।

वे 21 वर्ष की आयु में ब्रिटिश सेना में भरती हुए और कुछ समय भारत में भी रहे। 1900 में जब वे बोअर युद्ध में अफ्रीका में एक पत्र के संवाददाता के रूप में काम कर रहे थे तो बंदी बना लिए गए। वहां से वे भाग निकले और बहुत प्रसिद्ध हो गए।

चर्चिल उसी वर्ष ब्रिटिश पार्लेमेंट के सदस्य चुने गए। वे प्रथम विश्वयुद्ध में ब्रिटेन के मंत्रिमंडल में एक महत्वपूर्ण पद पर थे। जब दूसरा विश्वयुद्ध आरंभ हुआ तो चर्चिल ने ब्रिटेन की समुद्री सेना को संभाला और फिर प्रधान मंत्री बने। उन्होंने घोषणा की, "हमें बहुत दुःख और कष्ट भेलने पड़ेंगे, पर इंग्लैंड कभी आत्मसमर्पण नहीं करेगा।"

इंग्लैंड पर भीषण बम-वर्षा हुई। पर वह लड़ता रहा और विजयी हुआ। चर्चिल ने बहुत-सी पुस्तकें लिखी हैं। 1953 में उन्हें उनके द्वितीय विश्वयुद्ध के इतिहास पर नोबेल पुरस्कार दिया गया। वे बहुत अच्छे चित्रकार भी थे।

चाणक्य (CHANAKYA): सुप्रसिद्ध 'अर्थशास्त्र' के लेखक तथा विचक्षण कूटनीतिज्ञ के रूप में चाणक्य का स्मरण किया जाता है। उन्हें कौटिल्य भी कहते थे। उन्होंने चंद्रगुप्त मौर्य के साथ मिलकर भारत से यूनानी साम्राज्य को नष्ट किया और मगध में चक्रवर्ती राज्य की स्थापना की।

चाणक्य ब्राह्मण थे और गांधार के निवासी थे। जब वे छोटे थे, तब भारत पर यूनानी सम्राट सिकंदर का आक्रमण हुआ। सिकंदर तो विजय प्राप्त करके चला गया, पर उसका राज्य पंजाब पर स्थापित हो गया और यूनानी देशवासियों पर अत्याचार करने लगे। चाणक्य को यह सब बहुत बुरा लगता था। उन्होंने यूनानियों के भारत से उन्मूलन का निश्चय किया और सहायता की खोज में मगध पहुंचे। मगध में उस समय धनानन्द नामक राजा राज्य करता था। उसने सहायता देने के स्थान पर चाणक्य का अपमान किया। चाणक्य ने प्रतिज्ञा की कि जब तक मगध का साम्राज्य नष्ट न कर देंगे, चोटी नहीं बांधेंगे।

इसी समय उनकी भेंट चंद्रगुप्त मौर्य नामक युवक से हुई। चंद्रगुप्त भी किसी कारण नन्द वंश का नाश करना चाहता था। दोनों मिलकर सेना एकत्र करने लगे। फिर मगध पर हमला किया और धनानन्द को मार डाला। चंद्रगुप्त मौर्य पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) की गद्दी पर बैठा और चाणक्य उसके गुरु हुए। उन्होंने राज्य-शासन चलाने के नियमों के संबंध में 'अर्थशास्त्र' नामक महान ग्रंथ की रचना की। इसमें शासन और कूटनीति की सभी बातों पर गंभीरता से विचार किया गया है। प्राचीन

शोक : चित्रकारी, चिनाई, मछली का शिकार

भारतीय साहित्य में यह इस विषय का अकेला महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है।

इसी समय भारत पर सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस का आक्रमण हुआ। चाणक्य के मार्गदर्शन में चंद्रगुप्त ने पंजाब में सेल्यूकस का सामना किया। भयंकर युद्ध के बाद सेल्यूकस हार गया और भारत से यूनानियों का राज्य समाप्त हो गया।

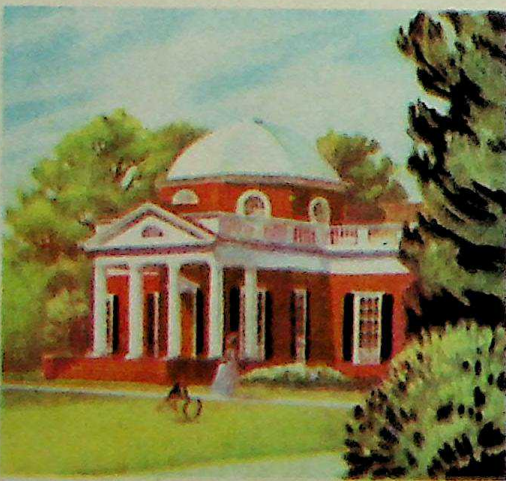
चाणक्य ने अपने जीवन के जो उद्देश्य बनाए थे वे पूरे हुए। कहते हैं, चाणक्य बड़े क्रोधी थे, पर वे बहुत चतुर और राजनीतिकुशल भी थे। उन्होंने अपने अनुभवों का निचोड़ ही 'अर्थशास्त्र' में दिया है। (देखें : चंद्रगुप्त मौर्य)

चार्ल्स प्रथम (CHARLES I 1600-1649) : इंग्लैंड का यह राजा स्टुअर्ट वंश का था। इसने एक फ्रांसीसी राजकुमारी से विवाह किया, जो रोमन कैथलिक संप्रदाय की अनुयायी थी। चार्ल्स पर यह संदेह किया जाने लगा कि यह इंग्लैंड में रोमन कैथलिक संप्रदाय को फिर से स्थापित करना चाहता है।

चार्ल्स पार्लमेंट की शक्ति को कम करना चाहता था और अपनी शक्ति बढ़ाना चाहता था। पार्लमेंट के बहुत-से समर्थक प्यूरिटन, अर्थात् शुद्ध आचारवादी थे। वे चार्ल्स के दरबार की तड़क-भड़क को भी पसन्द नहीं करते थे। अंतः 1642 में गृहयुद्ध छिड़ गया।

दोनों पक्षों में खुलकर युद्ध हुआ। ऑक्सफोर्ड के युद्ध में पार्लमेंट के नेता, क्रॉमवेल ने चार्ल्स को बंदी बना लिया और 1649 में उसे प्राणदण्ड दे दिया गया।

(देखें : क्रॉमवेल, ओलिवर)



जेफ़र्सन का घर 'मांटीसेलो' कहलाता है।

जेफ़र्सन, टॉमस (THOMAS JEFFERSON 1743-1826) : ये अमरीका के तीसरे राष्ट्रपति थे। टॉमस जेफ़र्सन वर्जीनिया राज्य के रहनेवाले थे।

अमरीका के राष्ट्रपति के रूप में जेफ़र्सन का कार्यकाल

1801 से 1809 तक था। इसी बीच संयुक्त राज्य अमरीका ने मिसिसिपी के पश्चिम का लगभग दस लाख वर्गमील क्षेत्र फ्रांस से खरीदकर अपने में मिलाया। इस नये भूखण्ड में अनेक राज्य बने। टॉमस जेफ़र्सन ने उस राज्यक्रांति में भाग लिया था, जिसके फलस्वरूप संयुक्त राज्य अमरीका ब्रिटिश शासन से अलग हो गया। एक राजनीतिज्ञ के रूप में उनकी सबसे बड़ी देन अमरीका की 1774 की स्वतंत्रता की घोषणा है।

जेर्कसीज़ (XERXES 519-465 ई० पू०) : 485 से 465 ई० पू० तक जेर्कसीज़ फारस का राजा था। वह विशेष रूप से उस काम के लिए प्रसिद्ध है जिसे वह पूरा नहीं कर सका।

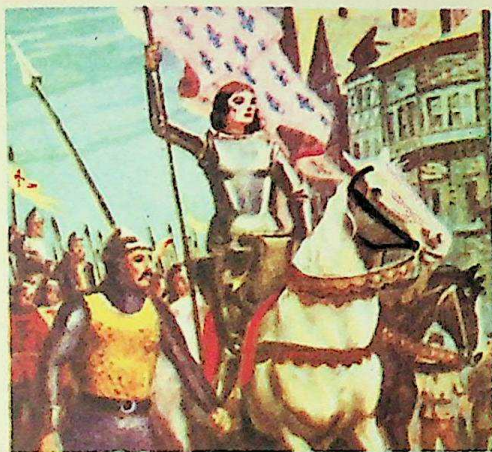
जेर्कसीज़ के पिता दारियस ने यूनान को जीतने की कोशिश की थी, लेकिन वह असफल रहा। जेर्कसीज़ ने अपने पिता की हार का बदला लेना चाहा। जहाजी बेड़े के साथ उसकी सेना ने यूनान पर धावा बोल दिया और थर्मोपली के दर्रे पर बहुत बड़ी विजय पाई। लेकिन इसके कुछ ही दिन बाद सलामिस के युद्ध में उसके जहाजी बेड़े को बुरी तरह हरा दिया गया। सेना के पास रसद नहीं पहुंच सकी। उसे पीछे लौटना पड़ा। इसके बाद जेर्कसीज़ ने यूनान-विजय की आशा छोड़ दी। (देखें : फारस)

जोन आँव आर्क, संत (SAINT JOAN OF ARC 1412-1431) : जोन फ्रांस के एक किसान की लड़की थी। वह पढ़-लिख नहीं सकती थी। इतना होते हुए भी उसने फ्रांसीसी सेना का नेतृत्व किया।

उन दिनों फ्रांस और इंग्लैंड के बीच सौ वर्षों से एक युद्ध चल रहा था। फ्रांस का अधिकांश उत्तरी भाग अंग्रेजों और उनके मित्र बर्गंडियों के कब्जे में था। फ्रांस के राजकुमार को युवराज कहा जाता था और उसको राज-मुकुट पहनने का कभी सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ था। वह स्वार्थी और कमजोर था। उसने फ्रांस की तमाम भूमि अपने ऐश-आराम के लिए बेच डाली थी।

तेरह वर्ष की अवस्था होते-होते जोन बहुत धार्मिक हो गई। वह गांव के गिरजाघर में जाती। कभी-कभी अपने पिता के ढोरो को लेकर खेतों में भी चली जाती, ताकि वह अकेली बैठकर सोच सके और प्रार्थना कर सके। गिरजाघर में और खेतों में जोन को प्रायः किसी संत की झलक दिखाई देती और विचित्र आवाजें सुनाई पड़तीं। उससे कोई कहता कि वह युवराज को मुकुट-धारी राजा बनाए और फ्रांस के दुश्मनों को दूर भगा दे।

जोन ने ऐसा करने का निश्चय कर लिया। अपने पिता और गांव के पादरी की लाख कोशिशों के बावजूद, वह अपने संकल्प से नहीं डिगी। अंत में उसे युवराज के दरबार में ले जाया गया।



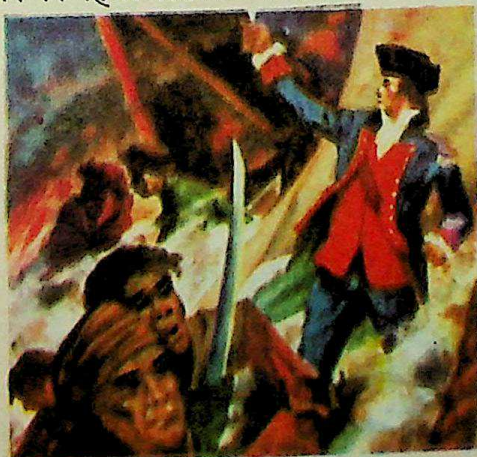
जोन ऑव आर्क ने फ्रांसीसियों को विजय दिलाई।

जोन ने सफेद कवच पहना और हाथों में एक पताका ली, जिसपर फ्रांस में पाई जानेवाली लिली के कसीदे कढ़े हुए थे। उसकी उम्र उस समय 17 वर्ष की थी। बिना किसी सैनिक शिक्षा के ही वह सेना लेकर बड़ी और उसने ऑर्लियंस की लड़ाई जीत ली। उसने और भी कई लड़ाइयां जीतीं। अंत में वह युवराज को राजा घोषित करने और ताज पहनाने में सफल हुई।

जब जोन ने अपना काम पूरा कर लिया तो उसने घर लौटना चाहा। लेकिन राजा की इच्छा से वह फिर लड़ाई पर गई। बर्गंडियनों ने उसे गिरफ्तार कर लिया और अंग्रेजों के हवाले कर दिया।

जोन ऑव आर्क पर मुकदमा चला। उसे जादूगरनी साबित किया गया और एक तख्ते से बांधकर जीवित ही जला दिया गया। जब आग की लौ ऊपर उठी तो एक अंग्रेज सिपाही चीख उठा, “हम लोगों ने एक संत को जला दिया।” लगभग 500 वर्ष बाद रोमन कैथलिक सम्प्रदाय ने उसे संत घोषित किया।

जोन्स, जॉन पॉल (JOHN PAUL JONES 1747-1792) : अमरीका का पहला नौसैनिक वीर, जिसने अमरीकी क्रांति

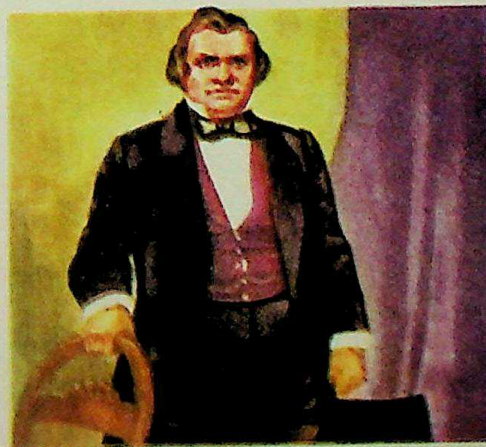


कॉमोडोर जॉन पॉल जोन्स

में अपना जौहर दिखाया, जॉन पॉल जोन्स माना जाता है। उसका अधिकतर जीवन समुद्र पर और लड़ते हुए बीता।

क्रांतिकारी युद्ध में उसने अमरीका के पहले जंगी जहाज की कमान संभाली। वह जब ब्रिटिश नौसेना की हार का समाचार फ्रांस ले गया तो वहां फ्रांसीसियों द्वारा अमरीकी भंडे को पहली बार सलामी दी गई। जोन्स की सबसे मशहूर लड़ाई ब्रिटिश जहाज ‘सेरापिस’ से हुई। इस लड़ाई में एक बार सेरापिस के कप्तान ने जब उसे हथियार डालने का हुक्म दिया तो उसका जवाब था, “अभी तो मैंने लड़ना शुरू भी नहीं किया है।” तब से उसके ये शब्द अमरीकी नौसेना की ललकार बन गए हैं।

ट्रेफ़ल्गार की लड़ाई (BATTLE OF TRAFALGAR) : सन् 1805 में दक्षिण-पश्चिमी स्पेन के ट्रेफ़ल्गार अंतरीप पर ब्रिटेन को अपनी सबसे प्रसिद्ध नौसैनिक विजय प्राप्त हुई। फ्रांस के सम्राट नेपोलियन बोनापार्ट ने यूरोप का अधिकांश भाग जीत लिया था और वह ब्रिटेन पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा था। इस युद्ध में लॉर्ड नेल्सन के नेतृत्व में ब्रिटेन के जहाजी बेड़े ने फ्रांस और स्पेन के सम्मिलित बेड़े को बुरी तरह परास्त कर दिया। इस लड़ाई में 18 फ्रांसीसी जहाज नष्ट कर दिए गए या छीन लिए गए। इस पराजय के बाद नेपोलियन के इंग्लैंड-विजय के स्वप्न धूल में मिल गए। युद्ध में नेल्सन को वीरगति प्राप्त हुई। (देखें : नेल्सन वाइकाउंट होरेशियो)



स्टीफ़ेन ए० डगलस

डगलस, स्टीफ़ेन ए० (STEPHEN A. DOUGLAS 1813-1861) : अब्राहम लिंकन 1860 में अमरीका के राष्ट्रपति चुने गए। उस चुनाव में उनका विरोधी स्टीफ़ेन ए० डगलस था। डगलस को लोग ‘नाटा देव’ कहते थे, क्योंकि उसका कद छोटा और सिर व कंधे बड़े थे। उसकी आवाज़ बुलन्द थी और वह बहुत ही शानदार तकरीरें करता था।

इससे दो साल पहले सीनेट के चुनाव में डगलस ने अब्राहम लिंकन को हरा दिया था। लिंकन और डगलस ने उस चुनाव में पूरे इलिनॉय क्षेत्र का दौरा किया और दोनों में उस समय जो बहस हुई उनमें सारे देश ने बहुत ही दिलचस्पी दिखाई।

लेकिन राष्ट्रपति के चुनाव में डगलस हार गया। दास-प्रथा के सवाल पर उसकी नीति दक्षिण के डेमोक्रेटों को पसंद नहीं आई, और उनके वोट उसे नहीं मिले। इस चुनाव के कुछ दिन बाद ही अमरीकी राज्यों के बीच गृहयुद्ध छिड़ गया। डगलस ने उसमें लिंकन को हर तरह की मदद देने का आश्वासन दिया। पर दो महीने बाद ही उसकी मृत्यु हो गई।

डिज़रैली, बेंजामिन (BENJAMIN DISRAELI 1804-1881) : इंग्लैंड के प्रधान मंत्रियों में डिज़रैली का जीवन शायद सबसे अधिक घटनापूर्ण रहा है। उन्होंने अपने जीवन में कई प्रकार के विरोधों का सामना किया और विजय प्राप्त की। डिज़रैली के माता-पिता यहूदी थे। इंग्लैंड में उन दिनों यहूदियों के लिए राजनीति में प्रवेश करना बड़ा कठिन था। अपनी इस खामी के बावजूद डिज़रैली ने, योग्यता और प्रतिभा के बल पर, एक राजनीतिक नेता के रूप में अपने लिए जगह बना ली। वे बड़े साहसी थे। उनके भाषण बड़े प्रभावशाली होते थे।

डिज़रैली ने 33 वर्ष की आयु में संसद में प्रवेश किया और घोषणा की कि किसी दिन मैं प्रधान मंत्री बनूंगा। कुछ दिनों में वे कंज़रवेटिव दल के नेता बन गए और 1868 में इंग्लैंड के प्रधान मंत्री भी बने। उन्होंने अपने देश की उन्नति के लिए और विदेशों में ब्रिटेन का सम्मान बढ़ाने के लिए बड़ा काम किया। अपने देश के अधिक से अधिक निवासियों को उन्होंने मतदान का अधिकार प्रदान किया।

डूप्ले (DUPLEIX) : फ्रांसीसी भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से आए थे। पर कालान्तर में, भारत की तत्कालीन परिस्थितियों से प्रोत्साहित होकर, उन्होंने अपना लक्ष्य बदल दिया। 1742 ई० में डूप्ले फ्रांसीसी गवर्नर होकर भारत आया और वह भारत में फ्रांसीसी साम्राज्य स्थापित करने के प्रयत्न में जुट गया।

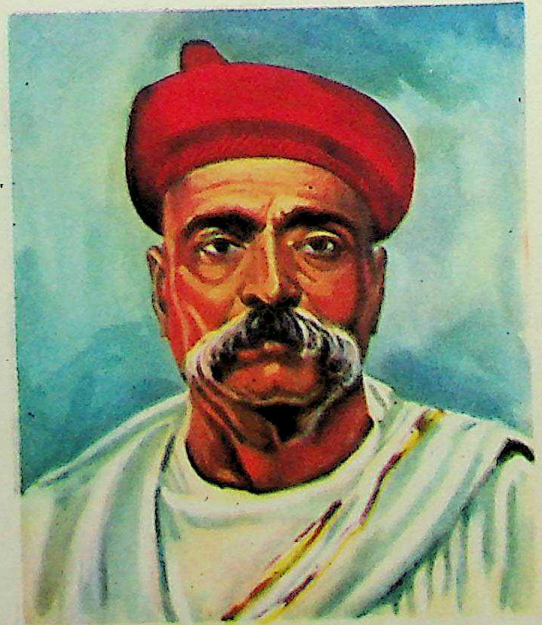
डूप्ले की गणना विश्व के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञों और कूटनीतिज्ञों में की जाती है। वह बड़ा दूरदर्शी था। मुगल साम्राज्य उस समय जर्जरित हो चुका था। मराठे, निज़ाम तथा अन्य राजा और नवाब आपस में युद्ध कर रहे थे। डूप्ले ने देशी राज्यों के भगड़ों में हस्तक्षेप करने और उनसे लाभ उठाने की नीति अपनाई, जिसमें उसे बड़ी सफलता मिली।

1748 ई० में हैदराबाद के आसफ़जाह निज़ामुल्मुल्क

का देहांत हो गया और वहां उत्तराधिकार के लिए भगड़ा शुरू हो गया। उधर चांदा साहब अनवरुद्दीन के विरुद्ध कर्नाटक की नवाबी का दावा कर रहा था। डूप्ले तुरंत इन भगड़ों में कूद पड़ा और दोनों ही का प्रधान संचालक बन गया। मुज़फ़्फ़रजंग को हैदराबाद का सूबेदार और चांदा साहब को कर्नाटक का नवाब बनाने में और उनसे बड़ी-बड़ी सुविधाएं प्राप्त करने में वह पूर्ण रूप से सफल रहा। इससे दक्षिण भारत में फ्रांसीसियों की धाक जम गई।

देशी नरेशों के आपसी भगड़ों में हस्तक्षेप करने की डूप्ले की नीति बहुत ही दूरदर्शितापूर्ण थी। अंग्रेजों ने भी उसका अनुसरण किया और वे चांदा साहब तथा मुज़फ़्फ़रजंग के प्रतिद्वंद्वियों से मिल गए। आगे चलकर क्लाइव ने इसी नीति को बड़ी सफलता के साथ चलाया, जबकि डूप्ले की सफलता स्थायी सफलता नहीं बन सकी।

डूप्ले की असफलता का सबसे बड़ा कारण यह था कि उसे अपने देश की सरकार से पूरी सहायता नहीं मिली। धन और सैनिकों की कमी उसे सदा महसूस होती रही। उधर अंग्रेजों की सामुद्रिक शक्ति फ्रांस से बहुत अधिक थी। इसके अलावा, डूप्ले जितना बड़ा राजनीतिज्ञ था उतना बड़ा सेनानायक नहीं था। कहते हैं कि वह बड़े उग्र स्वभाव का और बहुत ही अहंकारी था, इसलिए सफल नेता नहीं बन सका।



लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

तिलक, लोकमान्य बालगंगाधर (LOKMANYA BAL GANGADHAR TILAK 1856-1920) : 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है', यह घोषणा देश में सबसे पहले लोकमान्य तिलक ने ही की थी। तिलक ज्ञान और कर्म

का एक अद्भुत मिश्रण थे। उनका जन्म महाराष्ट्र के एक प्रतिष्ठित किन्तु गरीब परिवार में हुआ था।

देशसेवा की आग उनके हृदय में विद्यार्थी-काल से ही जलने लगी थी। इसलिए वकालत पास करने के बाद वे 'न्यू इंग्लिश स्कूल' के संचालन में जुट गए, जो सरकारी स्कूलों के विरोध में खोला गया था और जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय विचारों वाले सच्चे नागरिक तैयार करना था। बाद में उन्होंने मराठी और अंग्रेजी में क्रमशः 'केसरी' और 'मराठा' अखबार निकाले। इनके द्वारा वे जनता को निर्भय होकर स्वराज्य के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देने लगे।

1896 में महाराष्ट्र में अकाल पड़ा और उससे अगले साल भयंकर प्लेग फैला। तिलक ने उस समय जनता की अनुपम सेवा की और सरकार को उसकी उदासीनता के लिए खूब फटकारा। इसके लिए उन्हें डेढ़ वर्ष का कारावास मिला। तिलक इस समय तक वेदकाल-निर्णय संबंधी अपने लेखों के कारण विद्वत्समाज में काफी प्रसिद्ध हो गए थे। इसलिए उनकी गिरफ्तारी से देश में ही नहीं, यूरोप तक में बड़ी हलचल मच गई। आखिर दीवाली के दिन जब वे छूटे तो जनता उनके दर्शनों को उमड़ पड़ी।

तिलक अब कांग्रेस में सक्रिय भाग लेने लगे और गरम दल के नेता बन गए। देश में राष्ट्रीय जागृति जैसे-जैसे बढ़ रही थी, सरकार का दमन भी तीव्र होता जा रहा था। बंग-भंग के बाद जब जगह-जगह हिंसात्मक क्रांति की लहर उठी, तो सरकार ने कांग्रेस के गरम दलीय नेताओं की भी धर-पकड़ शुरू कर दी। तिलक पर इस बार राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया और उन्हें छः वर्ष की सजा दी गई। उन्हें बर्मा ले जाकर मांडले जेल में बंद कर दिया गया। वहां उन्होंने अपना सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'गीता रहस्य' और वेद-विषयक कुछ पुस्तकें लिखीं तथा जर्मन और पाली भाषाएं सीखीं।

1914 में जब वे बाहर आए तो उनका शरीर जेल की यातनाओं से अत्यंत कृश हो गया था। परन्तु उनकी तेजस्विता उसी तरह कायम थी। कांग्रेस में गरम-नरम दल का मतभेद तीव्र हो जाने पर उन्होंने 'होमरूल लीग' की स्थापना की और उसके लिए अनेक प्रान्तों का दौरा किया।

भारत की राष्ट्रीय भावनाओं को ब्रिटिश लोकपक्ष के आगे रखने के लिए तिलक इंग्लैंड गए। वहां उन्होंने स्वराज्य के प्रचार के लिए सैकड़ों सभाओं का आयोजन और सैकड़ों हैंडबिलों का प्रकाशन किया। उन्हीं दिनों ब्रिटिश सरकार ने भारत में 'रॉलेट एक्ट' पास करके जनता की भाषण, मुद्रण और संगठन की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा दिया। इसके विरोध में गांधीजी एक जबर्दस्त असहयोग आन्दोलन की तैयारी करने लगे। तिलक इन सब समाचारों को सुनकर भारत वापस आ गए। उनका वृद्ध शरीर अब बहुत थक चुका था। आखिर 1 अगस्त, 1920 को इस कर्मयोगी ने सदा के लिए अपनी आंखें मींच लीं।

तूतांखआमेन (TUTANKHAMEN): तूतांखआमेन आज से लगभग 3,300 वर्ष पहले मिस्र का बादशाह था। उसे कभी-कभी शाह तूत (King Tut) के नाम से भी पुकारा जाता है। जब वह मिस्र की गद्दी पर बैठा तब वह नव-युवक ही था और उसकी विशेष रुचि खेल-कूद में थी। समकालीन धर्माधिपतियों और सामंतों का उसपर बहुत प्रभाव था। वह किसी विषय में स्वतंत्र रूप से निर्णय नहीं कर पाता था। उसका मुख्य काम आमेन नामक देवता के लिए बनाए गए मंदिरों को और भी समृद्ध बनाना था। लेकिन वह अपने इस काम के लिए प्रसिद्ध नहीं है। वह उन खजानों के लिए प्रसिद्ध है जो उसके मकबरे से प्राप्त हुए हैं।



तूतांखआमेन का सोने का मास्क

प्राचीन मिस्र के सभी राजा अपने साथ भारी खजाने दफन करवाते थे। मिस्र के लोगों का विश्वास था कि मृत्यु के बाद के सुखी जीवन के लिए उन सब चीजों की जरूरत होगी जो इस जीवन में जरूरी हैं। इसलिए मिस्र के राजाओं की कब्र में उनके साथ फर्नीचर, जवाहरात, भोजन, हथियार और वस्त्र आदि भी दफनाए जाते थे। शाह तूत के मकबरे की खोज हॉवर्ड कार्टर और लॉर्ड कानिंगहम ने 1922 में की। जब इस मकबरे को खोदा गया तो इसका विशाल खजाना देखकर लोग चकित रह गए। आजकल इस खजाने का अधिकांश भाग काहिरा के एक अजायबघर में रखा है।

तैमूर लंग (TAIMUR LANE): तुगलक वंश का अंतिम शासक महमूद था, जो बिलकुल निर्बल तथा निकम्मा था। वह नाममात्र का सुल्तान था और उसका शासन केवल दिल्ली के आसपास तक ही सीमित रह गया था। उन्हीं दिनों तैमूर लंग ने भारत पर आक्रमण किया।

तैमूर समरकंद का रहनेवाला चंगताई तुर्क था और चंगेज खां का वंशज था। वह कुछ लंगड़ाकर चलता था, इसीलिए तैमूर लंग के नाम से मशहूर था। फारस को जीतने के बाद तैमूर ने हिन्दूकुश पर्वत के पश्चिम के प्रदेश और अफगानिस्तान पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। इसके बाद उसने भारत पर आक्रमण करने का निश्चय किया। तैमूर बड़ा ही महत्वाकांक्षी, बर्बर और निर्दयी था। वह कट्टर मुसलमान था और मूर्ति-पूजकों से उसे घृणा थी। वह मंदिरों और मूर्तियों को तोड़कर तथा हिन्दुओं का वध करके गाजी की उपाधि लेना चाहता था। साथ ही वह भारत को लूटना भी चाहता था।

1398 ई० में तैमूर ने समरकंद से भारत के लिए प्रस्थान किया। उसने खोखरों को परास्त किया और भटनेर के राजपूतों का हत्याकांड करवाया। रास्ते में लूट तथा मार-काट करता हुआ तैमूर दिल्ली की ओर बढ़ा। दिल्ली का सुल्तान उसका सामना करने के लिए अपनी सेना लेकर आगे बढ़ा, पर वह परास्त हो गया और गुजरात की ओर भाग गया। तैमूर ने अब अपनी सेना के साथ दिल्ली में प्रवेश किया। कई दिन तक दिल्ली में लूट-मार तथा भीषण हत्याकांड चलता रहा। हजारों लोग तलवार के घाट उतारे गए और बहुत-से गुलाम बना लिए गए।

दिल्ली को लूटने के बाद 1399 ई० के आरंभ में तैमूर मेरठ पहुंचा और उस नगर को उसने बर्बाद कर दिया। फिर उसने हरिद्वार को लूटा और उजाड़ा। अंत में नगरकोट और जम्मू होता हुआ वह पंजाब पहुंचा। खिज्रखां को पंजाब का शासक बनाकर वह स्वयं समरकंद वापस चला गया।

तैमूर के आक्रमण से तुगलक साम्राज्य, जिसकी जड़ें पहले ही हिल रही थीं, बिलकुल नष्ट हो गया।

द्रविड़ (DRAVIDIANS) : द्रविड़ जाति का भारतीय संस्कृति तथा जनता के निर्माण में महत्वपूर्ण योग रहा है। अत्यंत प्राचीन काल में यही जाति भारत में बसती थी और उसपर शासन भी करती थी। जिसे हम सिंधु घाटी की सभ्यता कहते हैं, वह संभवतः द्रविड़ों की ही सभ्यता थी। यह सभ्यता सिंधु प्रदेश के अतिरिक्त पंजाब, राजस्थान और गुजरात तक फैली हुई थी। संभव है, यह दक्षिण भारत में भी फैली हुई हो।

द्रविड़ों की सभ्यता नगर और व्यापार-प्रधान सभ्यता थी। जब आर्य भारत में आए, तब उनका इस सभ्यता तथा दूसरे लोगों से तीव्र संघर्ष हुआ। द्रविड़ काले और नाटे थे, आर्य गोरे और सुन्दर। संघर्ष में आर्य जीते और उन्होंने द्रविड़ों को दक्षिण की ओर ढकेल दिया।

जिस तरह आर्यों के धर्म में यज्ञ मुख्य था, उसी तरह द्रविड़ों के धर्म में 'पूजा' मुख्य थी। पूजा के लिए वे देवी-देवता की मूर्ति बनाते थे और उसपर फूल आदि चढ़ाते

थे। मूर्तियां रखने के लिए मंदिर बनाए गए, जहां बड़े ठाट-बाट से पूजा का आयोजन होता था। आर्यों तथा द्रविड़ों की सभ्यता के मेल-जोल से जो हिन्दू धर्म बना, उसमें यज्ञ तो प्रायः लुप्त हो गए, और मंदिर, मूर्ति तथा पूजा को प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ।

आरंभ में यद्यपि आर्य तथा द्रविड़ जातियों के लोग अलग दिखाई देते होंगे, पर कालांतर में वे ऐसे घुल-मिल गए कि आर्य और द्रविड़ का भेद करना असंभव हो गया। अब कोई शुद्ध आर्य नहीं है, न कोई शुद्ध द्रविड़। बहुत गोरे रंग के लोग भी बहुत थोड़े हैं, बहुत काले भी थोड़े हैं। इनके बीच भूरे रंग के लोगों की संख्या अधिक है।

भारतीय इतिहास के आरंभिक काल में आर्य द्रविड़ों पर विजयी हुए और उन्होंने अपनी सभ्यता स्थापित करने में सफलता पाई। परन्तु कुछ और समय बीतने के पश्चात् द्रविड़ फिर उठे और अपनी सभ्यता तथा संस्कृति से भारतीय संस्कृति को प्रभावित करने लगे। पहले भारतीय संस्कृति में उत्तर का बोलबाला था, फिर दक्षिण का हुआ। यह परिवर्तन लगभग 1000 ई० से आरंभ हुआ। तब भारतीय धर्म के जो भी नेता हुए, वे सब दक्षिण भारत के थे। इनमें पहले शंकराचार्य थे जो केरल में हुए। फिर निम्बार्क, रामानुज, वल्लभ आदि आचार्य हुए, जो सभी दक्षिण के थे। इन्होंने भारतीय दर्शन तथा धर्म को दक्षिण की द्रविड़ संस्कृति की विशेषताओं से युक्त किया। ये विशेषताएं थीं : पूजा, मूर्ति, मंदिर, भक्ति, कीर्तन आदि। देवताओं में भी अब शिव को बड़ा महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ, जो मूलतः द्रविड़ों के देवता थे। दरअसल इस समय भी जो भारतीय संस्कृति चल रही है, उसमें द्रविड़ संस्कृति की विशेषताएं प्रमुख हैं। (देखें : सिंधु सभ्यता)

नादिरशाह (NADIRSHAH) : निरंकुश, क्रूर और अत्याचारी शासन के लिए प्रायः 'नादिरशाही' शब्द का प्रयोग होता है। नादिरशाह फारस का शासक था और 1739 ई० में उसने दिल्ली पर आक्रमण करके वहां कत्लेआम करवाया था। दिल्ली से वह 15 करोड़ रुपये नकद और 50 करोड़ रुपये से भी अधिक के रत्न-आभूषण आदि लूटकर ले गया था, जिनमें विश्वविख्यात हीरा 'कोहेनूर' और शाहजहां का रत्नजटित सिंहासन 'तख्तेताऊस' भी था।

नादिरशाह का असली नाम नादिर कुली था। वह एक खुरासानी तुर्क था और फारस के सफवी वंश के अंतिम शाह तहमास्प की फौज का एक सैनिक था। 1722 ई० में अफगानों ने इस वंश से फारस का राजसिंहासन छीन लिया था। नादिर कुली बड़ा ही साहसी और महत्वाकांक्षी था। 1729 ई० में उसने अफगानों को फारस से मार भगाया और तहमास्प को फारस का शाह बना दिया। किंतु तहमास्प बहुत अयोग्य निकला। इसलिए 1736 ई० में नादिर कुली नादिरशाह के नाम से खुद ही

फारस के सिंहासन पर बैठ गया।

सिंहासन पर बैठते ही नादिरशाह ने कंधार को घेर लिया। अफगान लोग भयभीत हो वहां से काबुल भाग गए। नादिरशाह ने दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह को लिखा कि अफगानों को काबुल में शरण क्यों दी जा रही है। जब उसे कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला तो उसने कंधार जीतने के बाद, गजनी, काबुल और पेशावर पर भी अधिकार कर लिया। फिर उसने लाहौर पर अधिकार किया और वहां से वह दिल्ली की ओर चल पड़ा।

करनाल के मैदान में उसकी मुहम्मदशाह की सेना से लड़ाई हुई, जिसमें दिल्ली की सेना हार गई। मुहम्मदशाह को कैद कर नादिरशाह ने दिल्ली में प्रवेश किया। आरंभ में उसने नागरिकों के साथ कोई दुर्व्यवहार नहीं किया। पर एक दिन अचानक उसकी मृत्यु की अफवाह उड़ गई और उसके कई सैनिक मार डाले गए। इसपर नादिरशाह के क्रोध की सीमा न रही। उसने कत्लेआम की आज्ञा दे दी। सुबह से शाम तक हत्याकांड चलता रहा। लगभग तीस हजार आदमी मौत के घाट उतार दिए गए। शहर लूटा गया और उसका अधिकांश भाग जलाकर खाक कर दिया गया।

मुहम्मदशाह की विनती पर नादिरशाह ने लूट-मार बंद करवाई। बादशाह का सारा खजाना उसने छीन लिया। अपार धन-संपत्ति उसके हाथ लगी और वह उसे लेकर अपने देश लौट गया। 1747 ई० में उसका वध कर दिया गया।

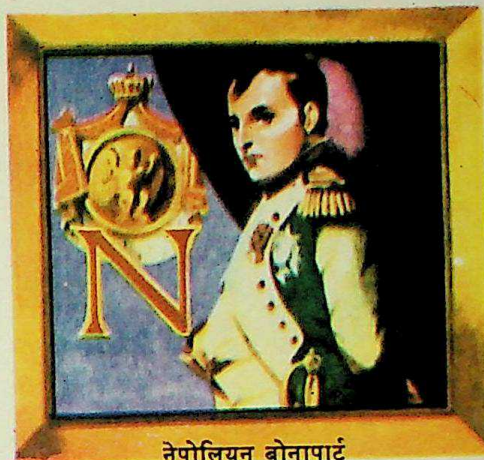
नादिरशाह के हमले से मुगल साम्राज्य की सारी प्रतिष्ठा धूल में मिल गई, उसका राज्यकोष खाली हो गया और शक्ति छिन्न-भिन्न हो गई। कश्मीर से सिंध तक का सारा प्रदेश फारस साम्राज्य का अंग बन गया।

नेपोलियन (NAPOLEON 1769-1821) : इस महान योद्धा का पूरा नाम नेपोलियन बोनापार्ट था।

नेपोलियन का जन्म कोर्सिका द्वीप में हुआ था, जो फ्रांस के अधीन है। उसके पिता निर्धन, किंतु ऊंचे घराने के थे। नेपोलियन जब बहुत छोटा था तभी उसने निश्चय कर लिया था कि वह सैनिक बनेगा।

पन्द्रह वर्ष की उम्र में नेपोलियन पेरिस के एक सैनिक स्कूल में प्रविष्ट हुआ। वह छोटे कद का था, अतः दूसरे लड़के उसकी खिल्ली उड़ाते थे। नेपोलियन उन लड़कों को बता देना चाहता था कि अच्छे सैनिक के लिए लम्बा होना जरूरी नहीं है। बहुत हद तक उसकी यही आकांक्षा उसे इतना बड़ा सेनापति बनाने में सहायक सिद्ध हुई। सैनिक स्कूल में एक वर्ष तक रहने के बाद नेपोलियन को सेना में जगह मिल गई। अफसर बनते भी उसे देर न लगी।

जब नेपोलियन 20 वर्ष का हुआ तो फ्रांसीसी लोग सम्राट के विरोधी बन गए। उनका विद्रोह 'फ्रांस की



नेपोलियन बोनापार्ट

राज्यक्रांति' के नाम से प्रसिद्ध है। नेपोलियन ने भी सम्राट और दरबारियों के विरुद्ध राज्यक्रांति में भाग लिया।

किन्तु जब फ्रांसीसी जनता ने स्वयं शासन चलाना आरंभ किया तो उसने अनुभव किया कि यह एक बड़ा कठिन काम है। साथ ही, फ्रांस के कुछ पड़ोसियों ने उसके विरुद्ध युद्ध का बिगुल बजा दिया। दो-एक वर्षों में ही पुनः विद्रोह हुआ। इस विद्रोह को दबाने के लिए नेपोलियन को बुलाया गया। उसने विद्रोह दबा दिया, और ऐसा करने में उसे अपने केवल 200 सिपाहियों की आहुति देनी पड़ी। वह केवल 26 वर्ष का था तभी उसे फ्रांसीसी सेना का सेनापति बना दिया गया।

फ्रांस को उस समय वास्तव में ऐसे ही नेता की खोज थी। नेपोलियन ने शीघ्र ही पड़ोसी देशों के विरुद्ध संघर्ष आरंभ कर दिया। अपनी सेना लेकर उसने रोम पर चढ़ाई कर दी और इटली के सारे उत्तरी भाग पर अधिकार कर लिया। उसने अपनी सेना को एकसाथ उत्तर, पूर्व और पश्चिम की ओर बढ़ने का हुक्म दिया। केवल दस वर्ष में ही रूस को छोड़कर लगभग सारा यूरोप उसके झंडे के नीचे आ गया।



नेपोलियन ने नये कानूनों की घोषणा की।



नेपोलियन ने खुद जोजैफ़ाइन को ताज पहना दिया।

इस बीच नेपोलियन सेना का नेतृत्व करने के अतिरिक्त भी फ्रांस के लिए बहुत कुछ करता रहा। उसने सड़कें, बंदरगाह और कारखाने बनवाए। एक न्यायसंहिता तैयार करवाई, कर-व्यवस्था को नियमित किया और नये स्कूल खुलवाए। जितना काम उसने कर दिखाया उसे देखकर लोग दंग रह गए।

सत्ता के लिए नेपोलियन का लोभ अब बढ़ने लगा और वह फ्रांस का सम्राट बनने के स्वप्न देखने लगा। उसने सुंदरी जोजैफ़ाइन से विवाह कर लिया था और वह उसे सम्राज्ञी के रूप में देखना चाहता था। इसके लिए राज्याभिषेक आवश्यक था। उसने पोप को बुलवा भेजा। किंतु राज्याभिषेक के समय लोग यह देखकर अवाक् रह गए कि नेपोलियन ने पोप से ताज ले लिया और स्वयं अपने सिर पर धारण कर लिया। बाद में उसने जोजैफ़ाइन को ताज पहनाया।

अंत में उसने रूस को जीतने की ठानी। वह बढ़ते-बढ़ते मास्को तक जा पहुंचा। किन्तु मास्को की सीमा पर भयंकर अग्निकांड और रूस की सर्दियों की कड़कड़ाती ठंड ने वह कर दिखाया जो किसी सेना से करते न बना था। नेपोलियन की सेना को पीछे लौटना पड़ा। फ्रांसीसियों ने हिसाब लगाया कि इस लड़ाई में दस-बारह



नेपोलियन की सेना को रूस से उल्टे पांव लौटना पड़ा।

लाख फ्रांसीसी काम आए। अब उनमें लड़ने के लिए उत्साह नहीं रहा था। बहुत-से लोग नेपोलियन के विरुद्ध हो गए। उन्होंने उसे सिंहासन से उतार दिया।

नेपोलियन को एल्बा टापू में निर्वासित कर दिया गया। उधर फ्रांस में नया राजा बनाया गया, पर वह लोकप्रिय न हो सका। अंतः नेपोलियन की फिर पुकार हुई। उसने एक बार फिर फ्रांस की बागडोर संभाली। एक बार फिर वह अंग्रेजों से टकराया और बेल्जियम में वाटरलू के मैदान में वेलिंगटन के हाथों परास्त हुआ। उसे सेंट हेलेना के छोटे-से द्वीप में निर्वासित कर दिया गया, जहां उसने अपने जीवन के शेष दिन बिताए।

(देखें : वाटरलू की लड़ाई; वेलिंगटन, ड्यूक ऑव)

नेल्सन, वाइकाउंट होरेशियो (VISCOUNT HORATIO NELSON 1758-1805) : इंग्लैंड और फ्रांस के बीच 1793 से 1815 तक युद्धों का क्रम चलता रहा। नेल्सन शाही नौसेना के प्रमुख सेनापतियों में से था। उसने फ्रांसीसी बेड़े को बुरी तरह कुचल दिया और भारत में ब्रिटिश आधिपत्य को उखाड़ फेंकने के नेपोलियन के हौसले पर पानी फेर दिया। सन् 1801 में डेनमार्क के बेड़े को कब्जे में लेने का श्रेय भी नेल्सन को ही है।

नेल्सन नॉर्फोर्क के एक पादरी का लड़का था। 20 वर्ष की आयु में उसे मध्य अमरीका में ब्रिटिश साम्राज्य की समुद्री डाकूओं से रक्षा करने के लिए एक जहाज का सेनापति बनाया गया। 1794 में उसे कोर्सिका नामक फ्रांसीसी द्वीप पर हमला करने के लिए एक जहाज का सेनापति बनाकर भेजा गया। इस युद्ध ने ही नेल्सन को विख्यात कर दिया। इस युद्ध में उसकी दाहिनी आंख जाती रही। बाद में सान्ता क्रुज़ में स्पेनी मोर्चे पर हमला करते समय उसका दाहिना हाथ भी बेकार हो गया।

लेकिन नेल्सन को अपने जीवन की सबसे बड़ी विजय 1805 में प्राप्त हुई। फ्रांस और स्पेन के संयुक्त बेड़े ने समुद्र पर अपना दावा बनाए रखने के लिए कादीज़ बंदरगाह के पास ब्रिटिश युद्धपोत पर हमला कर दिया था। इसे ट्रैफ़ल्गर की लड़ाई कहते हैं। इस लड़ाई में शत्रु बेड़े के छक्के छूट गए और समुद्र पर इंग्लैंड का प्रभुत्व सुरक्षित रहा। नेल्सन इस युद्ध में जहाज के पुल पर खतरे की जगह पर खड़ा था। उससे वहां से हट जाने को कहा गया लेकिन उसने हटने से इन्कार कर दिया। एक फ्रांसीसी निशानेबाज ने उसे गोली मार दी। नेल्सन मर गया, लेकिन मरते-मरते भी उसे विजय की सूचना मिल गई थी।

(देखें : ट्रैफ़ल्गर की लड़ाई)

नेहरू, जवाहरलाल (JAWAHARLAL NEHRU 1889-1964) : स्वतंत्रता की प्राप्ति और देश के औद्योगिक निर्माण में नेहरूजी की सबसे प्रधान भूमिका रही है।

भारतीय जनता का जितना प्रेम उन्हें मिला, उतना किसी भी अन्य नेता को नहीं मिला।

जवाहरलाल नेहरू का जन्म इलाहाबाद में हुआ था। उनके पिता मोतीलाल नेहरू देश के माने हुए वकील थे, और बाद में कांग्रेस के एक प्रमुख नेता हो गए थे। नेहरूजी की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। पंद्रह वर्ष की आयु में वे उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड चले गए।

1912 में नेहरूजी बैरिस्टर बनकर लौटे। पर उस पेशे में उनका मन नहीं लगा। लोकमान्य तिलक ने जब 'होमरूल' आन्दोलन चलाया तो वे उसकी सभाओं में शामिल होने लगे।

1921 के असहयोग आन्दोलन में वे गांधीजी के सम्पर्क में आए। इससे उनके जीवन की धारा ही बदल गई।



जवाहरलाल नेहरू

उन्हीं दिनों उन्होंने प्रतापगढ़ जिले के गांवों का दौरा किया, जिससे भारत की असली तस्वीर उनके सामने आई। अब वे कांग्रेस में पूरी तरह भाग लेने लगे और कई वर्ष तक उसके मंत्री के रूप में काम करते रहे।

1930 में वे कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गए। इसी अधिवेशन में पूर्ण स्वाधीनता पहली बार कांग्रेस का लक्ष्य घोषित किया गया। तब से वे कांग्रेस के कर्णधार हो गए। उनका जीवन अब देश को जागृत करने में या जेलों में बीतने लगा। उन्होंने भारत के एक-एक कोने का भ्रमण किया और स्वयं को देश के साथ पूरी तरह एकाकार कर दिया। इस तरह 1947 तक वे देश की स्वाधीनता के लिए लड़ते रहे। भारत के प्रधानमंत्री बनने से बहुत पहले ही वे भारतीय जनता के हृदय-सम्राट बन गए थे।

नेहरूजी का भूकाव समाजवाद की ओर था। एशिया

और अफ्रीका के साम्राज्यविरोधी संघर्षों को वे सदा प्रेरणा और प्रोत्साहन देते रहते थे। वे विश्व के उन थोड़े-से नेताओं में से थे जिन्होंने तानाशाही के खतरे की ओर सबसे पहले आवाज उठाई थी। साथ ही वे गांधीजी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों से भी बहुत प्रभावित थे। आधुनिकता के प्रबल समर्थक होते हुए भी वे भारतीय संस्कृति के प्रेमी थे। नेहरूजी केवल राजनीतिज्ञ ही नहीं थे, बल्कि उच्च कोटि के साहित्यिक और कलाप्रेमी भी थे। जेल में रहते हुए उन्होंने जो पुस्तकें लिखी हैं वे दुनिया-भर में बड़े चाव से पढ़ी जाती हैं।

स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद वे भारत को एक समृद्ध और शक्तिशाली राष्ट्र बनाने के बृहत् कार्य में जुट गए। जीवन के आखिरी क्षणों तक वे राष्ट्रों के आपसी तनाव को कम करने और विश्वशांति के ध्येय के लिए काम करते रहे। वे विश्व की एक ऐसी विभूति थे जिसपर भारत को सदा गर्व रहेगा।

पटेल, सरदार वल्लभभाई (SARDAR VALLABH-BHAI PATEL 1885-1950): सरदार पटेल हमारे स्वाधीनता-संग्राम के प्रधान सेनापतियों में रहे हैं। और स्वाधीनता के बाद उन्होंने भारत की राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए जो काम किया वह स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा।

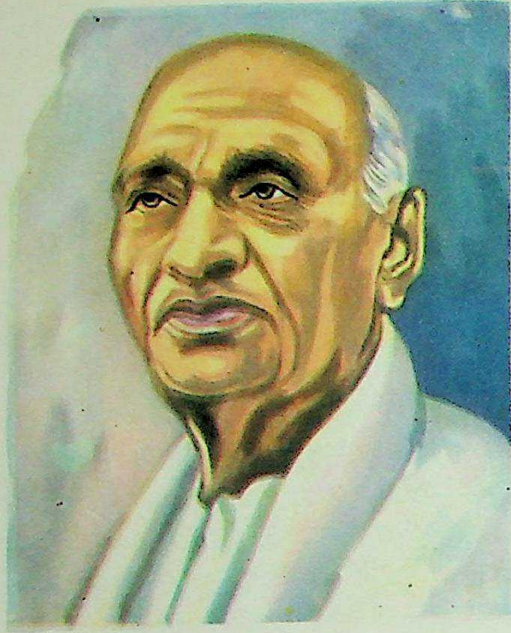
सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म गुजरात के एक गांव में हुआ था। उनके पिता भवेरभाई 1857 के विद्रोह में महारानी लक्ष्मीबाई की फौज में भरती होकर अंग्रेजों के खिलाफ लड़ चुके थे। वल्लभभाई बचपन से ही बड़े निडर और साहसी थे। स्कूल की शिक्षा पूरी कर उन्होंने पहले कुछ साल मुख्तारी की, फिर विलायत जाकर प्रथम श्रेणी में बैरिस्टरी पास कर आए। अपनी योग्यता के कारण शीघ्र ही वे अहमदाबाद के चोटी के बैरिस्टर हो गए।

गांधीजी ने जब खेड़ा (गुजरात) में सत्याग्रह चलाने का निश्चय किया तो वल्लभभाई ने गांव-गांव घूमकर किसानों को लगानबंदी के लिए इतना संगठित कर दिया कि सरकार को झुकना पड़ा। वे तभी से गांधीजी के अत्यन्त विश्वस्त साथियों में हो गए।

1921 के असहयोग आन्दोलन में वल्लभभाई ने बैरिस्टरी छोड़ दी और वे पूरी तरह देशसेवा में लग गए। किन्तु उनकी प्रसिद्धि सबसे अधिक बारदोली सत्याग्रह से हुई। उनका सरदार नाम भी इसी सत्याग्रह में पड़ा। यह आन्दोलन लगान की 30 प्रतिशत वृद्धि के खिलाफ चलाया गया था। वल्लभभाई अब देश के प्रथम श्रेणी के नेताओं में गिने जाने लगे।

1930 के असहयोग आन्दोलन में जब मोतीलाल नेहरू गिरफ्तार हो गए तो देश का नेतृत्व सरदार पटेल ने ही

पुनर्जागरण काल, यूरोपीय



सरदार वल्लभभाई पटेल

संभाला। इस सत्याग्रह के बाद कराची में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। सरदार पटेल उसके अध्यक्ष चुने गए। 1937 में जब देश के आठ प्रांतों में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बने तो उन्हें पार्लेमेंटरी बोर्ड का अध्यक्ष बनाया गया।

आखिर देश स्वतंत्र हुआ। सरदार पटेल उपप्रधान मंत्री बने। साथ ही गृह विभाग और रियासती विभाग भी उन्हींको दिए गए। उस समय देश में सांप्रदायिक द्वेष की आग भड़की हुई थी। उधर अंग्रेज भारत से जाते हुए यहां 600 से अधिक स्वतंत्र रियासतें छोड़ गए थे। उनमें से कुछ अपनी स्वतंत्र सरकारें कायम करने के मनसूबे बांध

रही थीं। कुछ पाकिस्तान के साथ सांठ-गांठ कर रही थीं। किन्तु सरदार पटेल ने अपनी कूटनीतिज्ञता और दृढ़ता से सबकी चालों को मात दे दी। सभी रियासतों को भारत सरकार के अधीन कर उन्होंने देश को एक सुदृढ़ राष्ट्र का रूप दिया।

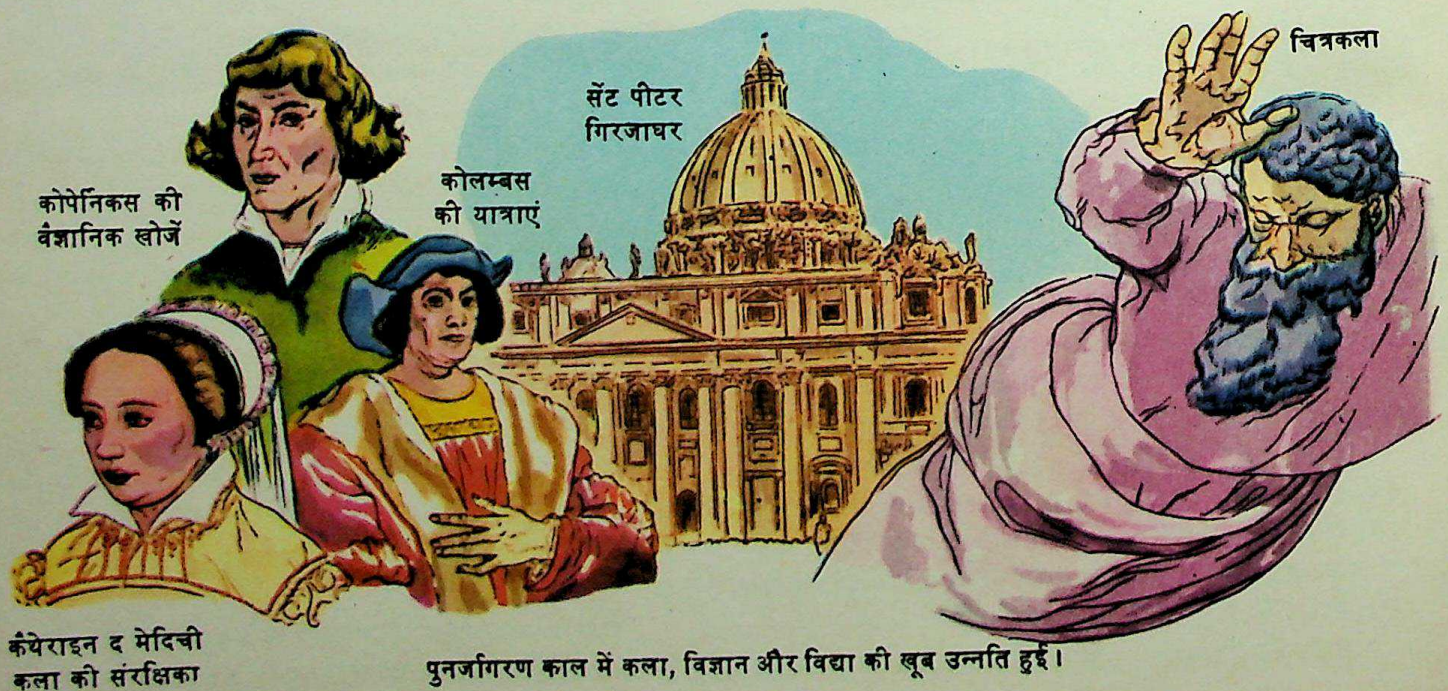
सरदार अपने संकल्प के बड़े पक्के थे। इसीलिए वे लौहपुरुष कहलाते थे।

पुनर्जागरण काल, यूरोपीय (RENAISSANCE) : यूरोप के इतिहास में लगभग ढाई सौ वर्ष का ऐसा समय है, जिसे विद्वान पुनर्जागरण काल कहते हैं। अंग्रेजी में इस युग के लिए 'रेनेसां' शब्द का प्रयोग होता है, जिसका अर्थ होता है 'पुनर्जन्म'। इस युग में कला और विद्या के प्रति लोगों की अभिरुचि का पुनर्जन्म हुआ।

रोमन साम्राज्य के पतन के बाद कुछ सौ वर्ष तक यूरोप में अंधयुग रहा। सब प्रकार की गतिविधि इतनी लुप्त हो गई कि लगता था कि महाद्वीप सो गया है। लोग भूल गए कि कोई यूनान देश भी था, उसमें दार्शनिक और विचारक भी थे, उन्होंने कोई ग्रंथ भी लिखे थे। लोग रोमनों को भी भूल गए। विद्वानों और कलाकारों की संख्या इनी-गिनी ही रह गई। कहीं भी कोई सुदृढ़ शासन नहीं था। लड़ने या पेट पालने के लिए कठोर परिश्रम करने में ही लोगों का अधिकांश समय निकल जाता था।

लेकिन धीरे-धीरे इस अंधयुग से यूरोप बाहर निकला। कुछ काल बाद कला और विद्या में लोगों का प्रेम इतना अधिक बढ़ गया कि बाद में इतिहासकारों ने इस युग को 'पुनर्जागरण काल' या 'रेनेसां' का नाम दिया।

पुनर्जागरण काल के आरंभ का मुख्य कारण यूरोप



कोपेर्निकस की वैज्ञानिक खोजें

कोलम्बस की यात्राएं

सेंट पीटर गिरजाघर

चित्रकला

कैथेराइन द मेदिची कला की संरक्षिका

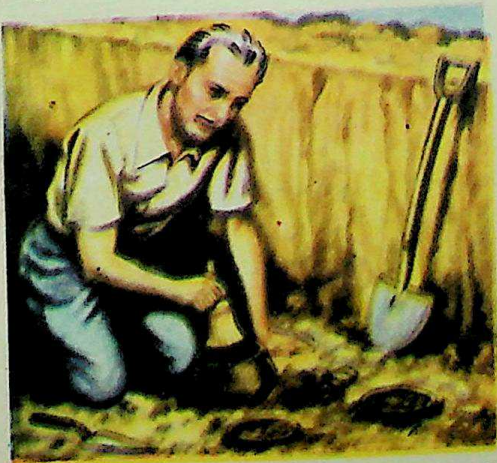
पुनर्जागरण काल में कला, विज्ञान और विद्या की खूब उन्नति हुई।

पर तुर्कों का आक्रमण था। पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधानी कुस्तुन्तुनिया 'अंधयुग' में विद्या का केन्द्र थी। जब इस नगर पर सन् 1453 में तुर्कों ने आक्रमण कर दिया, तो बहुत-से विद्वान भागकर इटली आ गए। वे अपने साथ यूनानी और लैटिन भाषा के ग्रंथों की अनेक हस्त-लिखित प्रतियां भी ले आए। पश्चिमी यूरोप ने न केवल इन विद्वानों का बल्कि इनके ग्रंथों का भी पूरा लाभ उठाया। इटली से पुनर्जागरण की लहरें सारे यूरोप में फैल गईं। कला, संगीत, विज्ञान और साहित्यिक यात्राएं, सभी दिशाओं में लोगों की रुचि बढ़ी। इस युग में बड़े-बड़े लेखक, चित्रकार, शिल्पकार, विद्वान, यात्री और वैज्ञानिक पैदा हुए। इनके अलावा कुछ शासकों ने भी बड़ा महत्वपूर्ण योगदान किया।

शासकों में लोरेंजो बड़ा योग्य था। वह इटली में फ्लोरेंस नगर और उसके आसपास के राज्य का स्वामी था। उसकी सहायता से अनेक कलाकार और लेखक प्रसिद्ध हो सके। प्रसिद्ध चित्रकार, आविष्कारक और महापुरुष लियोनार्दो दा विंची इसी युग की देन हैं। इरेस्मस जैसा विद्वान इसी काल में हुआ। माइकेलेंजेलो, राफ़ेएल, टिशियन, हॉलबीन, आंद्रिया देल सातों, कोपेनिकस, वास्को द गामा, कोलम्बस और शेक्सपियर इसी युग में हुए। सन् 1603 में इंग्लैंड की रानी एलिजाबेथ प्रथम की मृत्यु से इस युग की समाप्ति मानी जाती है। यह युग इसलिए समाप्त नहीं मान लिया गया कि कला और विद्या में लोगों की अभिरुचि उस दिन से पुनः समाप्त हो गई, बल्कि इसलिए कि इसके साथ व्यापार और उप-निवेशों आदि के स्वार्थ जुड़ गए।

पुरातत्व (ARCHAEOLOGY): यह विज्ञान की वह शाखा है, जिसमें प्राचीन काल के अवशेषों का अध्ययन किया जाता है।

इस पृथ्वी पर मनुष्य हजारों साल से रहता आ रहा



प्राचीन काल के अवशेषों का अध्ययन ही पुरातत्व है।



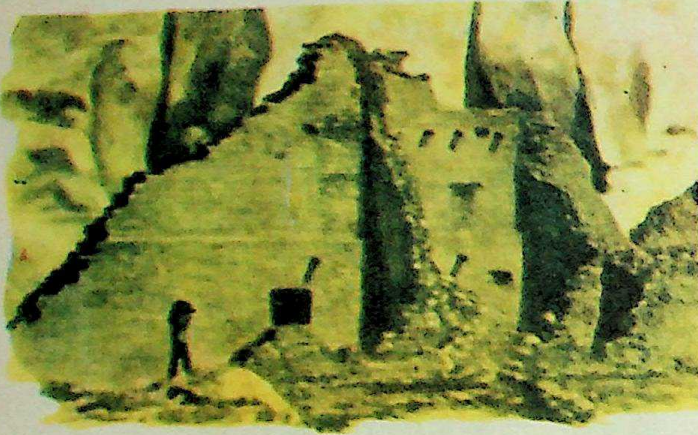
प्राचीन काल के अवशेष

है। प्रारंभिक मनुष्यों को लिखना-पढ़ना तो आता नहीं था कि वे अपने बारे में कुछ लिखकर छोड़ जाते और हम उसे पढ़कर उनके बारे में जान लेते। न पुराने जमाने के मनुष्यों को यह मालूम था कि बहुत बाद में उनके बारे में जानकारी प्राप्त करना हमारे लिए इतना जरूरी हो जाएगा।

उनके जीवन और रहन-सहन के बारे में हमने जितनी भी जानकारी एकत्र की है, उसका अधिकांश उनके छोड़े अवशेषों—बर्तनों, जेवरों, हथियारों और औजारों, उनके द्वारा मारे गए जानवरों की हड्डियों, उनके मकानों और मकबरों के खंडहरों आदि से ही प्राप्त हुआ है।

दक्षिणी अमरीका के कुछ आदिवासी अपने मुदों को मिट्टी के बड़े-बड़े पात्रों में रखकर दफनाते थे। पुरातत्त्वविदों को ऐसे पात्र मिले हैं।





इस तरह के खंडहरों से पुरातत्त्वविद् आदिकालीन जीवन और रहन-सहन की काफी जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।

पुरातत्त्वविद् इन अवशेषों के अध्ययन के आधार पर जो तथ्य एकत्र करते हैं, वे इतिहास की आधारभूत सामग्री बन जाते हैं। जैसे, अपने देश में मोहेनजोदड़ो, हड़प्पा तथा कई अन्य जगहों पर पुरातत्त्वविदों ने जो खुदाई की उससे एक बड़ी उन्नत सभ्यता के अवशेष मिले। उनसे यह सिद्ध हो गया कि आर्यों के भारत आने के सैकड़ों वर्ष पहले भी यहां एक सभ्य और उन्नत जाति का निवास था। इसके पहले लोग भारत के इतिहास की शुरुआत आर्यों के आगमन से ही मानते थे।

पुरातत्त्वविदों ने भारत, मिस्र, इराक, ईरान, दक्षिण-पूर्वी एशिया, यूरोप तथा अमरीका में इसी तरह की कितनी ही खोजें की हैं, जिनसे मनुष्य जाति के इतिहास के अध्ययन में बड़ी सहायता मिली है। (देखें: संग्रहालय)

पृथ्वीराज चौहान (PRITHVIRAJ CHAUHAN 1162-1192) : पृथ्वीराज चौहान, जिसने तुर्क आक्रमणकारी मुहम्मद गोरी से टक्कर ली, दिल्ली और अजमेर का शासक था। यह राजपूतों के प्रसिद्ध चौहान वंश में बारहवीं शताब्दी में हुआ था।

उस समय गहड़वाल वंश का राजा जयचन्द कन्नौज में राज्य करता था। पृथ्वीराज से उसकी शत्रुता थी। कहते हैं कि जयचन्द की एक कन्या थी जिसका नाम था संयुक्ता। उसके स्वयंवर के समय जयचन्द ने पृथ्वीराज का अपमान करने के विचार से उसकी एक प्रतिमा बनवाकर द्वारपाल के स्थान पर रखवा दी। संयुक्ता पृथ्वीराज को प्यार करती थी। पृथ्वीराज भी अपने कुछ चुने हुए साथियों के साथ वहां आया हुआ था। संयुक्ता ने जयमाला पृथ्वीराज की प्रतिमा के गले में डाल दी और वह संयुक्ता को लेकर भाग गया। इस घटना के कारण जयचन्द पृथ्वीराज से और भी जलने लगा।

जब मुहम्मद गोरी ने दिल्ली पर आक्रमण किया,

तब अन्य राजपूत राजाओं ने तो पृथ्वीराज का साथ दिया, परंतु जयचंद ने नहीं दिया। यह आक्रमण 1191 ई० में हुआ। दोनों पक्षों में भयंकर युद्ध हुआ। मुहम्मद गोरी की सेना बुरी तरह पराजित होकर मैदान से भाग खड़ी हुई। गोरी स्वयं घायल हो गया और उसे मैदान से उठाकर ले जाना पड़ा।

दूसरे वर्ष गोरी ने फिर आक्रमण किया। इस बार भी जयचंद ने पृथ्वीराज का साथ नहीं दिया। इस युद्ध में भी राजपूत सेना बड़ी वीरता से लड़ी, परंतु हार गई। पृथ्वीराज को बन्दी बना लिया गया और क्रूरतापूर्वक उसकी हत्या कर दी गई।

दो वर्ष बाद गोरी ने कन्नौज पर भी हमला किया। जयचंद उसका सामना न कर सका और मारा गया।

पृथ्वीराज चौहान की वीरता भारतीय इतिहास का गौरव है। पृथ्वीराज साहित्य और कला का अनुरागी और कुशल शासक भी था। उसके दरबार में चन्दबरदाई नामक चारण था जिसका लिखा 'पृथ्वीराज रासो' बड़ा प्रसिद्ध है। उसने अनेक किले और सुन्दर भवन भी बनवाए थे।

पोम्पेई (POMPEII) : सन् 79 में इटली में विसूवियस ज्वालामुखी फूट पड़ा। उसने तीन नगर दबा दिए। इनमें से एक पोम्पेई था। नेपल्स की खाड़ी के तट पर विसूवियस की तराई में पर्वत से एक मील की दूरी पर यह नगर बसा था। यह बड़ा समृद्ध नगर था। नगर में सात बड़े मन्दिर, दो नाटकघर, तीन सार्वजनिक स्नानघर, एक वृत्ताकार क्रीड़ांगन और बहुत बड़ा बाजार भी था। पक्की सड़कें थीं। अधिकांश मकान दुमंजिले थे। घरों में सुन्दर चित्र और मूर्तियां थीं। नगर के चारों तरफ चहार-दीवारी थी, जिसमें आठ बड़े-बड़े फाटक थे।

विसूवियस करीब सात सौ बरस से सोया पड़ा था। लोगों को कल्पना भी न थी कि वह फिर फूट पड़ेगा। सैकड़ों बरस पहले उससे जो लावा निकला था वह पर्वत की ढालों और तलहटी में जमकर उपजाऊ मिट्टी बन चुका था। इन ढलानों पर अंगूरों के बाग लगे थे।

सन् 79 में 24 अगस्त को एकाएक नगर पर गरम-गरम पत्थरों की वर्षा होने लगी। कुछ ही देर में पिघले लावे से शहर की सड़कें और गलियां भर गईं। अधिकांश लोगों ने बचकर निकलने का प्रयत्न किया। किन्तु लगभग अठारह हजार व्यक्ति ही भागकर अपनी जान बचा पाए।

पिघला लावा घंटों बरसता रहा। लावे के बाद राख ने पूरे शहर को ढक दिया। जब तीन दिन बाद ज्वालामुखी शान्त हुआ तो पोम्पेई नगर लावे की तह में बहुत नीचे दब चुका था। समुद्र-तट इतना बदल गया था कि कोई यह भी नहीं कह सकता था कि नगर है कहां।

सत्रह शताब्दियों तक नगर दबा पड़ा रहा। सन्

1748 में एक किसान को पहाड़ी ढाल पर जमीन की खुदाई करते समय दबे हुए शहर का पता चला। उसकी बातों से विद्वानों को लगा कि इस शहर को खोदने से प्राचीन रोमनों के बारे में काफी कुछ पता लग सकता है। खुदाई शुरू हुई। धीरे-धीरे दबा शहर बाहर आया। आधे से ज्यादा पोम्पेई खोदकर निकाला जा सका है। हजारों यात्री इसे देखने आते हैं।

इमारतों की छतें बैठ गई हैं। कुछ दीवारें अब भी खड़ी हैं। चूल्हे, बर्तन, टब संगमरमर की मेजें और कांस्य-प्रतिमाएं बताती हैं कि पोम्पेई के लोग कैसे रहते थे। रोमन रथों के पहियों के निशान अब भी सड़कों के पत्थरों पर बने हैं। वे सीढ़ियां भी हैं जिनसे सड़कें पार की जाती थीं।

लेकिन जेवर बहुत कम मिले हैं। भागते समय लोग अपने जेवर साथ ले गए होंगे।

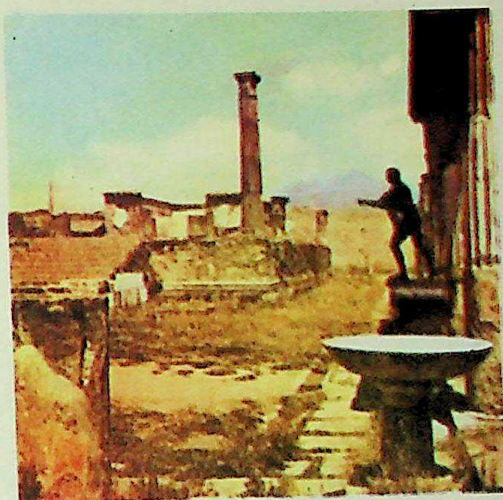
एक कार्यकर्ता को खुदाई के समय एक विचित्र-सी दरार दिखाई दी। उसने सोचा कि यह दरार किसी ऐसी चीज़ से बनी होगी जो विस्फोट के समय यहां थी और दब गई, पर बाद में नष्ट हो गई। उसने दरार को कंक्रीट से भर दिया। कंक्रीट के जम जाने के बाद उसने आसपास की मिट्टी और चट्टान को खोदकर अलग कर दिया, और इस तरह एक कुत्ते की ढली हुई मूर्ति निकल आई। यह कुत्ता ज्वालामुखी की राख में दब गया होगा। बाद में राख की तह जमकर सख्त हो गई और कुत्ते का शरीर नष्ट होकर मिट्टी में मिल गया।

इसी तरह और भी बहुत-सी दरारें मिलीं। ये आदमियों की थीं। इनमें एक संतरी था जो अपनी जगह से हटा नहीं था। संतरी को क्या पता था कि लोगों को उसकी बहादुरी सत्रह शताब्दियों बाद मालूम पड़ेगी।

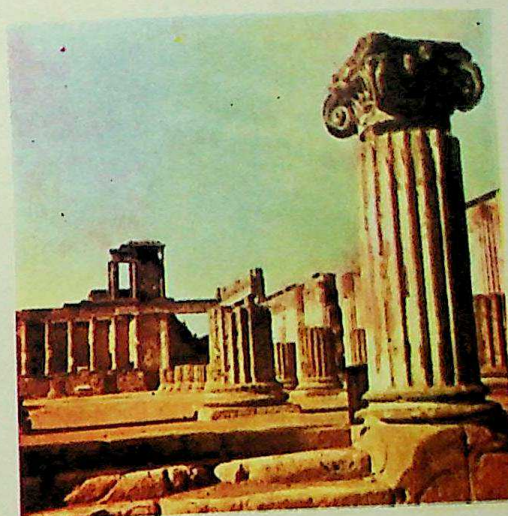
प्रताप, महाराणा (MAHARANA PRATAP 1540-1597) : महाराणा प्रताप मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह के पुत्र थे। भारत पर उन दिनों अकबर का राज्य था। अकेले मेवाड़ को छोड़, बाकी सभी राजपूत राज्य मुगलों की अधीनता स्वीकार कर चुके थे। अकबर ने मेवाड़ पर भी चढ़ाई की। उदयसिंह चित्तौड़ से भागकर अरावली पहाड़ पर पहुंचे और उन्होंने वहां उदयपुर नाम से अपनी नई राजधानी बनाई। चित्तौड़ के युद्ध के चार वर्ष बाद ही उनका देहान्त हो गया।

अब प्रताप महाराणा बने। उन्होंने सिंहासन पर बैठते ही प्रतिज्ञा की कि वे जब तक मेवाड़ को स्वतंत्र नहीं करा लेंगे, पत्तल में खाएंगे, जमीन पर सोएंगे और भोपड़ी में रहेंगे। वे अब अपनी सैन्य-शक्ति बढ़ाने लगे।

उन्हीं दिनों अकबर का सेनापति राजा मानसिंह दक्षिण विजय कर उधर से लौट रहा था। वह महाराणा से मिलने आया। महाराणा ने साफ-साफ उससे कह दिया



विसूवियस पर्वत और पोम्पेई के खंडहर



न्यायालय के खंडहर



पोम्पेई के एक मकान की दीवार पर बने चित्र

कि आपने धन और प्रतिष्ठा के लोभ में यवनों की अधीनता स्वीकार की है। मानसिंह इस अपमान का बदला लेने की धमकी देकर तभी वहां से चल दिया।

शीघ्र ही शाहजादा सलीम और मानसिंह ने बड़ी भारी सेना लेकर चढ़ाई की। हल्दीघाटी के मैदान में घमासान युद्ध हुआ। राजपूतों ने मुगल सेना को गाजर-मूली की तरह काटा। पर वह संख्या में बहुत थी। राणा मजबूर हो अपने साथियों सहित जंगलों और पहाड़ों की ओर निकल गए।

हल्दीघाटी के युद्ध के बाद प्रताप को बड़े कष्ट उठाने पड़े। वे अपने बचे-खुचे साथियों के साथ जंगलों और पहाड़ों में भटकने लगे। मुगल सेना उनका बराबर पीछा करती रहती थी। एक बार वे एक गुफा में रह रहे थे। उनकी रानी ने घास की रोटियां बनाईं। सभीने अपना-अपना भाग खा लिया। पर जब छोटी लड़की रोटी खाने लगी तो एक बिल्ली उससे रोटी भपटकर ले गई। लड़की भूख से व्याकुल हो रोने लगी। प्रताप की आंखें यह दृश्य देखकर भर आईं। पर वे अपने प्रण के बड़े पक्के थे और स्वतंत्रता के लिए सब कुछ बलिदान करने को तैयार थे।

महाराणा अब फिर से सेना इकट्ठी करने लगे। उन्हें एक बूढ़ा मिला जिसका नाम भामाशाह था। उसने अपनी सारी संपत्ति, पचीस हजार मोहरें, उनके चरणों पर धर दीं।

महाराणा ने फिर सैन्य-शक्ति जमा की और धीरे-धीरे 32 किले अपने अधिकार में कर लिए। पूरे मेवाड़ को स्वतंत्र कराने के लिए अब केवल चित्तौड़ और माण्डलगढ़, ये दो किले ही जीतने को रह गए थे। तभी उनका अंतिम समय आ पहुंचा। वे मरते दम तक अपने प्रण पर अटल रहे। भारत को अपने इस महान वीर पर बड़ा गर्व है।

प्लासी की लड़ाई (BATTLE OF PLASSEY) : भारत में अंग्रेजी राज्य का आरंभ प्लासी की लड़ाई से माना जाता है। यह लड़ाई 23 जून, 1757 को बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला और अंग्रेजों की सेना के बीच हुई थी, जिसका नेतृत्व क्लाइव कर रहा था।

अलीवर्दी खां की मृत्यु के बाद सिराजुद्दौला 1756 ई० में बंगाल का नवाब बना। आरंभ से ही अंग्रेजों की गति-विधियों पर उसकी कड़ी नज़र थी। उन्हें जो व्यापारिक सुविधाएं मिली हुई थीं, उनका वे दुरुपयोग कर रहे थे और अपनी शक्ति तेज़ी से बढ़ा रहे थे। नवाब को आशंका थी कि यदि उन्हें दबाया नहीं गया तो वे किसी न किसी दिन बंगाल को हड़प लेंगे। अतः उसने अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी को आदेश दिया कि वह अपनी बस्तियों की किलेबंदी न करे।

अंग्रेजों से कोई संतोषजनक उत्तर न मिलने पर उसने उनकी कासिम बाज़ार की कोठी और कलकत्ते पर हमला

किया और उनपर अधिकार कर लिया। वहां अपना गवर्नर नियुक्त कर वह अपनी राजधानी मुशिदाबाद लौट आया। परंतु अंग्रेजों ने कुछ महीने बाद ही कलकत्ता पर फिर से अपना अधिकार स्थापित कर लिया और हुगली तथा आसपास के स्थानों को खूब लूटा। नवाब ने फिर उनपर हमला किया, पर इस बार दोनों पक्षों में संधि हो गई।

लेकिन अंग्रेज सिराजुद्दौला के खिलाफ बराबर षड्यंत्र करते रहे और उन्होंने सिराजुद्दौला के रिश्तेदार और प्रधान सेनापति मीर जाफ़र को अपनी तरफ मिला लिया। षड्यंत्र पूरा हो जाने पर क्लाइव एक सेना के साथ मुशिदाबाद की ओर बढ़ा। प्लासी के मैदान में नवाब और क्लाइव की सेना में घमासान लड़ाई हुई। मीर जाफ़र, जैसाकि पहले से तय था, चुपचाप खड़ा देखता रहा। सिराजुद्दौला इस विश्वासघात से घबरा गया और जान बचाकर भागा। पर वह पकड़ा गया और उसका वध कर दिया गया। मीर जाफ़र अब बंगाल का नवाब बना। लेकिन वह केवल नाममात्र का ही नवाब था। बंगाल का वास्तविक शासन ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथ में चला गया।

सैनिक दृष्टि से प्लासी की लड़ाई का कोई विशेष महत्व नहीं है। यह षड्यंत्र और कुचक्र द्वारा जीती गई थी। परंतु राजनीतिक और आर्थिक दृष्टिकोण से यह लड़ाई बहुत ही महत्वपूर्ण है। इससे अंग्रेजी व्यापारी कंपनी बंगाल में धीरे-धीरे जमींदार से जागीरदार और जागीरदार से दीवान बन गई। सारी शक्ति उसीके हाथ में आ गई और नवाब उसके इशारों पर नाचने लगा।

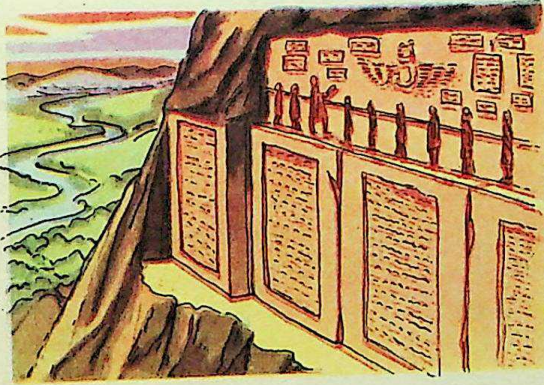
बंगाल भारत के सबसे अधिक सम्पन्न प्रांतों में से था। उसपर अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थापित हो जाने से उनके साधनों में बड़ी वृद्धि हुई और उन्हें अपने प्रतिद्वंद्वियों—फ्रांसीसियों—को परास्त करने में सुविधा हो गई। बंगाल उस समय की दो बढ़ती हुई शक्तियाँ—मराठों और सिखों—से बहुत दूर था और जर्जरित मुगल साम्राज्य के निकट था। इसके अलावा, बंगाल समुद्र-तट पर स्थित है। इसलिए अंग्रेज समुद्री मार्ग से अपनी सेनाएं ला सकते थे। इस प्रकार बंगाल में अपनी प्रभुत्व-शक्ति स्थापित कर लेने से अंग्रेजों के लिए उत्तरी भारत की विजय का मार्ग भी खुल गया। (देखें : क्लाइव, रॉबर्ट)

फारस (PERSIA) : 546 ई० पू० में सायरस द्वितीय फारस का बादशाह था। उसने तय किया कि उसे लीडिया के बादशाह क्रोएसस पर हमला करना चाहिए। लीडिया एशिया माइनर में बड़ा बलवान और सशक्त राष्ट्र था। बादशाह क्रोएसस अपने स्वर्णकोश के लिए प्रसिद्ध था। क्रोएसस पर जब सायरस ने हमला किया तो लड़ाई में पहले कोई पक्ष नहीं जीता।

जाड़ा आ रहा था। क्रोएसस ने सोचा, सायरस अपनी

फौजें वापस ले जाएंगी और अच्छे मौसम की प्रतीक्षा करेगा। वह स्वयं अपनी सेना लेकर राजधानी वापस आ गया। लेकिन सायरस ने लद्दू ऊंटों को फौजों के आगे कर दिया और आगे बढ़ता आया। क्रोएसस के घोड़ों ने जब ऊंट जैसे अजीब जानवर देखे, तो वे जहां थे वहीं अड़ गए। शायद ऊंटों से आनेवाली बदबू से वे डर गए थे। सायरस ने बड़ी आसानी से लड़ाई जीत ली। उसने क्रोएसस को पकड़ लिया और सारा लीडिया जीत लिया। उसे क्रोएसस के खजाने से जो सोना मिला वह उसके बहुत काम आया। सायरस ने पश्चिम एशिया के बहुत-से देशों को जीता और बहुत बड़ा साम्राज्य स्थापित किया। इतना बड़ा साम्राज्य इतिहास में पहले कभी नहीं स्थापित हुआ था।

फारस का इतिहास सायरस से चार-पांच सौ बरस पहले से शुरू होता है। उस समय कई जातियां पूर्वी यूरोप से एशिया में ईरान के पठार की ओर आईं। इनके योद्धा



दारा और आठ पराजित राजाओं के संबंध में शिलालेख

घुड़सवार होते थे। ये घुड़सवार सारे पठारी प्रान्त में फैल गए। कुछ पूर्व में भारत की ओर चले गए। कुछ पश्चिम में असीरिया और बेबीलोनिया की सीमा पर जाकर बस गए। बेबीलोनिया के पास बसे लोग मेद कहलाने लगे। कुछ 'पारसा' क्षेत्र में रहने लगे और फारसी कहलाने लगे। अधिकांश आरंभिक साम्राज्य धीरे-धीरे बढ़े। लेकिन फारस का साम्राज्य सायरस द्वितीय के जीवन-काल में ही बहुत बड़ा साम्राज्य बन गया।

सायरस नये ढंग का विजेता था। वह जिनको जीतता, उनपर अपने देश की भाषा, संस्कृति और सभ्यता को लादता नहीं था। वह अपनी प्रजा को उसके धर्म और प्रथाओं को मानते रहने की पूरी छूट देता था। अधिकांश पराजित राजाओं के साथ उसने अच्छा व्यवहार किया।

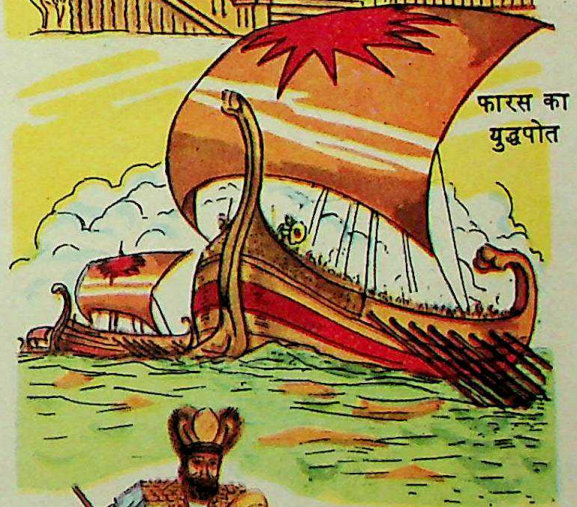
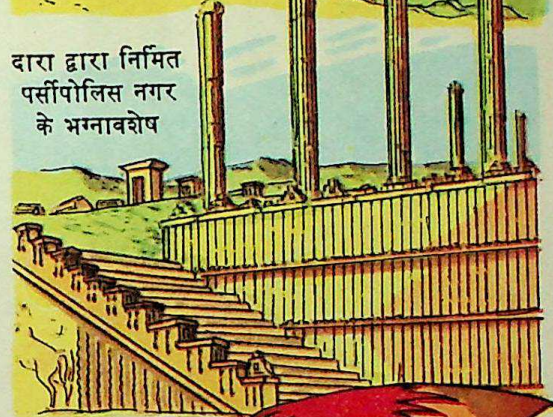
सायरस का साम्राज्य बड़ा था, लेकिन वह मिस्र को भी जीतना चाहता था। किन्तु ऐसा करने के पूर्व ही वह एक लड़ाई में मारा गया।

केम्बिसीज सायरस का पुत्र था। उसने अपने पिता की इच्छा पूरी की। लेकिन जब वह मिस्र में था, तो उसके



युद्धक्षेत्र में
फारसी घुड़सवार

दारा द्वारा निर्मित
पर्सिपोलिस नगर
के भग्नावशेष



फारस का
युद्धपोत

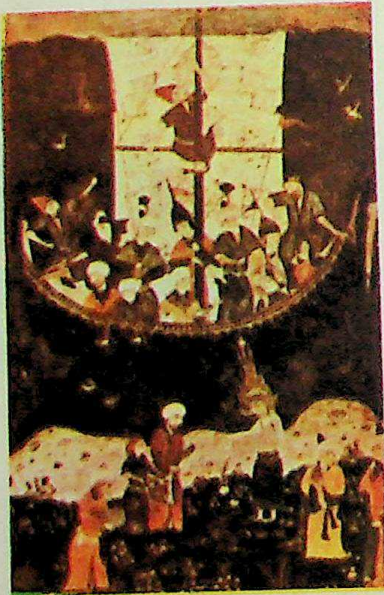


मराथॉन की लड़ाई में
फारस की पराजय

एशियाई साम्राज्य में विद्रोह भड़क उठे। विद्रोह के दमन के पहले ही वह मर गया। उसके बाद दारा (दारियस) नामक एक सरदार बादशाह बना।

दारा ने 19 लड़ाइयों में नौ राजाओं को परास्त कर समस्त विद्रोह दबा दिए। इसके बाद उसने साम्राज्य को सत्रपों (प्रान्तों) में बांट दिया और हर एक का एक फारसी गवर्नर नियुक्त किया। उसने सड़कें बनवाई, सूसा और पर्सीपोलिस में बड़े-बड़े राजमहल बनवाए।

दारा का साम्राज्य सायरस से बड़ा था। लेकिन फिर भी उसने उसका और विस्तार किया। वह फौजें लेकर यूरोप पर चढ़ गया और उसने यूनान के उत्तर का बहुत-सा भाग



सोलहवीं शताब्दी का एक फारसी सूक्ष्म चित्र

जीत लिया। फिर उसने यूनान पर भी कब्जा करने की ठानी। मराथॉन की लड़ाई में यूनान की सेना ने उसकी सेना को बुरी तरह हरा दिया। इस बीच मिस्र में विद्रोह हो गया। इसलिए दारा यूनान पर कब्जा करने की इच्छा का परित्याग कर वापस लौट आया। इसके बाद वह जल्दी ही मर गया।

दारा ने पर्वत पर अपना बहुत बड़ा चित्र खुदवाया था। इस चित्र के साथ ही उन दस राजाओं के भी चित्र थे जिनको उसने हराया था। उसने चट्टान पर अपनी विजय की कहानियाँ भी खुदवाई थीं। ये तीन भाषाओं में हैं : पुरानी फारसी, बेबीलोनियाई और इलेमाइट।

दारा के मरने के बाद उसका पुत्र जेर्कसीज गद्दी पर बैठा। उसे युद्ध पसन्द नहीं थे। उसे महल और स्मारक बनवाने का बहुत अधिक शौक था। लेकिन वह यूनान को जीतकर अपने पिता की पराजय का बदला लेना चाहता था। किंतु यूनानियों से वह भी हार गया। उसने समुद्र-तट पर अपने सिंहासन पर बैठे-बैठे देखा कि यूना-

नियों के जहाजों ने उसके बेड़े को समुद्री लड़ाई में बिलकुल नष्ट कर दिया। वह समुद्री लड़ाई सलामिस की लड़ाई कहलाती है। जेर्कसीज अपनी पराजय से बड़ा खिन्न हुआ। अपनी राजधानी सूसा और पर्सीपोलिस से वह फिर कभी बाहर नहीं गया।

जेर्कसीज के बाद साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा। 331 ई० पू० में जब सिकन्दर ने फारस पर आक्रमण किया तो फारस की फौजें बड़ी सरलता से हरा दी गईं और फारस मेसीडोनिया के साम्राज्य का अंग बना लिया गया।

फारस के सम्राटों ने पराजित राज्यों के निवासियों से बहुत-सी बातें सीखीं। उन्होंने बेबीलोनिया के लोगों से कीलक लिपि सीखी। आर्मीनियाईयों से पैपाइरस पर स्याही से लिखना सीखा। मिस्रियों से उन्होंने पत्थरों के स्तंभ और दरवाजे बनाने सीखे। उन्होंने पूर्व और पश्चिम की कलाओं की मदद से अपनी कला का विकास किया और चित्र बनाए। लीडियाईयों से उन्होंने सोने-चांदी के सिक्के बनाने सीखे। इससे उन्हें व्यापार में बड़ी सहायता मिली। फीनीशियाईयों से उन्होंने नौकाएं बनाना सीखा। फारस के लोग वस्त्रों और विलास की अनेक सामग्रियों का व्यापार करते थे।

फारस के शासकों ने सिंचाई के लिए नहरें खोदीं, दलदलों को सुखाया, और कृषि के तरीके सुधारे। वे अन्य देशों से अनाज और फलों के पौधे लाए और उन्हें लगाया।

फारसवासी आज अपना शासन आप कर रहे हैं। इस देश का आधुनिक नाम ईरान है।

फ्राहियान (FA-HIAN) : बौद्ध धर्म का चीन तथा अन्य एशियाई देशों में प्रसार हो जाने के बाद अनेक बौद्ध भिक्षु भी भारत की यात्रा पर आने लगे। इनमें चीनी यात्री फ्राहियान बहुत ही प्रसिद्ध है।

फ्राहियान चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के शासन-काल में भारत आया था। फ्राहियान का अर्थ है 'धर्मचार्य'। बड़े होने पर वह धर्माचार्य बना, परंतु बचपन में उसका नाम 'कुड' था। उसके पिता की मृत्यु तभी हो गई थी जब वह दस वर्ष का था। शीघ्र ही माता का भी देहान्त हो गया। इन घटनाओं के कारण घर बसाने में उसकी रुचि नहीं रही और उसने बौद्ध भिक्षु का बाना पहन लिया।

अब उसने बौद्ध धर्मग्रंथों का अध्ययन आरंभ किया। वे उसे अपूर्ण प्रतीत हुए। अतः प्रामाणिक ग्रंथ पढ़ने की इच्छा से उसने भारत-यात्रा का निश्चय किया। इस यात्रा के लिए उसने चार साथी और तैयार किए। 400 ई० में वह उनको साथ लेकर भारत के लिए रवाना हुआ। यह यात्रा बड़ी कठिन थी। अनेक पर्वतों को पार करके ही भारत पहुंचा जा सकता था। परंतु फ्राहियान ने हार नहीं मानी। पांच वर्ष बाद उसने भारत में प्रवेश किया।

पहले वह गांधार (कंधार) पहुंचा। फिर तक्षशिला गया और वहां से पेशावर। अब उसके साथ केवल एक साथी रह गया था, शेष चीन वापस लौट गए थे। पेशावर से वह मथुरा, कन्नौज, श्रावस्ती, कुशीनगर, वैशाली, पाटलिपुत्र, नालन्दा, राजगृह, काशी, सारनाथ आदि होता हुआ ताम्रलिप्ति पहुंचा। यहां वह दो वर्ष ठहरकर फिर लंका गया। लंका से जावा होते हुए वह अपने देश चीन वापस लौट गया।

फ्राहियान ने छः वर्ष भारत में बिताए। चीन लौटकर उसने अपनी यात्रा का वृत्तांत एक मित्र को सुनाया। मित्र ने उसे लिख डाला।

इस यात्रा-वृत्तांत से भारत की तत्कालीन स्थिति पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। फ्राहियान बताता है कि उस समय प्रजा सुखी और संपन्न थी। दंड-विधान कठोर न था। मृत्युदंड बिलकुल नहीं दिया जाता था। लोगों को चोरी-चकारी का भय नहीं था। वे सदाचारी तथा विद्या-प्रेमी थे। सज्जन व्यक्ति मांस, मदिरा, लहसुन, प्याज से परहेज करते थे। इन चीजों की दुकानें नगर के बाहर होती थीं। बौद्ध धर्म और पौराणिक धर्म, दोनों देश में साथ-साथ चल रहे थे।

फीनीशियाई (PHOENICIANS) : लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व, रेगिस्तानों की एक घुमक्कड़ जाति भूमध्य सागर के पूर्वी किनारे पर आकर बस गई। वह जाति सागर-तट की लगभग दो सौ मील लम्बी पट्टी पर बसी। उनका देश संकरा था। उसमें सबके लिए पर्याप्त अन्न पैदा नहीं किया जा सकता था। इसलिए मछलियां पकड़ने को समुद्र में जाना पड़ता था। इसके लिए नावों की जरूरत पड़ी। शुरू-शुरू में उनकी नावें छोटी थीं। लेकिन बाद में

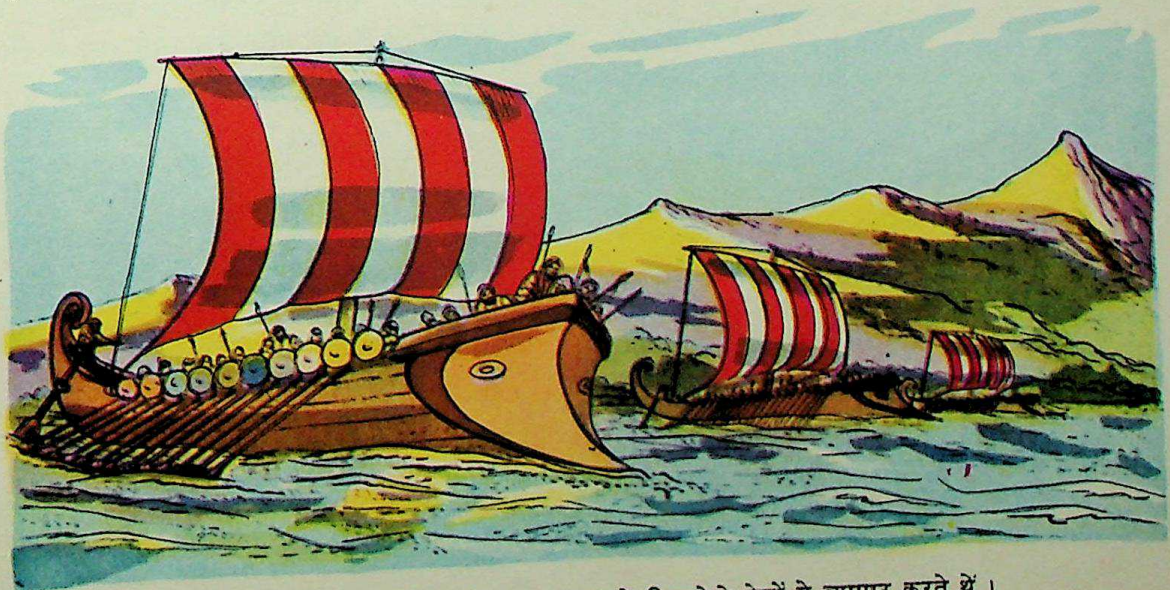
वे बड़ी-बड़ी नावें बनाने लगे। जल्दी ही वे समुद्र पर भी वैसे ही घूमने लगे जैसे रेगिस्तानों में घूमते थे। उन्होंने अन्य देशों के साथ व्यापार करना शुरू कर दिया। उस जाति का नाम फीनीशियाई जाति पड़ा।

फीनीशियाई लोग जिन चीजों का व्यापार करते थे उनमें लाल रंग प्रसिद्ध है। यह रंग घोंघों से बनता था और बड़ा कीमती माना जाता था। धीरे-धीरे फीनीशियाई बहुत अच्छे नाविक बन गए। वे लगभग बाईस-पचीस मीटर लम्बे जलपोत बनाने लगे, जो डांडों और पालों दोनों से चलते थे। वे आसपास के समुद्र में ही नहीं, बल्कि अटलांटिक महासागर से होकर ब्रिटेन तक पहुंचते थे और वहां से टिन लाते थे। अपने देश से बहुत दूर अफ्रीका के उत्तरी तट पर उन्होंने कार्थेज नाम का नगर बसाया। कार्थेज कुछ दिनों में रोम का प्रतिद्वन्दी बन गया।

फीनीशियाईयों को ज्यों-ज्यों समुद्र-यात्रा का अनुभव होता गया, त्यों-त्यों वे अच्छे व्यापारी भी बनते गए। वे जवाहरात और सोने-चांदी की बनी चीजें बेचते थे। वे सुगंधित तेलों और मसालों का भी व्यापार करते थे।

फीनीशिया के किनारे तीन बड़े बन्दरगाह खुल गए। ये थे : टायर, साइडन और बिबलोस। टायर अपने लाल रंग के निर्यात के लिए प्रसिद्ध था। यह नगर मुख्य तट से कुछ दूर द्वीपों पर था। पीने का पानी लाने के लिए छोटी नालियों वाली जल-प्रणाली (एक्वेडक्ट) संसार में सबसे पहले यहीं स्थापित हुई। साइडन कांच की सामग्री के लिए प्रसिद्ध था। बिबलोस पैपाइरस का निर्यात करता था। कागज के आविष्कार से पहले पैपाइरस का इस्तेमाल यूरोप में ठीक उसी तरह होता था जिस तरह हमारे यहां भोजपत्र का होता था।

व्यापारिक यात्राओं के दौरान फीनीशियाईयों द्वारा



5000 वर्ष पहले फीनीशियाई भूमध्य सागर के किनारे के देशों से व्यापार करते थे।

यूनान में लिपि का प्रचार हुआ। इसीलिए कभी-कभी फीनीशियाईयों को सभ्यता का वाहक कहा जाता है।

फीनीशियाई अपने शक्तिशाली पड़ोसियों से अपनी रक्षा नहीं कर सके। एक-एक करके वे दूसरों की दासता में बंधते गए। दो हजार वर्ष पूर्व वे रोमन साम्राज्य के अधीन हो गए और फिर उनकी जाति ही लुप्त हो गई।
(देखें : कार्थेज)

फ्रांस की राज्यक्रान्ति (FRENCH REVOLUTION) :

सन् 1774 में जब लुई सोलहवां गद्दी पर बैठा तो सारा फ्रांस असन्तोष से उफन रहा था। मध्य और निम्न वर्गों के लोग करों के असह्य भार से दबे हुए थे। सामन्त और पादरी वर्ग के लोग करों से लगभग मुक्त थे। वाल्टेयर और रूसो जैसे लेखकों और दार्शनिकों को लगता था कि फ्रांस की सारी राजनीतिक व्यवस्था खोखली हो गई है। हर व्यक्ति मुधारों की आवश्यकता अनुभव करता था। लुई ने खर्च घटाने की कोशिश की। लेकिन राजकोश का अधिकांश भाग उसके बड़े-बड़े महलों की साज-संभाल में ही खर्च हो जाता था।

फ्रांस की संसद को उन दिनों 'एस्टेट्स जनरल' कहते थे। इसकी बैठक सन् 1614 से नहीं हुई थी। लुई ने संसद की बैठक बुलाई। संसद के तीसरे सदन ने, जिसमें साधारण जनता के प्रतिनिधि थे, यह तय किया कि तीनों सदनों की संयुक्त बैठक हो। लेकिन जब ऊपर के दोनों सदनों के सदस्यों से तीसरे सदन की सहमति न हो सकी, तो उसने अपने-आप यह प्रस्ताव पास किया कि फ्रांस का संविधान बनाया जाए।

लेकिन अब तक लोगों का धीरज समाप्त हो चुका था। 14 जुलाई, 1789 को प्रजा ने बेस्टील नामक कारागार पर हल्ला बोल दिया। यह कारागार बड़ा बदनाम था, क्योंकि इसमें बंदियों पर बड़े अत्याचार होते थे। इस

घटना से घबराकर फ्रांस की राष्ट्रीय संसद ने सामन्ती विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया। परंतु अब बहुत देर हो चुकी थी। राजा और रानी ने भाग निकलने का प्रयत्न किया, लेकिन उन्हें गिरफ्तार करके पेरिस ले आया गया।

आस्ट्रिया और जर्मनी (प्रशा) की सहायता से फ्रांसीसी शरणार्थियों की एक फौज ने पेरिस पर चढ़ाई कर दी। पेरिस में जनता ने मांग की कि क्योंकि राजा और रानी आक्रमणकारियों से मिले हैं, इसलिए इनको मृत्यु-दण्ड मिलना चाहिए। इस प्रकार राजवंश के अन्त के साथ फ्रांस में राजतंत्र समाप्त हो गया और फ्रांस गणतंत्र घोषित हो गया।

इसके साथ ही मारकाट मच गई। उच्च वर्ग के बहुत-से व्यक्तियों को सपरिवार फांसी दे दी गई। आक्रमणकारियों की फौजों को गणतंत्र की सेनाओं ने मार भगाया और हॉलैंड तथा बेल्जियम पर हमला कर दिया। विजय के उत्साह में सारी फ्रांसीसी जनता में अद्भुत एकता स्थापित हो गई थी।

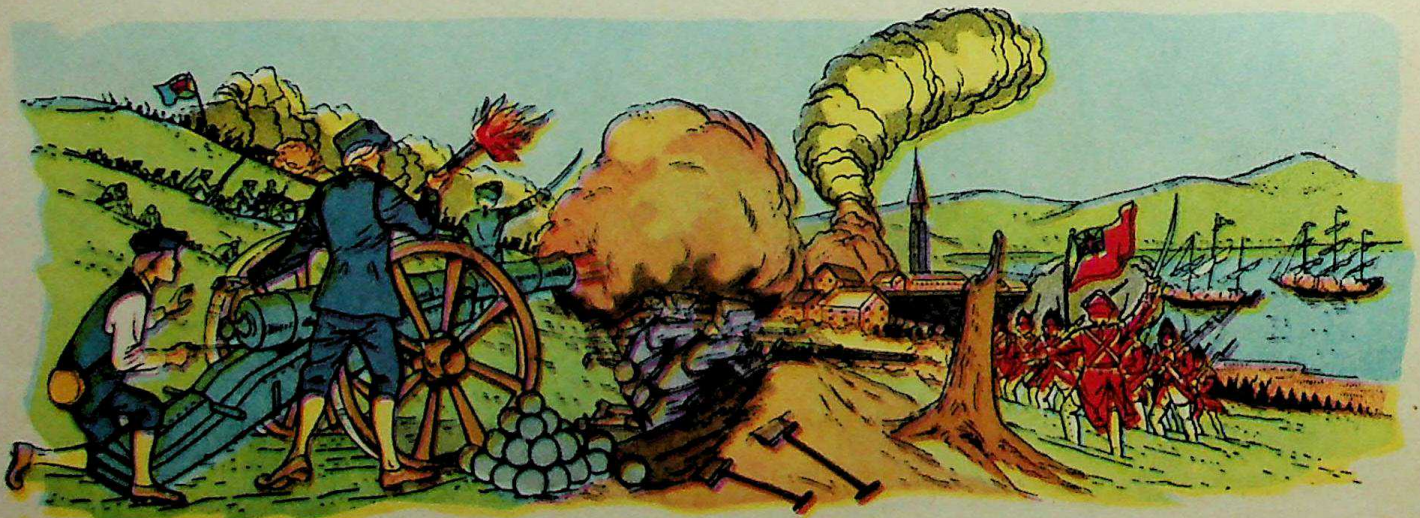
बंकर पहाड़ी की लड़ाई (BATTLE OF BUNKER HILL) :

यह लड़ाई संयुक्त राज्य अमरीका के आधुनिक बोस्टन नगर के पास बंकर पहाड़ी पर हुई थी। यह इसलिए प्रसिद्ध है कि यह अमरीका की ब्रिटेन के विरुद्ध पहली क्रांति थी।

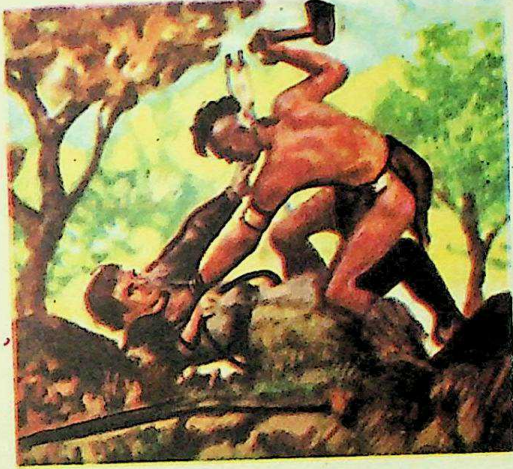
अमरीका की जनता ब्रिटेन की औपनिवेशिक नीति से असन्तुष्ट थी। अमरीका के लोगों को अन्य बातों के अलावा, चाय पर बहुत कर देना पड़ता था। 1773 में एक दिन कुछ गोरे अमरीकी, आदिवासियों का भेस बनाकर, बोस्टन समुद्र-तट पर रुके जहाजों पर चढ़ गए और उन्होंने चाय से भरे हुए जहाजों को लूट लिया। इस विद्रोह को उन्होंने बाद में 'चाय पार्टी' का नाम दिया।

इस घटना के दो साल बाद, सन् 1775 में दोनों देशों

बंकर पहाड़ी पर अमरीकी क्रांतिकारी युद्ध की पहली बड़ी लड़ाई



में तनाव बढ़ गया। विद्रोहियों को शान्त करने के लिए सेनाएं भेजी गईं। बंकर पहाड़ी पर हुई इस लड़ाई में अमरीका का नेतृत्व इजराइल पुटनाम ने किया। बड़ी कठिनाई से अंग्रेजी सेना इस लड़ाई में विजय पा सकी।



डेनियल कई बार रेड इंडियनों के हाथों में पड़ गया।

बून, डेनियल (DANIEL BOONE 1734-1820) : अमरीका के जंगली प्रदेशों में जाकर बसने और उन्हें समुन्नत करने में जिन लोगों ने पहलकदमी की, उनमें बून डेनियल का नाम सबसे मशहूर है।

डेनियल का जन्म पेंसिलवेनिया में हुआ था जो उस समय खुद एक जंगल था। जवान होने पर डेनियल ने सेना में भर्ती होकर अंग्रेजों के साथ रेड इंडियनों के खिलाफ लड़ाई में भाग लिया। इसी लड़ाई में उसने पहाड़ों के पश्चिम के सुन्दर प्रदेश के बारे में सुना और वह अपने कुछ साथियों के साथ वहां जा पहुंचा। बाद में उसने तीस आदिमियों की सहायता से 300 मील लम्बा सुप्रसिद्ध वन-शेर का शिकार करते राजा की एक बेबीलोनियाई शिला-नक्काशी।

मार्ग बनाया जो कैटकी नदी तक जाता था। वहां उसने बून्सबॉरो नगर की नींव डाली। उसके प्रोत्साहन पर 1775 में बहुत-से दूसरे परिवार भी वहां जा बसे। वह प्रदेश अब कैटकी कहलाता है। इसी तरह बाद में वह अपने परिवार को मिसौरी ले गया।

जोखिम और जीवट के अपने जीवन में वह कई बार रेड इंडियनों के हाथों में पड़ गया, पर हर बार बचकर निकल आया। बून डेनियल की कब्र फ्रेंकफर्ट, कैटकी, में है जहां उसका एक स्मारक भी है।

बेबीलोनिया (BABYLONIA) : पश्चिमी एशिया में दजला और फ़रात नदियों के बीच का जो उपजाऊ दोआब है, मानव-इतिहास में उसका बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। पुराने ज़माने में इसे बेबीलोनिया या बाबुल कहते थे। बाद



इश्तर दरवाजे के सजावटी टाइल



बेबीलोनिया

बेबीलोनिया के तल्लेदार बाग। छतों पर बने इन बागों का बाइबिल में भी उल्लेख है। इन्हें प्राचीन संसार के सात आश्चर्यों में माना जाता था।



में इसी प्रदेश को मेसोपोटामिया कहा जाने लगा। 'मेसोपोटामिया' शब्द यूनानी भाषा से निकला है—इसका अर्थ है, 'नदियों के बीच की ज़मीन'। इस प्रदेश का अधिकतर भाग आजकल के इराक़ में है।

बेबीलोनिया की गणना उन प्रदेशों में की जाती है जिन्हें सभ्यता के जन्मस्थान कहा जाता है। संसार में सभ्यता के जन्मस्थानों में सबसे पहले भारत, मिस्र, बेबी-



असीरियाई सम्राट तिग्लथ-पिलेसर तृतीय

बेबीलोन में नेबुकद्नेज़ार का राजमहल

लोनिया, चीन, यूनान और रोम का ही नाम लिया जाता है।

कोई 5,000 वर्ष पहले की बात है। मिस्र में जिस समय पिरामिड बन रहे थे, तब इस दोआब में सुमेरियाई लोगों का निवास था। सुमेरियाई लोग भी इमारतें बनाने में खूब आगे बढ़े हुए थे। उनके नगरों में बढ़िया सड़कें थीं और मोरियों व नालियों की व्यवस्था भी थी। मगर उनके यहां पत्थर का अभाव था। इसलिए इमारतों के निर्माण में वे लोग ईंटों का उपयोग करते थे। ईंटें दोनों ही तरह की होती थीं—घूप में सुखाई हुई कच्ची ईंटें और आग में तपी पक्की ईंटें।

खेती में वे लोग निपुण थे। अपने खेतों को वे नदियों से सींचते थे। वे नहरें बनाना जानते थे। जौ और गेहूं उनकी प्रमुख फसलें थीं। खेतों में जुताई बैल करते थे।

सुमेरियाई लोग नदियों और नहरों में नावें चलाते थे। सड़कों पर आवागमन और सामान की ढुलाई के लिए वे गाड़ियों और रथों का उपयोग करते थे और उनमें गधे जोतते थे। शायद घोड़ों का भी वे उपयोग करते थे।

वे लोग हजामत बनाने के लिए उस्तरे काम में लाते थे और शृंगार-प्रसाधन—तेल-फुलेल, इत्र, सुर्खी आदि के भी शौकीन थे। सोने-चांदी के जेवरों का भी उन्हें शौक था। आजकल के बच्चों की तरह उनके बच्चे भी खिलौनों से खेलते थे। सीटियां, भुनभुने, जानवर, गाड़ियां, आदि कई तरह के खिलौने वहां प्रचलित थे।

सुमेरियाई लोगों के ज्यादातर औजार तांबे के बने थे। मगर उनके अधिकतर बर्तन मिट्टी के ही थे। बड़ी बात यह है कि वे लोग लिखना भी जानते थे। लिखने के लिए वे मिट्टी की पट्टियां बनाते थे और उनपर नुकीली लकड़ी से लिखते थे। इस तरह की लिपि को कीलाक्षर-लिपि (Cuneiform) कहते हैं। उन्हें गिनना भी आता था। मगर

वे लोग हमारी तरह सेकंडों में नहीं गिनते थे। उनकी गिनती साठों में होती थी। संभवतः, एक घंटे के 60 मिनट और एक मिनट के 60 सेकंड उनके गिनने के ढंग से ही निकले हैं।

कोई 3,700 वर्ष पहले एक हमलावर जाति का सरदार इस इलाके का राजा बन बैठा। उसका नाम था हम्मूराबी। हम्मूराबी बड़ा बुद्धिमान राजा था। उसने देश के कानूनों को एकसाथ लिखवाया। ये कानून हम्मूराबी की संहिता कहलाते हैं। इस संहिता में 282 कानून थे।

हम्मूराबी ने बेबीलोन नगर को अपनी राजधानी बनाया। बेबीलोन के रहनेवाले होने के नाते वे लोग बेबीलोनियाई कहलाए। बेबीलोनियाई बड़े कुशल व्यापारी थे। दूर-दूर उनके तिज्जारती कारवां जाया करते थे। वाणिज्य में वे लोग चांदी की डलियों का प्रयोग करते थे। उनके बीजक आदि कीलाक्षरों में ही लिखे जाते थे और उनके लिए वे मिट्टी के ही बने लिफाफे या खोल भी

प्राचीन बेबीलोन के बाजार का एक दृश्य



काम में लाते थे। हर व्यापारी की अपनी निजी मोहर होती थी। अपने लिफाफों और कीलाक्षरी पट्टियों पर वे लोग इनका उपयोग करते थे।

सुमेरियाई लोगों की तरह, बेबीलोनियाई भी ईंटों की ही इमारतें बनाया करते थे, मगर उनमें मेहराबें होती थीं।

हम्मूराबी के राज्यकाल के बहुत पहले ही दज्जला नदी के उत्तर में असुर नाम का एक छोटा-सा राज्य स्थापित हो चुका था। हम्मूराबी की मृत्यु के कई सौ वर्ष बाद असुरवासियों या असीरियाई लोगों ने बेबीलोनिया और उसके आसपास के काफी बड़े इलाके को जीत लिया और एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की।

असीरियाई लोग बड़े लड़ाकू थे। उनकी लोहे के हथियारों से लैस बड़ी-बड़ी फौजें थीं। लड़ाई में वे घोड़ों वाले रथों का इस्तेमाल करते थे। उनकी फौजों में दीवार-तोड़ दस्ते भी थे।

असीरियाई लोग भी बड़े कुशल भवन-निर्माता थे। उनकी राजधानी बेबीलोन नहीं थी। उन्होंने उत्तर में निनेवेह में अपनी राजधानी बनाई। निनेवेह की फसील दज्जला नदी के किनारे-किनारे कोई 5 किलोमीटर तक चली गई थी। निनेवेह नगर में कितनी ही भव्य और सुंदर इमारतें थीं। इनमें सजावट के लिए मूर्तियों का उपयोग किया जाता था, जिनमें से कुछ आज भी देखी जा सकती हैं।

संसार का सबसे पहला 'पुस्तकालय' भी शायद एक असीरियाई राजा ने ही बनाया था। इस पुस्तकालय में 20,000 से अधिक मिट्टी की पट्टियां मिली हैं।

मगर अपनी जबर्दस्त सेना के बावजूद असीरियाई लोग अपना साम्राज्य ज्यादा दिन कायम न रख सके। बेबीलोनिया को काल्दियाई लोगों (Chaldeans) ने जीत लिया। वे लोग भी एक रेगिस्तानी जाति के ही थे।

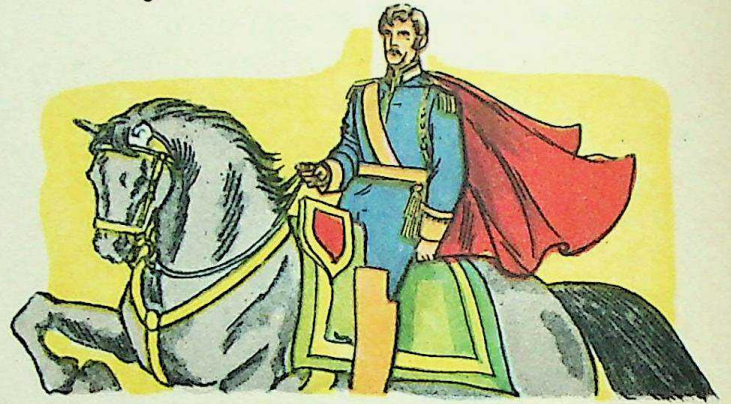
काल्दियाई राजाओं में नेबुकदनेज़ार, द्वितीय का नाम प्रसिद्ध है। उसने बेबीलोन नगर को फिर अपनी राजधानी बनाया। उसने शहर के चारों ओर ऊंची-ऊंची दीवारों पर कितने ही बाग बनवाए। इन दीवारों और बागों को प्राचीन संसार के सात आश्चर्यों में माना जाता है।

काल्दियाई लोगों के धार्मिक जीवन में सूर्य, चंद्रमा तथा तारों का बड़ा महत्त्व था। उनके पुजारियों ने इस कारण आकाशीय पिंडों के बारे में काफी जानकारी प्राप्त की। सप्ताह के सात दिन और उनके नाम हमने काल्दियाई लोगों से ही लिए हैं।

नेबुकदनेज़ार के जमाने में ही पूर्व में एक नये और शक्तिशाली साम्राज्य—फारस का उदय हो रहा था। कुछ ही समय बाद फारस ने इस प्रदेश को दबोच लिया और बेबीलोनिया का शानदार साम्राज्य फारसी साम्राज्य का एक अंग बनकर रह गया। इसके बाद सदियों तक यह प्रदेश किसी न किसी साम्राज्य का हिस्सा ही बना रहा।

आधुनिक इराक प्रथम विश्वयुद्ध की उपज है।

बोलिवर, साइमन (SIMON BOLIVAR 1783-1830) : दक्षिणी अमरीका के एक महान नेता और वीर पुरुष साइमन बोलिवर का जन्म वेनेजुएला में हुआ था। उस समय वेनेजुएला पर स्पेन का शासन था। बोलिवर ने अपने



दक्षिणी अमरीका के स्वतन्त्रता-सेनानी साइमन बोलिवर

देश की स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन आरंभ किया। इसके लिए उन्होंने यूरोप की यात्रा भी की। उन्होंने दक्षिणी अमरीका के विद्रोही नेताओं को संगठित किया। अन्त में उनके नेतृत्व में वेनेजुएला, कोलम्बिया और इक्वेडोर स्वतन्त्र हो गए। पहले ये तीनों एक ही राज्य के अंग थे। बोलिवर को उस राज्य का राष्ट्रपति बनाया गया। फिर बोलिवर ने पेरू देश को स्वतन्त्र कराने में भी सहायता दी। पेरू के एक भाग का नाम बोलिवर के सम्मान में बोलीविया रखा गया।

बोस, सुभाषचंद्र (SUBHAS CHANDRA BOSE 1897-1945) : नेताजी सुभाषचंद्र बोस भारत के एक महान राष्ट्रीय नेता थे। आजादी की आग उनके सीने में सदा धधकती रहती थी।

सुभाष बोस का जन्म कटक में हुआ था। उनके पिता वैसे तो बंगाल के रहनेवाले थे, पर वकालत के लिए कटक में ही बस गए थे। सुभाष जब स्कूल में पढ़ रहे थे तभी एक बार नगर में भयंकर हैजा फैला। उस समय उन्होंने अपने साथियों को संगठित कर गरीब बस्तियों में लोगों की बड़ी सेवा की।

स्कूल की पढ़ाई पूरी करके वे कलकत्ते के प्रेजीडेंसी कालेज में पढ़ने लगे। वहां उन दिनों एक अंग्रेज प्रोफेसर बात-बात में हिन्दुस्तानियों का अपमान करता रहता था। सुभाष ने एक दिन ऐसे ही एक मौके पर उसके गाल पर एक चांटा जड़ दिया। इसपर उन्हें कालेज से निकाल दिया गया।

बी० ए० पास कर लेने पर उन्हें आई० सी० एस० के लिए विलायत भेजा गया। सुभाष बोस ने वह परीक्षा

सम्मानपूर्वक पास कर ली, पर सरकारी नौकरी करने से इन्कार कर दिया। सुभाष बोस जब इंग्लैंड से वापस आए तो देश में 1921 का असहयोग आन्दोलन चल रहा था। देशबंधु चित्तरंजनदास के साथ उन्होंने उसमें इतना काम किया कि उनका नाम बंगाल के बच्चे-बच्चे की जवान पर हो गया। वे कलकत्ता कार्पोरेशन के पहले एक्जीक्यूटिव आफिसर और फिर मेयर चुने गए।

1930 और 1931 के स्वाधीनता-दिवसों (26 जनवरी) पर उनके नेतृत्व में कलकत्ता में विराट जुलूस निकले, जिनपर पुलिस ने बड़ी बेरहमी से लाठियां बरसाईं। सुभाष बोस दोनों बार बुरी तरह घायल हुए और जेल में बंद कर दिए गए। उनका जीवन अब अधिकतर जेल में ही बीतने लगा। उनका स्वास्थ्य बहुत गिर गया, एक फफड़ा खराब हो गया। आखिर सरकार को उन्हें इलाज



नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

के लिए यूरोप भेजना पड़ा। यूरोप में उन्होंने कई वर्ष बिताए। वे मुसोलिनी, शाह अमानुल्ला और डी वेलेरा आदि से मिले और भारत की वास्तविक स्थिति उनके आगे रखी।

1938 में वे हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गए। यूरोप में उस समय द्वितीय विश्वयुद्ध के बादल घिर रहे थे। सुभाष बोस की राय थी कि आजादी के लिए अंतिम संघर्ष छेड़ने का समय आ गया है। पर गांधीजी अभी किसी निश्चय पर नहीं पहुंचे थे। अतः दोनों में मतभेद बढ़ता गया। आखिर सुभाष बोस ने फार्वर्ड ब्लाक नाम से एक अलग संगठन बनाया और वे देश-भर में घूमकर लोगों को संघर्ष के लिए तैयार करने लगे। सरकार ने इसपर उन्हें उनके घर में ही नज़रबंद कर दिया।

लेकिन सुभाष एक दिन चुपके से निकल गए, और

अफगानिस्तान होते हुए पहले जर्मनी और फिर तोकियो पहुंच गए। वहां उन्होंने आजाद हिन्द सेना की स्थापना की। विदेशों में बसे भारतीयों को उसमें संगठित किया। ब्रिटिश सरकार ने जब जापानी सेना से हारकर सिंगापुर और बर्मा खाली कर दिए तो हजारों भारतीय सैनिक आजाद हिन्द सेना में शामिल हो गए। अब सुभाष बोस ने अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। असम की सीमा पर आजाद हिन्द सेना ने अंग्रेजों के कई बार दांत खट्टे किए, अनेक स्थान उनसे छीन लिए। किन्तु हिरोशिमा पर एटम बम गिरने से द्वितीय विश्वयुद्ध का पासा ही पलट गया।

कहा जाता है कि 18 अगस्त, 1945 को सुभाष बोस सिंगापुर से तोकियो जा रहे थे कि उनका विमान लाइहोफ हवाई अड्डे के पास गिर पड़ा। उनका सारा शरीर आग से झुलस गया और कुछ ही देर में उनकी मृत्यु हो गई। किन्तु सुभाष बोस प्रत्येक भारतीय के हृदय में अभी भी जीवित हैं और सदा जीवित रहेंगे।

भगतसिंह, सरदार (SARDAR BHAGAT SINGH 1907-1931) : हिन्दुस्तान की आजादी के लिए जिन युवकों ने अपने प्राण हंसते-हंसते न्योछावर कर दिए उनमें सरदार भगतसिंह का स्थान सबसे ऊंचा है। उनका जन्म पंजाब के एक ऐसे परिवार में हुआ था जो अपने देशप्रेम के लिए विख्यात था।

भगतसिंह अपनी प्राइमरी शिक्षा पूरी करने के बाद लाहौर आकर डी० ए० वी० स्कूल में पढ़ने लगे। 1921 में जब असहयोग आन्दोलन चला तो वे लाला लाजपतराय जी के नेशनल कालेज में दाखिल हो गए। वहां उनका परिचय भगवतीचरण और सुखदेव जैसे नवयुवकों से हुआ, जो आगे चलकर उन्हींकी तरह देश के लिए बलिदान हुए। भगतसिंह की पढ़ाई अभी चल ही रही थी कि मां-बाप उनके विवाह पर जोर देने लगे। इसपर वे एक दिन चुपचाप दिल्ली चले गए और वहां दैनिक पत्र 'अर्जुन' में काम करने लगे। कुछ दिन बाद, वे कानपुर में श्री गणेशशंकर विद्यार्थी के सुप्रसिद्ध पत्र 'प्रताप' में नियुक्त हो गए। कानपुर में भगतसिंह की भेंट चन्द्रशेखर आजाद और बटुकेश्वर दत्त से हुई और वे क्रांतिकारी कार्यों में गहरी दिलचस्पी लेने लगे।

1928 में दिल्ली के पुराने किले के पास देश-भर के क्रांतिकारियों की एक सभा हुई। इसमें क्रांतिकारी दल को फिर से संगठित किया गया। भगतसिंह के प्रस्ताव पर दल का नाम 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' रखा गया। इसके कुछ समय बाद ही लाहौर में 'साइमन कमीशन' के खिलाफ जबर्दस्त प्रदर्शन हुआ, जिसमें सांडर्स नाम के एक अंग्रेज अफसर ने लाला लाजपतराय के सिर पर लाठी मारी। कुछ दिन बाद इसी चोट से लालाजी

की मृत्यु हो गई। क्रांतिकारी दल ने सांडर्स को इसका मजा चखाने का निश्चय किया। भगतसिंह, आज़ाद और राजगुरु ने एक दिन सांडर्स को बीच सड़क पर अपनी गोलियों से ठंडा कर दिया, और ये सरकार की आंखों में धूल भोंककर साफ निकल गए।

8 अप्रैल, 1929 को भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने 'पब्लिक सेफ्टी बिल' के विरोध में असेम्बली में बम फेंका और पर्चे बांटे। दोनों वहीं पकड़ लिए गए। बाद में कितने ही अन्य क्रांतिकारी भी पकड़े गए। सरकार ने भगतसिंह पर कई मुकदमे चलाए। उन दिनों जेल में बंदियों के साथ बहुत बुरा व्यवहार होता था। उन्हें आवश्यक सुविधाएं भी प्राप्त नहीं थीं। क्रांतिकारी वीरों ने इसके विरोध में भूख हड़ताल शुरू कर दी। यतीन्द्रनाथ दास का इसीमें 63वें दिन देहान्त हो गया। भगतसिंह ने भूख हड़ताल 115 दिन जारी रखी और सरकार के भुक्ने पर ही तोड़ी।

डेढ़ साल मुकदमा चलने के बाद भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी का दण्ड मिला। 23 मार्च, 1931 की शाम को उन्हें चुपचाप फांसी दे दी गई और उनके शव सतलज के किनारे ले जाकर अग्नि की भेंट कर दिए गए। लोगों को जब यह समाचार मिला तो पूरे देश में गहरा शोक छा गया।

स्वतंत्रता के बाद पंजाब में भगतसिंह का एक भव्य स्मारक बनाया गया है।

भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम—1857 (INDIAN WAR OF INDEPENDENCE—1857) : सन् 1856 में जब लार्ड कैनिंग भारत का गवर्नर-जनरल बनकर आया, उस समय ऊपर से सर्वत्र शांति और व्यवस्था ही दिखाई पड़ती थी। परंतु अगले ही वर्ष भारत में जगह-जगह भयंकर विद्रोह फूट पड़ा। यह सन् सत्तावन का भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम था। इसके संक्षेप में निम्नलिखित कारण थे :

लार्ड कैनिंग से पहले के गवर्नर-जनरल, लार्ड डलहौजी ने देशी राज्यों को हड़पने का कुचक्र चलाया था। अतः सभी राज्यों में बड़ा असंतोष फैला था। गोद लिए पुत्र को गद्दी का उत्तराधिकारी न स्वीकार कर सतारा, नागपुर, झांसी आदि राज्यों को और कुप्रबंध का आरोप लगाकर अवध के राज्य को समाप्त कर दिया गया था।

देशी नरेशों के अलावा, जमींदारों के साथ भी अत्याचार हुआ था और उनमें से बहुतों की जमीनें किसी न किसी बहाने छीन ली गई थीं।

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप, इंग्लैंड में उस समय बड़ा सस्ता माल तैयार हो रहा था। भारत उस विदेशी माल के लिए एक बड़ी मंडी था। इससे देशी उद्योग-धंधे चौपट होते जा रहे थे और लोग आर्थिक शोषण से पिस रहे थे।

ईसाई धर्म-प्रचारकों को राजकीय सहायता और संरक्षण प्राप्त था। वे अपने प्रवचनों में खुल्लमखुल्ला हिन्दू तथा मुसलमान धर्मों की निंदा करते थे और उनके देवी-देवताओं, अवतारों और पैगम्बरों को गालियां देते थे। जो लोग ईसाई धर्म स्वीकार कर लेते थे, उन्हें सभी तरह की सुविधाएं मिलने लगती थीं।

अंग्रेज अफसर हिन्दुस्तानी सैनिकों के साथ बड़ा दुर्व्यवहार करते थे। अंग्रेज और हिन्दुस्तानी सैनिकों के वेतन और भत्ते वगैरह में बड़ा अन्तर था। ऊंचे-ऊंचे पदों पर केवल अंग्रेज ही रखे जाते थे और युद्ध के समय प्रायः हिन्दुस्तानी सैनिकों को ही कटने के लिए आगे कर दिया जाता था।

सर्वप्रथम विद्रोह का विस्फोट बैरकपुर में हुआ। उन दिनों सेना में बड़े जोरों के साथ यह अफवाह फैली थी कि कार्तूसों में, जिनके दोनों सिरों को दांतों से पहले काटना पड़ता था, गाय और सूअर की चर्बी मिली रहती है। बैरकपुर के हिन्दुस्तानी सैनिकों ने चर्बी वाले कारतूसों को इस्तेमाल करने से इन्कार कर दिया। 29 मार्च, 1857 को मंगल पांडे नामक एक ब्राह्मण सैनिक ने अंग्रेज अफसर, सार्जेंट मेजर ह्यूमन की हत्या कर दी। मंगल पांडे का कोर्ट मार्शल हुआ और उसे फांसी पर लटका दिया गया।

10 मई, 1857 को मेरठ में भी विद्रोह की आग भड़क उठी। विद्रोही सैनिकों ने जेलखाने पर हमला कर कैदियों को मुक्त कर दिया। जहां कहीं अंग्रेज मिले, वे तलवार के घाट उतार दिए गए। मेरठ से विद्रोही दिल्ली पहुंचे। दिल्ली के लाल किले पर उन्होंने अधिकार कर लिया। मुगल बादशाह बहादुरशाह को विद्रोह का संचालन करने के लिए तैयार कर लिया गया।

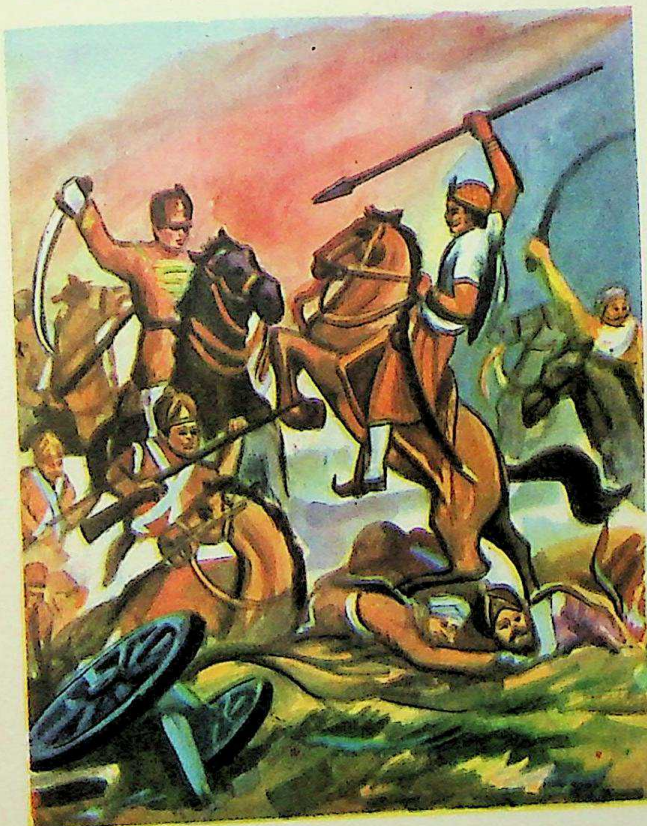
इसके बाद सारे उत्तरी भारत में विद्रोह की आग भड़क उठी। कानपुर और लखनऊ में उसने बड़ा विकराल रूप धारण किया। नाना साहब ने कानपुर पर अपना अधिकार स्थापित कर अपने को पेशवा घोषित कर दिया। बुन्देलखण्ड में झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई ने और मध्य भारत में तात्या टोपे ने विद्रोहियों का नेतृत्व संभाला। बिहार में जगदीशपुर के कुंवरसिंह ने विद्रोह का संचालन किया। पंजाब शांत रहा और सिक्खों ने अंग्रेजों का साथ दिया। राजपूताना तथा दक्षिण भारत में भी विद्रोह का प्रसार नहीं हो सका।

लार्ड कैनिंग ने विद्रोह के दमन के लिए सबसे पहले अंग्रेजी सेनाएं दिल्ली की ओर भेजीं। छः सप्ताह की भीषण लड़ाई के बाद दिल्ली पर फिर से अंग्रेजों का अधिकार हो गया। बहादुरशाह कैद करके रंगून भेज दिए गए।

उत्तर प्रदेश में विद्रोहियों के दमन के लिए कर्नल नील को भेजा गया। उसने बनारस और इलाहाबाद पर अधिकार करने के बाद हैवलाक के साथ कानपुर पर हमला किया। दिसम्बर, 1857 में कानपुर पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

मार्च, 1858 में झांसी में अंग्रेज सेनापति ह्यू रोज और महारानी लक्ष्मीबाई के बीच घमासान लड़ाई हुई। महारानी ने बड़ी वीरता दिखाई। तात्या टोपे भी वहां रानी की सहायता के लिए पहुंचे। परंतु अंत में जीत अंग्रेजों की ही हुई और झांसी पर उनका कब्जा हो गया। महारानी लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे की अंग्रेजी सेना से फिर कालपी और ग्वालियर में लड़ाई हुई। महारानी लड़ते-लड़ते ही ग्वालियर में मारी गई। थोड़े दिन बाद तात्या टोपे को भी पकड़ लिया गया और उन्हें फांसी दे दी गई।

सन् सत्तावन का विद्रोह स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए भारतीयों का पहला प्रयास था, जो असफल रहा। यह



तात्या टोपे और अंग्रेजों का युद्ध।

उत्तर भारत तक ही सीमित रहा और अखिल भारतीय रूप धारण नहीं कर सका। उत्तर भारत में भी पंजाब में पूर्ण शांति रही। ग्वालियर, हैदराबाद तथा अन्य राज्यों ने इस विद्रोह के दमन में अंग्रेजों की बड़ी सहायता की। विद्रोहियों की सैनिक शक्ति अंग्रेजों से बहुत कम थी। इसके अलावा, उनके पास महारानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नाना साहब और कुंवरसिंह के अतिरिक्त कोई अच्छा नेता या सेनापति भी न था। इसीलिए यह विद्रोह जल्दी ही कुचल दिया गया।

फिर भी इस विद्रोह के कारण अंग्रेजों की शासन-पद्धति, सैनिक व्यवस्था और नीति में बहुत परिवर्तन आया। ईस्ट इंडिया कंपनी का सौ वर्षों का शासन समाप्त हो गया

और उसके स्थान पर ब्रिटिश सम्राट और पार्लमेंट का शासन आरंभ हो गया। इसके बाद ही भारत में वैधानिक विकास का सूत्रपात हुआ और भारतीयों को धीरे-धीरे देश के शासन में भाग लेने का अधिकार दिया जाने लगा।
(देखें : लक्ष्मीबाई, महारानी)

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन (INDIAN INDEPENDENCE MOVEMENT) : सन् 1857 के बाद भारत में अंग्रेजों का एकछत्र राज्य कायम हो गया। उन्होंने पूरे देश में एक ही प्रकार की शासन और न्याय-व्यवस्था तथा एक ही प्रकार के नियम लागू किए। रेल, डाक, तार आदि की सुविधाओं और समाचारपत्रों के प्रकाशन से देश के एक भाग का दूसरे से निकट सम्पर्क स्थापित हुआ। अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार से विभिन्न प्रान्तों के विद्वानों को विचार-विनिमय की सुविधा हुई। इन सब बातों का परिणाम यह निकला कि देश में एक नई जागृति आने लगी। ब्रह्मसमाज, आर्यसमाज, रामकृष्ण मिशन आदि ने लोगों में देशप्रेम तथा स्वतंत्रता के भाव जाग्रत किए और उन्हें कूपमंडूकता से निकाला।

इस जागरण के फलस्वरूप 1885 में इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना हुई, जो आगे चलकर देश की प्रधान राष्ट्रीय संस्था बन गई। ब्रिटिश सरकार के साथ कांग्रेस का जो संघर्ष आरंभ हुआ, उसकी समाप्ति 1947 में भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के साथ हुई। इन साठ सालों में कांग्रेस के उद्देश्य और उसकी नीतियों में परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन होता रहा। ब्रिटिश सरकार भी कभी दमन और कभी समझौते की नीति अपनाती रही।

1885 से 1905 तक के काल को सुधारों का काल कहा जाता है। इस काल में कांग्रेसी नेता अपनी शिकायतों को सरकार के सामने रखकर उससे उन्हें दूर करने की प्रार्थनाएं किया करते थे। सरकार की सद्भावना में उनका पूरा विश्वास था। परंतु नेताओं में लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय और विपिनचंद्र पाल जैसे कुछ ऐसे उग्रवादी भी थे जो अनुनय-विनय की नीति में विश्वास नहीं रखते थे और अपनी मांगों की पूर्ति के लिए सरकार को विवश करना चाहते थे।

इसके अतिरिक्त, देश में क्रांतिकारी नवयुवकों का भी एक दल पैदा हो गया था जो पूर्ण स्वतंत्रता चाहता था और सरकारी दमन का जवाब बम के गोलों से देने की तैयारी कर रहा था।

1907 में कांग्रेस में नरम और गरम दो दल हो गए। नरम दल, जिसके नेता गोपालकृष्ण गोखले थे, ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर ही 'औपनिवेशिक स्वराज्य' चाहता था। गरम दल वाले, जिनके नेता लोकमान्य तिलक थे, ब्रिटिश सरकार से कोई संबंध रखना नहीं चाहते थे। सरकार ने तिलक को छः वर्ष की सजा देकर मांडले भेज दिया।

अनेक क्रांतिकारियों को जेल में डाल दिया और कुछ को फांसी दे दी। इसके साथ ही सरकार ने 1909 में 'मॉर्ले-मिटो सुधार' की भी घोषणा की, जिसमें भारतीयों को कुछ अधिकार दिए गए थे। परंतु इससे मुसलमानों को अपने प्रतिनिधि अलग चुनने का अधिकार भी मिल गया, जिसके परिणाम आगे चलकर बड़े ही भयानक निकले।

1916 में श्रीमती एनी बेसेंट और तिलक ने मिलकर 'होमरूल' (स्वराज्य) आन्दोलन चलाया, जिसने खूब जोर पकड़ा। उधर 1914 से यूरोप में प्रथम विश्वयुद्ध शुरू हो गया था। अंग्रेज यह कह रहे थे कि यह युद्ध स्वतंत्रता, प्रजातंत्र और राज्यों के आत्म-निर्णय के अधिकार के लिए लड़ा जा रहा है। इसलिए सभी दलों के लोगों ने युद्ध में ब्रिटिश सरकार को सहायता दी और उन्हें यह आशा हो गई कि युद्ध की समाप्ति के बाद भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य मिल जाएगा।

किंतु 1919 में जब 'मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार' की घोषणा हुई तो देश को बड़ी निराशा हुई। इन सुधारों को लेकर कांग्रेस में नरम और गरम दल का मतभेद इतना बढ़ा कि नरम दल वाले कांग्रेस से अलग हो गए। कांग्रेस का संचालन अब गांधीजी के हाथ में आ गया।

स्वराज्य अभी भी कांग्रेस का ध्येय रहा। परंतु अब ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर अथवा बाहर भी रहकर उसे प्राप्त करना उसका लक्ष्य बन गया। सितम्बर, 1920 में कांग्रेस ने असहयोग आन्दोलन चलाने का निश्चय किया। इसके कार्यक्रम में सरकारी उपाधियों और नौकरियों का त्याग, सरकारी स्कूलों और विदेशी माल का बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा-संस्थाओं की स्थापना आदि शामिल थे। गांधीजी ने राष्ट्रीय आन्दोलन को जन आन्दोलन बना दिया और देश के कोने-कोने में फैला दिया। देश-भर में विदेशी कपड़े की होलियां जलाई जाने लगीं।

गांधीजी असहयोग आन्दोलन को अहिंसात्मक रूप में चलाना चाहते थे। इसलिए फरवरी, 1922 में जब चोरी-चौरा में पुलिस चौकी को आग लगा दी गई तो उन्होंने आन्दोलन स्थगित कर दिया। 1922 से 1927 तक का काल राष्ट्रीय जीवन में घोर अशांति का काल रहा। इस अरसे में जगह-जगह हिन्दू-मुस्लिम दंगे हुए, जिनके पीछे स्पष्ट ही सरकार की शह थी। उधर मोतीलाल नेहरू और चित्तरंजनदास ने कौंसिलों में जाकर सरकार के कार्य में अड़ंगा लगाने का निश्चय किया और 'स्वराज्य पार्टी' के नाम से कांग्रेस में अपना अलग दल बना लिया। 1924 के चुनाव में इस पार्टी को बड़ी सफलता मिली।

1929 में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस ने 'पूर्ण स्वतंत्रता' अपना लक्ष्य घोषित किया। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए गांधीजी के नेतृत्व में सत्याग्रह आरंभ करने का निश्चय किया गया। गांधीजी ने नमक कानून तोड़कर सत्याग्रह शुरू किया और सारे देश में एक आंधी-सी चल

पड़ी। इस बार स्त्रियां भी भारी संख्या में आन्दोलन में कूद पड़ीं।

1931 में गांधी-इर्विन समझौता हो जाने पर गांधीजी गोलमेज कान्फ्रेंस में भाग लेने के लिए लंदन गए, परंतु उस कान्फ्रेंस का कोई नतीजा नहीं निकला। वाइसराय लार्ड विलिंगडन ने तब भारत में दमन-चक्र चलाया। 1934 में कांग्रेस में समाजवादियों का एक नया दल बन गया, जो देश का शासन और समाज का निर्माण समाजवादी सिद्धांतों पर करना चाहता था।

1935 में ब्रिटिश पार्लमेंट ने भारत के लिए नया विधान पास किया। उसके अनुसार 1937 में जब प्रान्तीय विधान सभाओं के चुनाव हुए तो कांग्रेस को उनमें बड़ी सफलता मिली। उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, मध्य भारत, मद्रास तथा बम्बई में और कुछ समय बाद उत्तर-पश्चिमी सीमा-प्रांत में भी कांग्रेसी सरकारें बन गईं।

1939 में जब द्वितीय विश्वयुद्ध आरंभ हो गया तो कांग्रेस ने ब्रिटिश सरकार से यह मांग की कि पहले भारत को आजादी मिलनी चाहिए, उसके बाद ही देश युद्ध में शामिल हो सकेगा। ब्रिटिश सरकार की ओर से कोई संतोषजनक उत्तर न मिलने पर कांग्रेसी सरकारों ने इस्तीफे दे दिए। इंग्लैंड से क्रिप्स मिशन भारत भेजा गया, पर कोई समझौता नहीं हो सका।

8 अगस्त, 1942 को कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो' का नारा दिया और अगले ही दिन गांधीजी तथा कांग्रेस कार्य-समिति के सभी सदस्य गिरफ्तार कर लिए गए। इसपर सारे देश में उथल-पुथल मच गई और एक जबर्दस्त संघर्ष आरंभ हो गया। रेल की पटरियां उखाड़ी गईं, तार काटे गए, सरकारी दफ्तरों और पुलिस चौकियों में आग लगा दी गई। सरकार ने इस संघर्ष को दबाने के लिए बड़ी कठोरता से दमन आरंभ किया। इसी समय सुभाषचंद्र बोस ने मलाया पहुंचकर देश को स्वतंत्र करने के लिए आजाद हिन्द फौज संगठित की।

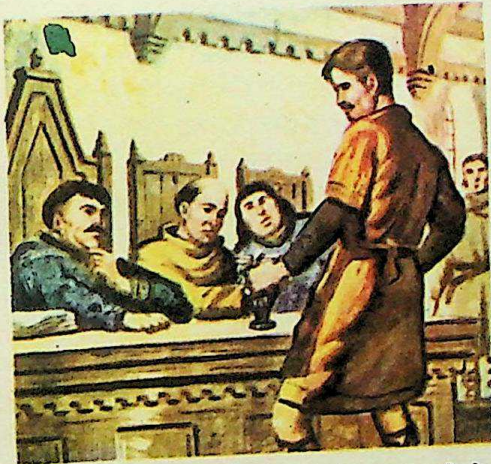
द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद ब्रिटेन में मजदूर दल की सरकार बन गई। उसने भारतीय नेताओं से समझौते की बातचीत शुरू की। मुस्लिम लीग इस बीच मुसलमानों की सबसे शक्तिशाली संस्था हो गई थी और वह मुसलमानों के पृथक् राज्य—पाकिस्तान—की मांग कर रही थी। ब्रिटिश सरकार, कांग्रेस और मुस्लिम लीग में बहुत दिन मंत्रणा चली, पर कोई संतोषजनक समझौता नहीं हो सका।

तभी देश में चुनाव हुए और उनके बाद भारत के तत्कालीन वाइसराय लॉर्ड वेवल ने जवाहरलाल नेहरू को मंत्रिमंडल बनाने के लिए आमंत्रित किया। थोड़े दिनों बाद मुस्लिम लीग भी उसमें शामिल हो गई। किंतु कांग्रेस और मुस्लिम लीग की यह मिली-जुली सरकार सहयोग से काम नहीं कर सकी।

आखिर काफी विचार-विमर्श के बाद देश को भारत संघ और पाकिस्तान, इन दो भागों में विभाजित करने की योजना बनाई गई। जनमत द्वारा यह निश्चय हुआ कि पश्चिमी पंजाब, उत्तर-पश्चिमी सीमाप्रांत, बिलोचिस्तान, सिंध तथा पूर्वी बंगाल को मिलाकर पाकिस्तान बनेगा। देश का शेष भाग भारत संघ होगा। देशी नरेशों को इस बात की स्वतंत्रता होगी कि वे अपनी इच्छानुसार भारत संघ या पाकिस्तान किसीमें भी शामिल हो सकते हैं। 1947 में ब्रिटिश पार्लमेंट ने इस आशय का 'भारतीय स्वतंत्रता एक्ट' पास कर दिया।

इस प्रकार दो सौ साल की गुलामी के बाद 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हो गया।

मध्ययुग (MIDDLE AGES) : जिसे हम मध्ययुग कहते हैं उस युग की महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है—कोलम्बस द्वारा अमरीका की खोज। मध्ययुग की कुछ प्रारंभिक

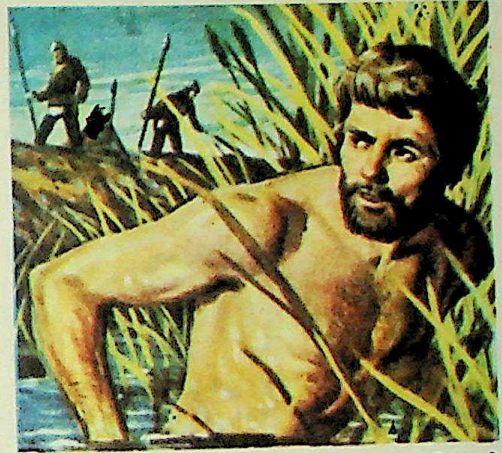


स्वामी अपने कारीगरों के शिल्प की जांच करते थे।

शताब्दियों में यूरोप में बड़ी उथल-पुथल रही। रोम साम्राज्य का अंत करनेवाले बर्बर लोगों ने नगरों को लूट लिया और उन सड़कों को नष्ट कर डाला जो साम्राज्य को एक सूत्र में बांधे हुई थीं। ज्ञानोपार्जन की उन्हें परवाह न थी। वह समय 'अधयुग' कहलाता है। पर शनैः-शनैः अव्यवस्था में व्यवस्था का संचार होने लगा।

बहुधा मध्ययुग को धार्मिक विश्वास का युग भी कहा जाता है। मध्ययुग के सबसे अधिक अंधकारमय दिनों में भी यूरोप के ईसाई गिरजाघरों ने प्राचीन ज्ञानराशि को तथा संसार को श्रेष्ठतर बनाने की आशा को धूमिल होने से बचाए रखा। गॉथिक गिरजाघरों का निर्माण इसी काल में हुआ। ईसाइयों ने मुसलमानों से अपनी पवित्र भूमि को मुक्त कराने के लिए धर्मयुद्ध (क्रुसेड) भी इसी युग में लड़े।

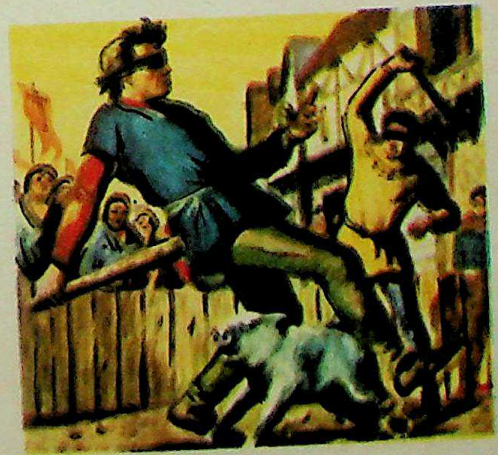
अधयुग की अव्यवस्था ने ही जीवन-प्रणाली के एक रूप में सामन्तशाही को जन्म दिया। जनसाधारण उन सामन्तों से संबद्ध हो गए जो बड़े-बड़े दुर्गों में रहते थे।



कितने ही कृषिदास स्वतंत्रता पाने के लिए भाग निकलते थे।

सामान्य लोग प्रायः गुलामी का जीवन बिताते थे। उन्हें कृषिदास कहा जाता था। वे अपने स्वामियों की नौकरी बजा लाते थे, जिसके लिए उन्हें भोजन और आवास के अतिरिक्त कोई वेतन नहीं मिलता था। वे स्वामियों को छोड़कर कहीं नहीं जा सकते थे। लेकिन पहले की तरह अब जनसाधारण की पकड़-धकड़ नहीं होती थी और उन्हें जंजीरें बांधकर नहीं ले जाया जा सकता था।

सामन्तशाही का युग पराक्रम का युग भी था। योद्धा लोग स्वामी के सम्मान, न्याय, दीनहीन जनों और गिरजाघरों की रक्षा का बीड़ा उठाते और सत्याचरण की प्रतिज्ञा करते थे। सामन्तशाही पहले की उस अराजकता से कहीं अच्छी थी जिसमें न्याय और व्यवस्था का गला घोट दिया गया था। किंतु कृषिदासता अब भी जारी थी। बाद में मध्ययुग के ढलते दिनों में बहुतेरे कृषिदास मुक्त कर दिए गए। शक्तिशाली राष्ट्रों का उदय हुआ। नये कानून लागू होने लगे। न्यायालय स्थापित हुए। यूरोप के कई भागों में लोगों को जूरी द्वारा जांच का अधिकार तथा अन्य ऐसे अधिकार प्राप्त हो गए जिनके अनुसार वे अनुचित व्यवहार से बच सकते थे।



हाट-बाजार में सूअर को पीटने का खेल होता था।

गिरजाघरों के निर्माण के साथ-साथ अन्य कलाओं में भी प्रगति हुई। गिरजाघरों के लिए उत्कृष्ट भक्तिकाव्यों की रचना हुई, दीवारों के लिए बहुत ही शानदार टैपेस्ट्रियां बुनी गईं और सुन्दर कवच बनाए गए। विश्वविद्यालय स्थापित हुए तथा शिक्षा में प्रगति हुई।

मध्ययुग में महान आविष्कारों का अभाव रहा, पर जो दो-चार हुए वे बहुत महत्वपूर्ण थे। उनमें कम्पास, दोलन घड़ी, ऐनक के शीशे और बारूद प्रमुख हैं। संक्षेप में मध्ययुग का अन्तिम चरण नवजागरण का संदेश लेकर आया।

भारत में मध्ययुग राजनीतिक क्रांतियों से व्याप्त उस काल को कहते हैं जब अन्तिम हिन्दू सम्राट हर्षवर्धन का साम्राज्य आखिरी सांसें गिन रहा था और उत्तर भारत छोटी-छोटी रियासतों के रूप में छिन्न-भिन्न हो चुका था। तब देश की भीतरी फूट से लाभ उठाकर मुसलमानों ने आक्रमण आरंभ कर दिए थे। 712 से 1761 ई० तक के इस संक्रांतिकाल को हम तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं। पहला, 712 से 1206 ई० तक का वह समय जिसमें मुसलमानों के आक्रमण होते रहे तथा राजपूत रियासतों का फिर से संगठन हुआ। दूसरा, 1206 से 1526 ई० तक का काल जिसमें गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैयद और लोदी वंशों का शासन रहा। तीसरा, 1526 से 1761 तक का मुगल साम्राज्य-काल।

इस काल में विघटन की प्रवृत्ति का विशेष जोर रहा, जिसने सामन्तशाही को जन्म दिया। इस काल में जो साहित्य लिखा गया उसके मुख्य विषय बने, राजदरबारों के वर्णन और शासकों की विजय। इसी काल में हिन्दू-मुस्लिम संपर्क के फलस्वरूप एक नई भवन-निर्माण कला का विकास हुआ। इसी संपर्क के परिणामस्वरूप ज्ञान-समन्वित भक्ति-मार्ग का प्रचार हुआ, जिसमें मन्दिर और मस्जिद के भेद-भाव मिट गए। इस काल की उत्कृष्ट भक्ति-रचनाओं के आधार पर इसे हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग भी कहा जा सकता है। एकेश्वरवाद और राष्ट्रवाद के आन्दोलन चले। कबीर जैसे उपदेशक, तुलसी जैसे समाज-सुधारक, जायसी

जैसे विचारक और रहीम जैसे संत भी इसी काल में उत्पन्न हुए।

ममी (सुरक्षित शव) (MUMMIES) : प्राचीन मिस्र-वासियों का विश्वास था कि मरणोपरान्त मनुष्य का मृत शरीर इस प्रकार सुरक्षित रखना चाहिए कि वह नष्ट न हो सके, ताकि जो आत्मा उसमें से निकल गई है वह चाहे तो फिर लौटकर उसी शरीर में प्रवेश कर सके।

शरीर को गलने-सड़ने से बचाने के लिए मिस्र के लोग कुछ विशेष रसायनों का प्रयोग करते थे, जिनसे वह सूख जाता था। फिर वे उसे कपड़े की अनेक तहों में लपेट देते थे। इस काम के लिए सैकड़ों मीटर कपड़े की आवश्यकता पड़ती थी। कपड़े की तहों को आपस में राल के लेप से चिपका दिया जाता था। इस प्रकार जो शव सुरक्षित रखा जाता था उसे ममी कहते हैं।

शव को सुरक्षित करने में लगभग 70 दिन लगते थे। इस बीच बड़ई शव-मंजूषा बनाने में व्यस्त रहते थे। महत्वपूर्ण व्यक्तियों के लिए एक से अधिक मंजूषाएं बनाई जाती थीं। एक मंजूषा में दूसरी मंजूषा बंद की जाती थी। सबसे भीतरी शव-मंजूषा पर सुन्दर चित्रकारी की जाती थी।

अनेक संग्रहालयों में मिस्री ममियां रखी हुई मिलती हैं। ममियां बहुत कुछ वैसी ही दिखाई देती हैं जैसीकि वे शताब्दियों पूर्व थीं। मृत शरीरों को नष्ट होने से बचाने का मिस्रवासियों का यह तरीका सचमुच बड़ा आश्चर्यजनक था।

सभी मिस्री ममियां मानवों की हों, यह बात नहीं है। मिस्र में उपलब्ध प्रायः हर जाति के जीव-जन्तुओं की ममियां मिली हैं, जैसे—बिल्लियों, मृगों, सांडों और मगरमच्छों आदि की ममियां।

सभी ममियां मिस्र की ही हों, यह बात भी नहीं है। पेरू में भी प्राचीन काल में मृत शरीरों को सुरक्षित रखा जाता था। पर अधिकांश लोग ममी का मतलब मिस्र की ममी ही समझते हैं।



मय (MAYAS) : पन्द्रह सौ वर्ष पहले मध्य अमरीका में एक बहुत बड़ा साम्राज्य था—मय साम्राज्य । मय लोग अति सभ्य अमरीकी आदिवासी थे ।

मय साम्राज्य उत्तर में युकातन तक फैला था, जिसमें कई सुन्दर नगर थे । मय लोग बर्तन और आभूषण बनाने में विशेष कुशल थे । अधिकांश मय किसान होते थे और कुछ व्यापारी भी होते थे । उनके पुरोहित ज्योतिष और ग्रहों के ज्ञाता होते थे ।

मयों का अपना पंचांग होता था, जिसे शायद उनके पुरोहित बनाते थे । गणित के क्षेत्र में भी वे बहुत आगे बढ़ चुके थे । वे एक प्रकार की चित्रलिपि में लिखते थे । कुछ लेख मृगछाल पर लिखे जाते थे और कुछ जंगली पेड़ों की छाल पर । कुछ लेख पत्थरों पर खोदे भी जाते थे ।

अन्य अमरीकी आदिवासियों की भांति मय लोग भी कुत्ते पालते होंगे । किन्तु वे घोड़े, गधे, और बैल नहीं रखते थे । औजारों या हथियारों के लिए उनके यहां धातुएं भी नहीं थीं । वे जो आभूषण बनाते थे उनके लिए सोना-चांदी दूर-दूर से लाना पड़ता था ।

मयों के प्रारंभिक मंदिरों में उपलब्ध भित्तिचित्रों से पता चलता है कि तब उनका रहन-सहन कैसा था ? एक जगह जुलूस का एक चित्र है जिसमें सामंत और पुरोहित भड़कीली पोशाकें पहने हैं । उसमें गवैयों के पास लकड़ी के नर्सिहे, तुम्बी की खड़तालें और कछुए की पीठ के बने दमामे हैं । परेड करनेवालों ने नकाबें भी पहन रखी हैं ।

एक अन्य चित्र में पुरोहित को सेवक वस्त्र पहना रहे हैं । उसने जो पोशाक पहनी है वह अंशतः जागुआर नामक जानवर की खाल की बनी है और अंशतः कपड़े की, जिस-पर घने बेलवूटे काढ़े गए हैं । उसके गले में जेड की एक कंठी भी है । सिर पर उसने जो बड़ा-सा मुकुट पहना है वह केटजल पक्षी के पंखों से सजा है । एक सेवक पुरोहित की त्वचा को लाल रंग रहा है ।

मय लोग दयालु प्रकृति के कहे जाते हैं । किन्तु उनके चित्रों में कैदियों को दया के लिए गिड़गिड़ाते हुए दिखाया गया है और योद्धागण युद्ध में ऐसे शिरस्त्राण पहनकर जाते थे जिन्हें देखकर शत्रु भयभीत हो सकते थे ।

सैकड़ों वर्षों तक मय साम्राज्य फलता-फूलता रहा । उसके बाद मय लोग मध्य अमरीका के अपने नगरों को छोड़कर चले गए । कई आदिवासी युगतान की ओर चले गए ।

मयों का विश्वास था कि देवता लोग आकाश में रहते हैं । अतः वे अपने मंदिरों को ऊंचा बनाते थे । उनके कई पाषाण-स्तम्भों और सीढ़ियों पर सांपों की आकृतियां खुदी हुई हैं । उनकी पुराणकथाओं में आता है कि किस प्रकार पिगलकेशी नागपुरुषों ने मय लोगों को खेती करना सिखाया था ।

चीचेनीत्सा के खंडहरों को देखने से एक रोचक खेल



का पता चलता है। दीवार पर काफी ऊंचा पत्थर का एक छल्ला होता था। खिलाड़ी उछलकर अपनी कुहनियों से या अपनी टांगों के ऊपरी भाग से रबर की एक ठोस गेंद को छल्ले में से गुज़ारता था। जब स्पेनी विजेता आए तो इस खेल को देखकर वे चकित रह गए। उन्होंने पहले कभी रबर नहीं देखा था। वे लोग मय जाति के खज़ाने उठाकर ले गए। यद्यपि आज उनकी शान एक बीती कहानी बन चुकी है, फिर भी कुछ मय लोग आज भी उस प्रदेश में विद्यमान हैं जहाँ कभी उनका साम्राज्य था।

महमूद गज़नवी (MAHMUD OF GHAZNI): ग्यारहवीं सदी के आरंभ से ही गज़नी के सुल्तान महमूद ने भारत पर हमले करने शुरू कर दिए। गज़नी अफगानिस्तान के पहाड़ी प्रदेश में स्थित एक नगर था और वहाँ उस समय एक नया तुर्की राजवंश स्थापित हुआ था। महमूद इसी राजवंश के सुल्तान सुबुक्तगीन का बेटा था और 998 ई० में गज़नी के सिंहासन पर बैठा था।

महमूद गज़नवी ने भारत पर कुल सत्रह हमले किए और हर बार वह बेशुमार धन-दौलत यहाँ से लूटकर ले गया। भारत की राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक दशा उस समय बड़ी शोचनीय थी। देश अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बंटा था, जो निरन्तर आपस में ही लड़ते रहते थे। जात-पात के बंधन बहुत जटिल थे और शूद्रों को बहुत ही घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। दूसरी ओर, बड़े-बड़े मंदिरों में अपार सम्पत्ति भरी पड़ी थी और भारत विदेशों में 'सोने की चिड़िया' कहलाता था।

महमूद का पहला बड़ा हमला 1001 ई० में पंजाब पर हुआ। उसके बाद उसने सन् 1008, 1010 और 1013 में पंजाब पर फिर हमले किए। इन हमलों में वह तराइन तक घुस आया, जो दिल्ली के पास स्थित था। धन-संपत्ति लूटने, मूर्तियों और मंदिरों को तोड़ने और मूर्ति-पूजकों की हत्या करने तथा उन्हें गुलाम बनाने का यह सिलसिला बराबर चलता रहा। 1018 ई० में उसने एक लाख घुड़सवार सेना लेकर मथुरा पर हमला किया, जो उस समय अपनी सुन्दरता के कारण 'स्वर्गनगरी' कहलाती थी। उसने मथुरा और वृंदावन के मंदिरों और मूर्तियों का विध्वंस किया और अपार संपत्ति उसके हाथ लगी। इसके बाद उसने कन्नौज और कालिंजर पर ज़बर्दस्त हमले किए।

महमूद का सबसे प्रसिद्ध हमला 1025-26 ई० में सोमनाथ के मंदिर पर हुआ। इस मंदिर को दस हजार गाँवों की आय प्राप्त थी और इसमें प्रतिदिन एक हजार ब्राह्मण पूजा किया करते थे। राजपूतों ने बड़ी वीरता और साहस के साथ तुर्कों का सामना किया, पर विजय महमूद की ही हुई। कहते हैं, महमूद ने जब मंदिर में प्रवेश किया तो पुजारियों ने उससे विनय की कि वह मूर्ति को न तोड़े और मुंहमांगा धन ले ले। महमूद ने उत्तर दिया, "मैं मूर्ति-भंजक

हूँ, मूर्ति-विक्रेता नहीं।" महमूद को इस मंदिर से अपार रत्न, सोना, चांदी और अन्य संपत्ति हाथ लगी। महमूद का आखिरी हमला 1027 ई० में जाटों पर हुआ।

महमूद बहुत कुरूप था। परंतु वह बड़ा वीर, साहसी और कुशल सेनानायक था। महमूद भारत में अपना राज्य स्थापित करना नहीं चाहता था। वह एक ऐसे प्रदेश का शासक था जो बड़ा ही निर्धन था। भारत पर हमले करने का उसका उद्देश्य धन तथा युद्ध की अन्य सामग्री प्राप्त करना था, जिससे कि वह अपने नये राज्य की, उत्तर से होनेवाले तुर्क कबीलों के हमलों से, रक्षा कर सके और पश्चिम की ओर उसका विस्तार कर सके। साथ ही उसका दूसरा उद्देश्य इस्लाम का प्रचार करना और मूर्ति-पूजकों को मुसलमान बनाना भी था। उसने राजाओं के सुदृढ़ दुर्गों को अपने आक्रमण का लक्ष्य नहीं बनाया। इतिहासकार यह भी स्वीकार करते हैं कि उसने न तो स्त्रियों और बच्चों का हत्याकांड करवाया और न कभी किसी स्त्री के साथ बलात्कार ही किया।

महमूद केवल लुटेरा ही नहीं था, उसे साहित्य तथा कला से भी प्रेम था। उसने अपनी राजधानी गज़नी को सुंदर भवनों, मस्जिदों तथा विद्यालयों से सजाया, जिससे वह शहर एशिया में दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गया। वह स्वयं पढ़ा-लिखा नहीं था, पर विद्वानों का आदर करता था। अलबेरूनी जैसे गणितज्ञ और भूगोलवेत्ता, उतबी जैसे इतिहासकार और फ़िरदौसी जैसे विख्यात कवि उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे। 1030 ई० में उसका देहांत हो गया।

मिस्र, प्राचीन (ANCIENT EGYPT): भूमध्य सागर के पूर्वी छोर के समीप के क्षेत्र को प्रायः 'सभ्यता का पालना' कहा जाता है। मिस्र इसी क्षेत्र का एक देश है। यह अफ्रीका महाद्वीप के उत्तर-पूर्वी कोने में स्थित एक रेगिस्तानी प्रदेश है। नील नदी की संकरी, उपजाऊ घाटी इसके बीच में स्थित है। रेगिस्तान और समुद्र ने सदियों तक मिस्र को अपने पड़ोसियों के युद्ध और आक्रमण से मुक्त रखा।

नील नदी के तट पर शिकार और मछली मारने की सुविधा से आकर्षित होकर, कुछ घुमक्कड़ जातियों के लोग शुरू में यहाँ आ बसे। धीरे-धीरे उन्होंने खेती करना शुरू किया। मिस्र के आरंभिक निवासी बड़े परिश्रमी थे। उन्होंने बड़ी उन्नति की। उन्होंने नील के पानी को देश के भीतरी भागों में दूर तक और ऊँचाई पर भी पहुंचाने के तरीके ढूँढ़ निकाले। उन्होंने तांबे के औज़ार और हथियार बनाए। उन्होंने हल तैयार करना और उसमें बैलों को जोतना सीखा। और, सबसे बड़ी बात तो यह कि उन्होंने लिखना भी सीखा। मिस्री लिपि एक प्रकार की चित्रलिपि थी, जिसे हाइरोग्लिफ़िक लिपि (Hieroglyphics) भी कहते हैं। पहले पत्थरों और मिट्टी की पट्टियों पर ही लिखा जाता



राजदरबार का दृश्य



शिरोवस्त्र



लायर



दर्पण

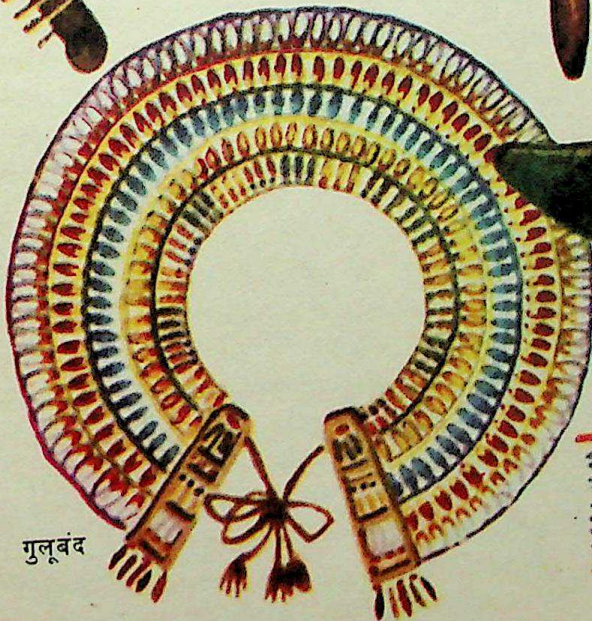
3500 साल पुरानी
एक मिस्री कब्र में
मिली प्राचीन वस्तुएं



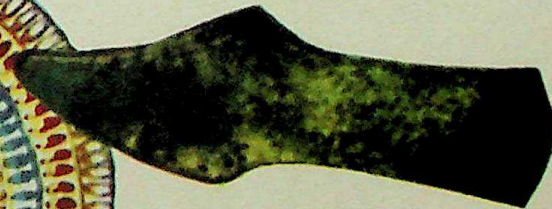
तावीज



उस्तरा



गुलूबंद



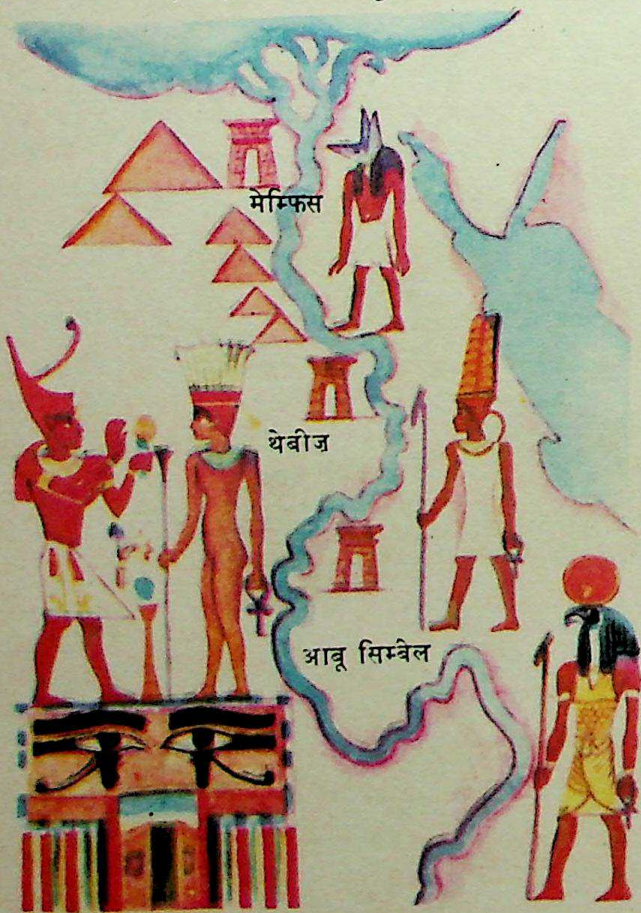
मणिजडित बाजूबंद

था, लेकिन बाद में मिस्रवासियों ने 'पैपाइरस' नामक एक प्रकार के कागज पर लिखना शुरू किया। पैपाइरस इसी नाम के एक पौधे से बनता था। सरकंडे की जाति का यह पौधा नील नदी के किनारे मिलता था।

हमें प्राचीन मिस्रवासियों के बारे में बहुत कुछ उनकी लिपि से ही मालूम हो सका है। इसके अलावा, हमें उनकी पुरानी कब्रों में मिली चीजों से और कब्रों तथा मंदिरों की दीवारों पर खोदे गए या चित्रित किए गए चित्रों से भी उनके बारे में बहुत-सी बातें मालूम हुई हैं।

जब मिस्री लोग घुमक्कड़ और शिकारी जीवन बिताते थे तब जाति के मुखिया का शासन चलता था। जब उन्होंने एक जगह बसकर खेती करना शुरू किया तो छोटे-छोटे 'राज्य' और उनके छोटे-छोटे 'राजा' बने। लगभग 5,000 साल पहले ये छोटे-छोटे राज्य आपस में मिल गए और एक राष्ट्र बन गया।

इस संयुक्त राष्ट्र पर फ़राऊन कहलानेवाले बड़े शक्तिशाली राजाओं का शासन रहा। इनकी राजधानी का नाम मेम्फिस था। फ़राऊन राजवंश के शासन-काल के आरंभ में विद्वान पंडितों ने 365 दिन के साल का पहला पंचांग तैयार किया, ताकि राज्य के काम का ठीक लेखा-जोखा रखा जा सके। जिस पंचांग या कैलेंडर का आज हम प्रयोग करते हैं, वह मिस्रवासियों द्वारा 5,000 साल पहले तैयार किए गए पंचांग से बहुत मिलता-जुलता है।



काहिरा के समीप गीज़ा के प्रसिद्ध पिरामिड।

लगभग 2,000 साल तक मिस्र ने बड़ी उन्नति की। फ़राऊन राजाओं और उनके अधिकारियों ने सिचाई की व्यवस्था की। खेतों में जरूरत से ज्यादा गेहूं उपजने लगा। राजाओं ने तांबे की खानें खुदवाईं, सोने और फीरोजे की खानें खुदवाईं और महलों व मंदिरों के लिए खानों से पत्थर खुदवाए। व्यापारी पड़ोसी देशों की यात्रा करने लगे और अनाज, कपड़ा और तांबे की चीजें बेचने लगे। वे इमारती लकड़ी, हाथीदांत, नीलम और जैतून का तेल खरीदकर लाने लगे।

अब धर्म ने भी लोगों के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण किया। लोगों का विश्वास था कि फ़राऊन ही ईश्वर है और मरने पर फ़राऊन सूर्यदेव रे के साथ स्वर्ग चला जाता है। मिस्रवासी अनेक देवी-देवताओं की पूजा किया करते थे।

मिस्रवासी मृत्यु के बाद के जीवन में, अर्थात् परलोक में विश्वास करते थे और उसकी कल्पना उन्होंने अपने जीवन के समान ही कर रखी थी। जो लोग मर जाते थे उनके शव ममियां बनाकर दफना दिए जाते थे और उनके साथ वे सभी चीजें रख दी जाती थीं जिनकी उन्हें परलोक में जरूरत पड़ सकती थी—खाने की चीजें और कपड़े, मिट्टी के बर्तन और लकड़ी का सामान, हथियार और गहने आदि। फ़राऊन सम्राट अपने लिए बहुत बड़ी-बड़ी समाधियां बनवाया करते थे। मेम्फिस के पास गीज़ा नामक स्थान में फ़राऊन सम्राटों द्वारा 4,000 साल पहले बनवाई गई समाधियां आज भी खड़ी हैं। ये पिरामिड कहलाती हैं और इन्हें संसार के सात आश्चर्यों में गिना जाता है। इनके पास ही स्फ़िक्स की विशाल मूर्ति है, जिसका निर्माण एक मंदिर के रूप में हुआ था।

कुछ समय बाद थतमोस तृतीय नामक एक फ़राऊन सम्राट हुआ। वह बड़ा वीर और युद्धप्रिय था। उसने कई देशों को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। अब मिस्र अपने युग का सबसे सम्पन्न और सबसे शक्तिशाली साम्राज्य बन गया।

मिस्र की उस समय की राजधानी थेबीज अपनी विशाल मूर्तियों और बड़े-बड़े मंदिरों के लिए प्रसिद्ध थी।

कारनाक का मंडप भी एक ऐसा ही विशाल मंदिर था। दक्षिण में नूबिया के आबू सिम्बेल नामक स्थान में फ़राऊन रामसीज द्वितीय की विशाल प्रतिमाएं नील नदी के किनारे लगभग 3,200 साल से खड़ी हैं।

इस साम्राज्य के युग में एशिया के कुछ देशों के लोगों ने मिस्री चित्रलिपि के कुछ चिह्न सीख लिए और उनके आधार पर अपनी वर्णमाला का विकास किया। यह पहली वर्णमाला थी।

लेकिन यह साम्राज्य अधिक दिनों तक टिका नहीं रह सका। कुछ राज्य विद्रोह करके अलग हो गए। अब बाहरी सेनाओं ने मिस्र पर आक्रमण करना शुरू किया। ईसा पूर्व सातवीं सदी में असीरियाईयों ने मिस्र पर कब्ज़ा कर लिया। सौ साल बाद फारसवासियों ने मिस्र पर कब्ज़ा कर लिया और अपने राजा को मिस्र का फ़राऊन घोषित कर दिया। बाद में एक के बाद एक कई आक्रमणकारी आए। यूनानियों, रोमनों, अरबों, फ्रांसीसियों और अंग्रेज़ों ने मिस्र पर राज किया।

सन् 1922 में मिस्र फिर से एक स्वतन्त्र राष्ट्र बना और ब्रिटेन के आधिपत्य से मुक्त हुआ। अब यह संयुक्त अरब गणराज्य के नाम से जाना जाता है।

प्रतिवर्ष सैकड़ों भ्रमणार्थी पिरामिडों और दूसरे प्राचीन अवशेषों को देखने मिस्र आते हैं।

मुहम्मद तुगलक (MUHAMMAD TUGHLAK): दिल्ली सल्तनत के सिंहासन पर जितने भी सुल्तान बैठे, उनमें मुहम्मद तुगलक सबसे अधिक पढ़ा-लिखा और विद्वान था। उसका दृष्टिकोण बड़ा व्यापक था और उसने शासन-प्रबंध को सुधारने के लिए कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाए। पर साथ ही वह भारी सनकी और क्रूर भी था और उसे अजीब-अजीब योजनाएं बनाने की धुन रहती थी। इसी-लिए उसका साम्राज्य उसके जीवन-काल में ही टूटने लगा। मुहम्मद तुगलक गयासुद्दीन तुगलक का बेटा था। उसका असली नाम जूनाखां था। 1325 ई० में, अपने पिता की मृत्यु के बाद, वह मुहम्मद बिन तुगलक के नाम से दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। मुहम्मद तुगलक ने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई। उसके शासन में हिन्दुओं के साथ किसी प्रकार का अत्याचार नहीं होता था। उसने राजनीति को धर्म से अलग किया और शासन के संबंध में उल्माओं से परामर्श लेना छोड़ दिया। वह विद्वानों की सहायता कर उन्हें प्रोत्साहित करता था और उसके समय में राजधानी में सैकड़ों शिक्षा-संस्थाएं थीं। मालगुजारी वसूल करने के लिए उसने सारी भूमि 'शिकों' में बांट दी और प्रत्येक 'शिक' का एक 'शिकदार' नियुक्त किया। वह निष्पक्ष न्याय करता था और अपराधियों को बहुत ही कठोर दंड देता था। उसने डाक पहुंचाने का भी बहुत अच्छा प्रबंध किया था।

लेकिन उसने कितनी ही विचित्र योजनाएं बनाई, जो सबकी सब विफल रहीं। वह अपनी राजधानी दिल्ली से हटाकर देवगिरि ले गया, जिसका नाम उसने दौलताबाद रखा। दिल्ली के सभी लोगों को उसने वहां जाकर बसने की आज्ञा दी। कुछ दिन बाद जब उन्हें असंतुष्ट पाया तो फिर दिल्ली लौट जाने की आज्ञा दे दी। इस तरह अधिकांश लोग रास्ते में ही मर-खप गए। उसने तांबे का सिक्का चलाया और उसे सोने-चांदी के बराबर ठहराया। परिणाम यह हुआ कि शाही टकसाल के अलावा घरों में भी सिक्के चलने लगे और इस तरह शाही खजाने को भारी नुकसान हुआ। उसने हिमालय के पहाड़ी राज्य, कराजल की विजय की योजना बनाई, जिसमें एक लाख सवारों में से कुल दस वचकर वापस आए। इसी तरह उसने दोआब के किसानों पर कर एकदम कई गुना बढ़ा दिया। फल यह हुआ कि किसान अपने खेत छोड़-छोड़कर भागने लगे।

मुहम्मद तुगलक का शासन विफलताओं की एक कशकशी कहानी है। दुर्भिक्ष तथा उसकी योजनाओं की विफलताओं ने शाही खजाने को खाली कर दिया। उसके शासन के अंतिम दिनों में साम्राज्य के विभिन्न भागों में विद्रोह खड़े हो गए, जिससे साम्राज्य की जड़ें हिल गईं। 1351 ई० में सुल्तान अपनी सेना के साथ एक विद्रोह को दबाने के लिए गया। तभी अचानक थूटा में उसकी मृत्यु हो गई।



एक प्राचीन मूर अपने घोड़े और ढाल के साथ।

मूर (MOORS): बारह सौ वर्ष पहले मुसलमान बहुत शक्तिशाली थे। भूमध्य सागर के पूर्वी छोर के सब प्रदेशों तथा अफ्रीका के उत्तरी प्रदेशों पर उनका आधिपत्य था। जिब्राल्टर जलसंधि को लांघकर उन्होंने स्पेन पर भी विजय प्राप्त कर ली थी। यदि फ्रांक जाति के शासक चार्ल्स

द हैमर ने सन् 732 में तूर की प्रसिद्ध लड़ाई में उन्हें रोक न दिया होता, तो वे लोग स्पेन से सारे यूरोप पर छा जाते।

उत्तरी अफ्रीका और स्पेन के मुसलमान 'मूर' कहलाते थे। वे उत्तरी अफ्रीका के प्रारंभिक निवासियों और जिन अरबों ने उनपर विजय प्राप्त की थी, उनका मिश्रण थे। उनकी भाषा अरबी थी।

कई शताब्दियों तक मूर लोगों ने स्पेन पर शासन किया। उनका शासन-काल स्पेन के लिए किसी भी सूरत में 'अंधकार युग' नहीं कहा जा सकता। उन दिनों अरब-निवासी गणित, ज्योतिष और व्याकरण सरीखे विषयों में विश्व-भर में अग्रणी थे। उन्होंने यूनान के बहुत-से ज्ञान को अपनी भाषा में लिखकर सुरक्षित रखा। अंग्रेजी में संख्याओं का लेखन अरबों की ही देन थी। इसी प्रकार 'एलेजेब्रा' (बीजगणित), 'एल्केमी' (कीमियागरी), 'एलको-हल', 'कॉटन' (रूई), 'कॉफी' आदि शब्द भी उन्हींकी बढौलत आए।

मूर लोग पूर्व से अनेक वस्तुएं यूरोप ले गए, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण था कागज। मूरों ने स्पेन में नगर भी बसाए, जिनमें एक कोरडोवा था। एक हजार वर्ष पहले कोरडोवा संसार के सबसे बड़े नगरों में से एक था। इसमें 3,000 मस्जिदें, 300 सार्वजनिक स्नानागार, एक विशाल विश्वविद्यालय तथा कई भव्य अट्टालिकाएं थीं। 10,000 से अधिक जुलाहे मूरी गलीचे, पर्दे और शालें बनाते थे। ग्रेनेडा मूरों का एक अन्य प्रसिद्ध नगर था। मूरों का प्रसिद्ध महल 'अल्हाम्ब्रा' यहीं पर था।

अंत में मूरों को स्पेन से खदेड़ दिया गया। 1492 में, कोलम्बस के अपनी प्रसिद्ध यात्रा पर जाने से कुछ ही समय पहले, ग्रेनेडा से उनका आखिरी कदम भी उखड़ गया।

मेरी अन्तवानेत (MARIE ANTOINETTE 1755-1793) :

मेरी अन्तवानेत फ्रांस के राजा लुई सोलहवें की पत्नी थी। यह बहुत जिद्दी और खर्चीली औरत थी। इसके तौर-तरीके भी फ्रांस की परम्परा के अनुसार नहीं थे। इसलिए फ्रांस की जनता इसे पसन्द नहीं करती थी।

फ्रांस की जनता करों की वृद्धि, स्वतंत्रता की कमी और उच्च वर्ग के अत्याचारों से जली-भुनी बैठी थी। अंत में जनता ने विद्रोह कर दिया।

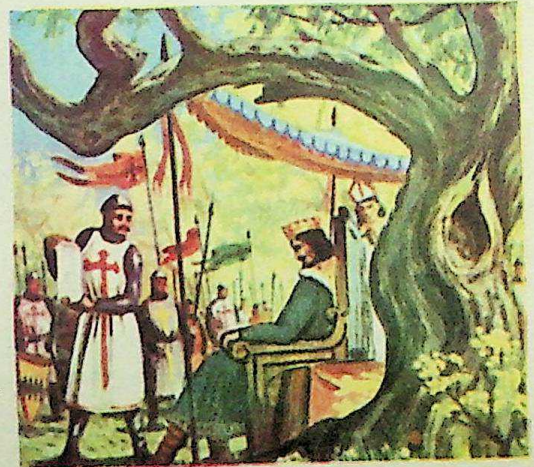
फ्रांस की राज्यक्रांति सन् 1789 में हुई और तीन साल बाद शाही परिवार को पेरिस के जनसमूह ने गिरफ्तार कर लिया। सन् 1793 में लुई को मृत्युदंड दे दिया गया, और कुछ मास बाद मेरी अन्तवानेत का भी यही अंत हुआ। (देखें : फ्रांस की राज्यक्रांति)

मेसन और डिकसन रेखा (MASON AND DIXON'S LINE) : आज से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व दो अंग्रेज सर्वेक्षक अमरीका के एक भगड़े को तय करने को बुलाए गए।

उनका नाम मेसन और डिकसन था। यह भगड़ा पेंसिलवेनिया और मेरीलैंड की सीमा को लेकर था।

सन् 1632 में चार्ल्स प्रथम ने लार्ड बाल्टीमोर को वह भूभाग दिया था, जिसे आज मेरीलैंड कहते हैं। इसके पचास साल बाद चार्ल्स द्वितीय ने विलियम पेन को पेंसिलवेनिया का भूभाग दिया। जब इन दोनों उपनिवेशों में बहुत-से लोग आकर बस गए तो सीमा को लेकर भगड़ा खड़ा हुआ। अन्त में, सन् 1763 में दोनों उपनिवेशों की राय से मेसन और डिकसन को बुलाकर सर्वेक्षण कराने तथा सीमा-रेखा निश्चित करने का निश्चय किया गया। इस सीमा-रेखा को मेसन और डिकसन रेखा कहते हैं।

मैग्ना कार्टा (MAGNA CHARTA) : यह शब्द लैटिन भाषा का है। इसका अर्थ है, 'महान घोषणापत्र'। यह घोषणापत्र सन् 1215 में इंग्लैंड के राजा जॉन और सामन्तों



राजा जॉन को मैग्ना कार्टा पेश करते हुए सामन्त।

के बीच हुआ एक समझौता था। यह घोषणापत्र लैटिन भाषा में लिखा गया था, क्योंकि उस जमाने में यूरोप में विद्वान लोगों की भाषा लैटिन थी।

राजा जॉन मनमाना शासन करता था। जब वहां के सामन्तों ने यह शिकायत की कि वह उनके कुछ अधिकारों को छीन रहा है, तो उसने इसपर कोई ध्यान नहीं दिया। अन्त में उन्होंने एक घोषणापत्र तैयार किया और राजा से इसे स्वीकार करने को कहा। इस घोषणापत्र में कुछ अधिकारों की सूची थी। जब राजा जॉन ने इसे पढ़ा तो वह चीख पड़ा, 'ये लोग हमारा साम्राज्य ही क्यों नहीं मांग लेते।' उसने सामन्तों को निकाल बाहर किया।

अन्त में सामन्त भड़क उठे और जॉन को लाचार होकर इसपर हस्ताक्षर करने पड़े। यह घोषणापत्र इतना महत्वपूर्ण था कि इसका नाम 'महान घोषणापत्र' पड़ा। इसे इंग्लैंड में स्वतंत्र सरकार की नींव का आधार माना जाता है।



मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई में मिली कुछ वस्तुएं

मैग्ना कार्टा की अनेक घोषणाओं में दो निम्न प्रकार हैं:
“किसी आदमी को बिना कानूनी कार्यवाही के पकड़ा या जेल में बन्द नहीं किया जाएगा।”

“करोँ का निर्धारण राजा अपने-आप नहीं करेगा, और न ही उन्हें जबर्दस्ती वसूल करेगा।”

यह घोषणापत्र आज तक व्यवहार में आता है। आज इंग्लैंड में कानूनों की अवहेलना राजा भी नहीं कर सकता।
(देखें : इतिहास, इंग्लैंड का)

मोहनजोदड़ो (MOHENJO DARO) : 1922 ई० में सिंधु नदी की घाटी में बने कुछ टीलों की खुदाई आरंभ हुई। इससे पता चला कि वहाँ अत्यंत प्राचीन काल में कुछ बड़े ही विशाल नगर विद्यमान थे। जो दो नगर मिले, वे थे मोहनजोदड़ो और हड़प्पा। कुछ समय बाद और भी खुदाइयां हुईं। इनके परिणामस्वरूप जिस सभ्यता पर प्रकाश पड़ा उसे सिंधु घाटी की सभ्यता कहते हैं। यह वैदिक सभ्यता से पुरानी है।

मोहनजोदड़ो सिंधु नदी के दक्षिण में, वर्तमान समय के लरकाना नामक ज़िले में स्थित है। इस नगर में ईंट और पत्थर के मकान बने थे और सड़कें तथा गलियां बड़ी सुव्यवस्थित थीं। यहां अनेक वस्तुएं पाई गई हैं जिनसे नगरवासियों के जीवन पर प्रकाश पड़ता है। ये लोग गेहूं की खेती करते थे और कपास के बने वस्त्र पहनते थे। संभवतः, ये लिखना-पढ़ना भी जानते थे, क्योंकि कई मुद्राओं पर अक्षर लिखे मिलते हैं। यह उस काल के लिए, जो आज से लगभग पांच हजार वर्ष पुराना है, बड़े आश्चर्य की बात है।

यहां रत्न भी मिले हैं, जिनसे पता चलता है कि यहां के लोग देश ही नहीं, विदेशों से भी व्यापार करते थे। जो हथियार प्राप्त हुए हैं वे तांबे और पत्थर के हैं। अभी तक ये लोग लोहे से परिचित नहीं हुए थे। इनके जीवन में घोड़े का भी स्थान नहीं था। ये लोग शिव और शक्ति

की पूजा करते थे। योग-साधना में भी इन्हें पर्याप्त रुचि थी।

मोहनजोदड़ो में एक बहुत बड़ा जलाशय भी मिला है, जो 39 फुट लंबा, 33 फुट चौड़ा और 8 फुट गहरा है। यह पक्की ईंटों का बना है और चारों तरफ दीवारों से घिरा है। जलाशय के एक ओर नहाने के 8 कमरे हैं। संभवतः, इनके ऊपर भी कमरे थे जिनमें लोग रहते होंगे। चारों तरफ एक 15 फुट चौड़ी बारहदरी है। पास में एक कुआं भी है।

नगर के चारों तरफ खाई और दीवार है। यह उसकी सुरक्षा के लिए बनाई गई थी और शायद किले का भी काम देती थी।

युआन च्वाङ (YUAN CHWANG 605-664) : सम्राट हर्षवर्धन के शासन-काल में युआन च्वाङ (ह्वेनत्सांग) ने बौद्ध धर्मग्रंथों को पढ़ने और प्राप्त करने की इच्छा से भारत की यात्रा की। फाहियान की तरह, वह भी अपने यात्रा-वृत्तांत के कारण बहुत प्रसिद्ध है।

युआन च्वाङ ने भाई के चरण-चिह्नों पर चलते हुए बौद्ध धर्म की दीक्षा ली और वह उसके प्रचार में लग गया। उसने भारत-यात्रा की योजना बनाई और सहायता के लिए चीन के राजा से प्रार्थना की। परंतु राजा ने उसे सहायता देने से इन्कार कर दिया। तब उसने अपने ही बल पर यात्रा की तैयारी की। दो साथियों को लेकर वह चल पड़ा। इस समय उसकी अवस्था 24 वर्ष की थी।

कुछ दूर चलने के बाद उसके साथी लौट गए। वे मार्ग की कठिनाइयों को भेल नहीं पाए। अब युआन च्वाङ अकेला आगे बढ़ा। दो वर्ष की यात्रा के बाद वह कश्मीर पहुंचा। वहां वह दो वर्ष रुककर अध्ययन करता रहा।

इसके बाद वह मथुरा, थानेश्वर होता हुआ हर्षवर्धन की राजधानी कन्नौज पहुंचा। वह सम्राट से मिला। फिर अनेक तीर्थों की यात्रा करता हुआ वह नालन्दा पहुंचा।

वहां बौद्ध धर्म और दर्शन का प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। युआन च्वाङ्ग वहां दो वर्ष ठहरकर अध्ययन करता रहा।

फिर वह कांजीवरम् गया। वहां से अनेक स्थानों की यात्रा करता हुआ काबुल पहुंचा। फिर काशगर और खोतन होता हुआ चीन लौट गया। अपने साथ वह अनेक धर्मग्रंथ लाया था। चीन के राजा ने उसका खूब स्वागत किया। जीवन का शेष भाग उसने इन ग्रंथों का अनुवाद करने में ही बिताया।

युआन च्वाङ्ग के यात्रा-वृत्तांत में भारत की तत्कालीन दशा का विस्तृत चित्र मिलता है। वह लिखता है कि हर्षवर्धन की शासन-व्यवस्था बड़ी अच्छी थी। राज्य में कर बहुत कम थे। प्रजा सुखी और सम्पन्न थी। यात्रियों को हर प्रकार की सुविधा दी जाती थी। अपराधियों को कठोर दंड दिए जाते थे, जिससे कि वे फिर अपराध न करें। जाति के बंधन कठोर थे और छुआछूत का बड़ा विचार किया जाता था। बाल-विवाह का प्रचलन था। पर्दे की प्रथा न थी और स्त्री-शिक्षा पर ध्यान दिया जाता था। सती-प्रथा प्रचलित थी। लोग विष्णु और शिव की पूजा करते थे। बौद्ध भी अब मूर्ति-पूजा करने लगे थे।

रज़िया सुल्ताना (RAZIA SULTANA) : भारत पर एक लम्बे समय तक मुसलमानों का शासन रहा। पर इस पूरी अवधि में एक रज़िया ही पहली और अंतिम मुस्लिम नारी थी जिसे राजसिंहासन पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

रज़िया दिल्ली के सुल्तान अलतमश (इल्तुतमिश) की बेटी थी और अपने सभी भाइयों से अधिक योग्य थी। अलतमश ने अपने जीवन-काल में ही उसे अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। एक कुशल शासक के सभी गुण उसमें विद्यमान थे। परंतु 1236 ई० में जब अलतमश मर गया तो तुर्क सरदारों ने रज़िया की जगह उसके भाई रकुनूद्दीन फ़ीरोज़ को गद्दी पर बैठाया, क्योंकि वे एक स्त्री के अनुशासन में रहने को तैयार नहीं थे। लेकिन रकुनूद्दीन बिल्कुल निकम्मा निकला और शासन को संभाल नहीं सका। इसलिए छः महीने बाद ही सरदारों ने उसकी हत्या कर दी और रज़िया को दिल्ली के सिंहासन पर बैठाया गया।

रज़िया कुशल और वीर स्त्री थी। वह पर्दा नहीं करती थी, मदन कपड़े पहनकर दरबार में बैठती थी और युद्ध में घोड़े पर सवार होकर सेना का संचालन करती थी। वह अमीरों और सरदारों के इशारों पर न चलकर अपने ढंग से शासन चलाती थी।

कट्टरपंथी मुसलमान सरदार उसके दुःसाहस और नये रंग-ढंग को सहन नहीं कर सके और उसके विरुद्ध षड्यंत्र करने लगे। सबसे पहले लाहौर के शासक ने विद्रोह का झंडा खड़ा किया, पर रज़िया ने विद्रोहियों को कुचल

दिया। तभी भटिण्डा के शासक अलतूनिया ने विद्रोह कर दिया। रज़िया उसके दमन के लिए एक सेना लेकर पहुंची, पर इस बार वह हार गई और बंदी बना ली गई। फिर दिल्ली में भी विद्रोह हुआ और अमीरों ने उसके भाई बहराम को दिल्ली का सुल्तान बना दिया।

रज़िया ने इस बीच अलतूनिया से विवाह कर लिया और वे दोनों अपनी सेना लेकर दिल्ली की ओर बढ़े। परंतु भाग्य ने उनका साथ नहीं दिया। बहराम की सेना ने उन्हें परास्त कर दिया और वे अपने प्राणों की रक्षा के लिए जंगलों में भाग गए। वहां पर डाकुओं ने उनकी हत्या कर दी। इस प्रकार 1240 ई० में रज़िया सुल्ताना के जीवन का अंत हो गया।

राजेन्द्र चोल (RAJENDRA CHOLA) : दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध चोल वंश का, जिसकी राजधानी तंजोर थी, सबसे पराक्रमी शासक राजेन्द्र चोल था। इसने सन् 1014 से 1042 तक शासन किया। राजेन्द्र ने पहली बार दक्षिण-पूर्वी एशिया के मलाया, सुमात्रा, जावा आदि द्वीपों को जीतकर वहां अपना साम्राज्य स्थापित किया, जिससे इस भाग में भारतीय संस्कृति का प्रचार हुआ।

राजेन्द्र राजराज का पुत्र था। राजराज भी पराक्रमी शासक था और उसने साम्राज्य को दूर-दूर तक विस्तृत किया था। राजेन्द्र ने उसके कार्य को और भी आगे बढ़ाया। उसने बंगाल तक का समस्त देश अपने राज्य में मिला लिया। मगध भी उसके अधीन हो गया। फिर उसने दक्षिण के अन्य राज्यों पर विजय प्राप्त की।

उसकी नौसेना बड़ी शक्तिशाली थी। उसे आधार बनाकर उसने अण्डमान, निकोबार तथा बर्मा के कुछ प्रदेशों को जीता। फिर पूर्वी द्वीपसमूहों पर आक्रमण किया और उन्हें जीता। उसकी इन विजयों से विदेशों में भारतीय संस्कृति का प्रसार हुआ। अब भी वहां उसके विपुल चिह्न मिलते हैं।

राजेन्द्र ने लगभग 30 वर्ष तक सफलतापूर्वक राज्य किया। उसके शासन में धर्म, साहित्य और कला की बड़ी उन्नति हुई। उसने स्वयं अनेक नगरों, भवनों तथा मंदिरों का निर्माण कराया था।

राजेन्द्रप्रसाद, डा० (Dr. RAJENDRA PRASAD 1884-1963) : डा० राजेन्द्रप्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति और देश के प्रधान नेताओं में से थे। स्वतंत्रता-संग्राम के दिनों में ही लोग उन्हें प्रेम से 'बिहार का गांधी' कहने लगे थे।

राजेन्द्र बाबू का जन्म बिहार के सारन जिले के जीरा-देई गांव में हुआ। वे पहले छपरा के हाईस्कूल में और फिर कलकत्ता के डफ् कालेज में पढ़े। राजेन्द्र बाबू पढ़ाई में शुरू से ही बहुत तेज थे और परीक्षा में हर बार प्रायः प्रथम आया करते थे। 1915 में कानून की परीक्षा पास कर

उन्होंने पटना हाईकोर्ट में वकालत शुरू कर दी। अपनी असाधारण योग्यता और अध्यवसाय के कारण वे शीघ्र ही पटना के सर्वश्रेष्ठ वकील माने जाने लगे।

सार्वजनिक कार्यों की ओर उनकी रुचि 1905 के स्वदेशी आन्दोलन के समय से ही हो गई थी। अखिल भारतीय छात्र संघ के संगठन व संचालन में उन्होंने महत्वपूर्ण योग दिया और उनकी कोशिशों से छात्र संघ एक जीवन्त राष्ट्रीय संगठन बन गया। 1917 में जब गांधीजी नील की खेती करनेवाले किसानों की समस्याओं के अध्ययन के लिए चम्पारन गए तो राजेन्द्र बाबू की उनसे भेंट हुई। इस भेंट ने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी। गांधीजी की कार्य-शैली और महानता से वे इतने प्रभावित हुए कि सदा के लिए उनके अनन्य भक्त बन गए।

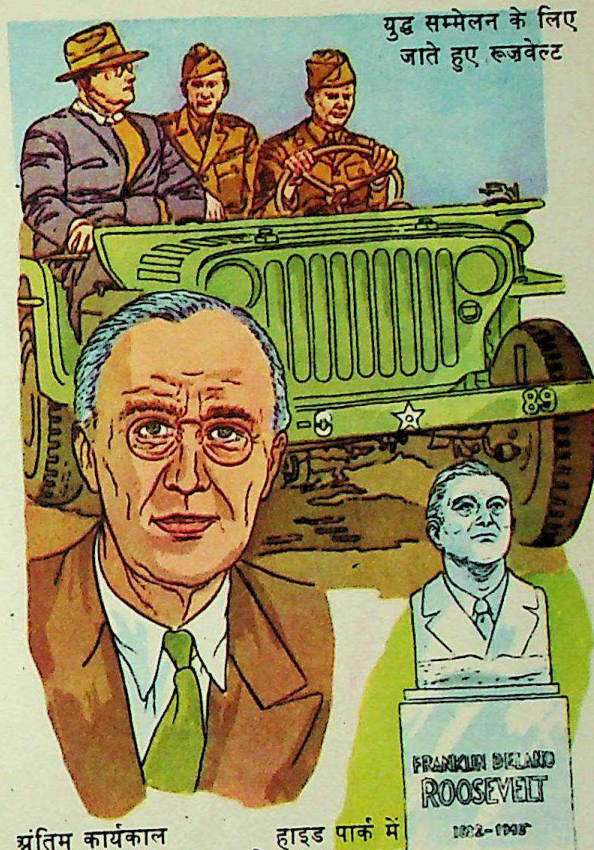
1920 में रॉलेट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह चला। गांधीजी के आह्वान पर राजेन्द्र बाबू वकालत छोड़ स्वतंत्रता-संघर्ष में कूद पड़े। बिहार के नेतृत्व का भार उन्हींके कंधों पर पड़ा। तब से उनका सारा समय देश-सेवा में बीतने लगा। 1921 में वे पहली बार गिरफ्तार हुए और सत्याग्रह बंद होने पर रचनात्मक कार्य में जुट गए। 1930 के सत्याग्रह में उन्होंने फिर जेलयात्रा की।

राजेन्द्रप्रसाद जेल में ही थे कि 1934 में बिहार में भयंकर भूकम्प आया। बिहार का उत्तरी भाग खंड-खंड हो गया। कितने ही शहर जमीन में धंस गए और गांव बाढ़ में बह गए। राजेन्द्र बाबू उन दिनों बीमार थे। इसलिए उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया। बीमारी की परवाह न करते हुए उन्होंने भूकम्प-पीड़ितों की सहायता का कार्य अपने हाथ में ले लिया। इस कार्य में उन्होंने अपनी संगठन-शक्ति और कार्यक्षमता का ऐसा उज्ज्वल उदाहरण रखा कि उनका यश सारे देश में फैल गया।

1934 में उन्हें बम्बई के कांग्रेस अधिवेशन का अध्यक्ष चुना गया। साल-भर तक वे देश का भ्रमण करते रहे और हर प्रान्त में राष्ट्रीय जागृति पैदा करते रहे। 1942 के स्वतंत्रता-संघर्ष में अन्य कांग्रेसी नेताओं की भांति उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया।

स्वतंत्रता के बाद जब देश का नया संविधान बनने लगा तो उन्हें विधान सभा का अध्यक्ष चुना गया। 1950 में वे भारत लोक गणराज्य के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए और 12 वर्ष तक अत्यन्त योग्यता के साथ देश का शासन चलाते रहे। राष्ट्रपति पद से रिटायर होने के बाद वे फिर से पटना के अपने सदाकत आश्रम में रहने लगे थे। 28 फरवरी, 1963 को उनका अकस्मात् स्वर्गवास हो गया।

रूजवेल्ट, फ्रैंकलिन डेलनो (FRANKLIN DELANO ROOSEVELT 1882-1945) : संयुक्त राज्य अमरीका का दो बार से अधिक राष्ट्रपति चुने जाने का सौभाग्य केवल एक ही व्यक्ति को मिला है। वे हैं, अमरीका के बत्तीसवें



अंतिम कार्यकाल में रूजवेल्ट

हाइड पार्क में रूजवेल्ट का स्मारक

राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डेलनो रूजवेल्ट। वे चार बार राष्ट्रपति चुने गए।

रूजवेल्ट ने हार्वर्ड में शिक्षा पाने के बाद कोलम्बिया लॉ स्कूल में कानून का अध्ययन किया। अठाईस वर्ष की आयु में वे राजनीति में आए। वे न्यूयार्क राज्य की सीनेट के सदस्य चुने गए। बाद में राष्ट्रपति विल्सन ने उनको नौसेना विभाग में सहायक सचिव बना दिया। उनके अच्छे कार्य से प्रभावित होकर डेमोक्रेटिक पार्टी ने उन्हें उप-राष्ट्रपति पद के लिए अपना उम्मीदवार चुना। लेकिन सन् 1920 के चुनाव में वे हार गए।

इसके बारह वर्ष बाद वे सन् 1932 में राष्ट्रपति पद के लिए खड़े हुए और जीत गए। वह समय अमरीका के लिए बड़ा कठिन था। आर्थिक मंदी के दिन थे। लेकिन अपनी योग्यता और परिश्रम द्वारा वे अमरीका को कठिनाइयों से बचा लाए। वे बड़ी आसानी से दुबारा राष्ट्रपति चुन लिए गए, क्योंकि बेरोजगारी की समस्या हल करके उन्होंने बड़ी लोकप्रियता प्राप्त कर ली थी।

जब दूसरी बार उनका कार्यकाल समाप्त होने को था, तो दूसरा महायुद्ध छिड़ चुका था। अमरीका उस समय तक युद्ध में शामिल नहीं हुआ था। लेकिन उस समय लोगों ने राष्ट्रपति बदलना ठीक नहीं समझा। इस प्रकार वे तीसरी बार भी राष्ट्रपति हो गए। इसके बाद, पलं हाब्स पर जापानी हवाई जहाजों की बमबर्षा के कारण

अमरीका को भी युद्ध में सम्मिलित होना पड़ा। उस समय रूजवेल्ट को युद्ध जीतने के लिए सारे देश की शक्ति उत्पादन-कार्यों में लगानी पड़ी। वे इसमें सफल हुए। इसी कारण वे चौथी बार भी राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। लेकिन युद्ध समाप्त होने के पहले ही अमरीका के इस महान राष्ट्रपति का देहान्त हो गया।

रैवरे, पॉल (PAUL REVERE 1735-1818) : पॉल रैवरे वैसे तो चांदी की चीजें बनाते थे, पर उनकी गिनती अमरीका के बड़े देशभक्तों में की जाती है। अमरीकी उप-निवेश जब इंग्लैंड के शासन के विरुद्ध विद्रोह कर रहे थे, वे उस समय बोस्टन में रहते थे। कितने ही दूसरे देशभक्तों के साथ वे इस बात का आन्दोलन कर रहे थे कि उप-निवेशों के लोगों को जब तक शासन में प्रतिनिधित्व न मिले, लगान नहीं देना चाहिए।

1775 में ब्रिटिश सेना बोस्टन में जमा हुई। उधर विद्रोहियों ने बोस्टन के निकट कॉनकॉर्ड में लड़ाई का साजो-सामान इकट्ठा कर रखा था। उनके कुछ सैनिक ऐसे थे जो वैसे तो अपना-अपना काम करते थे, पर मौका पड़ने पर एक मिनट में ही लड़ाई के लिए तैयार हो जाते थे। ये मिनटमैन कहलाते थे।

विद्रोहियों को यह समाचार मिला कि ब्रिटिश सेना बोस्टन से कॉनकॉर्ड के लिए कूच करनेवाली है। लेकिन कोई यह नहीं जानता था कि वह थलमार्ग से आएगी या जलमार्ग से। इसलिए योजना यह बनाई गई कि सेना के कूच करते ही बोस्टन के गिरजे की बुर्जी पर से लालटेन से इशारा किया जाए। यदि सेना थलमार्ग से चले तो एक लालटेन और यदि जलमार्ग से चले तो दो लालटेन जलाई जाएं।

पॉल रैवरे कई दिन सारी-सारी रात घोड़ा कसे उस गिरजे पर टकटकी लगाए रहे। आखिर 18 अप्रैल, 1775



पॉल रैवरे ने बुर्जी पर रोशनी देखी।

को दो लालटेन चमकीं। उन्होंने फौरन अपना घोड़ा सर-पट दौड़ा दिया और कुछ देर में ही यह खबर सभी मिनट-मैनो को मिल गई। जब ब्रिटिश सेना कॉनकॉर्ड पहुंची तो विद्रोही उनसे टक्कर लेने के लिए वहां पहले से डटे थे।

कवि लांगफेलो ने पॉल रैवरे के आधी रात के उस तूफानी दौरे पर एक प्रसिद्ध कविता लिखी है।



अनुश्रुति है कि रोम की स्थापना जुड़वां भाइयों रोमुलस और रेमस ने की थी। वे बचपन में ही अपने मां-बाप से बिछुड़ गए थे और एक मादा भेड़िये द्वारा पाले गए थे।

रोम, प्राचीन (ANCIENT ROME) : लगभग 3,000 वर्ष पूर्व मध्य यूरोप की एक चरवाहा जाति के लोग लड़ते-भिड़ते दक्षिण की तरफ घुस आए और इटली प्रायद्वीप के मध्यवर्ती भाग में बस गए। ये उन्हीं चरवाहों के वंशज थे जिन्होंने यूनान पर आक्रमण किया था। इनमें से कुछ लैटिन कहलाते थे। उन्होंने टाइबर नदी के किनारे सात पहाड़ियों पर गांव बसाए। इन्हीं गांवों के धीरे-धीरे मिलने से रोम का निर्माण हुआ। यही प्राचीन रोम की शुरुआत थी।

प्राचीन काल के रोमनों के मकानों में एक कमरा होता था, जिसकी दीवारें और छत मिट्टी की होती थीं। छत में एक मोखा होता था, जो धुआं का काम करता था। विद्यालय नहीं थे। पिता स्वयं ही अपने बच्चों को पढ़ाते थे। पुरुष खेतों में काम करते थे। अगर पड़ोसी शत्रु हमला करता, तो वे हल छोड़कर लड़ने चले जाते थे। कड़े परिश्रम और सैनिक अभ्यास से रोमन जाति बड़ी बहादुर और कष्ट-सहिष्णु बन गई। रोमनों ने अपने पड़ोसी एट्रस्कनों से भी, जो उत्तर में रहते थे, बहुत कुछ सीखा। एट्रस्कन जानते थे कि धातुओं से किस प्रकार काम लेना चाहिए। वे वास्तुकला और व्यापार में भी काफी आगे बढ़े हुए थे।

500 ई० पू० में रोमनों ने अपने गणतंत्र की स्थापना की। वे एक की बजाय दो राष्ट्रपति चुनते थे। ये राष्ट्रपति कॉन्सल कहलाते थे। कोई भी काम दोनों कॉन्सलों की राय

के बिना नहीं हो सकता था। अगर एक कॉन्सल किसी काम को करना चाहता और दूसरा उसे उचित नहीं समझता, तो वह वीटो के विशेषाधिकार से उसे ऐसे काम से रोक सकता था। शुरू में गणतंत्र में लोकतांत्रिकता नहीं थी।

मध्य इटली में रोमनों ने अनेक बस्तियां बसा लीं। पड़ोसी राज्यों में से अनेक को उन्होंने जीत लिया। दो शताब्दियों में रोमन पूरे प्रायद्वीप के स्वामी बन बैठे। कई दुश्मनों को अपनी नीतिकुशलता से रोमनों ने अपना मित्र बना लिया। इनमें दक्षिणी इटली की कुछ यूनानी बस्तियां भी शामिल थीं। रोमनों ने इन बस्तियों में सुन्दर और बड़े मन्दिर देखे। खुली नाट्यशालाएं देखीं। उन्हें यूनानियों का रहन-सहन बड़ा पसन्द आया।

उत्तरी अफ्रीका में भूमध्य सागर की संकरी पट्टी के पार कार्थेज नाम का बन्दरगाह था। यह नगर पश्चिम में रोम का एकमात्र प्रतिद्वन्द्वी था। यह बड़ा समृद्ध और सुन्दर नगर था। रोम और कार्थेज की लड़ाई का कारण रोम के समुद्री व्यापार का बढ़ना था। रोम और कार्थेज में लगभग 120 वर्ष तक युद्ध चला। हनीबाल के सेनापतित्व में कार्थेज की सेना ने रोम पर आक्रमण कर दिया। लेकिन इस आक्रमण में हनीबाल पराजित हो गया। बाद में रोमनों ने अफ्रीका तक हनीबाल का पीछा किया और कार्थेजवासियों को हरा दिया। रोमनों ने कार्थेज को जलाकर भस्म कर दिया। रोम पूर्व की तरफ भी बढ़ा। 133 ई० पू० तक रोमन बस्तियां भूमध्य सागर के किनारे-किनारे काफी दूर तक बस गई थीं।

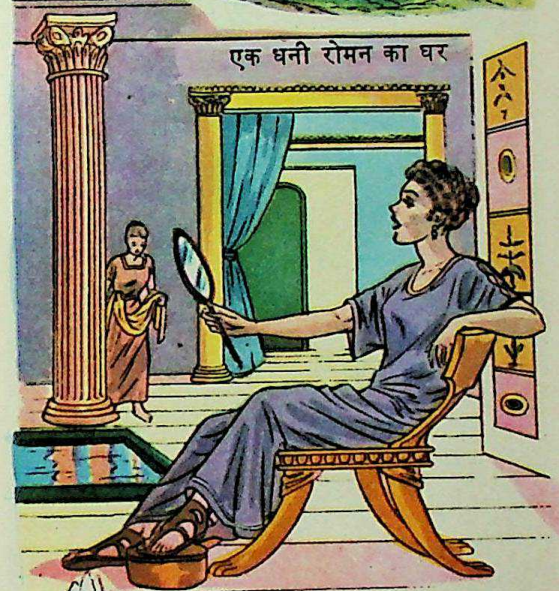
अब रोमनों की समृद्धि बढ़ने लगी थी। वे नये-नये राज्य जीतते थे, उन्हें लूटते थे और समुद्र द्वारा अपना व्यापार बढ़ाते थे। रोम के साधारण मकानों का स्थान बड़े और सुन्दर भवन लेने लगे। इनके बीच में बाग होते थे। भवनों में कई कमरे होते थे। पानी के लिए नल लगे होते थे। कमरों को गरम करने की व्यवस्था होती थी। तस्वीरों, संगमरमर की मूर्तियों और लकड़ी के बढ़िया से बढ़िया सामान से ये मकान सजाए जाते थे। हर बड़ी हवेली के बाहर एक संतरी पहरा देता था। इसे जेनीटर कहा जाता था। हर गृहस्वामी के पास सेवा के लिए दास-दासियां होती थीं।

रोमनों ने विद्यालय खोल दिए। पढ़े-लिखे यूनानी गुलाम इनमें अध्यापन करते थे। बहुत-से रोमन युवक उच्च शिक्षा प्राप्त करने ऐथेन्स जाते थे। शिक्षित रोमन यूनानी और लैटिन दोनों भाषाएं जानते थे। वे लैटिन भाषा में इतिहास, नाटक और कविताएं लिखते थे, लेकिन उनकी शैली यूनानी होती थी। यह रोमन गणतंत्र का स्वर्णयुग था।

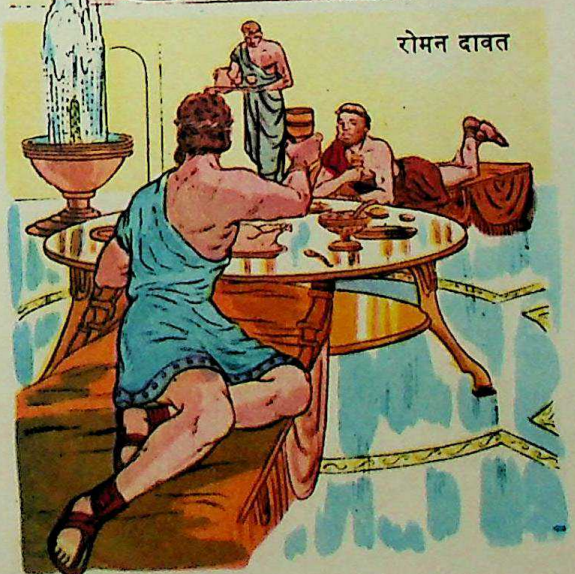
दुर्भाग्यवश इटली में उन दिनों भी बहुत-से निर्धन और अशिक्षित लोग थे। सैनिक युद्ध से लौटने के बाद अपने खेतों में बहुत अधिक पैदावार नहीं कर पाते थे। उनकी धनी लोगों के खेतों पर भी आवश्यकता नहीं थी।



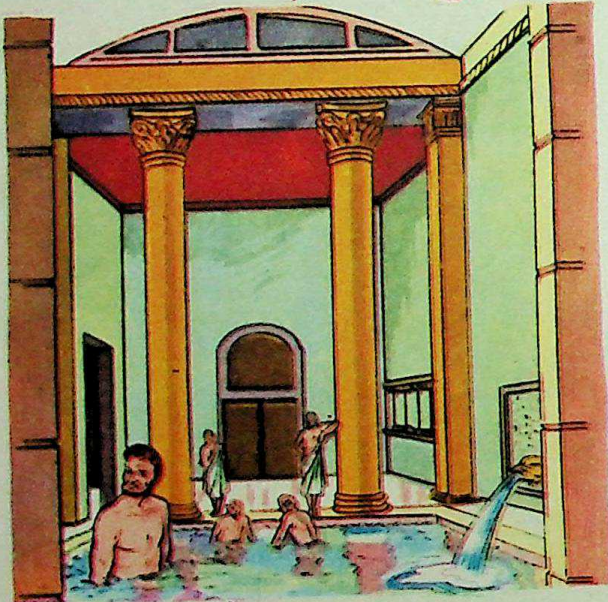
आरंभिक रोमन जातियों का जीवन



एक धनी रोमन का घर



रोमन दावत

रोम में विजय का
एक जुलूस

रोमन स्नानागार

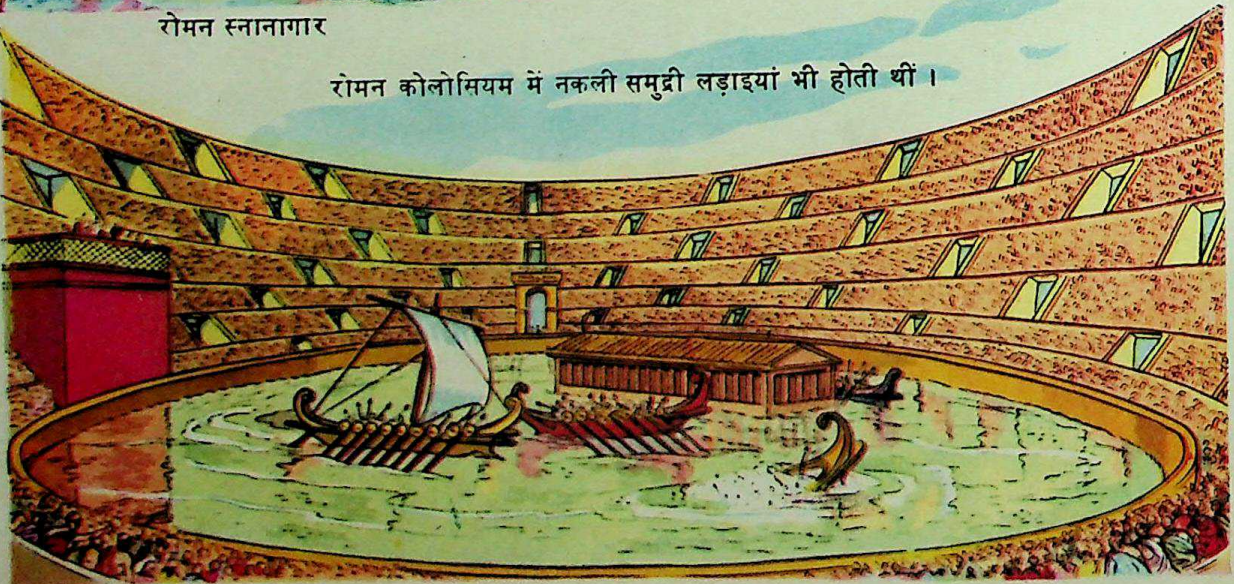
क्योंकि वहां गुलामों से काम लिया जाता था। बहुत-से परिवार खेत छोड़कर रोम चले आते थे। वे गंदे कचों में रहते थे। सरकारी भण्डारों से मिली भिक्षा पर निर्वाह करते थे और निःशुल्क मनोरंजनों में भाग लेते थे। उन दिनों रथों की दौड़ें, पहलवानों की कुश्तियां और जंगली जानवरों की लड़ाइयां बहुत हुआ करती थीं।

अमीरों और गरीबों के बीच जो खाई थी, उसकी वजह से कुछ समय बाद रोम में गृहयुद्ध छिड़ गया। यह युद्ध सौ बरस तक चलता रहा। कुछ लोगों ने गरीबों का पक्ष लेकर अमीरों और सरकार के नेताओं से युद्ध किया। जूलियस सीज़र ऐसा ही नेता था। दस बरस तक सीज़र ने कोशिश की कि रोमन साम्राज्य का धुर उत्तर तक विस्तार हो जाए। उसने फ्रांस को जीत लिया और समुद्र पार करके ब्रिटिश द्वीपों पर भी कब्ज़ा कर लिया। लेकिन वह 49 ई० पू० में रोम वापस लौट आया और शीघ्र ही रोम का सर्वोच्च शासक बन गया। 44 ई० पू० में सीज़र की उसके दुश्मनों ने हत्या कर दी थी। सीज़र के दुश्मन यह नहीं चाहते थे कि गणतंत्र में कोई परिवर्तन किया जाए।

30 ई० पू० में सीज़र के गोद लिए पुत्र और भतीजे ऑक्टेवियस ने गृहयुद्ध में विजय पाई। वह रोम का पहला सम्राट बना। सम्राट होने के बाद उसने अपना नाम सीज़र ऑगस्टस रखा। जर्जर और नष्टप्राय गणतंत्र के स्थान पर ऑगस्टस ने रोम और उसके साम्राज्य के लिए सुदृढ़ सरकार की स्थापना की।

इसके बाद दो सौ वर्ष शान्तिपूर्वक गुजरे। रोमन सम्राटों ने अपना साम्राज्य पश्चिम में आजकल के स्कॉटलैंड से लेकर पूर्व में भारत के पास तक फैला लिया। सम्राटों ने बढ़िया पत्थर की सड़कें बनवाईं। अच्छी सेना बनाई। बुद्धिमान गवर्नर नियुक्त किए। अच्छे कानून बनाए। कृषि की उन्नति हुई। व्यापार-धंधे बढ़े। लन्दन

रोमन कोलोसियम में नकली समुद्री लड़ाइयां भी होती थीं।



और पेरिस जैसे छोटे-छोटे गांव महत्त्वपूर्ण व्यापारिक नगर बन गए।

सम्राटों ने रोम का अधिकांश भाग संगमरमर का बनवा दिया। रोम शानदार नगर बन गया। रोम में एक बहुत बड़ी रंगशाला थी, जिसका नाम कोलोसियम था। उसमें पानी भरकर नकली समुद्री लड़ाइयां तक होती थीं।

पादरियों द्वारा रोम में ईसाई धर्म का प्रचार शुरू हुआ। सन् 313 में सम्राट कॉन्स्टेन्टाइन ने इसे राजधर्म के रूप में स्वीकार कर लिया और ईसाई धर्म रोम का प्रमुख धर्म बन गया।

कॉन्स्टेन्टाइन के कुछ पूर्व ही रोम में दुर्बलता के लक्षण प्रकट होने लगे थे। कुछ सम्राट बड़े निर्दयी हुए। वे अपने आराम के लिए किसानों और व्यापारियों से बहुत ज्यादा कर लेने लगे। साम्राज्य के क्षीण होते ही उत्तर से बर्बर जातियों के आक्रमण शुरू हो गए। ये जातियां साम्राज्य के अन्दर आ बसीं। उधर पूर्व में फारस बहुत बड़ा खतरा बन गया। सम्राट कॉन्स्टेन्टाइन ने अपनी राजधानी रोम से हटाकर बॉसफोरस के तट पर बाइजेंटियम में बसाई। बाद में इस नगर का नाम सम्राट के नाम पर कॉन्स्टेन्टीनोपल या कुस्तुंतुनिया हो गया।

कॉन्स्टेन्टाइन के बाद रोमन साम्राज्य पूर्वी और पश्चिमी दो भागों में विभक्त हो गया। यह विभाजन आक्रमक बर्बर जातियों के लिए बड़ा लाभदायी सिद्ध हुआ। अंत में उन्होंने रोम को जीत लिया। पश्चिमी साम्राज्य खंड-खंड होकर नष्ट हो गया। फिर उसे कोई एक नहीं कर सका। पूर्वी साम्राज्य काफी दिनों चला। यह बाइजेंटाइन साम्राज्य के नाम से विख्यात हुआ।

रोम के उत्थान और पतन की कहानी उसकी पूरी कहानी नहीं है। पश्चिमी साम्राज्य के खंड ही आधुनिक यूरोप के बहुत-से देश हैं। लैटिन भाषा इटालियन, फ्रेंच, स्पेनिश और पुर्तगाली भाषाओं की जननी है। रोमन-कानून यूरोप और अमरीका के कानूनों की आधारशिला हैं। आरंभिक ईसाई धर्म ने यूनानी और लैटिन भाषाओं में लिखित ग्रंथों की रक्षा की। लगभग सारी दुनिया में यूनान और रोम की वास्तुकला का अनुकरण हुआ।

लक्ष्मीबाई, महारानी (MAHARANI LAKSHMIBAI)

1835-1858) : भांसी की महारानी लक्ष्मीबाई का नाम भारत के इतिहास में सदा अमर रहेगा। उनका जन्म सतारा के पास बाई नाम के गांव में हुआ। पिता मोरोपन्त, बाजीराव पेशवा के भाई अघा साहब के पास काम करते थे। अघा साहब की मृत्यु के बाद वे पेशवा के पास ही ब्रह्मवर्त में आ गए। लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम मनुबाई था।

मनु बहुत ही बुद्धिमती और साहसी बालिका थी। बाजीराव उसे अपनी बेटी की तरह मानते थे। उसकी शिक्षा उनके पुत्रों, नाना साहब और राव साहब के साथ ही हुई।

उनके साथ बचपन में उसने घुड़सवारी और शस्त्रविद्या भी सीखी। बड़ी होने पर मनु का विवाह भांसी के महाराज गंगाधर राव के साथ हो गया। विवाह के बाद उसका नाम लक्ष्मीबाई रखा गया। महारानी के एक पुत्र हुआ, पर वह तीन महीने बाद ही मर गया। कुछ दिन बाद गंगाधर राव की भी मृत्यु हो गई। मरने से पहले उन्होंने दामोदर राव नाम के एक बालक को गोद लिया था।

भारत में उन दिनों अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कंपनी का राज्य था। कंपनी की नीति यह थी कि जिस राजा के कोई पुत्र नहीं होता था उसके राज्य को वह अपने अधिकार में कर लेती थी। गंगाधर राव के मरने पर कंपनी ने भांसी में भी अपनी सेना भेज दी। महारानी ने इस अन्याय के



महारानी लक्ष्मीबाई और उनकी मुहर

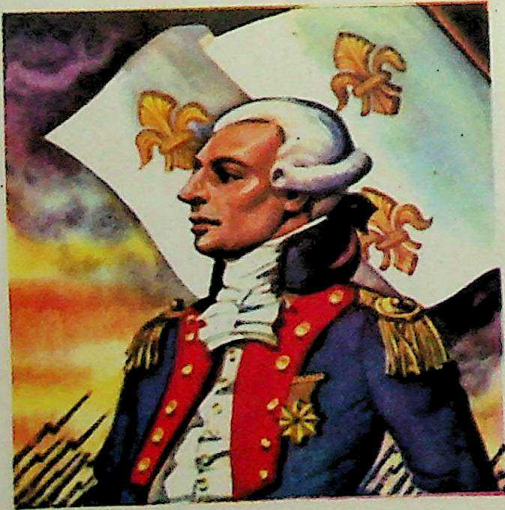
विरुद्ध बहुत आवाज उठाई, पर कोई सुनवाई नहीं हुई।

तभी 1857 में अंग्रेजों के विरुद्ध जगह-जगह विद्रोह छिड़ गया। भांसी की सेना भी विद्रोही हो गई। वहां एक-एक अंग्रेज चुन-चुनकर मार डाला गया। महारानी ने अब राज्य की बागडोर अपने हाथ में ले ली। अंग्रेजों ने एक बड़ी सेना भांसी पर आक्रमण के लिए भेजी। आठ दिन तक भयंकर युद्ध हुआ। 1857 के विद्रोह का नेता तात्या टोपे अपनी सेना लेकर महारानी की मदद के लिए बढ़ा, पर उसकी सेना अंग्रेजी सेना से हार गई। अंग्रेजों ने अब पूरी शक्ति से भांसी पर हमला किया। महारानी ग्यारह दिन तक बड़ी बहादुरी के साथ लड़ती रहीं। जब विजय की कोई आशा नहीं रही तो उन्होंने आठ वर्ष के दामोदर राव को अपनी पीठ से बांधा और वे एक हजार सैनिकों के साथ अंग्रेजी सेना को चीरती हुई निकल गईं। बिना कुछ खाए-पिए, निरन्तर घोड़ा दौड़ाते हुए वे कालपी पहुंचीं।

भांसी जीतने के बाद अंग्रेजी सेना कालपी पर चढ़ आई। घमासान युद्ध हुआ। महारानी अब तात्या टोपे और राव साहब के साथ ग्वालियर की ओर बढ़ीं। उन्होंने ग्वालियर का किला जीत लिया। कुछ दिन बाद ग्वालियर में भी अंग्रेजी सेना से युद्ध हुआ। महारानी ने इस युद्ध में बड़ी वीरता दिखाई। पर अंग्रेजी सेना की शक्ति बहुत अधिक थी। रानी युद्ध में बुरी तरह जख्मी हो गई और लड़ते-लड़ते ही वीरगति को प्राप्त हुई। उनके कुछ सैनिक तुरन्त शव को उठाकर पास की एक कुटिया में ले गए। अंग्रेज सैनिकों के पहुंचने से पहले ही चिता बनाकर उनका दाहकर्म कर दिया गया। ग्वालियर में उसी स्थान पर उनकी समाधि बनी हुई है।

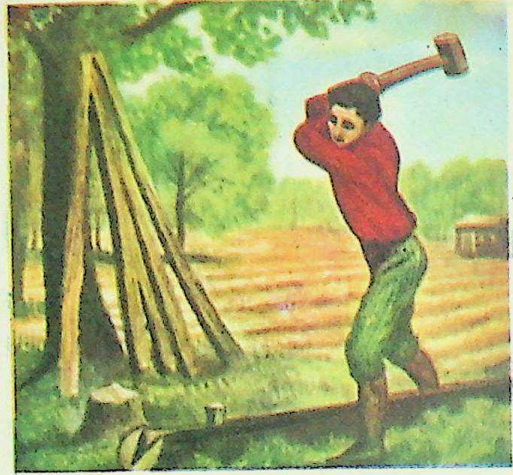
लफ़ायते, मार्क्विस् द (MARQUIS DE LAFAYETTE 1757-1834) : सन् 1777 में अमरीकी क्रान्तिकारी युद्ध छिड़ा। जॉर्ज वाशिंगटन के नेतृत्व में तेरह अमरीकी उपनिवेश स्वतंत्रता के लिए ब्रिटेन के विरुद्ध लड़ रहे थे। वाशिंगटन के पास न तो पर्याप्त हथियार थे, न ही उनके सैनिक अच्छी तरह प्रशिक्षित थे। लेकिन सौभाग्य से उनके पास मार्क्विस् द लफ़ायते जैसे कुछ बहुत अच्छे सहायक सेनापति थे।

लफ़ायते एक फ्रांसीसी सामंत था। उसने अपने देश से काफी धन, जन और हथियार जुटाए। वह जब अमरीका में आया था तो उसकी अवस्था केवल 20 वर्ष थी। लेकिन

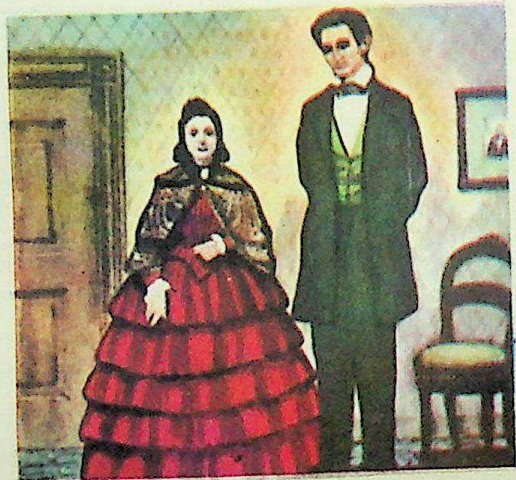


लफ़ायते क्रान्तिकारी युद्ध का एक योग्य सेनापति था।

फिर भी वह जनता का एक सुयोग्य नेता सिद्ध हुआ। युद्ध के बाद वह फ्रांस लौट गया। फ्रांस की क्रान्ति में उसपर न तो सामन्त वर्ग का विश्वास था और न ही क्रान्तिकारियों का। वह अपना सारा धन और सारे मित्र गंवा बैठा। फ्रांस और आस्ट्रिया के युद्ध में उसे बन्दी बना लिया गया। बाद में नेपोलियन ने उसे मुक्त किया।



युवक लिंकन शहतीर चीरते हुए



अब्राहम लिंकन और उनकी पत्नी मेरी टॉड लिंकन

लिंकन, अब्राहम (ABRAHAM LINCOLN 1809-1865) : लिंकन अमरीका के सबसे प्रमुख उन्नायक और सोलहवें राष्ट्रपति थे। कैंटकी राज्य में अपने पिता के फार्म पर काम करने की स्थिति से उठकर वे राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद पर पहुंचे।

उन्नीस वर्ष की अवस्था तक लिंकन ने नगर नहीं देखा था। तभी इनके माता-पिता इलिनॉय राज्य के न्यू सलेम नगर में चले गए। जब इनका परिवार न्यू सलेम में पहुंचा तब वहां चुनाव चल रहा था। चूंकि लिंकन पढ़े-लिखे थे, इसलिए उन्हें मतों का लेखा रखने का काम सौंपा गया। यहीं से राजनीति में लिंकन की दिलचस्पी बढ़ी। चुनाव के अवसर पर ही उनकी भेंट मेंटर ग्राहम नामक एक अध्यापक से हुई। दोनों में काफी मित्रता हो गई। ग्राहम की सहायता से ही लिंकन अपनी शिक्षा की कमियों को पूरा कर सके।

कुछ ही दिनों में लिंकन न्यू सलेम में काफी लोकप्रिय हो गए। वे राज्य की विधान सभा के लिए प्रतिनिधि चुने गए। अपनी भाषण-कला के कारण उन्हें एक वकील के

रूप में बहुत सफलता मिली। बाद में वे वकालत करने के लिए स्प्रिंगफील्ड चले गए।

सन् 1842 में उन्होंने मेरी टॉड से विवाह किया। यह एक अच्छे घराने की लड़की थी। लिंकन के जीवन में यह बहुत सहायक सिद्ध हुई। बाद में वे कांग्रेस (संसद) के सदस्य चुने गए।

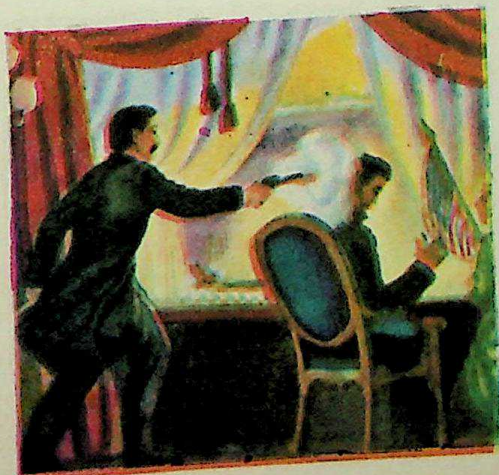
लिंकन अब गुलामों के मुक्तिदाता के रूप में प्रसिद्ध हो गए। पहले तो दास-प्रथा के ऊपर प्रहार करने के कारण उन्हें बहुत क्षति उठानी पड़ी, लेकिन वे अमरीका के दक्षिणी राज्यों में गुलामों के मालिकों के विरोध के बावजूद, अपनी धुन में लगे रहे। सन् 1861 में वे अमरीका के सोलहवें राष्ट्रपति चुने गए।

उनके राष्ट्रपति बनने के एक मास बाद उत्तरी और दक्षिणी राज्यों में गृहयुद्ध छिड़ गया। लिंकन ने इस परिस्थिति का सामना बहुत बुद्धिमानी से किया। युद्ध खत्म होने पर, सन् 1862 में उन्होंने दासों की मुक्ति के घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किए।

लिंकन दूसरी बार अमरीका के राष्ट्रपति चुने गए।

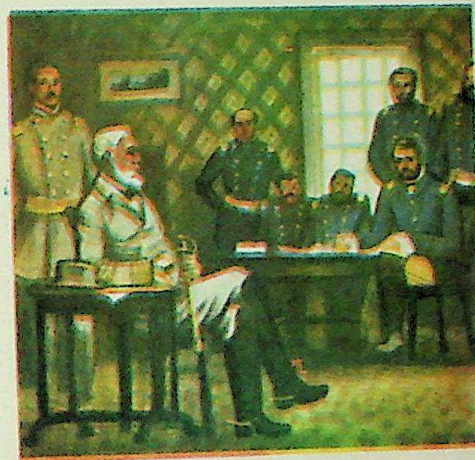


राष्ट्रपति के रूप में लिंकन का प्रथम भाषण



14 अप्रैल, 1865 को नाटकगृह में लिंकन की हत्या

यद्यपि अमरीका के वे सबसे लोकप्रिय व्यक्ति थे, लेकिन उनके कुछ शत्रु भी हो गए थे। 14 अप्रैल, 1865 को जब वे वाशिंगटन में एक नाटक देख रहे थे तो उसी समय एक हत्यारे ने उन्हें गोली मार दी। इसके कुछ घंटे बाद ही उनका देहान्त हो गया।



रॉबर्ट ली ने ग्रांट के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।

ली, रॉबर्ट ई० (ROBERT E. LEE 1807-1870) : अमरीकी गृहयुद्ध के सबसे प्रसिद्ध नेताओं में ली भी एक था।

ली कुछ दिनों तक वेस्ट प्वाइंट के अफसरों के ट्रेनिंग स्कूल का प्रधान था। फिर उसने पश्चिमी अमरीका में कई स्थानों पर काम किया। जब गृहयुद्ध छिड़ा तो राष्ट्रपति लिंकन ने ली को उत्तरी सेनाओं का सेनापति नियुक्त किया। लेकिन ली वर्जीनिया के प्रति अधिक वफादार था। वर्जीनिया ने दक्षिणी राज्यों का साथ दिया था। इसलिए ली ने अमरीका की सेना से त्यागपत्र दे दिया। 1862 में वह वर्जीनिया में दक्षिणी सेना का प्रधान बना।

ली को पहले कुछ शानदार सफलताएं प्राप्त हुईं। सन् 1863 में वह अपनी सेना लेकर पेंसिलवेनिया की ओर बढ़ा। जेटिसबर्ग में उसकी सेना की बहुत बड़ी हार हुई।

ली अपनी सेना लेकर वर्जीनिया लौटा। वहां 1865 के अप्रैल मास में उसे जनरल ग्रांट के सामने आत्मसमर्पण करना पड़ा।

लुई चौदहवां (LOUIS XIV 1638-1715) : यह फ्रांस के राजाओं में सबसे प्रसिद्ध है। जब यह सिंहासन पर बैठा तब बिलकुल शान्ति थी। इसने अपनी सारी शक्ति फ्रांस की सीमा को बढ़ाने और उसे यूरोप का सबसे शक्तिशाली और धनी देश बनाने में लगाई।

लुई ने एक ऐसा दरबार स्थापित किया जो यूरोप के सभी राजाओं के लिए एक सपना था। उसने कुछ रुपया वसाई में एक महल बनवाने में भी खर्च किया।

उसका रहन-सहन बहुत खर्चीला था, इसलिए जनता पर करों का बहुत बड़ा बोझ पड़ता था।

लुई ने चार युद्धों में भाग लिया। इनमें पहला युद्ध बेल्जियम के विरुद्ध था। दूसरा और तीसरा युद्ध हालैंड के विरुद्ध था। तीनों युद्धों में उसे असफलता मिली। अन्तिम युद्ध उसने स्पेन के उत्तराधिकार को लेकर किया और अन्ततः वह अपने पोते फिलिप पंचम को राजगद्दी दिलाने में सफल हुआ।

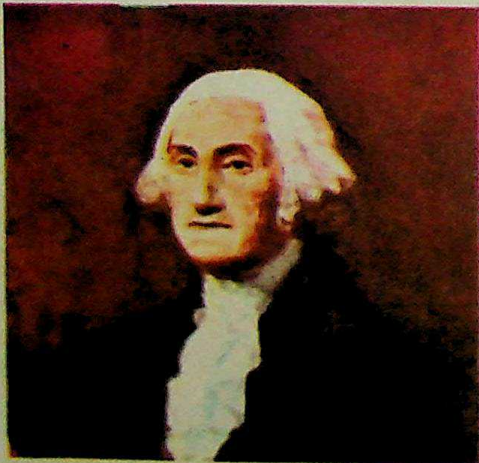
वाटरलू की लड़ाई (BATTLE OF WATERLOO) :

इस लड़ाई के महत्वपूर्ण होने का कारण यह है कि इससे फ्रांस के सम्राट नेपोलियन का यूरोप-विजय का स्वप्न धूल में मिल गया। नेपोलियन को कई महीने पहले गद्दी से हटाकर एल्बा द्वीप में निर्वासित कर दिया गया था। लेकिन वह फ्रांस वापस आ गया और बहुत बड़ी सेना इकट्ठी करके अपने शत्रु—इंग्लैंड और प्रशा—के विरुद्ध अन्तिम संघर्ष की तैयारी करने लगा।

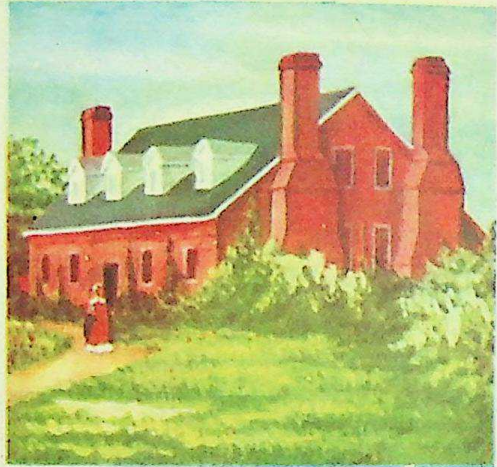
सन् 1815 में ब्रुसेल्स के बाहर वाटरलू गांव के पास लड़ाई हुई। नेपोलियन ने पहले प्रशा की सेना को, जिसका नेतृत्व जनरल ब्लूचर कर रहे थे, परास्त कर दिया, और ड्यूक ऑफ वेल्सिंगटन को उसकी अंग्रेजी सेना के साथ पीछे हटा दिया। प्रशा की सेना की परवाह न करते हुए नेपोलियन ने अंग्रेजी सेना पर बार-बार हमले किए, जिनमें उसे काफी सफलता मिली। वेल्सिंगटन को फिर पीछे हटकर मोर्चा लेना पड़ा। पर अंग्रेजी घुड़सवार सेना ने इस बार नेपोलियन पर जवाबी हमला कर दिया और ब्लूचर की सेना फ्रांसीसी सेना के पार्श्व में पहुंच गई। नेपोलियन की पराजय हुई और उसका जीवन अन्तिम रूप से बर्बाद हो गया।

(देखें : नेपोलियन; वेल्सिंगटन, ड्यूक ऑफ)

वाशिंगटन, जॉर्ज (GEORGE WASHINGTON 1732-1799) : जॉर्ज वाशिंगटन अमरीका के प्रथम राष्ट्रपति थे।



जॉर्ज वाशिंगटन



वाशिंगटन का जन्म वेकफील्ड में हुआ था।



वाशिंगटन ने अपने सैनिकों से विदा ली।

इनका जन्म वर्जीनिया नामक दक्षिणी राज्य में हुआ था। ये जवानी के दिनों में फौज में भर्ती हुए और तीन साल तक फ्रांसीसी सेना के विरुद्ध लड़ते रहे। यह लड़ाई पश्चिमी सीमा को लेकर हो रही थी। युद्ध समाप्त होने पर इन्हें 'पौर' चुना गया। इंग्लैंड जिस ढंग से अपने उपनिवेशों का शासन चला रहा था, उसको लेकर अमरीका में उन दिनों एक जबर्दस्त बहस छिड़ी थी। वाशिंगटन इस बहस में बहुत दिनों से भाग लेते आ रहे थे। इंग्लैंड ने जब कुछ नये कर वसूल करने के लिए बोस्टन में सेना की एक टुकड़ी भेजी, तो वाशिंगटन और बहुत-से दूसरे लोगों ने यह फैसला कर लिया कि अब उपनिवेशों के इंग्लैंड से नाता तोड़ने का समय आ गया है। कुछ ही दिनों बाद अंग्रेजी सेना के विरुद्ध विद्रोह आरंभ हो गया।

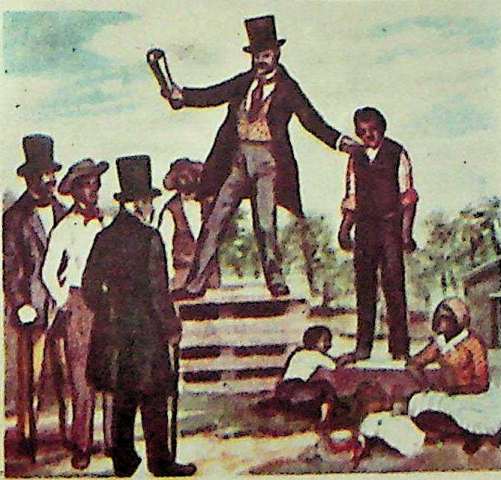
विद्रोह में वाशिंगटन अमरीकी सेना के प्रधान सेनापति बनाए गए। शुरू में इनकी सेना को कई बार असफल होना पड़ा, लेकिन फ्रांस की सहायता मिलते ही युद्ध का पासा पलट गया। सन् 1783 में युद्ध समाप्त हुआ और अमरीका के नये राष्ट्र की स्थापना हुई। वाशिंगटन

अमरीका के राष्ट्रपति बने और आठ वर्ष तक इस नये राष्ट्र के कर्णधार रहे। इन्हें अमरीका का राष्ट्रपिता कहा जाता है। इन्हींकी सहायता से अमरीका के बिखरे हुए उपनिवेश एक सशक्त राष्ट्र के रूप में संगठित हो सके।

वाशिंगटन, बूकर टी० (BOOKER T. WASHINGTON 1856-1915) : बूकर टी० वाशिंगटन अमरीका के एक प्रसिद्ध नीग्रो नेता हुए हैं। उनका पूरा जीवन नीग्रो लोगों की सेवा में बीता और वे उनके लिए सारी दुनिया में घूमे।

उनका जन्म वर्जीनिया में एक दास के रूप में हुआ था। लेकिन वे अभी बच्चे ही थे कि दासों की मुक्ति की घोषणा हो गई। मुक्त होने पर वे पहले नमक और फिर कोयले की खान में काम करने लगे। वे दिन में काम करते थे और रात को पढ़ते थे। कुछ बड़े होने पर वे एक दिन ज्ञान की प्यास लिए पैदल ही हैम्पटन पहुंच गए। वहां हैम्पटन इंस्टीट्यूट में वे दरबान की नौकरी करने लगे और पढ़ने भी लगे। वे इतने प्रतिभाशाली थे कि शिक्षा पूरी होते ही उन्हें उसी इंस्टीट्यूट में अध्यापक नियुक्त कर दिया गया। वे नीग्रो समस्याओं पर बड़ी गहराई से विचार करने लगे।

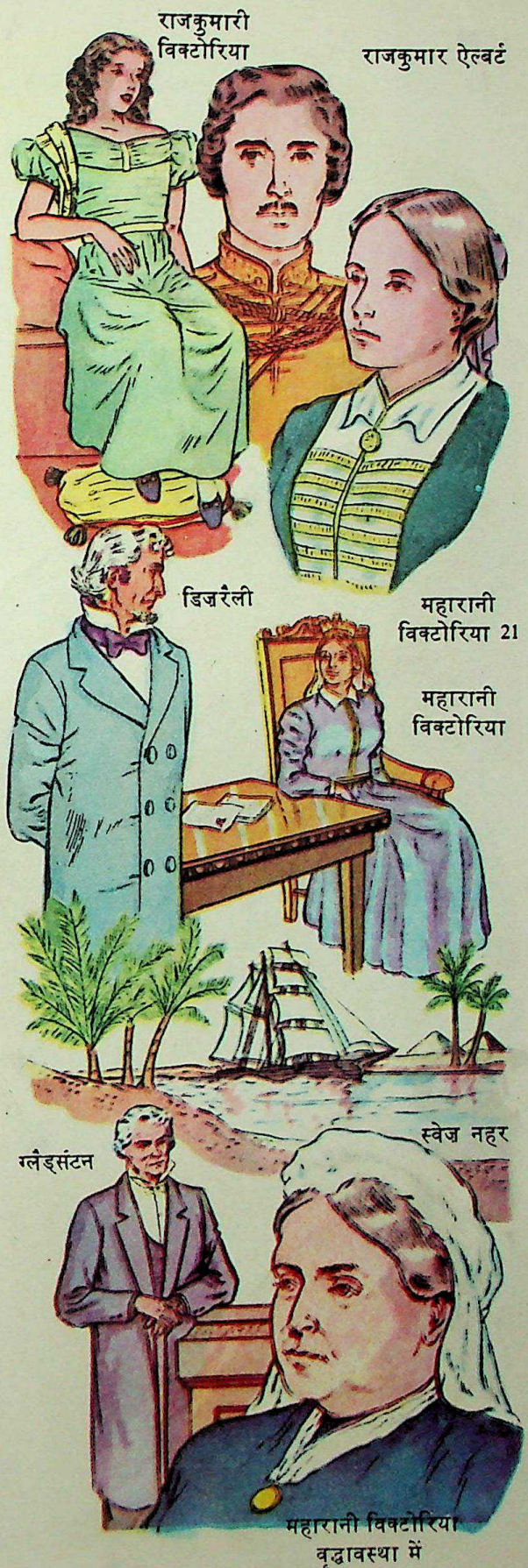
1881 में उन्हें एक नीग्रो विद्यालय खोलने के लिए टस्केगी (अलास्का) बुलाया गया। एक गिरजे में एक पुराने शेड के नीचे विद्यालय शुरू हुआ। आरंभ में कुल 40 विद्यार्थी और अकेले वाशिंगटन ही अध्यापक थे। यह



बूकर को गुलामों के बाजार याद थे।

विद्यालय तेज़ी से तरक्की करता हुआ कुछ समय में टस्केगी इंस्टीट्यूट बन गया। वाशिंगटन की मृत्यु के समय इस इंस्टीट्यूट में 101 इमारतें, 200 अध्यापक और 1500 छात्र थे।

विक्टोरिया, महारानी (QUEEN VICTORIA 1819-1901) : जब विक्टोरिया इंग्लैंड के राजसिंहासन पर बैठी तो उसकी अवस्था कुल 18 वर्ष की थी। उसने साठ वर्ष



राजकुमारी
विक्टोरिया

राजकुमार ऐल्बर्ट

डिज़रैली

महारानी
विक्टोरिया 21

महारानी
विक्टोरिया

ग्लेइसटन

स्वेज़ नहर

महारानी विक्टोरिया
वृद्धावस्था में



टैंकों से लड़ाई



जर्मन सेना पीछे हटी

तक इंग्लैंड का शासन किया। उसकी गिनती इंग्लैंड की सबसे प्रसिद्ध महारानियों में होती है।

महारानी के रूप में विक्टोरिया को जो सफलताएं मिलीं उनमें उसके पति ऐल्बर्ट का भी हाथ रहा। अनेक समस्याओं के बारे में फैसला करने में वह अपनी पत्नी का हाथ बंटाता था। लेकिन विवाह के बीस वर्ष बाद अचानक उसकी मृत्यु हो गई। पति की मृत्यु के बाद 40 वर्ष तक विक्टोरिया ने इंग्लैंड का शासन-कार्य बड़ी योग्यता से चलाया। उसे दो महान राजनीतिज्ञों से बड़ी मदद मिली। इनके नाम थे, बेंजामिन डिज़रैली और विलियम प्लेड्सटन।

विक्टोरिया के शासन-काल में प्रजा को पहले से अधिक अधिकार दिए गए। ब्रिटिश साम्राज्य पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली हो गया। स्वेज़ नहर पर अधिकार हो जाने से साम्राज्य के विभिन्न अंग एक-दूसरे से मिल गए।

विश्वयुद्ध, प्रथम (WORLD WAR I) : प्रथम विश्वयुद्ध से पहले सर्बिया नाम का एक छोटा-सा देश था, जो आज-कल यूगोस्लाविया में मिल गया है। वहां के एक नवयुवक ने आर्कड्यूक फर्डिनेंड को, जो आस्ट्रिया-हंगरी राज्य का उत्तराधिकारी था, गोली का निशाना बना दिया। इसके ठीक एक महीने बाद, 28 जुलाई, 1914 को, आस्ट्रिया-हंगरी ने सर्बिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस तरह प्रथम विश्वयुद्ध की शुरुआत हुई। लड़ाई समाप्त होने तक इस युद्ध में छः करोड़ व्यक्ति भाग ले चुके थे, और 85 लाख मौत के घाट उतारे जा चुके थे।

युद्ध आरंभ होने के बहुत पहले से ही यूरोप के राष्ट्रों में तनातनी चल रही थी। यह एक ऐसा समय था जब यूरोप में कल-कारखाने तेज़ी से बढ़ रहे थे। इनके लिए कच्चा माल जुटाने और तैयार माल को बेचने के लिए यूरोप के विभिन्न राज्यों में होड़ मची थी। अफ्रीका में फ्रांस और ब्रिटेन के उपनिवेश थे। जर्मनी इस बात से बहुत असन्तुष्ट था। आस्ट्रिया-हंगरी राज्य ईजियन समुद्र में एक बन्दरगाह प्राप्त करना चाहता था, लेकिन सर्बिया और मांतेनीग्रो देश उसकी राह के कांटे थे। यूरोप के सभी बड़े राष्ट्रों ने अपनी सैनिक तैयारियां कर रखी थीं।

आस्ट्रिया-हंगरी की युद्ध-घोषणा के बाद, कुछ ही दिनों के भीतर, यूरोप के अन्य राष्ट्र भी युद्ध में उतर पड़े। एक ओर आस्ट्रिया-हंगरी, जर्मनी, तुर्की और बल्गारिया थे। इन्हें मध्य यूरोपीय राष्ट्र कहा जाता था। दूसरी ओर ब्रिटेन और उसके अधीनस्थ देश तथा फ्रांस, रूस, बेल्जियम, इटली और जापान थे, जो मित्र-राष्ट्र कहलाते थे।

युद्ध के शुरू में जर्मनी की धाक रही। जर्मन सेनाओं ने बेल्जियम को अपनी लपेट में ले लिया और फ्रांस पर धावा बोल दिया। पेरिस अब कुछ ही दूर रह गया था कि फ्रांस और ब्रिटेन की सम्मिलित सेनाओं ने जर्मन सेना को रोक

दिया। पूर्व की ओर जर्मनी और आस्ट्रिया-हंगरी पोलैंड को रौंदते हुए रूस में पहुंच गए। इटली ने मित्र-राष्ट्रों की ओर से 1915 में युद्ध में भाग लिया। इटली के आ जाने से मध्य यूरोपीय राष्ट्रों को दक्षिणी मोर्चे पर लड़ने को बाध्य होना पड़ा।

शुरू की कुछ जीतों के बाद जर्मन सेना की बाढ़ रुक गई। स्थल-युद्ध खाइयां बनाकर चलने लगा और इसने बहुत भयंकर रूप ले लिया। मॉन्स (1914), वर्डन (1916), और सॉम (1916) इस दौर की कुछ अत्यन्त भयानक लड़ाइयां थीं।

नौसेना में ब्रिटेन का बोलबाला था। जर्मन जहाज उत्तरी सागर से आगे बढ़ने का साहस नहीं कर सकते थे। अन्ततः जर्मनी ने पनडुब्बियों का सहारा लिया। जर्मनी का विश्वास था कि यदि पनडुब्बियों से ब्रिटेन और फ्रांस को जानेवाली रसद रोकी जा सके, तो मित्र-राष्ट्र आत्म-समर्पण कर देंगे। जब जर्मनी की पनडुब्बियों ने अमरीका के कई जहाज डुबो दिए तो 6 अप्रैल, 1917 को अमरीका भी मित्र-राष्ट्रों की ओर से युद्ध में कूद पड़ा।

कोई एक साल बाद जर्मनी, आस्ट्रिया और तुर्की की सेनाएं समूचे यूरोप में पीछे हटने लगीं। 11 नवम्बर, 1918 को उत्तरी फ्रांस में रेल के एक डिब्बे में युद्ध-विराम के समझौते पर हस्ताक्षर हो गए।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यूरोप का नक्शा एकदम बदल गया। जर्मनी, आस्ट्रिया और तुर्की के साम्राज्यों का क्षेत्र कम हो गया। चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड और यूगोस्लाविया के नये राज्य कायम हुए। भविष्य में युद्ध रोकने के लिए राष्ट्र-संघ (लीग ऑफ नेशन्स) की स्थापना हुई। परन्तु यह विश्वयुद्ध उन समस्याओं में से किसीको भी, जो इसका कारण थीं, सुलझा नहीं सका।

विश्वयुद्ध, द्वितीय (WORLD WAR II) : कई घटनाओं के कारण प्रथम विश्वयुद्ध के बाद सही अर्थों में शान्ति बनाए रखना असंभव हो गया। 1922 में इटली के शासन की बागडोर मुसोलिनी नामक एक तानाशाह के हाथों में आ गई। उसने अपने देश वालों को यह पाठ पढ़ाना प्रारंभ किया कि इटली को प्राचीन रोम की भांति एक विजेता

प्रथम विश्वयुद्ध

वुडरो विल्सन

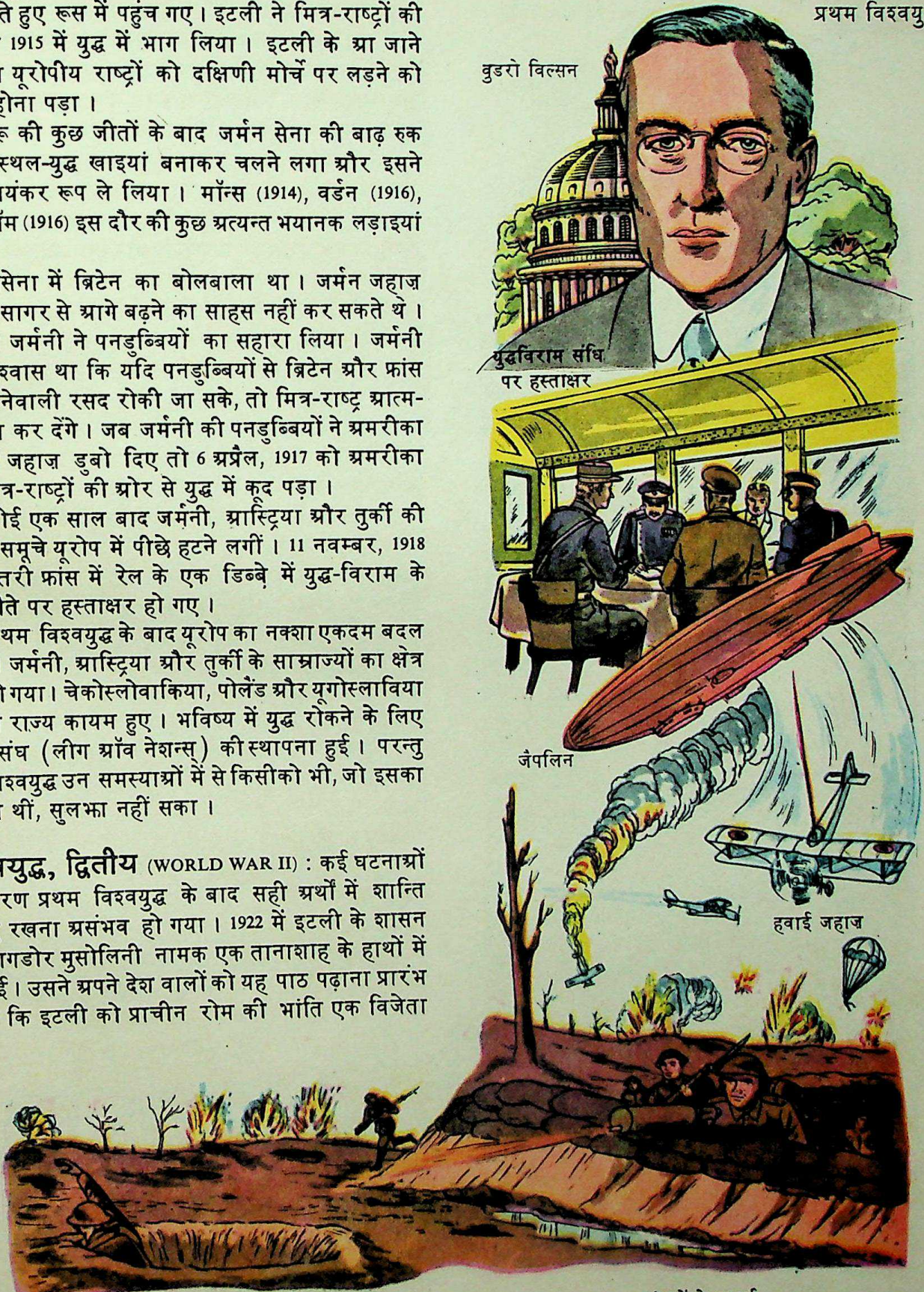
युद्धविराम संधि पर हस्ताक्षर

जंपलिन

हवाई जहाज

बमों से हुए गड्ढे

खंदकों से लड़ाई



विश्वयुद्ध, द्वितीय

द्वितीय विश्वयुद्ध



राष्ट्र बनना चाहिए। 1929 में यूरोप में भयानक मंदी का दौर आया और इससे बहुत बेचैनी फैली। जर्मनी में इस बेचैनी ने, और पहले विश्वयुद्ध के शान्ति-समझौते के कारण फैले असन्तोष ने, एडोल्फ हिटलर को प्रभुत्वशाली बना दिया। इस तानाशाह ने भी जर्मनी को विजेता राष्ट्र बनने के सपने दिखाने शुरू किए। रूस में भी स्तालिन की तानाशाही थी। वह सारी दुनिया में साम्यवाद फैलाने की कोशिश कर रहा था। जापान में भी सेना के उच्च पदाधिकारी समूचे एशिया पर साम्राज्य कायम करने के मनसूबे बांध रहे थे।

जिस घटना ने समूचे विश्व को युद्ध में भोंक दिया वह थी, 1 सितम्बर, 1939 को पोलैंड पर जर्मनी का आक्रमण। इसके पहले जर्मनी आस्ट्रिया और चेकोस्लोवाकिया पर कब्जा कर चुका था। इटली ने अल्बानिया और इथियोपिया को हड़प लिया था। जापान ने मंचूरिया पर अधिकार कर लिया था और चीन से लड़ाई छेड़ दी थी। ब्रिटेन फ्रांस और अमरीका, दूसरा विश्वयुद्ध छिड़ने के भय से, अब तक तानाशाहों के खिलाफ कोई शक्तिशाली कदम नहीं उठा सके थे। पोलैंड पर हिटलर के आक्रमण ने फ्रांस और ब्रिटेन को इस निश्चय पर पहुंचा दिया कि हिटलर को रोकने का समय अब आ गया है। उन्होंने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

युद्ध के शुरू के कुछ महीनों में ही, हिटलर ने पोलैंड, डेनमार्क, नार्वे, नीदरलैंड, बेल्जियम और लक्सेम्बर्ग पर अधिकार कर लिया। 22 जून, 1940 को फ्रांस ने आत्म-समर्पण कर दिया। इसके कुछ ही दिन पहले इटली जर्मनी की ओर से युद्ध में शामिल हो गया था। डंकर्क के चारों ओर

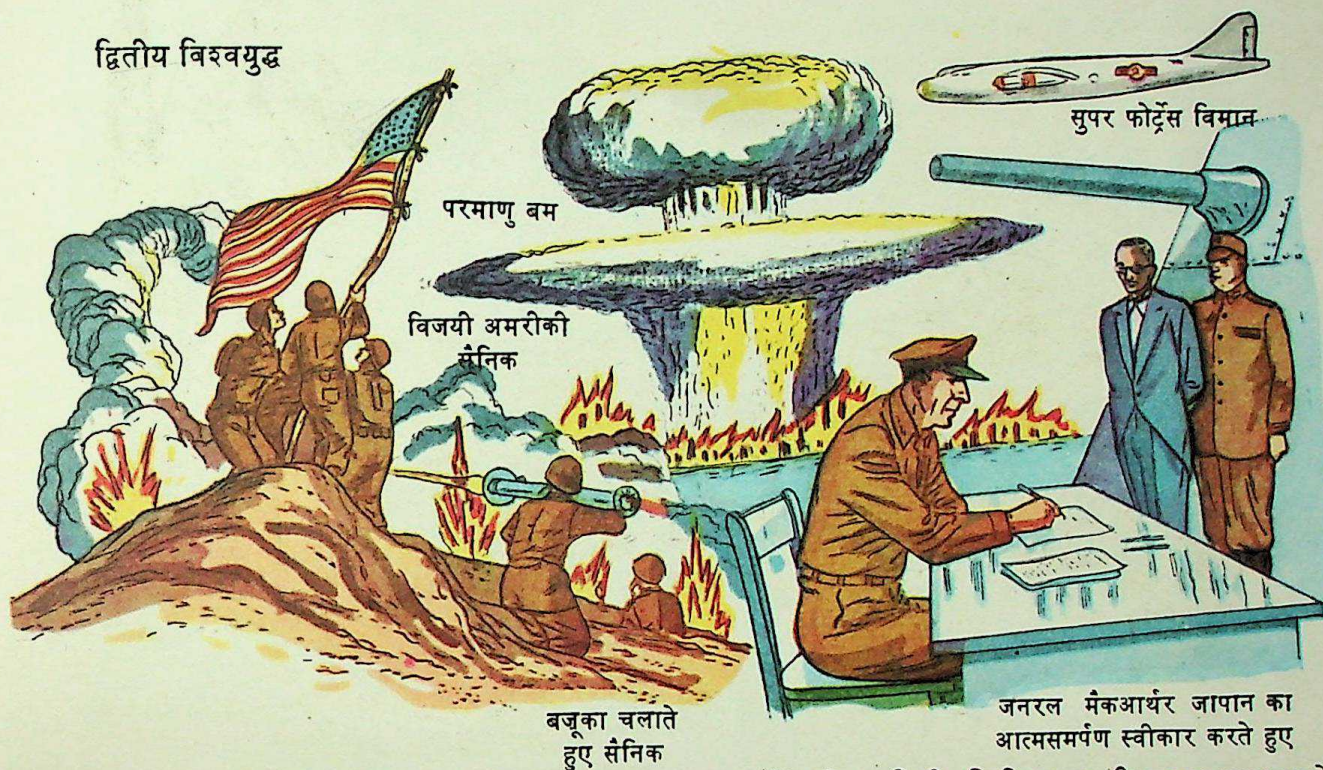
नारमंडी पर
चढ़ाई

जर्मनी ने
आत्मसमर्पण
कर दिया

पेरिस में प्रवेश
करती जर्मन सेना

इटली में
अमरीकी सेना

द्वितीय विश्वयुद्ध



बहुत मुस्तैदी से पहरा डालकर 3, 35, 000 लोगों को फ्रांस से ब्रिटेन पहुंचाया गया। ब्रिटेन पर भयानक हवाई हमले होने लगे। लेकिन जिस आक्रमण की आशंका थी, उसका दिन कभी नहीं आया। यद्यपि ब्रिटेन की शाही वायुसेना की शक्ति बहुत घट गई थी, फिर भी उसने जर्मनी के दांत खट्टे कर दिए। इस महान लड़ाई को ब्रिटेन की लड़ाई कहते हैं। इससे मित्र-राष्ट्रों की हवाई शक्ति बहुत बढ़ गई।

फ्रांस के पतन के ठीक एक साल बाद जर्मनी ने रूस पर भी हाथ साफ करना चाहा। उसने रूस पर आक्रमण कर दिया। अनेक लोग इसे जर्मनी की पहली गंभीर सैनिक भूल मानते हैं। रूस के साथ युद्ध करने में ही जर्मनी की अधिकांश जनशक्ति खर्च हो गई।

7 दिसम्बर, 1941 को जापान ने हवाई द्वीप के पर्थ बन्दरगाह पर हमला कर दिया। दूसरे ही दिन अमरीका ने जापान के विरुद्ध और इसके कुछ ही दिन बाद जर्मनी और इटली के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

अमरीका से मित्र-राष्ट्रों को अपार युद्ध-सामग्री भेजी जाने लगी। हथियारों की इस बाढ़ के आते ही मित्र-राष्ट्रों ने शत्रुओं पर हमले शुरू कर दिए। उत्तरी अफ्रीका को ब्रिटेन ने जर्मनी के हाथों से छीन लिया। इसके बाद ब्रिटेन ने, अमरीका की मदद से, इटली पर हमला किया। रूस ने जर्मनी को पीछे भगाना शुरू किया। फ्रांस के नार्मंडी प्रदेश पर मित्र-राष्ट्रों ने 6 जून, 1944 को हमला किया। 7 और 8 मई, 1945 को जर्मनी ने आत्मसमर्पण कर दिया और यूरोप में युद्ध समाप्त हो गया।

जापानियों से ज्यादातर अमरीका को ही टक्कर लेनी पड़ी। जापान को प्रारंभ में कुछ सफलताएं मिलीं, परन्तु

बाद में उसे न्यूगिनी, फिलिपाइन द्वीपसमूह तथा दूसरे द्वीपों से पीछे हटा दिया गया। अन्त में स्वयं जापान पर मित्र-राष्ट्रों के जहाजों ने हमला किया। दो परमाणु बम छोड़े जाने के बाद जापान ने 14 अगस्त, 1945 को हथियार डाल दिए।

द्वितीय विश्वयुद्ध में दुनिया की जितनी तबाही हुई उतनी इससे पहले कभी नहीं हुई थी। इसमें अनेक प्रजा-तांत्रिक देश रौंद डाले गए और उन्हें अपार कष्ट भेलना पड़ा। युद्ध समाप्त होने के बाद शीघ्र ही संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गई, ताकि भावी युद्धों को रोका जा सके।

वेब्सटर, डेनियल (DANIEL WEBSTER 1782-1852) : डेनियल वेब्सटर की गणना अमरीका के चोटी के वक्ताओं और प्रमुख राजनेताओं में की जाती है।

वे बचपन में बहुत ही नाजुक और शर्मीले, लेकिन पढ़ने-लिखने में बेहद तेज थे। इसीलिए उनके परिवार ने खुद काफी तंगी में रहकर भी उन्हें कानून की शिक्षा दिलाई। तेईस वर्ष की आयु में उन्होंने बोस्टन में वकालत शुरू की। बाद में, वे पोट्समथ चले गए और वहां अपनी गजब की वक्तृत्व-शक्ति के कारण शीघ्र ही बहुत प्रसिद्ध हो गए।

1823 में उन्हें मैसाच्यूसेट्स के लोगों ने कांग्रेस के लिए अपना प्रतिनिधि चुना। तब से मृत्यु-पर्यन्त वेब्सटर कांग्रेस या मंत्री-परिषद् के सदस्य रहे। तीन राष्ट्रपतियों के अधीन उन्होंने गृहमंत्री के पद पर काम किया।

वेब्सटर के कुछ सबसे मशहूर भाषणों में एक वह है जो उन्होंने 4 जुलाई, 1826 को दो भूतपूर्व अमरीकी राष्ट्रपतियों

वेलिंगटन, ड्यूक ऑव * वोल्फ़, जेम्स

डेनियल वेन्सटर की गणना अमरीका के चोटी के वक्ताओं में होती है। उनका भाषण जादू का असर रखता था।



—टॉमस जेफ़र्सन और जॉन एडम्स—की एकसाथ मृत्यु पर दिया था। वे संयुक्त राज्य अमरीका की एकता पर बहुत जोर देते थे और उसे एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाने के लिए प्रयत्नशील रहते थे।

वेलिंगटन, ड्यूक ऑव (DUKE OF WELLINGTON 1769-1852) : वेलिंगटन की गिनती इंग्लैंड के महानतम सेनानायकों में होती है। तलावेरा, सलामांका, तूलूस, वाटरलू—ये उन लड़ाइयों में से कुछ के नाम हैं जिनमें ड्यूक ऑव वेलिंगटन ने विजय प्राप्त की।

वेलिंगटन का जन्म आयरलैंड के एक कुलीन घराने में हुआ था। उसके पिता को 'अर्ल' की उपाधि मिली हुई थी। वेलिंगटन की शिक्षा एटन में हुई और फिर वह सेना में भर्ती हो गया। तीसवर्ष की आयु से पहले ही वह लेफ्टिनेंट कर्नल के पद पर पहुँच गया। उसने अनेक लड़ाइयों में विजय प्राप्त की। लेकिन सबसे अधिक सफलता उसे नेपोलियन के साथ हुई लड़ाइयों में ही मिली। सबसे पहले उसने फ्रांसीसियों को पुर्तगाल में पराजित किया और पाँच वर्षों के भीतर ही उन्हें पुर्तगाल और स्पेन से निकाल दिया। इस अरसे में अपने शत्रुओं को उसने कई लड़ाइयों में हराया। सबसे बड़ी विजय उसे वाटरलू के मैदान में नेपोलियन को अंतिम रूप से हराकर प्राप्त हुई।

इंग्लैंड लौटने पर उसे मंत्रिमंडल का सदस्य बनाया गया। सन् 1828 में वह प्रधान मंत्री बन गया। उस समय पार्लमेंट के सुधार के लिए एक आन्दोलन चल रहा था।

वेलिंगटन इसके विरुद्ध था। इसी कारण अंत में उसे प्रधान मंत्री पद छोड़ना पड़ा और सामाजिक कार्यों से भी अलग होना पड़ा। लोग उसे 'आयरन ड्यूक' (लौह ड्यूक) कहकर उसकी खिल्ली उड़ाने लगे। परन्तु अपनी ईमानदारी, अध्यवसाय और सैनिक प्रतिभा के कारण वह ब्रिटेन के महानतम नेताओं में गिना जाता है।

वोल्फ़, जेम्स (JAMES WOLFE 1727-1759) : 1759 में क्वेबेक पर अंग्रेजों का कब्ज़ा हो जाने के बाद कनाडा से फ्रांसीसी शासन का नामो-निशान मिट गया। इस विजय का श्रेय जेम्स वोल्फ़ को है, जिसकी आयु उस समय केवल 32 वर्ष थी।

वोल्फ़ को इस युद्ध के नेतृत्व के लिए ब्रिटेन के प्रधान मंत्री विलियम पिट ने चुना था। फ्रांस की सेना के नेता जनरल मांतकाम थे। उन्होंने अपना मोर्चा ऐसी जगह पर जमाया था कि उनपर घावा बोला ही नहीं जा सकता था। समुद्र के किनारे की पहाड़ियाँ क्वेबेक का पूरा बचाव कर रही थीं। लेकिन वोल्फ़ ने पहाड़ी नाले से बने एक ऐसे रास्ते का पता लगा लिया जो चोटी की ओर जाता था। इसपर पहरों का भी कोई अग्रच्छा इन्तज़ाम नहीं था। बस कुछ चुने हुए सैनिक एक रात इसी रास्ते ऊपर चढ़े और पहरों के थोड़े-से सिपाहियों को उन्होंने मौत के घाट उतार दिया। दूसरे दिन पूरी अंग्रेजी सेना चोटी पर थी। लड़ाई हुई और उसमें मांतकाम और वोल्फ़ दोनों मारे गए, पर जीत अंग्रेजों की ही हुई। (देखें : 'सातवर्षीय युद्ध')



शार्लमेन को पवित्र रोमन साम्राज्य का सम्राट बनाया गया।

शार्लमेन (CHARLEMAGNE 742-814) : यूरोप के अंधयुग के इतिहास में जो नाम प्रसिद्ध हैं उनमें सम्राट शार्लमेन का नाम विशेष उल्लेखनीय है। शार्लमेन का अर्थ 'महान चार्ल्स' होता है। वे 26 वर्ष की आयु में फ्रैंक लोगों के राजा बने। उन्होंने ईसाई धर्म के लिए बहुत-से युद्ध किए। पोप कृतज्ञ हुए। पोप ने उन्हें 'पवित्र रोमन साम्राज्य का सम्राट' बनाया।

शार्लमेन ने प्रजा की भलाई के लिए बहुत काम किए। उन्होंने शिक्षा का प्रचार किया। शार्लमेन और उनके योद्धाओं की बहुत-सी कहानियां लिखी गईं। वे फ्रेंच भाषा की पहली कहानियां हैं।

शिवाजी, छत्रपति (CHHATRAPATI SHIVAJI 1630-1680) : छत्रपति शिवाजी मराठा राज्य के संस्थापक हुए हैं। उनकी गणना देश के महान वीरों में की जाती है।

शिवाजी का जन्म शिवनेर में हुआ। उनके पिता, शाहजी बीजापुर दरबार में काम करते थे, पर उनकी माता उन्हें पूना ले आई और उनका बाल्यकाल वहीं बीता। स्वतंत्रता की लालसा उनके मन में बचपन में ही जाग उठी थी, और वे दिन-रात उसीके मनसूबे बांधते रहते थे। बीस वर्ष की आयु में उन्होंने एक सेना संगठित कर बीजापुर के दुर्ग 'तोरण' पर अधिकार कर लिया। अपनी इस विजय से वे युवकों के आशा-केन्द्र बन गए। मुसलमानों के शासन से तंग आए मराठे उनके गिर्द इकट्ठे होने लगे। कुछ ही समय में उन्होंने एक-एक कर कई किले जीत लिए।

शिवाजी के दमन के लिए बीजापुर से अफ़ज़लखां को भेजा गया। उसने शिवाजी के पास संधि-संदेश भेजा, जिसमें बड़ी मीठी-मीठी बातें थीं। शिवाजी उसकी चाल भांप गए और मिलने को तैयार हो गए। दोनों की छाव-नियों के बीच का स्थान मुलाकात के लिए तय हुआ। शिवाजी जब अफ़ज़लखां के सामने पहुंचे तो उसने उनपर एकदम हमला कर दिया। पर शिवाजी के अंगरखे के

नीचे सारे शरीर पर कवच था। वे बायें हाथ में 'बघनखा' भी पहने हुए थे, जो उन्होंने फुर्ती से अफ़ज़लखां के पेट में धोंप दिया। उधर आसपास के जंगल में छिपे मराठे सैनिक मुसलमान सेना पर टूट पड़े। सेना सिर पर पांव रखकर भागी।

अफ़ज़लखां की मृत्यु का समाचार पाकर औरंगजेब ने शाइस्ताखां को एक बड़ी सेना के साथ चढ़ाई के लिए भेजा। मुगल सेना के इस तूफान के सामने शिवाजी को कई बार पीछे हटना पड़ा। पूना तक के किले उनके हाथ से निकल गए, पर तभी शिवाजी ने सारा पासा पलट दिया। वे अपने चार सौ साथियों के साथ एक दिन भेस बदलकर, एक बारात के रूप में, पूना में घुस आए। आधी रात को चुपचाप वे सब किले में कूद गए और मारकाट मचा दी। शाइस्ताखां अंधेरे में किसी तरह अपनी जान बचाकर भागा।

औरंगजेब ने अब जयसिंह की कमान में एक बड़ी भारी सेना दक्षिण भेजी। उसने पूना और बज्रगढ़ के किले शिवाजी से छीन लिए। नीति-कुशल शिवाजी ने अब संधि का प्रस्ताव रखा। वह स्वीकार कर लिया गया। औरंगजेब की ओर से उन्हें दिल्ली आने का निमंत्रण मिला। जयसिंह ने उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी ली। लेकिन शिवाजी जब दरबार में पहुंचे तो उन्हें कैद में डाल दिया गया।

शिवाजी भी कम चालाक नहीं थे। उन्होंने कुछ दिन बाद ऐसा स्वांग रचा, मानो वे बहुत बीमार हों। फिर वे धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगे। पूर्ण स्वस्थ हो जाने पर उन्होंने मिठाई बंटवाने की अनुमति मांगी, जो उन्हें मिल गई। फलों और मिठाइयों के टोकरे आने-जाने लगे। और एक



छत्रपति शिवाजी

दिन वे ऐसे ही एक टोकरे में छिपकर कैद से बाहर निकल गए।

मुगल सम्राट ने अब बाध्य हो शिवाजी से संधि कर ली। पूना का इलाका, चाकण और सूपा प्रान्त उन्हें मिल गए। बाद में उन्होंने सिंहगढ़ भी जीत लिया। शिवाजी अभी तक एक बड़े जागीरदार ही माने जाते थे। अब उनका विधिवत् राजतिलक हुआ। उन्होंने छत्रपति की पदवी ग्रहण की। राजतिलक के बाद साल-भर में ही उनके राज्य की सीमा कृष्णा नदी तक पहुंच गई। शिवाजी जितने शूरवीर थे उतने ही नीति-कुशल भी थे।

शेरशाह (SHER SHAH 1486 ? -1545) : भारत के कुछ बहुत ही योग्य और लोकप्रिय शासकों में शेरशाह की गिनती की जाती है। केवल पांच वर्ष के शासन-काल में ही उसे जो सफलता प्राप्त हुई, वह अन्य शासकों को दुर्लभ थी। शेरशाह का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था और उसका बचपन का नाम फरीद खां था। जब उसने शिकार में अकेले ही एक शेर को मार डाला तो उसका नाम शेर-खां पड़ गया। हुमायूँ को परास्त कर दिल्ली का बादशाह बन जाने पर वह शेरशाह के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसका राजवंश सूरवंश कहलाता है।

अपने पिता की जागीर के प्रबंधक के रूप में शेरशाह को गांव तथा परगने के शासन का अच्छा अनुभव हो गया था। इसीलिए बाद में जब वह बिहार के शासक के यहां शाहजादे के शिक्षक और नायब की हैसियत से नियुक्त हुआ तो उसने अपनी योग्यता और कूटनीतिज्ञता से धीरे-धीरे राज्य की सारी शक्ति अपने हाथ में कर ली, और वह वहां का सर्वेसर्वा हो गया।

1537 ई० में शेरशाह ने बंगाल पर आक्रमण कर गौड़ प्रदेश पर अधिकार कर लिया। हुमायूँ के साथ उसका पहला संघर्ष चुनार के दुर्ग के लिए हुआ, जिसमें जीत हुमायूँ की ही रही। किंतु कुछ समय बाद शेरशाह ने हुमायूँ को पहले चौसा के युद्ध में और फिर कन्नौज के युद्ध में बुरी तरह पराजित किया। हुमायूँ को अपने राज्य से भागना पड़ा और शेरशाह 1540 ई० में दिल्ली का बादशाह बन गया।

शेरशाह ने न केवल अफगान साम्राज्य को सुदृढ़ किया और फैलाया, बल्कि शासन-प्रबंध की भी ऐसी व्यवस्था की जो बाद के शासकों के लिए आदर्श बन गई। वह प्रजा के कल्याण को सर्वोपरि समझता था और हिन्दुओं तथा मुसलमानों को समान दृष्टि से देखता था। उसने लगान-संबंधी जो सुधार किए वे बहुत ही महत्वपूर्ण थे। उसके राज्य में निष्पक्ष न्याय की व्यवस्था थी। एक साधारण स्त्री की फरियाद पर उसने अपने बेटे को कड़ी सजा दी थी। अपराधियों को कठोर दंड देने के अलावा, उसने अपराधों को रोकने तथा सारे राज्य में शांति और व्यवस्था कायम रखने

का भी उचित प्रबंध किया। मध्ययुग षड्यंत्रों और कुचक्रों का युग था, इसलिए शेरशाह ने एक बड़ा ही कुशल, ईमानदार और कर्तव्यपरायण गुप्तचर विभाग भी संगठित किया।

शेरशाह ने शुद्ध सोने, चांदी तथा तांबे की ऐसी मुद्राएं चलाई जो एक ही वजन और मूल्य की थीं। उसने बहुत-सी सड़कों और सरायों का निर्माण करवाया। वर्तमान ग्राण्ड ट्रंक रोड उसीकी बनवाई हुई है। अपने साम्राज्य के विभिन्न प्रांतों के व्यापार को शेरशाह ने स्वतंत्र कर दिया। इन सब बातों से व्यापार की उन्नति में बड़ी सहायता मिली। उसने डाक पहुंचाने की भी बहुत अच्छी व्यवस्था की थी।

शेरशाह के शासन में साहित्य और कला की भी बड़ी उन्नति हुई। मलिक मुहम्मद जायसी ने 'पद्मावत' की रचना इसी काल में की। शेरशाह के काल में जो इमारतें बनीं उनमें हिन्दू और मुस्लिम कला का सम्मिश्रण है।

1545 ई० में कालिंजर के युद्ध में एक दिन बारूद से जल जाने के कारण शेरशाह की मृत्यु हो गई। मृत्यु के समय उसका साम्राज्य कंधार, काबुल, और कश्मीर की सीमाओं से कूचबिहार तक फैला था।

बेबीलोनिया के अवशेष

संगमरमर का सिर



संग्रहालयों में ऐतिहासिक महत्व की वस्तुएं रखी जाती हैं।

संग्रहालय (MUSEUMS) : डाइनोसॉर का अस्थि-पंजर आप कहां देख सकते हैं? रेम्ब्रां की चित्रकला आपको देखने को कहां मिल सकती है? मिस्र में बने 5,000 वर्ष पुराने आभूषण आपको कहां मिलेंगे? जो पेड़ एक हजार वर्ष तक खड़ा रहा, उसका कोई भाग आपको कहीं दिखाई दे सकता है तो कहां? इन सब प्रश्नों का एक ही उत्तर है, वह है—संग्रहालय। आकर्षक वस्तुओं का भंडार ही संग्रहालय या अजायबघर कहलाता है।

प्रायः प्रत्येक बड़े नगर में एक संग्रहालय होता है। कई

नगरों में अधिक भी होते हैं। संग्रहालय भी कई प्रकार के होते हैं—जैसे कला संग्रहालय, विज्ञान संग्रहालय, ऐतिहासिक संग्रहालय आदि।

शायद दुनिया का सबसे प्रसिद्ध संग्रहालय लंदन का 'ब्रिटिश म्यूजियम' है। इसमें पुरातत्त्व-संबंधी अद्भुत कलावस्तुओं का भण्डार है।

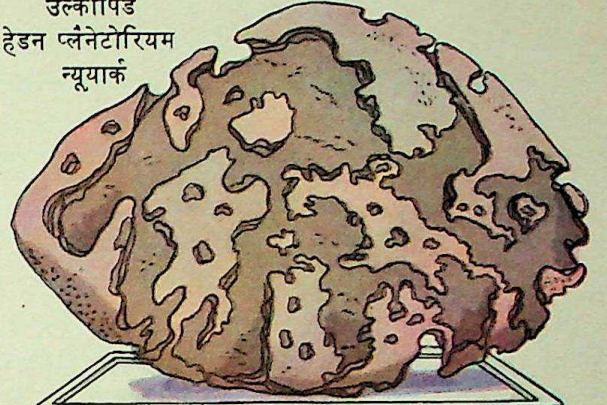
बहुधा संग्रहालयों की ओर से नई वस्तुओं की खोज में संसार-भर में दल भेजे जाते हैं। विशेषज्ञ प्राप्त वस्तुओं का अध्ययन करके उनका प्रदर्शन करते हैं। जो बातें उन्हें पता चलती हैं और जिन्हें वे प्रदर्शन करने योग्य समझते हैं, उनके विषय में वे अधिक से अधिक लोगों को जानकारी देते हैं तथा उस विषय पर लेख आदि भी लिखते हैं। इसके अतिरिक्त जो वस्तुएं उनके पास आती हैं वे उन्हें देख-भालकर यह निश्चय करते हैं कि वे रखने योग्य हैं या नहीं। (देखें : पुरातत्त्व)

समुद्रगुप्त (SAMUDRAGUPTA) : गुप्त-काल भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग माना जाता है। इस साम्राज्य की स्थापना यद्यपि चंद्रगुप्त प्रथम ने की थी, परन्तु उसके विस्तार और विकास का आयोजन उसके पुत्र समुद्रगुप्त ने किया। एक छोटे-से राज्य को उसने अपने पराक्रम से भारतव्यापी साम्राज्य में परिवर्तित कर दिया। इसके लिए उसने अनेक युद्ध लड़े और सभी में सफलता प्राप्त की। इसलिए उसे भारत का नेपोलियन भी कहते हैं। उसने 335 से 375 ई० तक शासन किया।

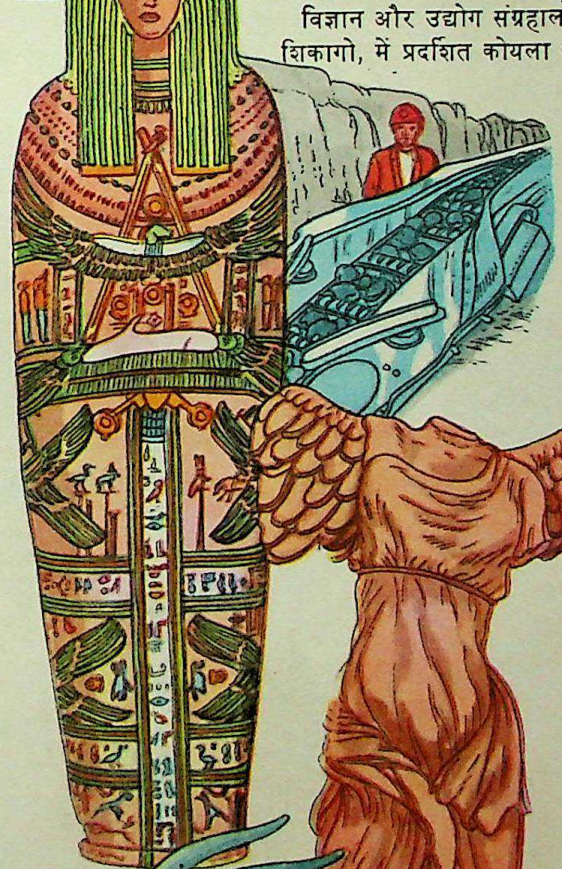
बचपन से ही समुद्रगुप्त की विशेषताएं प्रकट होने लगी थीं। इसलिए भाइयों में छोटा होने पर भी चंद्रगुप्त ने अपने सामने ही उसको मगध का उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था। गद्दी पर बैठते ही उसने दिग्विजय आरंभ कर दी। पहले उसने उत्तर भारत के नौ राज्यों को जीता, फिर मध्य भारत के 18 जंगली राज्यों पर विजय प्राप्त की। इसके बाद उसने दक्षिण की ओर प्रयाण किया और 12 राज्यों को अधीन किया। फिर उसने पश्चिम के गणराज्यों तथा सीमा के राज्यों को भी जीता।

संसार के कुछ प्रसिद्ध संग्रहालयों में रखी वस्तुएं

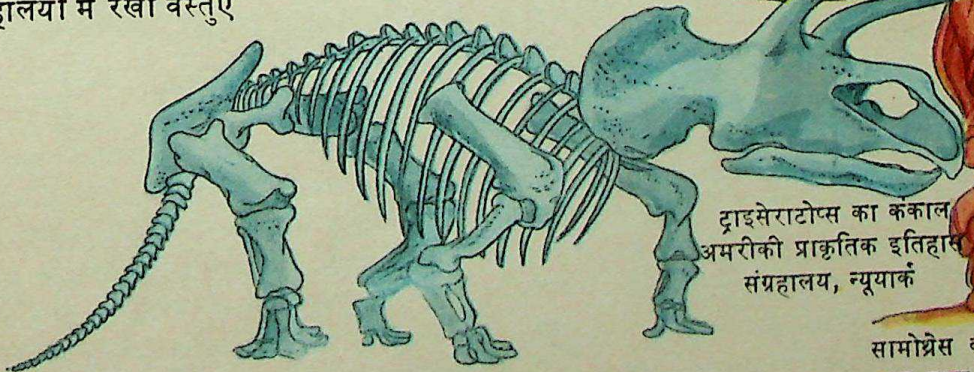
उल्कापिंड
हेडन प्लेनेटोरियम
न्यूयार्क



मिस्री ममी की संजुषा
ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन



विज्ञान और उद्योग संग्रहालय,
शिकागो, में प्रदर्शित कोयला खान



ट्राइसेराटोप्स का कंकाल
अमरीकी प्राकृतिक इतिहास
संग्रहालय, न्यूयार्क

सामोथ्रेस की पंखों वाली मूर्ति
लूव्र कला संग्रहालय, पेरिस

उन दिनों यातायात के साधनों का सर्वथा अभाव था। इसलिए समुद्रगुप्त ने दक्षिण के राज्यों को जीतकर भी अपने साम्राज्य में नहीं मिलाया, क्योंकि उनका शासन करने में कठिनता होती। उसने उन्हें करद राज्य बनाकर छोड़ दिया। इससे उसकी नीतिमत्ता और उदारता का परिचय मिलता है।

दिग्विजय के पश्चात् उसने अश्वमेध-यज्ञ किया। इसमें उसने विपुल दान दिया।

गुप्त वंश के शासक ब्राह्मण धर्म को मानते थे। इसलिए इनके शासन में ब्राह्मण धर्म, संस्कृत भाषा और साहित्य तथा कला की बड़ी उन्नति हुई। अनेक साहित्यकारों तथा कवियों को राज्याश्रय प्राप्त था।

परंतु समुद्रगुप्त धार्मिक दृष्टि से संकीर्ण शासक नहीं था। उसके शासन में बौद्धों को भी स्वतंत्रता प्राप्त थी। उसने बौद्धों के लिए गया में एक विहार भी बनवाया। वसुबन्धु नामक सुप्रसिद्ध बौद्ध विद्वान को उसका आश्रय प्राप्त था।

समुद्रगुप्त ने 40 वर्ष तक राज्य किया। उसके शासन में प्रजा सुखी थी। व्यापार की अच्छी उन्नति हुई। विदेशों से उसके दौत्य संबंध भी स्थापित हुए। महान विजेता और सेनानायक के रूप में उसे स्मरण किया जाता है।

समुद्री डाकू (PIRATES): मध्ययुग में जो डाकू जहाजों पर डाका डालते थे और मारघाड़ करते थे, वे समुद्री डाकू (पाइरेट्स) कहलाते थे।

चार सौ बरस पहले भूमध्य सागर में बहुत-से ऐसे डाकू थे। कभी-कभी वे 'भूमध्य सागर के समुद्री भेड़िये'



चेंग के जहाज यूरोप के व्यापारी जहाजों को लूट लेते थे।

भी कहे जाते थे। खैरएद्दीन नाम का एक समुद्री डाकू बड़ा कुख्यात था। उसका उपनाम बारबरोसा था जिसका मतलब होता है, 'लाल दाढ़ी'। अपनी समुद्री लूटमार में वह बहुत-से लोगों को पकड़ लेता था और उनके साथ बड़ी निर्दयता का व्यवहार करता था।

सत्रहवीं शताब्दी के आरंभ में चीन सागर में चेंग

नामक एक डाकू का बड़ा दबदबा था। वह यूरोप से पूर्व में आनेवाले जहाजों को लूट लेता था। एक बार उसे चीन के सम्राट ने अपने दरबार में निमंत्रित किया। वह वहां पहुंच गया। सम्राट ने उसे पकड़वाकर उसका सिर कटवा दिया।

जब स्पेनवासियों का अमरीका के एक बड़े भाग पर अधिकार हो गया, तो वेस्ट इण्डीज के आसपास के समुद्रों में बहुत-से समुद्री डाकू जमा हो गए। वे उन जहाजों की घात में लगे रहते थे, जो सोना-चांदी लेकर स्पेन वापस जा रहे होते थे। उनको 'बकेनीयर' कहते थे। उनके झंडे का रंग काला होता था, जिसपर सफेद खोपड़ी के साथ दो हड्डियां बनी होती थीं।

समुद्री डाकुओं में हेनरी मॉर्गन सबसे अधिक दुस्साहसी था। वह बहुत लूटमार करता था। उसके पास 37 जहाज और 2,000 आदमी थे। लेकिन उसके साथियों ने आरोप लगाया कि वह लूट का ठीक से बंटवारा नहीं करता। इसपर उसने अपना लूटमार का धंधा छोड़ दिया।

कप्तान किड नामक समुद्री डाकू भी बड़ा मशहूर हुआ है। 1695 में इंग्लैंड के राजा ने उसे अमरीकी तट के आसपास समुद्र में लूटमार करनेवाले डाकुओं को पकड़ने का कार्यभार सौंपा था। किड न्यूयार्क से रवाना हुआ और फिर महीनों उसकी कोई खबर नहीं मिली। समुद्री डाकुओं को पकड़ने की बजाय, वह स्वयं लूटमार का धंधा करने लगा। जब अंत में वह आया तो उसे गिरफ्तार करके इंग्लैंड भेज दिया गया। वहां उसने बताया कि उसे अन्य जहाजियों ने पकड़कर कैद कर लिया था, और वे ही उसके नाम से लूटमार करते थे। लेकिन कप्तान किड पर मुकदमा चलाया गया और उसे फांसी पर चढ़ा दिया गया। कोई नहीं जानता कि असल बात क्या थी।

ब्लैकबियर्ड नाम के समुद्री डाकू का असली नाम एडवर्ड टीच था। वह भी बड़ा निर्दयी था। अंत में, जब वह एक लड़ाई में मारा गया तो उसका सिर काटकर वर्जीनिया में एक बांस पर टांग दिया गया।

बार्थोलोम्यू रॉबर्ट्स नामक समुद्री डाकू की कहानी बड़ी ही रोमांचक है। लगता है, जैसे वह मनुष्य न होकर किसी रोमांचकारी कहानी का पात्र हो। वह बड़े ठाठदार कपड़े पहनता था और तलवार तथा दो पिस्तौलें हमेशा अपने पास रखता था।

समुद्री डाकू किसी भी देश के कानूनों को नहीं मानते थे। उनके अपने कानून थे और उनके दल का जो भी आदमी उन्हें तोड़ता, उसके साथ बड़ा क्रूर व्यवहार किया जाता था। कभी-कभी उस आदमी को अकेला किसी द्वीप में छोड़ दिया जाता था, जहां वह भूख-प्यास से तड़प-तड़प कर मर जाता था। उसे केवल बंदूक, कुछ गोलियां और पानी रखने का पात्र दे दिया जाता था। कान काट लेना भी एक आम दण्ड था। कभी-कभी अपराधी व्यक्ति

की आंखों पर पट्टी बांधकर उसे एक तख्ते पर से समुद्र में फेंक दिया जाता था।

समुद्री डाकुओं के बारे में बहुत-सी कहानियां हैं। कुछ डाकुओं ने अपने खज़ाने गाड़ रखे थे, लेकिन वे उन तक अपने जीवन में फिर कभी न पहुंच सके।

अब किसी भी समुद्र में कोई समुद्री डाकू नहीं है।



समुद्री डाकू तोते पालते थे और उन्हें बोलना सिखाते थे।

सलादीन (SALADIN 1137-1193) : जब से ईसाइयों का पहले धर्मयुद्ध में जेरुसलम पर अधिकार हो गया, तब से मुस्लिम साम्राज्य का बराबर पतन होता गया। बारहवीं शताब्दी के अंत में एक मुसलमान नेता हुआ। उसका नाम सलादीन था। वह मिस्र और सीरिया का सुल्तान था। उसने ईसाइयों से जेरुसलम के आसपास की भूमि छीनने के लिए जेहाद छेड़ा। इस जेहाद का सामना करने के लिए यूरोपीय देशों ने जल्दी-जल्दी सेनाएं जमा कीं। इन सेनाओं का नेतृत्व इंग्लैंड के राजा रिचार्ड प्रथम और फ्रांस के राजा फिलिप ने किया। लेकिन, ये लोग जेरुसलम को सलादीन से न ले सके। अंत में दोनों पक्षों में समझौता हो गया।

‘सातवर्षीय युद्ध’ (SEVEN YEARS WAR 1756-1763) : यह युद्ध यूरोप के पांच देशों में हुआ था। एक तरफ ब्रिटेन और प्रशा (जर्मनी) थे, और दूसरी तरफ आस्ट्रिया, फ्रांस और रूस। प्रशा इसलिए लड़ रहा था कि उसके पास वह जमीन रह जाए, जो उसने आस्ट्रिया से ले ली थी। आस्ट्रिया अपनी भूमि वापस लेने के लिए लड़ रहा था। फ्रांस का मुख्य उद्देश्य उत्तरी अमरीका और भारत में अपनी बस्तियों का विस्तार करना था। ब्रिटेन अपने साम्राज्य की रक्षा करना चाहता था। यह युद्ध कई स्थानों पर हुआ।

यूरोप में प्रशा की सुप्रशिक्षित सेना अकेली फ्रांस, आस्ट्रिया और रूस की सेना के विरुद्ध लड़ी। प्रशा का

राजा फ्रेडरिक महान बड़ा ही प्रतिभाशाली सेनापति था। आस्ट्रिया को हारकर प्रशा से संधि करनी पड़ी और उसकी जमीन उसके हाथ से चली गई।

उत्तरी अमरीका में अनेक बार हारने के बाद अंग्रेजों ने धीरे-धीरे जीतना शुरू किया। सन् 1759 में जनरल वॉल्फ ने क्वेबेक के फ्रेंच दुर्ग को जीत लिया। उसके बाद लड़ाई जल्दी ही समाप्त हो गई। भारत में रॉबर्ट क्लाइव ने फ्रांसियों की सत्ता को समाप्त कर दिया।

इस तरह ब्रिटेन और प्रशा लड़ाई में जीत गए। ब्रिटेन ने फ्रांस को हराकर साम्राज्य बनाया और यूरोप की महान शक्ति के रूप में प्रशा की धाक जम गई।

सिंधु सभ्यता (INDUS VALLEY CIVILIZATION) : सिंधु घाटी (जो अब पाकिस्तान में है) की सभ्यता भारत की सबसे प्राचीन सभ्यता मानी जाती है। इसका उदय लगभग चार हजार वर्ष ईसा पूर्व हुआ था। इसमें अनेक सुविकसित नगर थे, जिनमें हड़प्पा और मोहेनजोदड़ो प्रमुख थे। हड़प्पा सिंधु के उत्तरी भाग में था, मोहेनजोदड़ो दक्षिणी भाग में। इनके अलावा भी कई अन्य नगर थे।

सन् 1925 में सिंधु प्रदेश की जो खुदाइयां हुईं उनसे पहले-पहल इन नगरों का पता चला। एक नई सभ्यता का पता लगने से संसार के ऐतिहासिक क्षेत्रों में हलचल मच गई। परंतु उस समय अनुमान यह था कि यह सभ्यता सिंधु घाटी तक ही सीमित थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हुई खुदाइयों से यह धारणा गलत साबित हुई है। अब यह पता चला है कि यह सभ्यता पूर्व में रोपड़ तक तथा दक्षिण में गुजरात तक फैली थी। राजस्थान गुजरात तथा पंजाब के अनेक भागों में हड़प्पा जैसे नगर प्राप्त हुए हैं। हो सकता है, कुछ और खुदाइयों के बाद पता चले कि यह सभ्यता और भी दूर तक फैली थी।

इस सभ्यता के निर्माता कौन थे। कुछ लोग आर्यों को इसका निर्माता मानते हैं, कुछ द्रविड़ों को। परन्तु विद्वानों का बहुमत द्रविड़ों के पक्ष में है। दक्षिण भारत में द्रविड़ सभ्यता के जो अवशेष मिले हैं, उनसे सिंधु सभ्यता में प्राप्त वस्तुएं मिलती-जुलती हैं। इसके अतिरिक्त आर्य-सभ्यता कृषि-प्रधान ग्राम सभ्यता थी, जबकि सिंधु सभ्यता नगरों की सभ्यता है और व्यापार-प्रधान है। द्रविड़ सभ्यता भी ऐसी ही है। आर्यों ने जो वेद लिखे उनमें उनके नेता इन्द्र द्वारा बड़े-बड़े नगरों के ध्वंस का वर्णन मिलता है। संभवतः यही वे नगर थे।

खुदाई में प्राप्त नगरों को देखने से पता चलता है कि यह सभ्यता बड़ी समृद्ध थी। इनमें बड़े-बड़े भवन और चौड़ी सड़कें थीं। मकान पक्की ईंटों से बनाए जाते थे। वे दो या अधिक मंजिलों के होते थे। प्रत्येक मकान में स्नानगृह अलग होता था। उन्हींके समीप शौचालय होते थे। जल प्राप्त करने के लिए कुएं होते थे। सार्वजनिक

प्रयोग के लिए भी बड़े-बड़े स्नानगृह और जलाशय होते थे। नगर की सुरक्षा के लिए उसके चारों ओर पक्की दीवार और खाई होती थी।

सिंधु सभ्यता के लोग गेहूं, जौ, चावल, मांस, मछली, अंडे इत्यादि खाते थे। इसके अतिरिक्त, वे फल, दूध, साग-सब्जी का प्रयोग करते थे। पुरुष छोटी दाढ़ी और मूंछें रखते थे। कुछ लोगों के बाल छोटे होते थे, कुछ के लम्बे। वे सूती और ऊनी दोनों तरह के वस्त्र पहनते थे। अनुमान किया जाता है कि स्त्रियों और पुरुषों के वस्त्रों में कोई विशेष अंतर नहीं होता था। दोनों ही विभिन्न प्रकार के आभूषण पहनते थे।

पुरुष शिकार करने में विशेष रुचि लेते थे। वे जुआ और शतरंज भी खेलते थे। बच्चों के खेलने के लिए तरह-तरह के खिलौने बनाए जाते थे। ये सभी वस्तुएं खुदाई में प्राप्त हुई हैं।

लोग खेती तथा व्यवसाय करते थे। वे कुशल शिल्पी थे और अनेक प्रकार की वस्तुएं बनाते थे। बर्तन, कपड़े तथा आभूषण बनाने की कला में वे बड़े निपुण थे। विदेशों से बड़े पैमाने पर व्यापार होता था। यातायात की उत्तम व्यवस्था थी।

सिंधु सभ्यता के लोग शिव की उपासना करते थे। योग-साधना का भी संभवतः अच्छा प्रचार था। कुछ मुहरें और मूर्तियां ऐसी मिली हैं जिनमें नारी अंकित हैं। इससे अनुमान किया गया है कि ये लोग शक्ति की पूजा भी करते थे, जिसका शिव से घनिष्ठ संबंध है। इसके अतिरिक्त ये लोग सूर्य, अग्नि, जल वृक्ष तथा पशुओं की भी पूजा करते थे।

इन लोगों को नृत्य, संगीत, चित्रकला तथा मूर्तिकला का भी अच्छा ज्ञान था। इसके अतिरिक्त, ये लिखते-पढ़ते भी थे। अनेक मुद्राओं पर कुछ शब्द लिखे मिले हैं। परन्तु उनकी लिपि कौन-सी है, इसका पता नहीं चलता।

इन नगरों में राजाओं के महल नहीं मिले हैं, जिससे अनुमान होता है कि यह सभ्यता लोकतांत्रिक थी। परन्तु इसका शासन शक्तिशाली केन्द्रों द्वारा संचालित होता था।

अनुमान किया जाता है कि 1000 वर्ष ई० पू० इस सभ्यता का अचानक विनाश हो गया। विनाश के कारणों का यद्यपि ठीक पता नहीं लगता, परन्तु विद्वानों की धारणा है कि नदी में बाढ़ आ जाने, भूकम्प या किसी भयंकर युद्ध के कारण ऐसा हुआ होगा।

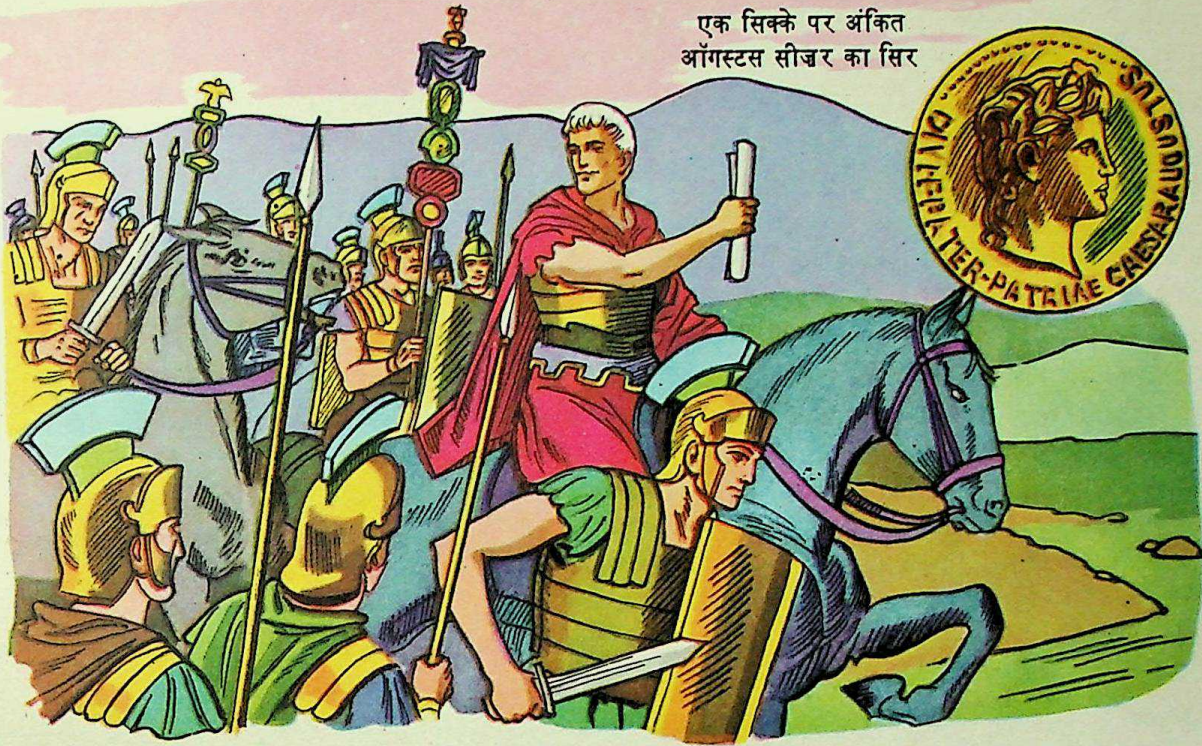
(देखें : द्रविड़; मोहेनजोदड़ो)

सिकंदर देश के बाद देश जीतता हुआ भारत की सीमा तक आ गया।



सिकंदर महान (ALEXANDER THE GREAT 356-323 ई० पू०) : सिकंदर का जन्म मकदूनिया में हुआ था। वह वहां के राजा फिलिप का बेटा था। बीस बरस की उम्र में उसे राजगद्दी मिली और सिर्फ तेरह वर्ष राज करने के बाद उसका देहांत हो गया। सिकंदर को उसकी वीरता के कारण सिकंदर महान कहा जाता है।

सिकंदर के शिक्षक अरस्तू की गिनती संसार के सबसे



एक सिक्के पर अंकित
ऑगस्टस सीज़र का सिर

जूलियस सीज़र रोमन सेना को लेकर विजय के लिए निकल पड़ा।

बड़े दार्शनिकों और विचारकों में होती है। सिकंदर बचपन से ही बड़ा निडर और वीर था। गद्दी पर बैठते ही सिकंदर ने यूनान के सारे नगर-राज्यों को जीत लिया। इसके बाद उसने पूर्व की ओर कूच किया और देश के बाद देश जीतता हुआ वह भारत की सरहद तक आ पहुंचा।

भारत में तक्षशिला के राजा अंभी ने देशद्रोह किया और वह सिकंदर से जा मिला। लेकिन भेलम के किनारे केकय के राजा पुरु ने सिकंदर का डटकर सामना किया। सिकंदर ने रात के अंधेरे में अपनी फौज के साथ नदी पार की और अगले दिन अचानक पुरु की फौज पर हमला कर दिया। भारतीय बड़ी वीरता के साथ लड़े, पर बरसात के कारण मैदान में कीचड़ हो गई थी, जिससे उनके हाथी बेकार हो गए। राजा अंभी के विश्वासघात से भी सिकंदर को बड़ी सहायता मिली। भारतीय सेना परास्त हो गई। राजा पुरु को जब गिरफ्तार करके सिकंदर के सामने लाया गया, तो सिकंदर ने पूछा, "तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाए?" पुरु ने जवाब दिया, "जैसा एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है!" सिकंदर ने अपने इस वीर शत्रु का सम्मान किया और उसे उसका राज्य लौटा दिया।

मगर इसी लड़ाई से यूनानियों को पता लग गया कि भारत कितना शक्तिशाली है। उन्होंने अब आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया, इसलिए सिकंदर को वापस लौटना पड़ा। यूनान पहुंचने के पहले ही, मार्ग में उसकी मृत्यु हो गई। उसके बाद उसके सेनापतियों ने साम्राज्य को आपस में बांट लिया।

सीज़र (CAESARS) : प्राचीन काल में रोम में सीज़र नामधारी अनेक राजा हुए हैं। सीज़र शब्द से ही ज़ार (रूसी सम्राट) और कैसर (जर्मन सम्राट) दोनों शब्द निकले हैं। पहले सीज़र एक प्रसिद्ध शासक के नाम का अन्तिम भाग था, फिर यह एक उपाधि बन गया, जिसका अर्थ था 'सम्राट'।

जूलियस सीज़र एक महान योद्धा था। उसने यूरोप के उस समूचे भाग को, जिसे फ्रांस कहा जाता है, तथा एशिया के कुछ भागों को जीत लिया था। एशिया में एक युद्ध के बाद उसने रोम में जो सन्देश भेजा था उससे उसकी वीरता और आत्मविश्वास का परिचय मिलता है। वह सन्देश था : "मैं आया, मैंने देखा, मैंने जीत लिया।"

जूलियस सीज़र ने कुछ अच्छे काम भी किए। इनमें से एक तो उस कैलेंडर का निर्धारण है, जिसे लगभग ज्यों का त्यों हम आज तक प्रयोग में ला रहे हैं। जुलाई मास का नाम जूलियस सीज़र के नाम पर ही पड़ा है।

अगस्त मास का नाम एक दूसरे प्रसिद्ध सीज़र के नाम पर पड़ा है। उसका नाम था ऑगस्टस। इसीके शासन-काल में ईसा मसीह का जन्म हुआ था।

ऑगस्टस का असली नाम ऑक्टैवियस था। 'ऑगस्टस' का अर्थ होता है 'प्रशंसित' या 'सम्मानित'। रोम की जनता ने अपनी ओर से उसे यह नाम दिया था। कुछ लोग उसका बड़ा सम्मान करते थे, और कुछ लोग तो उसे देवता ही समझते थे।

ऑगस्टस एक अच्छा शासक था। उसने 45 वर्ष तक शासन किया।

इनके अतिरिक्त भी सीज़र उपाधधारी अनेक राजा हुए। इनके शासन में रोम की दो शताब्दियां बहुत शांति और समृद्धि-पूर्ण बीतीं।

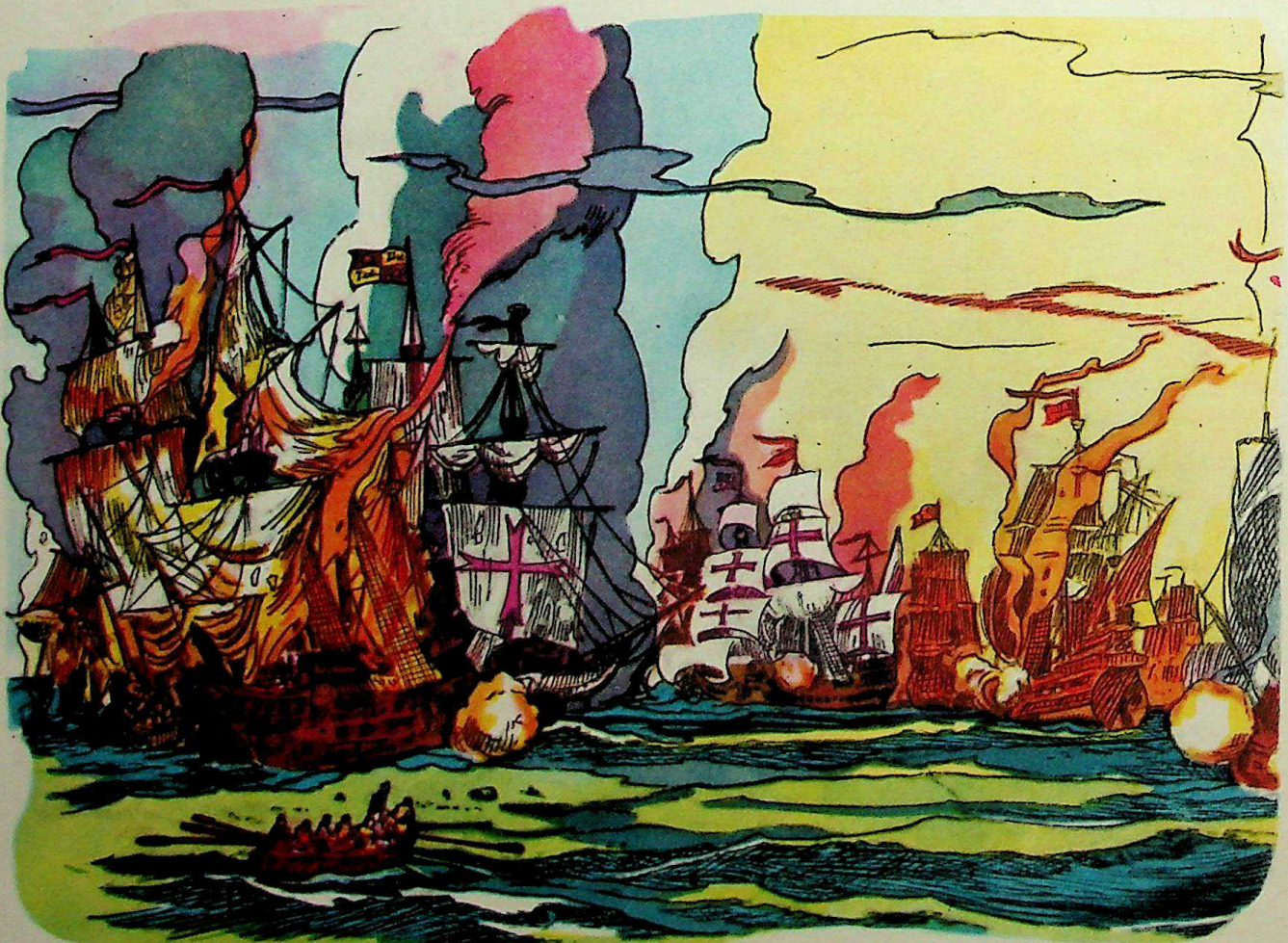
स्तालिन, जोसेफ़ विस्सारियोनोविच (JOSEPH VISSARIONOVICH STALIN 1879-1953) : सोवियत संघ के प्रसिद्ध नेता स्तालिन रूस के गोरी नामक कस्बे में पैदा हुए थे। उनके माता-पिता बहुत गरीब थे, अतः उनका बचपन बहुत साधारण ढंग से बीता। उनके पिता मोची का काम करते थे।

स्तालिन गरीबी के वातावरण में बड़े हुए। अपनी युवावस्था में स्तालिन पर कार्ल मार्क्स की शिक्षाओं का बहुत असर पड़ा और पचीस वर्ष की अवस्था तक वे पक्के क्रान्तिकारी बन गए। लेनिन के निर्देशन में रूस के लोग कार्ल मार्क्स की शिक्षाओं से बहुत प्रभावित हुए थे। जार का शासन समाप्त होने के बाद लेनिन ने ही रूस का नेतृत्व संभाला। 1924 में लेनिन की मृत्यु के बाद केवल स्तालिन और उनके प्रतिद्वंद्वी त्रात्स्की ही इस स्थिति में थे कि शासन की बागडोर संभाल सकें। स्तालिन त्रात्स्की

और उसके अनुयायियों को पराजित करने में सफल हुए। धीरे-धीरे सत्ता की बागडोर अपने हाथों में केन्द्रित करते हुए वे रूस के अधिनायक के रूप में सर्वोच्च स्थिति में पहुंच गए। 1953 में मृत्यु होने तक स्तालिन इसी स्थिति में बने रहे। स्तालिन के ही नेतृत्व में रूस का विस्तृत पैमाने पर उद्योगीकरण हुआ और सोवियत संघ की महान आर्थिक प्रगति हुई।

स्पेनी आर्मदा (SPANISH ARMADA) : आर्मदा का शाब्दिक अर्थ है, जहाज़ी बेड़ा। सोलहवीं-सत्रहवीं सदी में स्पेन संसार की महान शक्तियों में से था। आरंभ में इंग्लैंड का कोई विशेष महत्त्व न था। अंत में स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय ने इंग्लैंड को जीतने के इरादे से 132 जंगी जहाज़ों का 'अजेय बेड़ा' तैयार किया और उसे इंग्लैंड पर हमला करने का आदेश दिया।

इंग्लैंड पर तब रानी एलिज़ाबेथ प्रथम का राज था। कहा जाता है कि जब अंग्रेज़ सेनापति लार्ड हॉवर्ड को इस हमले की खबर मिली, तब वह सर फ्रांसिस ड्रेक के साथ गेंदबाज़ी कर रहा था। वह तो फौरन हमला करना चाहता



स्पेनी आर्मदा की पहले तूफान से बड़ी क्षति हुई और फिर अंग्रेज़ी बेड़े ने उसे बुरी तरह हरा दिया।

था, पर ड्रेक ने कहा, “जल्दी क्या है ! खेल जीतने और स्पेनियों को पीटने के लिए अपने पास अभी काफी समय है !”

अगले दिन अंग्रेजों के तेज मगर छोटे-छोटे जहाज स्पेनी बेड़े के पीछे लग गए। स्पेनी जहाज हथियारों आदि से लैस तो खूब थे, मगर इतने भारी थे कि न घूम सकते थे, न तेज चल सकते थे। अंग्रेजों ने पीछे छूटे कई स्पेनी जहाज डुबा दिए। रात के समय उन्होंने कुछ जहाजों को आग लगाकर स्पेनी बेड़े की ओर छोड़ दिया। इससे स्पेनी बेड़े में खलबली मच गई। तभी अंग्रेजों ने अपने तेज जहाजों से स्पेन के बिखरे बेड़े पर हमला किया और उसे तबाह कर दिया।

आर्मदा की हार ने स्पेन को बहुत कमजोर कर दिया। तब से इंग्लैंड यूरोप की एक प्रमुख शक्ति बन गया।

हर्षवर्धन (HARSHAVARDHANA 590-648) : हर्ष प्राचीन भारत का महान सम्राट तथा कवि था। उसने गुप्त साम्राज्य के नाश से छिन्न-विच्छिन्न हुए भारत में फिर एक विशाल साम्राज्य की स्थापना करके उसे एकता के सूत्र में बांधा।

हर्ष के पिता प्रभाकरवर्धन ने थानेश्वर में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की थी। उसके तीन संतानें थीं—दो लड़के और एक लड़की। बड़ा लड़का राज्यवर्धन और छोटा हर्षवर्धन था। लड़की थी राज्यश्री। राज्यश्री का विवाह कन्नौज के राजा गृहवर्मा से हुआ था। प्रभाकरवर्धन की मृत्यु के बाद राज्यवर्धन गद्दी पर बैठा। उसे मालूम हुआ कि मालवा के राजा देवगुप्त ने कन्नौज पर हमला करके गृहवर्मा को मार डाला है और राज्यश्री को बन्दी बना लिया है। यह समाचार पाते ही राज्यवर्धन ने हर्ष को साम्राज्य का भार सौंपा और देवगुप्त से लड़ने चल दिया। उसने देवगुप्त को तो हरा दिया, परन्तु गौड़ के राजा शशांक ने विश्वासघात द्वारा राज्यवर्धन की हत्या करके कन्नौज पर अधिकार कर लिया। राज्यश्री मुक्त हो गई थी; वह विध्याचल पर कहीं गुप्त स्थान पर चली गई।

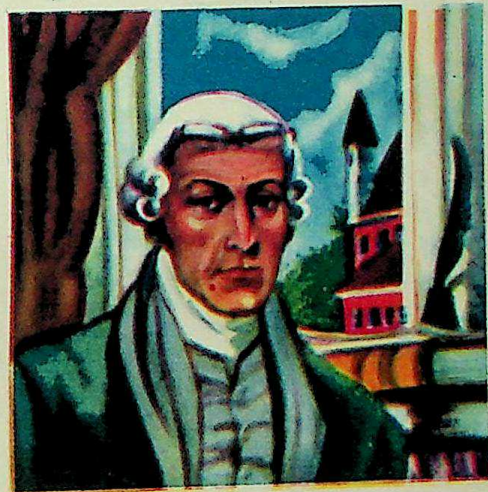
हर्ष गद्दी पर बाकायदा बैठ गया और बहिन की खोज करने चल पड़ा। इस समय उसकी अवस्था केवल सोलह वर्ष थी। वह बहिन के पास उसी समय पहुंचा जब वह निराश होकर चिता पर चढ़ने जा रही थी। उसे साथ लेकर उसने कन्नौज पर हमला किया। शशांक डरकर भाग गया। कन्नौज पर उसने अधिकार कर लिया। उसने कन्नौज को ही अपनी राजधानी बना लिया और शासन करने लगा।

हर्ष का शासन बड़ा व्यवस्थित और उदार था। वह कर बहुत कम लेता था, परन्तु अपराधों के लिए कठोर दण्ड देता था। चीनी यात्री युआन च्वाङ (ह्वेनत्सांग) उसके

शासन-काल में भारत आया था। उसने देश की तत्कालीन स्थिति का अच्छा वर्णन किया है।

हर्ष हर पांचवें साल प्रयाग में एक विशाल सम्मेलन करता था। इसमें वह सभी धर्मों के देवताओं को सम्मानित करता था और सबको दान देता था। कहते हैं, इस अवसर पर वह अपनी संपूर्ण संपत्ति दान में दे डालता था, यहां तक कि अपने आभूषण और वस्त्र भी दे देता था। युआन च्वाङ ने एक सम्मेलन का आंखों-देखा वर्णन किया है।

हर्ष महान लेखक भी था। उसने ‘नागानन्द’, ‘रत्नावली’ और ‘प्रियदर्शिका’ नामक ग्रंथों की रचना की। बाणभट्ट उसके दरबार का उज्ज्वल रत्न था, जिसने ‘हर्षचरित’ तथा ‘कादम्बरी’ की रचना की है। हर्ष ने शिक्षा के प्रचार का भी बहुत यत्न किया।



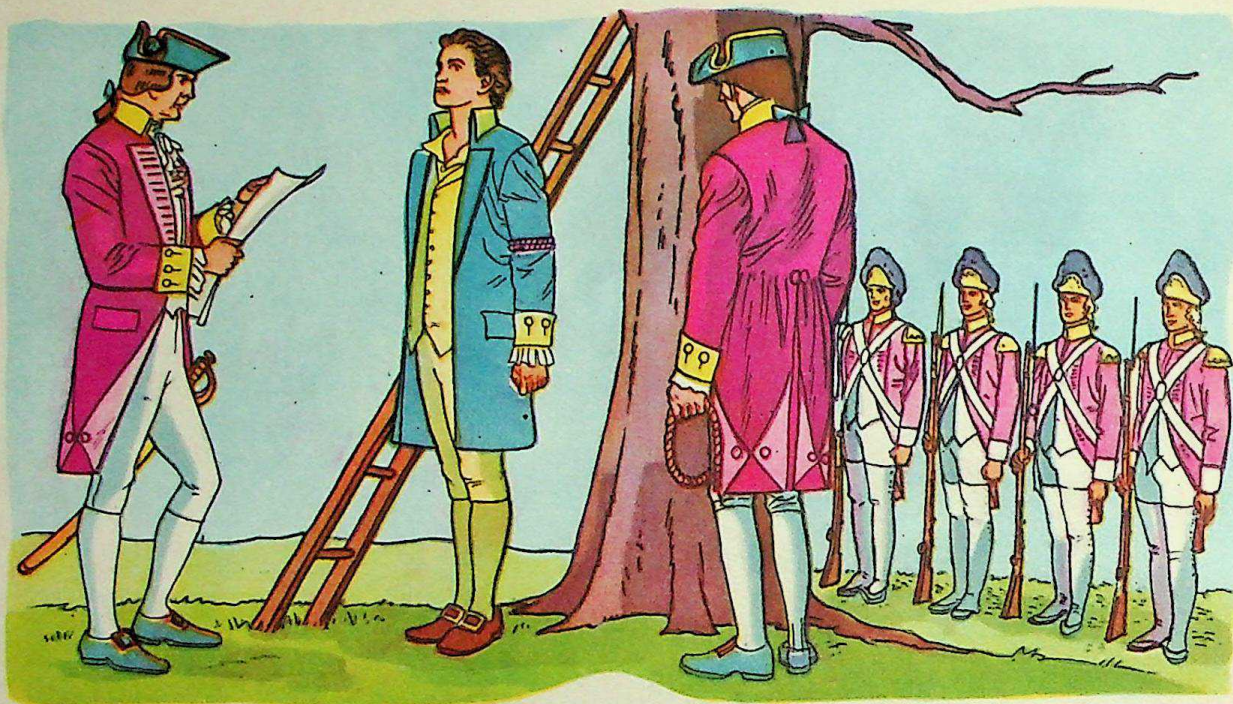
पैट्रिक हेनरी

हेनरी, पैट्रिक (PATRICK HENRY 1736-1799) : आज से कोई 200 साल पहले, जब अमरीकी राज्य इंग्लैंड के औपनिवेशिक शासन से मुक्त होने के लिए छटपटा रहे थे, पैट्रिक हेनरी ने क्रांति का मंत्र फूंकते हुए कहा था, “जहां तक मेरा सवाल है, मुझे आजादी या फिर मौत चाहिए।”

इस महान देशभक्त का जन्म वर्जीनिया में हुआ था। वे एक प्रसिद्ध वकील और बड़े ही ओजस्वी वक्ता थे। उन्होंने अपने भाषणों से क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया और अपने देश के लोगों को आजादी की लड़ाई छेड़ने के लिए ललकारा।

स्वाधीनता के बाद वे वर्जीनिया की संसद के सदस्य चुने गए और बाद में बहुत सालों तक वर्जीनिया के गवर्नर भी रहे। अपने देश के संविधान में उन्होंने कई महत्वपूर्ण सुधार किए।

हेल, नैथन (NATHAN HALE 1755-1776) : मुझे बस यही अफसोस है कि अपने देश पर न्योछावर करने के लिए



हेल के अन्तिम शब्द थे : “अफसोस है कि मेरे पास अपने देश पर न्योछावर करने को केवल एक ही जीवन है।”

मेरे पास एक ही जीवन है।” नैथन हेल के ये अन्तिम शब्द अमरीका में बहुत ही प्रसिद्ध हैं।

नैथन हेल अमरीकी क्रांति के समय कनैटिकट में एक स्कूल में अध्यापक था। देशप्रेम की भावना से वह अध्यापकी छोड़कर अमरीकी सेना में भर्ती हो गया और अपनी योग्यता और वीरता के कारण शीघ्र ही लैफ्टिनेंट से कैप्टेन बन गया।

1776 में लॉग आईलैंड की लड़ाई में वाशिंगटन की हार हुई और स्थिति बहुत ही निराशापूर्ण लगने लगी। वाशिंगटन अगला कदम उठाने से पहले ब्रिटिश सेना की योजनाओं को अच्छी तरह जान लेना चाहते थे। इसके लिए उन्हें एक ऐसा आदमी चाहिए था जो ब्रिटिश कैम्प में जाकर वहां का सारा भेद ला सके। नैथन हेल इस काम के लिए फौरन तैयार हो गया।

एक डच अध्यापक के भेस में ब्रिटिश लाइनों में पहुंचकर उसने बहुत-सी महत्वपूर्ण सूचनाएं इकट्ठी कर लीं। लेकिन जब वह अमरीकी कैम्प को लौट रहा था तो पकड़ लिया गया। युद्ध के नियमों के अनुसार उसे फांसी दे दी गई। अमरीकी जनता के हृदय में अपने इस देशभक्त के लिए बड़ी श्रद्धा है।

हेस्टिंग्स, वारेन (WARREN HASTINGS 1733-1818) : भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव रखनेवाला यदि क्लाइव था, तो उसका वास्तविक संस्थापक था, वारेन हेस्टिंग्स। वह 1772 ई० में बंगाल का गवर्नर बनकर आया और 1784 तक रहा। उसीके काल में ब्रिटिश पार्लेमेंट में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन पर नियंत्रण रखने के

लिए पहले ‘रेग्युलेटिंग एक्ट’ और फिर ‘पिट्स इंडिया बिल’ पास किया गया। वही भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का पहला गवर्नर-जनरल था। उसने कंपनी के राज्य को एक शासन-व्यवस्था प्रदान की, उसके भ्रष्टाचार को रोका, रिक्त कोष को पूर्ण किया और शत्रुओं पर विजय पाई। कंपनी को आर्थिक संकट से उबारने के लिए हेस्टिंग्स ने अवध के नवाब, बनारस के राजा चेतसिंह, उसके भतीजे और अवध की बेगमों से बहुत-सा रुपया वसूल किया।

हेस्टिंग्स ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए नैतिक-अनैतिक सभी तरह के साधनों का प्रयोग किया। नंदकुमार नामक एक कुलीन बंगाली ने गवर्नर-जनरल की कौंसिल के सामने हेस्टिंग्स पर यह आरोप लगाया था कि उसने मीर जाफ़र की विधवा से साढ़े तीन लाख रुपया रिश्वत लिया है। कौंसिल ने हेस्टिंग्स को दोषी ठहराया। तभी कलकत्ता के एक व्यापारी ने नंदकुमार पर जालसाजी का मुकदमा चला दिया। कलकत्ता की सुप्रीम कोर्ट ने नंदकुमार को दोषी माना और उसे जल्दी ही फांसी दे दी गई। नंदकुमार के मामले को लेकर हेस्टिंग्स की बड़ी बदनामी हुई और यह समझा गया कि इसमें उसका पूरा-पूरा हाथ था।

1785 ई० में हेस्टिंग्स इंग्लैंड वापस चला गया। वहां पहुंचते ही उसपर भ्रष्टाचार तथा अत्याचार के 22 अभियोग लगाए गए, जिनमें सबसे गंभीर चेतसिंह तथा अवध की बेगमों वाले मामले थे। 1795 ई० तक हेस्टिंग्स पर मुकदमे चलते रहे, यद्यपि अंत में उसको निर्दोष ठहराया गया। 85 वर्ष की अवस्था में उसका देहान्त हो गया।

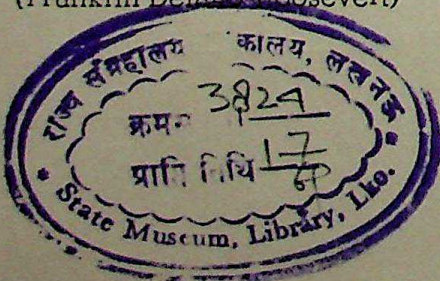
अनुक्रमणिका

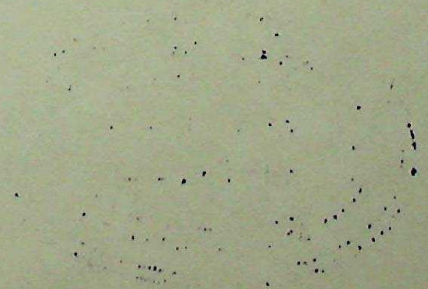
पारिभाषिक शब्द

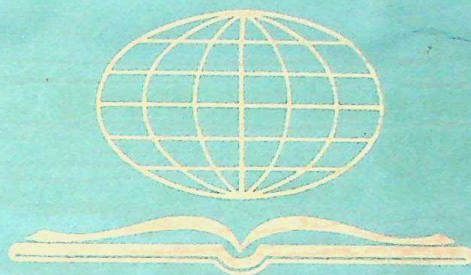
अधयुग, यूरोपीय (Dark Ages)	5	चंगेज खां (Genghis Khan)	39
अकबर (Akbar)	5	चंद्रगुप्त मौर्य (Chandragupta Maurya)	40
अज़तेक (Aztecs)	6	चंद्रगुप्त विक्रमादित्य (Chandragupta Vikramaditya)	40
अमरीका के राष्ट्रपति (Presidents of the U. S. A.)	8	चर्चिल, सर विंस्टन एल० एस० (Sir Winston L. S. Churchill)	40
अमरीकी स्वतंत्रता की घोषणा (Declaration of Independence)	9	चाणक्य (Chanakya)	41
अशोक (Ashoka)	9	चार्ल्स प्रथम (Charles I)	42
आज़ाद, चन्द्रशेखर (Chandrashekhar Azad)	9	जेफ़र्सन, टॉमस (Thomas Jefferson)	42
आर्थर, राजा (King Arthur)	10	जेर्कसीज़ (Xerxes)	42
आर्य (Aryans)	10	जोन आँव आर्क, संत (Saint Joan of Arc)	42
इंका जाति (Incas)	11	जोन्स, जॉन पॉल (John Paul Jones)	43
इतिहास (History)	12	ट्रेफ़ल्गार की लड़ाई (Battle of Trafalgar)	43
इतिहास, अमरीका का (History of the U. S. A.)	25	डगलस, स्टीफ़ेन ए० (Stephen A. Douglas)	43
इतिहास, इंग्लैंड का (History of England)	26	डिज़रैली, बेंजामिन (Benjamin Disraeli)	44
इतिहास, भारत का (History of India)	28	डूप्ले (Dupleix)	44
एलिज़ाबेथ प्रथम (Elizabeth I)	32	तिलक, लोकमान्य बालगंगाधर (Lokmanya Bal Gangadhar Tilak)	44
ऐंग्लो-सैक्सन (Anglo-Saxons)	33	तूतांख़ामेन (Tutankhamen)	45
ऐटिला (Attila)	33	तैमूर लंग (Taimur Lane)	45
ऐलेरिक (Alaric)	33	द्रविड़ (Dravidians)	46
ऐल्फ़्रेड द ग्रेट (Alfred the Great)	34	नादिरशाह (Nadir Shah)	46
औरंगज़ेब (Aurangzeb)	34	नेपोलियन (Napoleon)	47
कनिष्क (Kanishka)	35	नेल्सन, वाइकाउंट होरेशियो (Viscount Horatio Nelson)	48
कार्थेज (Carthage)	35	नेहरू, जवाहरलाल (Jawaharlal Nehru)	48
कैन्यूट, राजा (King Canute)	36	पटेल, सरदार वल्लभभाई (Sardar Vallabhbhai Patel)	49
क्रॉमवेल, ओलिवर (Oliver Cromwell)	36	पुनर्जागरण काल, यूरोपीय (Renaissance)	50
क्रीट (Crete)	36	पुरातत्त्व (Archaeology)	51
क्लाइव, रॉबर्ट (Robert Clive)	37	पृथ्वीराज चौहान (Prithviraj Chauhan)	52
गांधी, महात्मा (Mahatma Gandhi)	38		
गृहयुद्ध (Civil Wars)	38		
गोविन्दसिंह, गुरु (Guru Gobind Singh)	39		

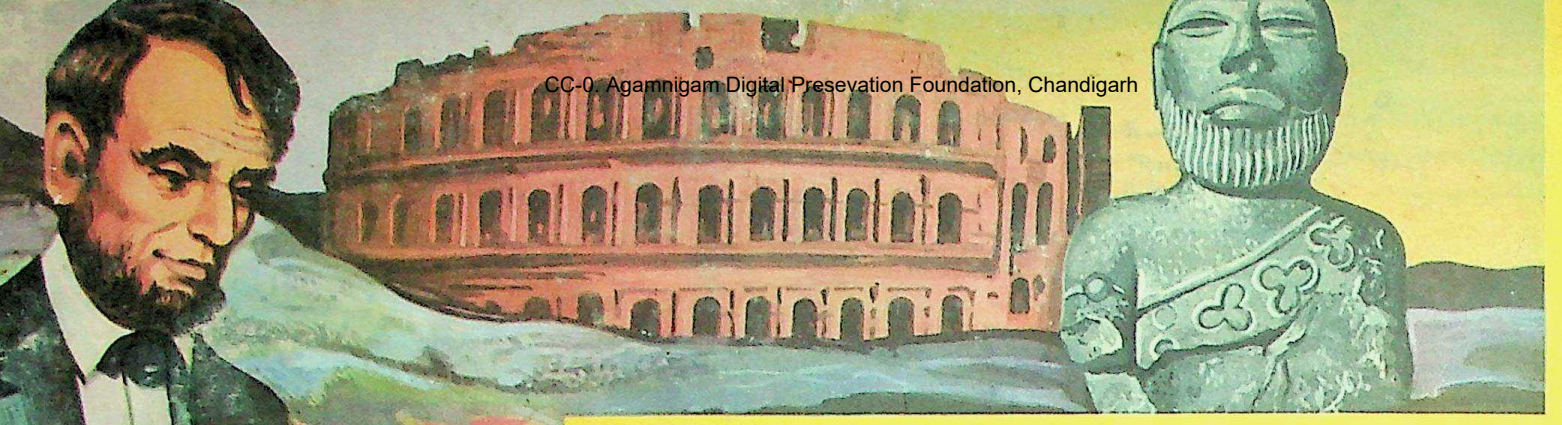
पोम्पेई (Pompeii)	52	रैवरे, पॉल (Paul Revere)	78
प्रताप, महाराणा (Maharana Pratap)	53	रोम, प्राचीन (Ancient Rome)	78
प्लासी की लड़ाई (Battle of Plassey)	54	लक्ष्मीबाई, महारानी (Maharani Lakshmibai)	81
फारस (Persia)	54	लफ़ायते, मार्क्विस् द	
फ़ाहियान (Fa-Hian)	56	(Marquis de Lafayette)	82
फीनीशियाई (Phoenicians)	57	लिनकन, अब्राहम (Abraham Lincoln)	82
फ्रांस की राज्यक्रान्ति (French Revolution)	58	ली, रॉबर्ट ई० (Robert E. Lee)	83
बंकर पहाड़ी की लड़ाई (Battle of Bunker Hill)	58	लुई चौदहवां (Louis XIV)	83
बून, डेनियल (Daniel Boone)	59	वाटरलू की लड़ाई (Battle of Waterloo)	84
बेबीलोनिया (Babylonia)	59	वाशिंगटन, जॉर्ज (George Washington)	84
बोलिवर, साइमन (Simon Bolivar)	62	वाशिंगटन, बुकर टी० (Booker T. Washington)	85
बोस, सुभाषचंद्र (Subhas Chandra Bose)	62	विक्टोरिया, महारानी (Queen Victoria)	85
भगतसिंह, सरदार (Sardar Bhagat Singh)	63	विश्वयुद्ध, प्रथम (World War I)	86
भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम—1857		विश्वयुद्ध, द्वितीय (World War II)	87
(Indian War of Independence—1857)	64	वेब्सटर, डेनियल (Daniel Webster)	89
भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन		वेलिंगटन, ड्यूक ग्राँव (Duke of Wellington)	90
(Indian Independence Movement)	65	वोल्फ़, जेम्स (James Wolfe)	90
मध्ययुग (Middle Ages)	67	शार्लेमेन (Charlemagne)	91
ममी (सुरक्षित शव) (Mummies)	68	शिवाजी, छत्रपति (Chhatrapati Shivaji)	91
मय (Mayas)	69	शेरशाह (Sher Shah)	92
महमूद गज़नवी (Mahmud of Ghazni)	70	संग्रहालय (Museums)	92
मिस्र, प्राचीन (Ancient Egypt)	70	समुद्रगुप्त (Samudragupta)	93
मुहम्मद तुग़लक़ (Muhammad Tughlak)	73	समुद्री डाकू (Pirates)	94
मूर (Moors)	73	सलादीन (Saladin)	95
मेरी अन्तवानेत (Marie Antoinette)	74	'सातवर्षीय युद्ध' (Seven Years War)	95
मेसन और डिक्सन रेखा		सिंधु सभ्यता (Indus Valley Civilization)	95
(Mason and Dixon's Line)	74	सिकंदर महान (Alexander the Great)	96
मग्ना चार्टा (Magna Charta)	74	सीज़र (Caesars)	97
मोहेनजोदड़ो (Mohenjo Daro)	75	स्तालिन, जोसेफ़ विस्सारियोनोविच	
युआन च्वाङ (Yuan Chwang)	75	(Joseph Vissarionovich Stalin)	98
रज़िया सुल्ताना (Razia Sultana)	76	स्पेनी आर्मदा (Spanish Armada)	98
राजेन्द्र चोल (Rajendra Chola)	76	हर्षवर्धन (Harshavardhana)	99
राजेन्द्रप्रसाद, डा० (Dr. Rajendra Prasad)	76	हेनरी, पैट्रिक (Patrick Henry)	99
रूजवेल्ट, फ्रैंकलिन डेलैनो		हेल, नैथन (Nathan Hale)	99
(Franklin Delano Roosevelt)	77	हेस्टिंग्स, वारेन (Warren Hastings)	100

△ △ △









सचित्र विश्वकोश

९

इतिहास: व्यक्ति * घटनाएं

